श्री

पीतलकी मूर्त्ति ।

अद्भुत घटनापूर्ण

सचित्र उपन्यास ।

प्रकाशक

रामलाल वर्म्मा ।

॥ ओं ॥

पीतलकी मूर्त्ति ।

अद्भुत घटनापूर्ण मनोहर उपन्यास ।

पांचवां भाग ।

मि० जार्ज विलियम रेनल्ड्स् एल "ब्राजस्टैन्" का अनुवाद ।

रामलाल वर्म्मा द्वारा

३०१, अपर चीतपुर रोड, "वर्मन प्रेस" कलकत्तामें मुद्रित और प्रकाशित ।

प्रथम बार २०००] सं १९७४ वि० । [मूल्य १॥) आने

"यदि मैं इस बालिका को बचाने का प्रयत्न करूँगा तो मेरा सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा।"

(पोम्पेकी मूर्ति—कलाशाला परिच्छेद)

"अर्मेनेण्डा ! क्या यह तू ही है ?"

(पीतलकी मूर्त्ति—तिरासीवां परिच्छेद)

Burman Press Calcutta

॥ श्री ॥

पीतलकी मूर्त्ति

पांचवां भाग।

एक्यासीवां परिच्छेद।

अर्द्धरात्रिकी बातें।

अब हमें लौटकर उस कमरेमें चलना चाहिये, जहां बीबी सैमलन सो रही थी।

सोमवर्गके मालिकको कुछ भी खबर न थी, कि पादड़ी छिपकर उसका सब चरित्र देख रहा है। वह यही समझता था, कि वह अपना काम बड़ी होशियारीसे कर रहा है और यही समझकर वह धीरे धीरे उस कमरेमें घुस गया, जहां बीबी-सैमलन सोयी हुई थी।

उसने उस कमरेमें घुसकर भीतरसे दरवाजा बन्दकर लिया और पलङ्गके पास जाकर देखा, कि बीबी गहरी नींदमें पड़ी है। बेरीनेसको गहरी नींदमें सोते देख पहले तो सोमवर्गके चूकने लौट जानेका विचार किया; परन्तु फिर यह सोचकर कि भोजके समय इतने मनुष्योंके

बीच बहुत थोडीसी बाते करनेका अवसर मिला, जिसमें केवल यही तय हो सका, कि रात्रिके समय एकान्तमें बहुत सी जरूरी बातोंका निबटेरा करना होगा, और भोजके समयमें ही उसने चुपचाप बैरोनेससे उसके कमरेका पता पूछ लिया था। दूसरी बात यह थी, कि प्रेग छोडकर बैरोनेसके चले आनेके कारण लोगोंके हृदयमें कितनेही प्रकारके सन्देह उत्पन्न हो रहे थे। यद्यपि बैरोनेसने अपने आनेका कारण साफ साफ बता दिया था, तथापि लोगोंके हृदयमे खटका बना ही हुआ था। यही कारण था, कि सोमवर्गके मार्क्विसके हृदयमे भी नाना प्रकारकी चिन्तायें उत्पन्न हो रही थी, और वह प्रकृत बातें जाननेके लिये बडाही व्याकुल हो रहा था। ये बाते सोच-विचारकर अन्तमे उसने यही निश्चय किया, कि बैरोनेसको सावधानतासे जगा दिया जाये।

बैरोनेस अपना सुडोल कधा खोले आरामसे सो रही थी। अत मार्क्विसने धीरे धीरे उसके कन्धे पर हाथ रखा जो अत्यन्त गोरा, गोल और बहुत ही नर्म था।"

कन्धेपर हाथ पडते ही बैरोनेस चौंक उठी और घबडाहटसे चारों ओर देखने लगी। अभी तक टेबिलपर लेम्प जल रहा था, जिसकी रोशनी सोमवर्गके मार्क्विसके खूबसूरत चेहरेपर पड रही थी। अत, उस रोशनीमें सोमवर्गके मार्क्विसको देख, उसका हाथ पकडे अपनी छातीसे लगाती हुई वह कहने लगी,—"ओह! आप अच्छे समय आ गये। आपको जगानेके लिये धन्यवाद है।"

सोमवर्गके मार्क्विसने कहा,—"यदि कोई जरूरी काम न हो, तो आपको वृथा ही जगाकर कष्ट दिया।"

बैरोनेस तकियेपर कोहनी टेक, एक हाथ माथेपर रखकर बोली, —"मैं आपको इसलिये धन्यवाद देती हू, कि मैं अभी एक भयानक

स्वप्न देख रही थी, जिसमें मेरा जी अत्यन्त घबड़ाया हुआ था। आपने मुझे जगाकर उस विपत्तिसे मेरी रक्षा की है।"

सीमवर्गके मार्क्विसने कहा,—"और यह स्वप्न क्या था, प्रिये?"

बेरोनेस बोली,—"ओह! उसका स्मरण आते ही जी घबरा उठता है। यदि प्रोतलकी मूर्त्ति और कुमारीके चुम्बनकी कथा ..."

मार्क्विसने बहुत ही घबड़ाकर कहा,—"ओह! ऐसे विचारोंपर ध्यान न दो।"

बेरोनेस बोली,—"नहीं, नींदमें मुझे जो दुश्चिन्तायें उत्पन्न हुई थीं, उन्हें मैं रोक न सकी और यही कारण था, कि मुझे स्वप्नमें भयानक कष्ट ही रहा था; परन्तु ईश्वरको धन्यवाद है, कि आपने आकर मुझे जगा दिया और उस कष्टसे बचा लिया।"

सीमवर्गके मार्क्विसने कहा,—"कितनेही लोगोंका कथन है, कि स्वप्न चिन्तावलीके समान आया करते हैं और कितनोंका यह भी मत है, कि स्वप्न बिना आधारके नहीं होता। जो बात जाग्रत अवस्थामें कभी देखी सुनी नहीं गयी, वह स्वप्नमें भी नहीं दिखायी दे सकती; परन्तु यह तो निश्चित है, कि प्रोतलकी मूर्त्तिके विरुद्ध आपने कोई काम न किया होगा और आप उनकी एक प्रधान सेविकाओंमें हैं। इसके अतिरिक्त आपका राजधानीसे इतना शीघ्र आनेका कारण सिवा इसके दूसरा नहीं हो सकता, जो मुझे पहलेसे ही मालूम है, अर्थात् जिसका मैं अनुमान कर रहा हूं।"

बेरोनेस बोली,—"प्रिय मार्क्विस! इसके आगे भी मुझे अभी बहुत कुछ कहना है और मुझे पूरी पूरी आशा है, कि आप अवश्य ही उसमें मेरा साथ देंगे।"

बेरोनेसकी ये बात सुन मार्क्विस बहुत ही डरा और घबड़ाकर

बोला,—"बैरोनेस! बैरोनेस! मैं आपसे प्रार्थना करता हूं, कि आप मुझे सब बातें साफ साफ बता दीजिये?"

मार्क्विसको इस तरह घबड़ाये हुए देखकर बैरोनेस बोली,—"आप इतना डरते क्यों हैं? कौनसी ऐसी घटना घटी है, जिससे आप इतना घबड़ा रहे हैं। ओह! मैं समझ गयी। ड्यूक-अल्टन रानीके प्रतिनिधि चुने गये हैं। यह बात आपको अच्छी नहीं लगी।"

सोमवर्गके मार्क्विसने कहा,—"हां, अवश्य मुझे इस बातका दुःख हुआ है, कि तुमने भी मेरे प्रतिद्वन्दी की 'जय' जी खोलकर मनाई है।"

बैरोनेस बोली,—"छल करनेके लिये जवान मोठी बनानेकी प्रधान आवश्यकता है। अतः इतनेसे ही तुम मेरा अभिप्राय समझ गये होगे।"

इतना कह बैरोनेस बड़े ध्यानसे मार्क्विस की ओर देखने लगी।

मार्क्विस बोला,—"क्या कहा, छल! क्या इसका वही अर्थ है, जो मैं समझ रहा हूं, अथवा मेरे सुननेमें कुछ भूल हुई है?"

बैरोनेस बोली,—"नहीं, आपको समझमें कुछ भूल नहीं हुई। इस समय पादड़ी तथा अल्टनके ड्यूकसे बदला लेनेका हमें अच्छा अवसर मिला है।"

मार्क्विस बोला,—"कुमारीके नामपर जरा स्पष्ट शब्दोंमें कहो। तुम देखती हो, कि सन्देहके कारण मेरी कैसी अवस्था हो रही है और मेरा चित्त किस तरह संकटमें पड़ा है। हां, मैं उस घमण्डी ड्यूकसे बदला अवश्य ही लिया चाहता हूं। बताओ, शीघ्र बताओ, कि उस दुराचारी ड्यूकको मैं किस तरह नीचा दिखा सकता हूं, जो इस समय खुशीसे जामेके बाहर हो रहा है, तुम जानती हो, कि कानूनन मैं रानीके अधिकारियोंमें ही हूं। तुम उपाय शीघ्र बताओ,

उसी कार्यमें परिणत करना मेरे आधीन है और मैं इसमें एक भर भी विलम्ब न करूंगा।"

वेरोनिस उसी तरह कोमलतासे मार्किसकी ओर देखती हुई बोली —"तब आप यही समझ सकती हैं, कि मैंने जान-जिटकाकी गुप्त सन्धि कर ली है।"

मार्किस आश्चर्यसे बोला,—"जिटकाकी सन्धि! यह कैसे हो सकता है। मालूम होता है, तुम्हारी बुद्धि अभी तक ठिकाने नहीं हुई और इसी वजहसे जो समझमें आता है, वह बोलती हो।"

वेरोनिसने हंसकर कहा,—"न तो मेरी बुद्धि ही मारी गयी है और न मैं कमाय ग्रमाय ही बक रही हूं। इसके अतिरिक्त अब मैं स्वप्न भी नहीं देख रही हूं। यह सच है, कि बहुत थकावटके कारण मैं एकदम पड़ रही और तुरन्त ही मुझे गहरी नींद भी आ गयी। आपको स्मरण होगा, कि यहां आनेके लिये मैंने आपको यही समय बताया था; परन्तु इससे आप ऐसा न समझें, कि मैं जरूरी बातोंको घटा रही हूं अथवा जो उपाय मैंने सोचे हैं, उनमें कुछ भी कमी कर रही हूं।"

मार्किस बोला,—फिर वह उपाय क्या है?"

वेरोनिस बोली,—"मैं सब बातें साफ साफ बताती हूं। बहुतसे दूतोंसे मुझे पता लगा है, कि सरदार-जिटका की शक्ति हम लोगों-की शक्ति से कहीं बढ़ी चढ़ी है। अभी प्रेगमें सरदारने अपनी शक्ति की परीक्षा की थी, उस समय स्पष्ट मालूम हुआ, कि समस्त प्रजा उसकी ओर ही है। हम लोगोंके दलमें बड़े आदमी और अमीरोंके अतिरिक्त कोई सहायक नहीं है। समस्त प्रजा जिटकाकी सहायतामें अपना प्राण तक देनेको तय्यार है। ये बातें देखकर अपनी तथा आपकी रक्षा

पास जाकर उससे मिली और बहुत देर तक उससे बातें करती रही। अन्तमें दोनों ओरकी शर्तें ठीककर मैं वहांसे चली आयी।"

मार्किसने कहा,—"और वे शर्तें क्या हैं?"

बेरोनेस बोली,—"सुनो, जान-जिटकासे मैंने चार शर्तोंकी मजूरी मांगी थी। पहली शर्त यह है, कि मेरे महलमें कोई पहरा न बैठाया जाय। दूसरी यह, कि मैं आजके समान ही अपनी समस्त सम्पत्तिकी अधिकारिणी बनी रहूं। तीसरी शर्त मैंने यह की है, कि इतने दिनों तक जो कुछ अपराध अथवा भूल चूक हुई हो, उसे वह क्षमा कर दे और चौथी शर्त यह है, कि एक और मनुष्यके विषयमें भी ये शर्तें मानी जायें, जिसका नाम मैं पीछे बताऊंगी।"

इतना सुनते ही मार्किसने मुस्कराकर कहा,—"और शायद वह शख्स मैं ही हूं।"

बेरोनेस बोली,—"हां, ऐसी ही बात है। अब यह बताइये, कि इन विषयोंमें आपकी क्या सम्मति है?"

मार्किसने कहा,—"तुम जानती ही हो, कि जिटकासे युद्ध जरूर होगा। यदि युद्धमें शरीफोंकी विजय हुई तब तो ये सब शर्तें वृथा हैं और यदि विजय नहीं हुई तो यह निश्चय है, कि इस युद्धमें हम दोनोंमेंसे कोई न कोई अवश्य ही मारा जायगा।"

बेरोनेस बोली,—"शरीफोंका दल पहले ही हार जायगा; क्योंकि जो उपाय मैंने विचारे हैं, उनके पूर्ण होनेपर शरीफोंके हाथकी कुंजी ही निकल जायगी। सचेपमें मैं तुमसे इतना कह देना चाहती हूं, कि कुमारी एलीजाबेथ और उसका खजाना मैं सरदार-जिटकाके हवाले किया चाहती हूं।"

यह सुन अपनी जगहसे उछलकर मार्किसने कहा,—"ओह! यह तो बड़ी भयानक बात है?"

बेरोनेस बोली,—"थोड़ी देर तक स्थिर होकर विचार कीजिये, कि यदि टेरोराइट दल वालोंको ही जीत हुई, और इसमें कोई सन्देह नहीं, कि उनकी विजय अवश्य होगी, तब उस समय हम लोगोंकी क्या दशा होगी? हम लोगोंको जन्मभूमि त्याग अन्यत्र भागना पड़ेगा, धन, रत्न, जमीदारी, मकान सब छिन जायगा और भीख मांगनेकी नौबत आ पड़ेगी।"

मार्किसने उस कमरेमें टहलते हुए कहा,—"हां हां, मैं सब समझता और डरता भी हूं। परन्तु बातें बड़ी ही भयानक हैं।"

बेरोनेस बोली,—"तब क्या तुम बदला नहीं लिया चाहते?"

मार्किस एकाएक बोल उठा,—"बदला! आह! तुमने फिर वही भयानक बात मुझे याद दिलाई, जो मेरा कलेजा मसोस रही है। हां, बदला लेनेकी तो मेरी प्रबल इच्छा है; क्योंकि चूकने मेरा बड़ा अपमान किया है। अच्छा, तुम्हारी इच्छानुसार ही सब काम होंगे। लो, मैं भी तय्यार हूं। आजसे इस अधम कार्यमें मैं भी तुम्हारा साथी हुआ। अब मेरा आश्चर्य बिलकुल ही जाता रहा और निश्चय हो गया, कि तुम्हारे हृदयमें ये बातें छिपी रहनेके कारण ही तुमने वैसा भयानक स्वप्न देखा था। अच्छा, अब साफ साफ बताओ, अपने इरादेको कार्यमें परिणत करनेका तुमने कौनसा उपाय सोचा है?"

इतना कह मार्किस उसी पलङ्गपर बैठ गया, जिसपर बेरोनेस बैठी हुई थी।

बेरोनेस बोली,—"जो उपाय मैंने सोचा है, वह बहुत ही आसान है। रानीकी सब सहेलियां मेरी आज्ञा माननेवाली हैं। मेरे कथनके अनुसार वे रानीके साथ सहानुभूति प्रकट करेंगी और उन्हें भागनेमें सहायता देंगी। रानीकी आन्तरिक इच्छा आस्ट्रिया भाग जानेकी है और वे सहेलियां भी उन्हें बड़ी सम्मति देंगी। कुछ

पुरुषोंको ये सहेलियां अपने रहस्योंको बतानेके बहाने मोहित कर लेंगी और उन्हें रक्षक की पदवीसे प्रसन्न करेंगी। इस तरह वे लोग कुमारीको लौटाकर प्रेग ले जायेंगे और जिटकाके हवाले कर देंगे।"

मार्किसने कहा,—"यह उपाय तो ठीक है, लेकिन खजाना?"

बेरोनेसने कहा,—"जब उस खजानेको सफेद-महलसे हटानेका विचार किया गया था, तब यही स्थिर हुआ था, कि वह एक ताबूतमें बन्दकर महल के तहखानेमें रख दिया जाये।"

मार्किसने कहा,—"और ऐसा ही हुआ भी; क्योंकि यहां पहुंचते ही वह ताबूत तहखानेमें रख दिया गया, जो रास्तेभर मृतकके समान लाया गया था।"

बेरोनेस बोली,—"तब तो यह निश्चय है, कि खजाना यहांसे हटा देना कोई बड़ी बात नहीं है, क्योंकि पीतलकी मूर्तिके सेवकोंमें दस पीछे नौ मेरे ही भक्त हैं और उन्हें मैं जो कुछ कहूंगी, उसे वे बिना सोचे-विचारे चट पूरा कर देंगे।"

मार्किस बोला,—"तुम्हारा कहना ठीक है; परन्तु इसका क्या प्रमाण है, कि जान-जिटका इन शर्त्तों को अवश्य पूरा करेगा।"

बेरोनेस बोली,—"मुझे विश्वास है, क्योंकि वह एक भला आदमी है। इसके अतिरिक्त उसने अपने हाथसे लिखकर मुझे एक एकरार-नामा भी दे दिया है।"

मार्किस बोला,—"कहां है वह एकरारनामा, मुझे दिखाओ।"

बेरोनेस बोली,—"मेरी जाकिटमें छातीके ऊपर एक दुहरा जेब है, उसीमें वह प्रतिज्ञापत्र रखा हुआ है।"

इतना सुनते ही मार्किस अपने स्थानसे उठकर वहां गया, जहां बेरोनेसने कपड़े उतारकर रखे थे, और जाकिटके जेबोंको टटोलने लगा; पर लाख उद्योग करनेपर भी वह प्रतिज्ञापत्र न मिला।

यह बेरोनिसकी ओर देखकर, जो मार्किसकी ओरसे ऐसे चौंक उठी थी, वह बोला,—"मुझे तो यह कागज नहीं मिलता।"

"क्या नहीं मिलता है?" इतना कह बेरोनिस घबड़ाकर दौड़ती हुई स्वयंवरमें कपड़ोंके पास गयी और बहुत कुछ परिश्रम करनेपर भी जब वह कागज न मिला तो चिल्ला उठी,—"हाय! वह कागज खो गया। मेरा सर्वनाश हो गया। हाय! अब मैं क्या करूं? अब मैं गयी!"

इसके बाद वह पुआलके बल बैठ गयी और इतनी घबड़ा गयी, मानो उसका कालही उसके निकट आ गया हो।

मार्किस भी चित्रलिखितकी भांति खड़ा रह गया, उसके शरीरका रक्त एकदम जम गया और उसे ऐसा मालूम होने लगा, मानो अब मृत्युमें थोड़ा ही विलम्ब है।

इसके बाद कुछ क्षण तक दोनों एक दूसरेको देखते रहे; परन्तु किसीके मुंहसे कोई शब्द न निकला। अन्तमें दोनोंको अवस्थाने पलटा खाया और दोनोंही रोने लगे। कुछ क्षण बाद रोना भी बन्द हुआ और बेरोनिस हाथ मल मलकर चिल्लाने लगी,—"ओह! मैं गयी, मैं गयी, यदि मुझे इस बातका तनिक भी अनुमान होता, तो ऐसी विश्वास घातकताका काम कदापि न करती। अफसोस! उस समय मेरी बुद्धि कहां? चली गयी थी?"

मार्किस बोला,—"ओह; मैं भी तुम्हारी ही तरह मटियामेट हो गया; क्योंकि अब यह असम्भव है, कि लोग मुझे तुम्हारे षड्यन्त्रसे अलग समझें।"

बेरोनिस बोली,—"नहीं, नहीं, तुम बिल्कुल ही निर्दोष हो। ओह! मेरी अब क्या दशा होगी? भयसे मेरा शरीर थर थर कांप रहा है।"

मार्किस बोला,—"अब मिथ्या आशाओंमें मुझे भुलानेका उद्योग

न करो। अभी अभी तुमने कहा है, कि उस प्रतिज्ञा पत्रमें एक मनुष्य का और भी जिक्र है; क्या इस अवस्थामें मैंही वह मनुष्य न माना जाऊंगा? क्या इससे मेरी हानि न होगी? और क्या तुम समझती हो कि हम लोगोंकी कार्रवाई देखनेके लिये पहरा न बैठा दिया गया होगा? मेरा तो अनुमान है, कि वह कागज उन्हीं लोगोंके हाथ लगा है, जिन्हें हमलोगोंको सजा देनेका भी अधिकार है। यदि मेरा अनुमान सत्य है, तो क्या वे सब कानमें तेल डालकर चुपचाप बैठे होंगे? नहीं, नहीं, हमलोगोंकी सब बातें उन्हें मालूम हो गयी होंगी और उन लोगोंने इसका उचित प्रबन्ध भी कर लिया होगा। इसके अतिरिक्त तुम यह भी जान रखो कि तुम्हारा इतना शीघ्र राजधानीसे आना सभोंके चित्तमें खटक रहा है, इस अवस्थामें यदि वह कागज उनके हाथ लग गया होगा, तो वे क्या हम दोनोंको छोड़ देंगे?"

बैरोनेस बोली,—"ईश्वर न करे, कि मेरी मूर्खता, अदूरदर्शिता तथा पागलपनमें आप भी सम्मिलित समझे जायें। अच्छा, अब यह बताइये कि इस समय के बजे होंगे?"

मार्किस बोला,—"ग्यारह बजनेके समय मैं तुम्हारे कमरेमें आया था और बातें करनेमें कमसे कम दो घण्टेका समय व्यतीत हुआ होगा; परन्तु तुम यह सवाल क्यों करती हो?"

बैरोनेस बोली,—"जब मैं भोजनवाले कमरेसे बाहर निकली थी, उस समय दस नहीं बजे थे और तबतक वह कागज मेरी जेबमें ही था। मैं खयाल करती हूं कि जब मैं उस बराम्देमें से कमरेमें आ रही थी, उसी समय वह कहीं गिर गया?"

जैसे डूबता हुआ मनुष्य लकड़ीका सहारा पाकर प्रसन्न हो जाता है, उसी तरह उत्साहित होकर मार्किसने कहा,—"तब वह वहीं गिरा होगा और शायद अब भी वहीं पड़ा हो।"

इस निस्तार कामाधि मुक्तिकि ही बेरोनेस बोली,—"ईश्वर करे कि वह यहाँ पड़ा हो।"

अभी बेरोनेस कुछ बोल विचारमें ही थी, कि इतनेमें ही मार्किस आगज खोलनेके लिये दरवाजेकी ओर चला; परन्तु जब वह दरवाजेके पास पहुँचकर किवाड़ खोलने लगा तो बाहरसे बन्द रहनेके कारण वह किसी तरह भी खुल न सका।

"ओह! ईश्वरही रक्षा करे।" इतना कहकर घिघियाता हुआ वह अपनी छातीपर आ गिरा, जो अभी तक घुटनोंके बलही बैठी हुई थी और इस भयोन घटनासे बिल्कुल ही बदहवास हो गयी थी।"

फिर एकाएक बेरोनेस चिल्लाकर बोल उठी,—"अब भागो, भागो।" इतना कहकर वह आप भागी और कपड़े पहनने लगी।

मार्किस इतना सुनतेही खिड़कीकी ओर दौड़ गया; परन्तु चन्द्रमा की निर्मल चांदनीमें उस कमरेके पीछे एक चांदीके समान चमकीले जलसे भरा हुआ तालाब दिखायी दिया। अतः उस ओरसे भागनेकी आशा भी उस समय ही नष्ट हो गयी।"

"हमलोग गये, अब कोई उपाय नहीं है।" इतना कह विचारा मार्किस एक कुर्सीपर बैठ गया। उसके शरीरके रोम रोमसे ठण्डा पसीना निकलने लगा और उसका चेहरा एकदम पीला पड़ गया। वह जोरसे चिल्ला उठा,—"मौत! मौत! मौतही हमारे भाग्यमें बदी है। ओह! ईश्वर!! कैसी भयानक मौत!!!"

इसके बाद दोनों हाथोंसे अपना चेहरा छिपाकर वह बहुत देर तक चुपचाप बैठा रहा। बेरोनेस एमलिनने जल्दीमें किसी तरह उल्टा सीधा कपड़ा पहना। अभी वह कपड़े पहन मार्किसकी ओर घूमी ही थी, कि एकाएक दरवाजा खुल गया!

दरवाजा खुलतेही मार्किस अपने स्थानसे उछल पड़ा और तल-

बयासीवां परिच्छेद।

कुमारीका चुम्बन।

आज बैरोनेस-हेमलेनको यह पहला ही अवसर था, कि वह उस पीतलकी मूर्त्तिके सामने अपराधीकी तरह खडी की गयी थी। वह उस विचित्र मूर्त्तिके भयानक कार्य्यके विषयमें बहुत कुछ सुन चुकी थी; परन्तु उसे स्वपनमें भी यह गुमान न था, कि एक दिन उसे भी उसका शिकार बनना पडेगा।

उसने एक बार भयसे उस मूर्त्तिकी ओर अपनी दृष्टि डाली, जो कारीगरोंने अपनी समस्त शक्ति और बुद्धि खर्चकर बनायी थी। इसके बाद वह दुःखभरे स्वरमें बोली,—"अफसोस! यह मूर्त्ति जितनी ही सुन्दर है और इसे देखनेसे जो भक्ति उत्पन्न होती है, उसी तरह इसके पेटमें भयङ्कर कार्य्यके मसाले भी भरे हुए हैं। हा कुमारी! तेरा कोई दोष नहीं है। तेरे पवित्र नामको दुष्ट लोग वृथा ही कलुषित कर तेरे नामसे सैकडों अपकर्म्म करते और फिर भी लज्जित नहीं होते हैं।"

इतना कहकर बैरोनेसने अपने हाथ पैर इतने जोरसे फेंकने शुरू किये, कि उन जल्लादोंको कई कदम पीछे हट जाना पड़ा, परन्तु फिर उन लोगोंने बैरोनेसको बेकाबू कर दिया। जब बैरोनेसको उन तीनों से किसी प्रकारकी आशा न रही, तब वह बुड्ढे ह्यूबर्टकी ओर बडी करुण दृष्टिसे देखकर जोर जोरसे इस लिये रोने लगी, कि जिसमें दयामें पडकर वह उसकी रक्षा करे।

चिरागकी रोशनीमें ह्यूबर्टके चेहरेपर करुणाकी रेखा स्पष्ट मालूम हो रही थी, उसका चेहरा दया और घबड़ाहटसे क्षण क्षणमें

बदल रहा था। उसके होंठोंका हिलना देखकर, मालूम होता था, कि वह बैरोनेसको कुछ कहना चाहता है। बस इसी समय बन्दूक-फटन तथा बारूदोंके साथ साथ घोड़ोंका हाँफना भी वहाँ आ पहुंचा था और वह हिलते ही अपूर्व चुप रह गया था। नहीं तो सम्भव था, कि वह बैरोनेसका कोई उपकार कर सकता।

इसीमें ही पासके एक कमरेमें भारी घण्टी बज उठी, जिसकी आवाज उस कमरेमें गूंज गयी। इस आवाजके साथही साथ वह मूर्त्ति को हिलती हुई मालूम हुई और मूर्त्तिके भीतरसे एक प्रकारकी प्रतिध्वनि निकलने लगी।

अब उन डाकेंमारोंमें से एकने बैरोनेसको ओर देखकर कहा, —"लेडी! अब दो बार यह घण्टी और बजेगी और तीसरी बार तुम्हें इस संसारसे कूच कर जाना पड़ेगा।"

इसके पहले बैरोनेसके शरीरका खून इस तरह उबल रहा था, मानो उसे जोरका बुखार आता हो; परन्तु अब डाकेंमारोंकी बात सुन उसका उबलता हुआ खून एकदम ठण्डा पड़ गया, आँखोंकी रोशनी धीमी पड़ गयी और अत्यन्त घबड़ाहट तथा दुर्बलताके कारण उसकी बोली बन्द हो गयी।

कुछ क्षण बाद उसे फिर होश आया और कुछ आश्वासित होकर वह चुपचाप तीनोंकी ओर देखती हुई बोली,—"हे मेरे ईश्वर! मुझे छोड़ दो, मुझे छोड़ दो। मैं इतना शीघ्र मरनेके लिये तय्यार नहीं हूं, मुझे छोड़ दो।"

इसपरसे डाकेंमारोंने जिसने पहले बैरोनेससे बातकी थी कहा,—"हम ऐसा नहीं कर सकते; यदि ऐसा करेंगे भी तो आपको जान कदापि न बचेगी बल्कि साथ ही साथ हम लोगोंको भी अपने प्राणोंसे हाथ धोना पड़ेगा। आप यह न समझें, कि हम लोग आपसे

उन बुराइयोंका बदला ले रहे हैं, जो अति भयानक हैं और जिनका सुधार कदापि नहीं हो सकता। इस समय हम लोग जो कुछ कर रहे हैं, वह लाचारीसे और कर्त्तव्य समझकर ही कर रहे हैं।"

दूसरा भाई बोल उठा,—"ऐ अभागी औरत! हम तुझे उन बुराइयोंके लिये क्षमा करते हैं, जो तूने हमारे साथ की हैं, हा हम तुझे हृदयसे क्षमा करते हैं।"

इतनेमें ही तीसरा भाई भी कह उठा,—"यद्यपि आपका काम उन लोगोंके लिये बडाही भयानक हुआ है, जिन्होंने कभी मन, वचन या कार्यसे आपकी बुराई नहीं की, तथापि हम लोग आपको हृदयसे क्षमा करते हैं।"

यह बाते हो ही रही थीं; कि फिर घण्टी बजी और समस्त कमरा उसके थर्रानेकी आवाजसे गूंज उठा तथा ऐसा मालूम होने लगा, मानो पीतलकी मूर्त्ति, दीवार, मकान, तथा कमरे सभी उसकी भयानक आवाज सुनकर कांप रहे हैं।

कमरेमें फिर सन्नाटा छा गया; क्योंकि गोल कमरेमें मार्क्विस सोमवर्ग जोरसे तो नहीं, परन्तु धीरे धीरे गहरी प्रार्थना कर रहे थे और अल्टनका ड्यूक अपने प्रतिद्वन्दीकी यह दुर्दशा देख मनही मन फूला न समाता था। पीतलकी मूर्त्तिके सेवक उस अभागे मार्क्विसको चारों ओरसे घेरे हुए पत्थरकी मूर्त्तिकी तरह खडे थे। न तो उनके हाथ पैर हिलते थे और न मुंहसे किसी प्रकारका शब्द ही निकलता था। पादड़ी क्रूर दृष्टिसे बैरोनेस तथा मार्क्विसकी ओर देखता हुआ किवाड़का सहारा लिये खड़ा था। यही उस दलके लोगोंका दृश्य था, जिनकी प्रेतानी छाया चिरागकी धुंधली रोशनीमें दीवाल पर पड़ रही थी।

बैरोनेसकी दशा अब और भी खराब होने लगी, उसको इस समय

की दशाका वर्णन करना शक्तिसे बाहर है और केवल वही मनुष्य वर्णन कर सकता है, जो उसके हृदयके भीतर घुस सके। इस समय मेरी माता अपना माथा झुकाये चुपचाप बैठी हुई थी।

मुश्किल से तीसरी बार घण्टी बजी। इस अन्तिम घण्टीको आवाज कानमें पड़ते ही वह दृष्टि उठा ऊपरकी ओर देखने लगी। उसकी आकृतिसे ऐसा मालूम होता था, मानो कोई मुर्दा सर उठाकर कुछ देख रहा है। जिस तरह मृत्युके समय मनुष्य बिल्कुलही बेहोश हो जाता है, उसके कान चलने लगते हैं, आंखें बन्द हो जाती हैं और चेहरे पर बिल्कुल ही जर्दी छा जाती है, परन्तु जब मृत्युका समय खूब निकट आ जाता है, तब एकाएक उसे कुछ सञ्ज्ञा हो आती है और वह भयानक आंख खोल इधर उधर देखने लगता है, ठीक वही दशा बेरोनिस-डिमेनकी हो रही थी। उसकी आंखोंपर आलोका पर्दा पड़ गया था और बहुत कुछ उद्योग करनेपर भी वह कुछ बोल नहीं सकती थी। इसके बाद ऐसी ही ऐसी बेरोनेसकी पलक गिरी और वह एकदम बेहोश हो गयी।

उसकी यह दशा देख पादरीने चिल्लाकर कहा,—"इसे दवा पिलाओ; क्योंकि ऐसी अवस्थामें बलिदान देनेका नियम नहीं है। अपराधीको होशमें रहकर सब कष्ट अनुभव करना चाहिये।"

लाचार हो उन्हों तीनों जल्लादोंमें से एकने बेरोनेसके मुंहमें एक प्रकारकी तेज दवा डाल दी जिसके साथ ही वह अभागिनी सब प्रकारकी यातनाओंको सहन करनेके लिये होशमें आ गयी।

अभी मुश्किलसे उसने आंखें खोलकर चारों ओर देखा था, कि तीनों जल्लाद उसे पकड़कर पीतलकी मूर्त्तिका चुम्बन करानेके लिये उसे मूर्त्तिके पास ले गये।

आह! इसके बाद मनुष्यकी वही दशा होती है, जब समस्त शरीर

उन बुराइयोंका बदला ले रहे हैं, जो अति भयानक हैं और जिनका सुधार कदापि नहीं हो सकता। इस समय हम लोग जो कुछ कर रहे हैं, वह लाचारीसे और कर्त्तव्य समझकर ही कर रहे हैं।"

दूसरा भाई बोल उठा,—"ऐ अभागी औरत! हम तुझे उन बुराइयोंके लिये क्षमा करते हैं, जो तूने हमारे साथ की हैं, हा हम तुझे हृदयसे क्षमा करते हैं।"

इतनेमें ही तीसरा भाई भी कह उठा,—"यद्यपि आपका काम उन लोगोंके लिये बड़ाही भयानक हुआ है, जिन्होंने कभी मन, वचन या कार्यसे आपकी बुराई नहीं की, तथापि हम लोग आपको हृदयसे क्षमा करते हैं।"

यह बाते हो ही रही थीं, कि फिर घण्टी बजी और समस्त कमरा उसके थर्रानेकी आवाजसे गूंज उठा तथा ऐसा मालूम होने लगा, मानो पीतलकी मूर्त्ति, दीवार, मकान, तथा कमरे सभी उसकी भयानक आवाज सुनकर कांप रहे हैं।

कमरेमे फिर सन्नाटा छा गया, क्योंकि गोल कमरेमें मार्क्विस सोमवर्ग जोरसे तो नहीं, परन्तु धीरे धीरे गहरी प्रार्थना कर रहे थे और अल्टनका ड्यूक अपने प्रतिद्वन्दीकी यह दुर्दशा देख मनही मन फूला न समाता था। पीतलकी मूर्त्तिके सेवक उस अभागे मार्क्विसको चारों ओरसे घेरे हुए पत्थरकी मूर्त्तिकी तरह खड़े थे। न तो उनके हाथ पैर हिलते थे और न मुंहसे किसी प्रकारका शब्द ही निकलता था। पादड़ी क्रूर दृष्टिसे बेरोनेस तथा मार्क्विसकी ओर देखता हुआ किवाड़ का सहारा लिये खड़ा था। यही उस दलके लोगोंका दृश्य था, जिनकी भैतानी छाया चिरागकी धुंधली रोशनी में दीवाल पर पड़ रही थी।

बेरोनेसकी दशा अब और भी खराब होने लगी, उसकी इस समय

पाठकोंको स्मरण होगा, कि सर अर्नेस्ट डी कोमरके दोनों पैज स्टानिस और कोमार्ड उस सफेद स्त्रीके साथ कल पूर्णवाले कमरेमें घुसना ही चाहते थे, कि उन्हें घण्टीकी भयानक आवाज सुन पड़ी।

ओह! यह सफेद स्त्री उस घण्टीकी आवाजसे भलीभांति परिचित थी। यह आवाज उसके कानोंमें पड़ते ही भय, घबड़ाहट और चिन्ताने उस पर इस तरह अपना अधिकार जमा लिया और वह एकाएक इतनी कमजोर हो गयी, कि जमीन पर गिरा ही चाहती थी, कि स्टानिसने उसके हाथका सिरा ले लिया और कोमार्डने उसे अपने हाथके सहारे गिरनेसे बचा लिया।

उस सफेद स्त्रीका घूम मानो इस समय ठण्डा हो गया और उसके चेहरे पर भयानक घबड़ाहट छा गयी। उसने कुछ बोलनेका उद्योग भी किया परन्तु भीम भक्कड़ आनेके कारण बोल न सकी। उस सफेद स्त्रीकी यह अवस्था देख, दोनों पैज आपसमें एक दूसरेकी ओर देखने लगे।

अब दूसरी बार फिर घण्टी बजी, साथही कल पूर्णके चलने की आवाजने उस ध्यानको गुंजा दिया और जिसके बाद ही उन दोनों नवयुवकोंके हृदयमें एक विचार उत्पन्न हो गया तथा उस सफेद स्त्रीके घबरानेका कारण भी उनकी समझमें आने लगा।

एकाएक अपने विचारसे चौंककर उस सफेद स्त्रीने कहा,—"ओह! भागो, भागो, एक दम पीछे भागो।"

इतना कह स्टानिसके हाथसे लम्प छीन वह वहांसे भागना ही चाहती थी; परन्तु उन दोनों नवयुवकोंकी डरी हुई अवस्था, घबड़ाहट और शंका देख, उसे लाचार हो रुककर फिर दुबारा उन्हें भागनेके लिये कहना पड़ा।

परन्तु उन दोनोंकी अवस्था इस समय ऐसी न थी

में ठण्डक पहुंच जाती है, मानो मौत अपना बर्फीला हाथ समस्त शरीर पर फेर देती है। बैरोनेसकी नसनसमें खून जम गया। हड्डियों के जोड़ खिचने लगे और उसे मानो लकवा मार गया।

ज्यों ही उस चिल्लाती कांपती और घबड़ाती हुई बैरोनेसको वे जल्लाद मूर्त्तिके पास ले जाने लगे, त्यों ही ऐसा मालूम हुआ मानो उस मूर्त्तिमें जान आ गयी है, क्योंकि उसके वे दोनों हाथ जो छातीपर चिपके हुएसे मालूम होते थे, अब एकाएक खुलकर अपराधीको गले लगानेके लिये आगे बढ़ आये और किंवाड़के पल्लेकी भांति मूर्त्तिका अगला भाग खुल गया।

परन्तु ओह! उस मूर्त्तिके भीतरके कल पुर्जों पर दृष्टि पड़ते ही बैरोनेसकी क्या अवस्था हुई होगी, जब उसने देखा होगा; कि उस मूर्त्तिके भीतरकी कलोंमें दो बड़ी बड़ी नुकीली कीलें इस ढगसे जड़ी हुई हैं, कि वे सीधी अपराधीकी आखोंमें चुभ जायगी और इसके अतिरिक्त सैकड़ों ऐसी ऐसी नुकीली कीलें उस मूर्त्तिके भीतरी भागमें और भी जड़ी हैं, जिनसे मनुष्यका समूचा शरीर छिद्रमय हो जायगा।

वह विचित्र घण्टी तीसरी बार बजनेके बादसे अबतक बराबर बज रही थी और उसकी भयानक आवाज उस तहखानेके प्रत्येक भागको हिला रही थी।

इसी समय जब कि घण्टी इस भयानकतासे बज रही थी, तीनों स्वर्णमाइयोंने बैरोनेसको उस मूर्त्तिके भीतर ढकेल दिया। इसके बाद मूर्त्तिका अगला भाग फिर ज्योंका त्यों बन्द हो गया और उसके दोनों हाथ छातीपर चिपक गये। उस मूर्त्तिके भीतरसे अभागी बैरोनेसके चीखने-चिल्लाने और कराहनेकी आवाज निकलकर घण्टीकी आवाजमें मिलने लगी।

छुरियां उसके वक्ष प्रदेशमें सैकड़ों छिद्र कर चुकी थीं। वह सब कुछ हो गया था; परन्तु वह अभी जीवित थी।

परन्तु इसके कुछ ही पल बाद उस मिशीनका, जो पीतलकी मूर्त्ति-के भीतर बनी थी, पिछला दरवाजा आपही आप खुल गया, अथवा यों समझना चाहिये, कि कल पुर्जों को चालने उसे खोल दिया। आह! दरवाजा खुलतेही बेरोनेस उस मूर्त्तिके भीतरसे उसके गोरे गात्र पर एकदम उस भयानक और अभी तक जिन्दा चरखियों पर गिर पड़ी, जो उसको चीर डालनेके लिये मुंह फाड़े तय्यार थीं!

वह तब तक जीवित थी; जब तक इस तरह चरखियोंपर आ गिरी थी; परन्तु उसका चीखना-चिल्लाना क्रमशः कम हो रहा था। उसकी दोनों आंखें फट गयी थीं, सारा शरीर जख्मों और खूनसे लथ-पथ हो रहा था, इसी अवस्थामें वह उन चरखियों पर गिरी थी।

उसके गिरते ही उन बड़ी चरखियोंने अपना काम आरम्भ कर दिया और उनकी तीखी छुरियां बेरोनेसके अंग अंगको काटने लगीं। बेरोनेसका भार पड़ते ही चरखियां जोर जोरसे घूमने लगीं।

अभागी स्त्री उन तीखी छुरियोंपर ही गिरी थी और वहां एक निमेष मात्र वह बिंधी हुई पड़ी रही परन्तु दूसरे ही क्षण, जैसा कि अभी अभी हम कह आये हैं, वे चरखियां घूमने लगीं। उनमें लगी हुई छुरियां उसके शरीरके प्रत्येक भागको काटने, चीरने तथा फाड़ने लगीं। ओह! सचमुच ही वे उसे टुकड़े टुकड़े करने लगीं। इस तरह जिस समय वह चरखी पहली बार घूमी, उसी समय अभागी बेरोनेसका ज्ञान लोप हो गया, उसकी जान निकल गयी और उसकी आत्मा सदाके लिये इस असार संसारको त्याग कर परलोक सिधार गयी।

परन्तु इससे क्या? उन भयानक चरखियोंने अपना
किया। बराबर काटती, चीरती और बेधती हुई घूमती

बात सुन पड़ती। उन्होंने न कुछ सुना, न उस सफेद स्त्रीकी ओर देख और न उसे याद ही किया। उनके सब विचार, समस्त बुद्धि और सब बात उस समय उस घण्टीकी आवाज और उसके बजनेके शब्द लोप कर दिये थे। वे पत्थरकी मूर्त्तिकी भांति, जिसमें कोई शक्ति नहीं रहती, और जिसे किसी प्रकारका आत्मज्ञान नहीं रहता चुपचाप खड़े थे। न वे हिलते थे, न उनके मुंहसे किसी प्रकारका शब्द ही निकलता था और न किसीको आवाज ही सुन सकते थे, तथा न उन्हें सफेद स्त्रीके हाथका स्पर्श ही अनुभव होता था, जो उन्हें खींचकर ले जानेके लिये उनके हाथपर हाथ रखे खड़ी थी।

हां, उनकी ठीक ऐसी ही अवस्था थी, जब वह डरी हुई निराश स्त्री उन्हें उस स्थानसे दूर भगा ले जाया चाहती थी। ठीक इसी समय वह घण्टी तीसरी बार बज उठी।

इस बार आवाज सुनते ही वह स्त्री दीवारपर ढलक पड़ी। उसकी समस्त शक्ति और साहस लोप होने लगा, उसका आत्मज्ञान खो गया और वह अपने आपेमें न रह सकी; परन्तु अब भी किसी मेशीन की थालके समान वह लम्प अपने हाथमें थामें रही।

इसके बादही अभागी बैरोनेसके चीखने-चिल्लानेकी आवाज उनके कानोंमें पड़ी और अब उन्हें निश्चय हो गया, कि आज पीतलकी मूर्त्तिका कोई शिकार पकड़ा गया है और यह बलिदान पड़ने वाली कोई स्त्री है।

इस समय घण्टी बराबर जोरसे बज रही थी, साथ ही बैरोनेसके चीखने-चिल्लानेकी आवाज इतनी भयानक होती जाती थी, कि उसका सुनना कठिन हो रहा था, क्योंकि अब वह पीतलकी मूर्त्तिके भीतर

दिनोंसे केवल एक एकदम दुर्बल और पीली हो जाती थी और यही कारण था, कि जब घण्टीकी आवाज उनके कानोंमें पड़ी तब वह काठकी प्रतिमाकी भांति दीवारके सहारे दुःखित हृदय और म्लान वदनमें खड़ी रह गयी।

और लार्ड तथा कोनार्ड, वे इस दृश्यको देखकर स्तम्भित हो गये थे। उनका दीर्घश्वास भयसे लोप हो गया था और उनकी आंखें उस कैदीपर गड़ गयी थीं।

अब घण्टी फिर बज उठी। इस घण्टीके आवाज सुनते ही वह सैंडी चिल्ला उठी,—"ओह! अभी कोई शिकार बलिदानके लिये और भी बाकी है।"

ओह! अब एक पलके लिये भी वे दोनों वेत्र उस स्थान पर खड़े न रहकर एकदम भागे। भागो हुआ बनकर उस घण्टीने उनके मृत-वत् शरीरमें आग डाल दी और दूर दूर, बहुत दूरके तहखानेमें, उस कक्ष-पुञ्जों बाकि कमरेसे अतिशय दूर वे अपनेको छिपानेके लिये भाग गये।

इतना करने पर भी उनके कानोंमें उस घण्टीकी आवाज पहुंचती ही रही जो मार्किस आफ सोमवर्गके बलिदानके समय बजायी गयी थी। सोमवर्गके मार्किसने बहादुरोंके समान अपनेको पीतलकी मूर्त्तिके हवाले किया और इस तरह उस भयानक रात्रिमें दो शिकार पीतलकी मूर्त्तिके आगे बलिदान चढ़ाये गये।

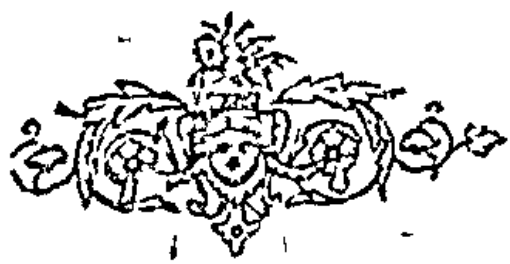

शरीरके मांसका बड़ा बड़ा लोंदा कर कर उसके नीचे वाली छोटी चर्खियोंपर गिरता गया और अब सब चर्खियोंने चलकर उसके शरीरको छोटे छोटे बहुतसे मांस-खण्डोंमें परिणत कर दिया। इसके बाद जब समस्त शरीरके छोटे छोटे टुकड़े हो गये, तब सब मांस नीचे झरनेमें गिर गया और पानीकी तेज धारने उसे बहाकर बेरोनेसका निशान तक मिटा दिया।

पीतलकी मूर्त्तिका यही बलिदान हुआ और इसी प्रकारकी सजाका नाम "कुमारी-चुम्बन" रखा गया था।

अब घण्टी बजनी बन्द हो गयी थी, पीतलकी मूर्त्तिसे सम्बन्ध रखने वाला दरवाजा बन्द हो गया था। चर्खियों वाले कमरेके नीचे बहने वाले झरनेका वह जल जो कुछ क्षण पहले, रक्तसे लाल हो रहा था, अब स्वच्छ हो गया तथा वे भयानक चर्खियां अब पीछेकी ओर धीरे धीरे इस तरह घूमने लगीं; मानो वे उन चरखियोंको फिरसे चरखेमें लपेट रही हों, जो कुछ देरमें खुल गयी थीं।

परन्तु उस सफेद स्त्री और उन दोनों पेजोंकी यह दृश्य देखकर क्या अवस्था हुई?

ओह! मनुष्यकी भाषामें उस भयानक दुःख और कष्टको वर्णन करनेकी शक्ति नहीं है, जो उनके हृदयमें पहुंचा था।

यद्यपि सफेद स्त्री आज बीस वर्षसे इन भयानक काण्डोंसे परिचित थी और यद्यपि उसने उन दोनों पेजोंसे कहा था, कि कितने ही मनुष्योंका यहां बलिदान हो चुका है और वह सबको नहीं बचा सकी है; परन्तु अभीतक उसने स्वयम् अपनी आंखों यह काण्ड नहीं देखा था और केवल सुना सुनाया भयही उसे मृतवत बनाये हुए था।

परन्तु अब एकाएक समयने उस भयानक काण्डको देखनेके लिये उसे उस कल-पुर्जे वाले कमरेमें पहुंचा दिया था, जिसके बारेमें बहुत

दिनोंसे केवल सुन सुनकर ही गई दुर्बल और पीली पड़ी जाती थी और यही कारण था, कि अब घण्टीकी आवाज उनके कानोंमें पड़ी तब वह काठकी प्रतिमाकी भांति दीवारके सहारे दुःखित हृदय और अज्ञान अवस्थामें खड़ी रह गयी।

और लार्ड तथा कोमाण्ड, वे इस दृश्यको देखकर स्तम्भित हो गये थे। उनका क्रोधावेश भयसे लोप हो गया था और उनकी आंखें उस मिट्टीमयर गड़ गयी थी।

अब घण्टी फिर बज उठी। इस घण्टीकी आवाज सुनते ही वह ढेढ़ी चिल्ला उठी,—"ओह! अभी कोई शिकार बलिदानके लिये और भी बाकी है।"

ओह! अब एक घण्टेके लिये भी वे दोनों वीर उस स्थान पर खड़े न रहकर एकदम भागे। सामने दुवारा बन्धकर उस घण्टीने उनके मृत-वत् शरीरोंको आस पास ही और दूर दूर, बहुत दूरके तहखानोंमें, उस फस-पुर्जों वाले कमरेसे अतिशय दूर वे अपनेको छिपानेके लिये भाग गये।

इतना करने पर भी उनके कानोंमें उस घण्टीकी आवाज पहुंचती ही रही जो मार्किस आफ सोमवर्गके बलिदानके समय बजायी गयी थी। सोमवर्गके मार्किसने बहादुरीके समान अपनेको पीतलकी मूर्त्तिके हवाले किया और इस तरह उस भयानक रात्रिमें दो शिकार पीतलकी मूर्त्तिके आगे बलिदान चढ़ाये गये।

तिरासीवां परिच्छेद ।

विवाहोत्सव ।

उस भयानक रात्रिके दूसरे दिन रातके नौ बजनेके समय अल्टन-महल का गिरजा रोशनीकी जगमगाहटसे चमक उठा। आज उसकी चहारदीवारीपर सुन्दर सुन्दर पताकायें लगायी गयी थीं, जिनपर बढ़ियासे बढ़िया काम किया हुआ था। बढ़िया मखमली पर्दे, जिनपर सुनहली कारचोपीका काम किया हुआ था, खिड़कियोंमें लगे थे और मोटा मखमली गलीचा सभी कमरोंमें बिछा हुआ था। कुर्सियोंकी कतार बड़ी सुघड़ाईसे लगायी गयी थी और सभी कुर्सियोंपर लाल मखमली गद्दियां बिछी हुई थीं, जिनपर सुनहरी जरदोजीका काम बड़ी उत्तमतासे किया हुआ था। ये मखमली कुर्सियां स्त्रियोंके बैठनेके लिये थीं और उनके पीछे वैसी ही, बेगनी मखमल मढ़ी कुर्सियोंकी खूबसूरत कतार लगी थी।

गिर्जा बड़ी खूबसूरतीसे सजाया गया था। हजारों मोमबत्तियोंके झाड़ जल रहे थे और दीवारोंमें कतारकी कतार दीवालगीरें लग रही थीं। कमरेके बीचोबीच बीस बीस मोमबत्तियोंके दो फर्राशी झाड़ जल रहे थे, जिनकी तेज रोशनी उन जवाहरातोंपर, जो खूबसूरत लेडियोंकी टोपियों तथा गवनोंमें जड़े हुए थे, पड़कर अपूर्व मनोहर छटा दिखा रही थी। यह बड़ा ही सुन्दर दृश्य था; क्योंकि सभी पदार्थ भड़कीले, बहुमूल्य तथा चित्तको आकर्षण करने वाले थे।

ठीक बीचवाले दरवाजेके सामने की एक ऊंची चौकी पर दो तख्त लगाये गये थे, जो बेशकीमत जवाहरातोंकी चमकसे जगमगा रहे

थे। बढ़िया बढ़िया गोरोंके गमले, जिनमें रंगबिरंगे फूल लगे हुए थे, सामने टेबिलोंपर रखे थे। उनकी मन लुभाने वाली सुगन्धसे कमरा सुगन्धित हो रहा था।

अष्टम महलके सदर फाटक पर बोहेमियाका शाही झण्डा हाथमें लिये बहुतसे सिपाही कतार बांधे खड़े थे।

मेहमान लिये गये ठाट-बाटसे इधर उधर घूम रहे थे। बेश-कीमत जवाहरात उनके बेश, टोपी तथा पगोंपर शोभा दे रहे थे और मालूम होता था, कि आज बनावटी तथा असली सौन्दर्यने मिलकर अष्टम महलको सुन्दरताकी खान बना दिया है।

अमीर तथा कम मेहमान दरबारी पोशाक पहने हुए थे। यद्यपि कुछ मेहमानोंने जङ्गी पोशाकें भी पहन रखी थीं, जिससे मालूम होता था, कि समय पड़नेपर वे रानीके लिये प्राण तक देनेको तय्यार हैं, तथापि वे सभी रंगी पोशाकें भी अत्यन्त भड़कीली और चित्ताकर्षक थीं। इन मेहमानोंके पीछे सुन्दर सुन्दर वस्त्र आभूषण पहने पेज (छोकरे-नौकर) थे और जो लोग जङ्गी पोशाक पहने थे, उनके पेज भी उसी तरह जङ्गी पोशाक पहने तथा ढाल तलवार लगाये अपने मालिकोंके पीछे पीछे घूम रहे थे।

ठीक नौ बजते ही गिर्जेके कमरेका दरवाजा खोल दिया गया और पांच पादरियोंने उस कमरेमें प्रवेश किया। उनके पीछे पीछे चार नौजवान युवक थे, जो अपने हाथोंमें धूप दान लिये हुए थे, जिनमें बहुत ही सुगन्धित धूप जल रही थी। इन सभोंके साथ पादरी सोप्रियन था, जो सबके आगे आगे चल रहा था। जिस समय यह दल वेदीकी ओर चला, उसी समय बाजेवालोंने मधुर धार्मिक गीत बजाना आरम्भ किया, जिसकी आवाज गिर्जेभरमें गूंज उठी।

जब यह धर्म संगीत समाप्त हुआ, तब बाजा बजाने वालोंने

वीररसका गाना आरम्भ किया। पहले तो बजाने वालोंने रानी एलीजाबेथके अल्टन-महलमें आनेके लिये बधाई बजाई, फिर धीरे धीरे उस गीतने पलटा खाकर बोहेमियाको रानी बननेकी जय जयकार मनायी और इसके बाद रानीका प्रियपात्र बननेके लिये लार्ड रोडल्फ को बधाई दी गयी।

कुछ ही क्षण बाद गिर्जा मेहमानोंकी भीडसे खचाखच भर गया और सभी लोग प्रसन्नताके मारे उन्मत्तसे दिखायी देने लगे। इसी समय एकाएक ड्यूक-अल्टनने गिर्जामें घुसते हुए प्रसन्नतासे कहा,—"महारानी!"

बस इतना सुनते ही सब लेडिया अपनी अपनी कुर्सीसे उठ खडी हुईं, सभी शरीफ सम्मानके लिये आगे बढ आये और सिपाहियोंने अपनी अपनी सगीनें ऊंची उठा दीं। साथ ही बाजे वालोंने रानी एलीजाबेथकी अगवानीमें मधुर सगीत गाना आरम्भ किया।

परन्तु ओह! इतनी प्रसन्नताके बीच यह उदासी छटा कैसी छायी है? रोगीके समान पीली और कापती हुई चाल तथा डरे हुए चेहरेसे, मानो ये सुखकर पदार्थ उसके हृदयमें भयानक चोट पहुंचा रहे हों, रानी एलीजाबेथने गिर्जेमें प्रवेश किया।

वह इस समय एकदम सफेद वस्त्र पहने हुई थी और सुन्दर सुन्दर चार सहेलियां उसके साथ थीं। उन चारोंके पीछे पाच अन्य युवतियाथीं, जो सभी देखनेमें सुन्दर तथा एकसे एक भड़कीली पोशाक पहने हुई थीं।

उस तख्त की ओर, जो बायीं ओर रखा हुआ था, बढ़ते हुए रानी एलीजाबेथने पादड़ी, शरीफ तथा उन बहादुरोंके सम्मानका उत्तर दिया और इसके बाद अपनी जगह पर बैठते ही वह घोर चिन्तामें निमग्न हो गयी। मानो अपने सामनेके सब दृश्य और जिस कार्यके लिये वह यहां आयी थी, वह भी भूल गयी। उसकी यह अवस्था देख,

रानीका सम्मान करनेके बहाने पादरी सोविदनने उसके पास जाकर कुछ ऐसी बात उसके कानमें कही, जिसे सुनते ही वह एकबार चौंक उठी और साथ ही अपनी दशा सुधारनेका उद्योग करने लगी।

एलीजाबेथके बैठनेके कुछ ही क्षण बाद लार्ड रोडस्फने गिर्जेमें पैर रखा। वह बहुत ही लड़कोंकी पोशाक पहने हुए था और दो दरोग़ उसके दोनों ओर तथा छः पेज उसके पीछे पीछे चल रहे थे। जिस समय वह गिर्जेके भीतर आया उस समय समस्त पादरी, बिशपों तथा अमीरोंने उसके सम्मानके लिये अपना अपना माथा झुका दिया और अपना इतना सम्मान देख, उसकी आँखें बिजलीकी तरह चमक उठीं। इसके बाद वह सीधा रानीकी कुर्सीके सामने आकर घुटनोंके बल बैठ गया और रानीके उस हाथको चूमने लगा, जो उसने एक चलकी मूर्तिके समान आगे बढ़ा दिया था।

अब रानी एलीजाबेथ अपनी कुर्सीसे उठ खड़ी हुई और रोडस्फ उसी हाथका सहारा दे वेदीकी ओर ले चला। रानीकी सहेलियाँ तथा रोडस्फके पेज भी उसके पीछे पीछे चले।

अब धार्मिक कार्य आरम्भ हुआ और वह रोमन कैथोलिकमतानुसार उतनी दूर तक पढ़ा गया, जब कि चिरस्थायी ग्रन्थि उन दोनोंमें पड़ी जाती थी थी, तथा जिस समय सबकी आँखें इस युगल जोड़ीकी ओर लगी हुई थीं और जब लार्ड रोडस्फ मन ही मन विचार रहा था, कि अब कुछ ही क्षण बाद वह बोहेमियाका राजा बना चाहता है, तथा जिस समय घटनाक्रमके प्रभावके कारण अभिमानी आँख फूला न समाता था, ठीक उसी समय, उसी क्षण एक ओरकी भयानक चिल्लाहट सभीके कानोंमें गूंज उठी।

यह चिल्लाहट किसी तहखानेसे आयी हुई मालूम होती थी। मालूम होता था, कि कब्रमें मुर्दे चिल्ला रहे हैं।

इसी समय लाल रंगकी आगकी एक भयानक ज्वाला वेदीके पीछेसे फूट निकली और वह धीरे धीरे समस्त गिर्जेमें फैल गयी। जब उस विचित्र अग्निकी शिखाको सभी लोग आश्चर्यसे देख रहे थे, ठीक उसी समय एक स्त्रीकी सूरत उस लाल आगमें दिखायी दी।

आगका रंग लाल रहने पर भी यह स्पष्ट मालूम हो रहा था, कि उस स्त्रीका चेहरा मुर्देके समान सफेद हो रहा है, और जो वस्त्र उसके शरीर पर हैं, वे ठीक उस मनुष्यके समान ही हैं, जो इस संसारसे विदा होते समय मनुष्यको पहनाये जाते हैं।

ओह! उस स्त्रीको देखते ही सब लेडियां जोरसे चिल्ला उठीं और भय, विस्मय तथा घबड़ाहटसे कुर्सीके नीचे ढुलक पड़ीं। और बहादुरोंने यद्यपि अपने हाथ तलवारकी मूठपर रख लिये तथापि एक कदम भी आगे बढ़ न सके और न अपना शस्त्र ही म्यानके बाहर खींच सके। यह दृश्य देखते ही रानी एलीजाबेथ एक बार कांपकर बेहोश हो गयी, लार्ड रोडल्फ भयसे पागल हो उठा और अल्टनका ड्यूक सरसे पाव तक इस तरह कांप उठा मानो उसे भयानक ज्वर चढ़ आया हो।

अब उस लाल आगके बीचसे ही उस स्त्रीने गम्भीर आवाजमें कहा,—"यह विवाह नहीं हो सकता। ईश्वर की आज्ञा नहीं है।"

यह आवाज सुनते ही अल्टनका ड्यूक पागलोंके समान चिल्ला उठा और घुटने टेक कर उसने अपने दोनों हाथ उस स्त्रीकी ओर फैला दिये, जो अभी तक उस लाल आगके बीचमें खड़ी थी। ड्यूक बड़ी ही भयावनी आवाजमें बोला,—"अर्नेस्टा! क्या यह तू ही है?"

इसके बाद कुछ विचित्र विचार मस्तिष्कमें उत्पन्न हो जानेके कारण अल्टनका ड्यूक घबड़ाकर मुंहके बल बेहोश हो भूमिपर गिर पड़ा।

इसके बादका दृश्य बड़ा ही भयानक था। क्योंकि अब वेदीके चारों

और साथ ही-साथ बड़ी आगे धुएँके बादल उमड़ते हुए दिखायी दिये तथा देखते ही देखते वह स्त्री-मूर्ति उनके बीचमें गायब हो गयी। यह मेहमानोंका दल, जो कुछ क्षण पहले विवाहोत्सवकी आनन्दमें झूमा सा मनाता था, अब भय, घबराहट तथा सन्देहसे आकुल हो गया। वे सभी एक बार दरवाजेकी ओर भागे। स्त्रियाँ चिल्लायीं, जिसकी ओर बोली हुई दरवाजेकी ओर दौड़ीं। पुरुष मेहमान तथा दूसरे, भला ऐसे हुए अपनी अपनी जान बचानेके लिये दरवाजेकी ओर दौड़ पड़े।

बड़ा भयानक कोलाहल मचा। कितनी ही स्त्रियाँ गिर पड़ीं और पुरुषोंके पैरोंके नीचे कुचल गयीं। उनको चिल्लाहटसे गिर्जाघर गूंज उठा तथा उनके बहुमूल्य आभूषण छिन्न भिन्न हो गये। लार्ड रोडल्फ, रानी तथा अपने पिताकी उसी अवस्थामें छोड़ सभीको धक्के देता हुआ किसी तरह गिर्जेसे बाहर भाग गया; क्योंकि उसने अपने पिताकी बातें सुन ली थीं और उसे विश्वास हो गया था, कि उसकी माताकी आत्मा उसे विवाह करनेसे लिये मना कर रही है।

कुछ ही क्षण बाद गिर्जेका वह भाग, जो कुछ ही देर पहले मेहमानोंकी भीड़से खचाखच भरा हुआ था, शून्य हो गया; परन्तु रानी एलीनोर अभी तक उसी अवस्थामें, उसी स्थानपर पड़ी हुई थी और उससे कुछ ही दूरीपर अल्टनका ड्यूक बेहोश होकर पड़ा था। उस स्त्रीके आविर्भावका इतना भय लोगोंके हृदयमें समा गया था, कि सदाका बहादुर, निर्भय और प्रत्युत्पन्नमति पादड़ी सीप्रियन भी उस स्थानको छोड़कर भाग गया। इसका कारण यह था, कि लार्ड रोडल्फकी तरह वह भी ड्यूक-अल्टनकी स्त्रीको क्रिस्टियन नामसे परिचित था और उसे भी विश्वास हो गया था, कि यह ड्यूककी स्त्रीकी आत्मा ही थी जो इस तरह इस विवाहमें बाधा पहुँचानेके लिये आ पहुँची थी।

जब उस गिर्जेमें भयके कारण एकदम सन्नाटा छा गया, तब एक मनुष्य-मूर्त्ति धीरे धीरे उस वेदीके पीछेसे निकली और उसने रानी एलीजाबेथके पास जाकर उसे मखमली गद्दीपरसे उठा लिया।

यह कोई दूसरा मनुष्य नहीं, बल्कि ड्यूक-अलटनका विश्वासी खानसामा ह्यूबर्ट था; परन्तु ज्योंही उसने रानीको उठाया त्यों ही उसके मुंहसे एक भयानक चीख निकल पड़ी और यह चीख बेहोश अलटनके कानोंमें पहुंचते ही उसे होश आ गया तथा वह आंखें फाड़ फाड़कर अपने चारों ओर देखने लगा।

कुछ देरतक इसी तरह देखनेके बाद वह उठ बैठा और घबराहटसे फिर चारों तरफ देखने लगा।

यद्यपि ड्यूकको विवाहोत्सवकी सत्यता तथा गत घटनाओंका स्मरण दिलानेके लिये गिर्जेमें अभीतक उसी प्रकार रोशनी जल रही थी, तथापि यह साबित करनेके लिये कि सत्य सत्य ही एक प्रकारकी लाल आग यहां भड़क उठी थी, गंधककी बदबू अभी तक आ रही थी। यह सब देखकर ड्यूककी पिछली बातें अच्छी तरह स्मरण होआयीं और वह किंकर्त्तव्यविमूढसा उसी जगह खड़ा रह गया।

यद्यपि गिर्जेमें भरपूर रोशनी हो रही थी; परन्तु पादरी, स्त्रियां, शरीफ तथा नौकर-चाकर सभी उस स्थान को छोड़ भाग गये थे और अलटनके ड्यूकको ऐसा मालूम होता था, कि वह अकेला ही वहां पड़ा है। यद्यपि वह एकदम अकेला न था और उससे कुछ ही दूरी पर एक बुड्ढा आदमी घुटने टेककर उस स्त्री की ओर झुका हुआ था, जो जिस तरह सफेद वस्त्र पहने हुए थी उसी तरह उसका चेहरा भी सफेद हो रहा था।

यह रानी थी—उसके लड़के लार्ड रोडल्फकी भावी पत्नी थी, जो

एकदम बोली पड़ गयी थी और अकस्मात्‌ भार्गिक खानसामा आ घटा था।

जब चारों ओरसे घूमती हुई कूक-कटकी दृष्टि उस खानसामा पर पड़ी, तब वह एकाएक सन्देहमें भरकर जोरसे बोल उठा,—"ऊ घटे! मेरे बन्धु! शीघ्र बताओ, रानीको क्या हुआ है?"

खानसामा, जिसके गालोंपर आंसुओंकी बड़ी बड़ी बूंदें झलक रही थीं, रोता हुआ बोला,—"मेरे मालिक! वह मर गयी! अफसोस! उसकी आत्मा अब इस संसारमें नहीं है!"

यह सुन अपना समस्त गर्व और अभिमान भूलकर एक डरे हुए बालकके समान कूक बोला,—"मर गयी! नहीं, ऊ घटे! ऐसा न कहो।"

ऊ घटेने गम्भीर शब्दोंमें कहा,—"हां, वह मर गयी।" इसके बाद वह मृत रानीका गर्दनके नीचेसे अपना हाथ बाहर निकाल, खड़ा हो, बड़ी ही दर्दनाक आवाजमें कहने लगा,—"आह! आज बोहेमियाके प्राचीन घरानेकी अन्तिम आशा उस खानमें विलुप्त हो गयी। जहांसे अब वह कभी निकल नहीं सकती। वह नौजवान सुन्दरी और उच्चवंश जात राज कन्या आज उस नींदमें सो गयी, जिस नींदसे उसे ईश्वरके अतिरिक्त और कोई जगा ही नहीं सकता। हां! अब उसके शोकसे मुर्झाये हुए गालोंपर आंसुओंकी बूंदें न दिखायी देंगी। अब किसी गुप्त भेदके सुननेके भयसे उसके कलेजेमें धड़कन न उत्पन्न होगी, अब उसके सिरपर न तो कभी शाही ताज रखा जायगा और न उसके कोमल हाथोंमें राज-दण्ड ही दिखायी देगा। अब सब समाप्त हो गया है। राज-घरानेका आज अन्त हो गया है और इस राजनन्दिनीकी मृत्युने हमलोगोंका समस्त सुख-स्वप्न सदाके लिये भङ्ग कर दिया है। अब इसके

अतिरिक्त और कुछ भी बाकी नहीं रह गया है, कि उसकी कब्रपर उसका यश-परिचय लिख दिया जाये, जो आज गत तीन दिनोंसे रानी कहला रही थी।

जिस समय ह्यूबर्ट अपने हृदयमें उत्पन्न हुए विचारोंको अपने पैरोंके पास पड़ी हुई रानीकी ओर देख देखकर इस तरह जोर जोरसे प्रकट कर रहा था, उस समय ह्यूक भय, विस्मय तथा शोकसे काठके पुतलेके समान अचल होकर उस ओर देख रहा था, जिस ओर उस स्त्री-मूर्त्तिका आविर्भाव हुआ था। इसीलिये वह ह्यूबर्ट की बातें न सुन सका, अथवा कानमें शब्द पड़ने पर भी उसका ध्यान उस ओर आकर्षित न हुआ। आज रातकी घटनाओंने उसके हृदयपर एकाएक जो आघात पहुंचाया था, सब मान, सम्मानका नाश कर जिस तरह उसने बनायनाया खेल चौपट कर दिया था और इस विचारने, कि उसके पुत्रके सिरसे शाही ताज ठीक उसी समय उतर आया, जब कि वह उसे पहनना ही चाहता था, इस भयानक घटनाके स्मरणने उसका दिमाग खराब कर दिया था, उसकी श्रवण शक्ति नाश हो गयी थी और सब घटनाओंने एकत्र होकर उस बहादुर, परन्तु नीच-हृदय ह्यूकके कलेजेको चूर चूर कर दिया था।

जो हो, जब यह समाचार अलटन-महलमें फैल गया, तब महल भरमें एक भारी आतङ्क छा गया और सभी मेहमान भय, निराशा तथा घबराहटसे इस विपदपर आलोचना करनेके साथ ही साथ किसी नये आतङ्कको भी आशा करने लगे।

अभी लोगोंपरसे यह आतङ्क दूर भी न हुआ था, कि दूसरे ही दिन जासूसोंने आकर समाचार दिया, कि जान-जिटका एक बड़ी सेनाके साथ प्रेगसे चल चुका है और दक्षिणकी ओर बढ़ता चला आता है।

चौरासीवां परिच्छेद ।

अल्टन महलपर आक्रमण ।

उस भयंकर घटनाके पीछे दिन, जो विवाहोत्सवमें हुई थी, अल्टन-महलके कुछ रक्षकोंने, जो बुर्जपर रहकर दूर दूर तक निरीक्षण किया करते थे, समाचार दिया, कि घुड़सवारोंकी एक बड़ी फौज महलकी ओर बढ़ती चली आती है। यह समाचार मिलते ही अल्टन-महलकी सेना तथा अन्य प्रजाओंको यह बता देनेके लिये कि टेवोराइट-सेना आ पहुंची है, अल्टन-महलसे एक तोप दाग दी गयी।

दोपहर होते न होते जिटकाकी सेना सामनेकी पहाड़ी पर आ पहुंची और अल्टन महलके वाम भागसे तीन मील की दूरी पर उसने अपना पड़ाव डाल दिया। टेवोराइट-दलके सभी खेमे सफेद कपड़ेके थे। खेमे खड़े हो जानेपर 'टेवोराइट' शब्द लिखा हुआ एक बड़ा झण्डा वहां गाड़ दिया गया।

इसके बाद संध्या होते होते यह प्रजा तंत्र चाहने वाली टेवोराइट सेना अल्टन महलके तीन ओर फैल गयी। अभी सूर्य भगवान् पश्चिम दिशामें अपनी विचित्र किरणें फैलाकर आकाशको लाल, हरे, नीले आदि रंगोंसे रंगने भी न पाये थे, कि जिटकाकी सेना श्रेणीबद्ध होकर अल्टन-महलकी ओर बढ़ने लगी। अल्टन-महलके सामने जिस मैदानमें नित्य सैकड़ों गायें चरा करती थीं, जहांकी वाटिकाओंमें सुन्दर सुन्दर नर नारी हाथमें हाथ मिलाये घूमा करते थे, वह सब स्थान जिटकाकी प्रचण्ड सेनासे परिपूर्ण हो गया और चारों दिशायें घोड़ेकी टाप तथा सिपाहियोंके शस्त्रोंकी आवाजसे गूंज उठीं।

सिपाहियोंके सिंहनाद, अस्त्रोंकी खनखनाहट, घोड़ोंकी हिन-हिनाहट और तोपकी गाड़ियोंकी गड़गड़ाहटसे कुछ ही क्षण बाद चारों दिशायें प्रतिध्वनित हो उठीं। सिपाहियोंकी नंगी तलवारें तथा फौजी वर्दियां अस्त होते हुए सूर्यकी किरणोंमें चमक उठीं। फौजी बाजोंसे सैनिक उत्साहित होने लगे और कुछ ही क्षणमें अल्टन महलको देख उनके चित्तमें इतना उत्साह भर आया, मानो शत्रु-दलको सामने पाते ही वे खाकमें मिला देंगे।

इन सैनिकोंके बीच बड़ी बड़ी तथा कितनीही ऐसी छोटी ध्वजायें भी थीं, जिनपर "टेवोर" "जिटका" "राज-तन्त्रकी मृत्यु" "राज-पक्षका नाश" "न गद्दी न मुकुट" "समान अधिकार—समान सम्पत्ति" आदि शब्द और छोटे छोटे वाक्य लिखे हुए थे।

इस सेनाके आगे आगे एक बड़े और अच्छे काले घोड़े पर बोहेमियाके प्रजा-तन्त्र-दलका सरदार कप्तान जेनरल जिटका बढ़ रहा था। यद्यपि उसकी एक आंख नष्ट हो गयी थी तथापि इस समय मारे जोशके उसकी आंखोंमें भी चमक आ गयी थी। जोशके कारण उसका चेहरा लाल हो रहा था और उसकी एक मात्र आंख सितारेकी तरह चमक रही थी। मारू बाजेके शब्द ज्यों ज्यों उसके कानमें पड़ते थे, त्यों त्यों उसके चेहरेकी रौनक बढ़ती जाती थी और जब कभी वह अपनी सेनाको कोई आज्ञा देता, तो उसी तरह उत्साह और आनन्दसे प्रत्येक सिपाही उसकी आज्ञाका पालन करनेको दौड़ पड़ता था। यह स्पष्ट मालूम होता था, कि सेना अपने सरदारको हृदयसे प्यार करती है।

टेवोराइट-सेनाको देखनेके लिये अल्टन-महलकी प्रत्येक अटारी, खिड़की और गुम्बदोंपर दर्शकोंकी भीड़ लगी हुई थी, लार्ड रोडल्फ जोशसे तड़प रहा था और मनही मन विचारता था, कि जिस समय

लिटकाको सेना कई भागोंमें विभक्त हो महलपर आक्रमण करेगी, उसी समय वह अपनी सेना ले उसपर टूट पड़ेगा और टेवीर सेनाको छिन्नभिन्नकर रसातलमें पहुंचा देगा। परन्तु उसके पिता अल्ट-कष्टमें, जो अपने पुत्रसे कहीं अधिक दूरदर्शी था, यही समझाया कि उसका ऐसा करना बराबर भूल है और लिटकाके लिये अपनी विपत्ति को दूर सेना एकत्र कर लेना बड़े लाभका खेल है। साथही साथ अल्टनके मुखसे अपने पुत्रके उत्साहकी बड़ी सराहना करते हुए यह भी कहा, कि महलकी रक्षा करना ही इस समय उसका कर्त्तव्य है। क्योंकि लिटका की सेना इस समय उत्साहसे भरी हुई है, एकाएक उसपर आक्रमण करनेसे हमलोगोंकी शक्ति कम हो जायगी और हार खानी पड़ेगी। यदि महलकी रक्षामें ही हमलोग प्रस्तुत रहेंगे तो थोड़ेही समयमें शत्रु घबड़ाकर लिटका लायेंगे और रसदकी कमी उन्हें भागनेके लिये बाध्य करेगी।

जब महल रक्षकोंकी ओरसे लिटकाकी सेनाको किसी प्रकारकी बाधा न पहुंची तब उसने महलको चारों ओरसे घेर लिया। अब सूर्य्यास्त हो गया था और सूर्य्यदेवकी अन्तिम किरणें एकबार टेवी-राइट सेनाके सफेद कमरोंपर गिरकर विलीन हो गयी थीं।

इस समय अन्धेरा हो जानेके कारण मशालें जलादी गयीं और उसकी तेज रोशनी लगनी पेड़ोंपर गिरकर भयानक दृश्य दिखाने लगी साथ ही टेवीराइट-फौजके लोगोंने स्वाधीनतासूचक मधुर संगीत बजाना प्रारम्भ कर दिया।

हां, अल्टन महलके पास इसी तरहकी संगीत ध्वनिकी लहरें उठने लगीं, जिन्हें सुन सुनकर टेवीराइट-दल उत्साहमें भरने लगा और उसकी हुंकारसे अल्टन-महलके अधिवासी व्याकुल होने लगे। सैनिकों की जयध्वनिसे आसपासके जीव-जन्तु भागने लगे, पक्षीगण वृक्षोंका

आश्रय छोड उड़ गये और उन वीरोंके शब्दोंकी प्रतिध्वनि इस तरह जंगलोंमें गूंजने लगी, मानो पेड़, पत्ते, मकान सभी थर्रा थर्रा कर उन वीरोंके उत्साहकी सराहना कर रहे हों।

इसी तरह समूची रात बीत गयी और सवेरा होतेही युद्धके बाजे फिर बजने लगे, साथ ही टेयोर-सेना उत्साहमें परिपूर्ण हो अल्टन-महलकी ओर दौड पडी।

अल्टनके ड्यूकने पहलेसे ही अगुआ न बनकर किलेकी रक्षा करना ही निश्चयकर लिया था, अत लाचारहो जिटका को ही आक्रमण आरम्भ करना पड़ा और उसके तोपखानेने अल्टन-महल पर गोले बरसाना आरम्भ कर दिया जिससे महलको बहुत ही हानि पहुंची। अल्टन-महलके सदर फाटकके आगे एक बडी नहर थी, जिसपर एक छोटा सा पुल बना हुआ था और इसी पुलको पारकर अल्टन-महलमें जाना पड़ता था। उस नहरने उन मकानोंको, जो अल्टन-महलके आगेकी ओर पडते थे, घेर कर ठीक एक टापूके समान बना रखा था अत आक्रमण करने वालोंके लिये उस भूमिपर अधिकार जमाना उतना ही आवश्यक था, जितना कि महलकी रक्षा करने वालोंके लिये उसकी रक्षा करना, क्योंकि इसके बाद ही महल पडता था। यह स्थान संकीर्ण रहनेके कारण रक्षकोंको उसकी रक्षा करनेमें बडी सुविधा थी और ड्यूक-अल्टनने उसकी रक्षाका जबर्दस्त इन्तजाम भी कर रखा था, अत शत्रुओंका उस भूमिपर पैर रखना सहज काम न था।

इधर सवेरा होतेही अल्टन-महलमें भी लड़ाईके बाजे बजने लगे थे और राजकीय झण्डे हवामें झोंका खाते हुए लहरा रहे थे। सैनिकोंके नालदार जूतोंकी आवाजें महलमें गूंज रही थीं और सारा महल युद्धके शब्दोंसे परिपूर्ण हो रहा था। उस महलमें अभी बहुतसी ऐसी स्त्रियां

यह झूठी मेरी जबानसे अधिक उस खोका हाल आपको बता सकेगी।

(पी० सू० नब्बे वा परिच्छेद)

तथा दुर्बल थे, जो विद्रोहीसमूहमें आये थे, इसलिये उनके साथ उनके परिवारवाले स्त्रियां भी थीं। जिटकाके एकाएक आ पहुंचनेके कारण उनके भयका पारापार न था और जब जब तोपोंका गरजना उनके कानोंमें पड़ता, तभी तब वे घबड़ाकर एक दूसरेसे चिपक जाती और अपनेको उस स्थानमें छिपानेका उद्योग करती, जहां वे भयंकर शब्द उनके कानोंमें न पड़ सकें।

लगातार तीन दिनों तक जिस तरह गोलाबारी उस टापूपर आक्रमण हुआ उसी तरह बहादुरी और दृढ़ताके उसकी रक्षा भी की गयी; परन्तु तीसरे दिन संध्याके समय टेरोराइट-विद्रोही आगेसे अधिक जी चोमकर लड़ते और और लगाते हुए दिखायी देने लगे। उन लोगोंने उस स्थानको लेनेके लिये मानवी शक्तिसे अधिक उद्योग करना प्रारम्भ कर दिया और उसका फल यह हुआ, कि उस छोटेसे स्थानमें भयानक हत्याकाण्ड मच गया। शस्त्रोंकी झनझनाहट, घोड़ोंके टापोंकी आवाज, तोपोंकी गरज, सिपाहियोंके सिंहनाद तथा मरने वालोंकी आहसे वह स्थान परिपूर्ण हो गया।

उस स्थानके पासही मङ्गलके एक बुर्जपरसे ब्रूक-वल्टम तथा लार्ड रोडनफ इस भयानक हत्याकाण्डको देख रहे थे। जब उन्होंने जिटकाके दलको इस तरह जी चोमकर लड़ते हुए देखा, तब ब्रूकके हृदयमें निराशा छा गयी और उसे अपना भविष्य बुरा दिखायी देने लगा। वह स्थान इतना छोटा और संकीर्ण था, कि वहां अधिक सेनाको गुजर न थी। थोड़े ही मनुष्य थोड़े ही मनुष्योंसे लड़ रहे थे और मरने तथा मारने वालोंकी चिल्लाहटसे वह स्थान श्मशान सा मालूम होता था। संध्या हो जानेके कारण एकाएक अस्त होते हुए सूर्य्यदेवकी सुनहली किरणें उस स्थान पर पड़ी और इस चमकमें लड़ाईकी भयानकताको देख सभी योद्धाओंका कलेजा हिल गया और इसी उज्वल प्रकाशमें

यह मुट्ठी मेरी जबानसे अधिक उस लोकका हाल आपको बता सकेगी।

(पी० मू० नव्वेवा परिच्छेद)

Burman Press Calcutta

तथा युवक थे, जो विपाहीगणमें आये थे, इसलिये उनके साथ उनके परिवारवाली स्त्रियां भी थीं। जिटकाके एकाएक आ पहुंचनेके कारण उनके भयका पारावार न था और जब सब तोपोंका गरजना उनके कानोंमें पहुंचा, तभी सब ये घबड़ाकर एक दूसरेसे चिपक जाती और अपनेको उस स्थानमें छिपानेका उद्योग करती, जहां वे भयंकर शब्द उनके कानोंमें न पहुंच सकें।

लगातार तीन दिनों तक जिस तरह वीरताके साथ टापूपर आक्रमण हुआ उसी तरह बहादुरी और दृढ़ताके साथ उसकी रक्षा भी की गयी; परन्तु तीसरे दिन संध्याके समय टेवोराइट-सिपाही आगासे अधिक जी चोमकर लड़ते और लगाते हुए दिखायी देने लगे। उन लोगोंने उस स्थानको लेनेके लिये मानवी शक्तिसे अधिक उद्योग करना प्रारम्भ कर दिया और उसका फल यह हुआ, कि उस छोटेसे स्थानमें भयानक हत्याकाण्ड मच गया। शस्त्रोंकी झनझनाहट, घोड़ोंके टापोंकी आवाज, तोपोंकी गरज, सिपाहियोंके सिंहनाद तथा मरने वालोंकी आहसे वह स्थान परिपूर्ण हो गया।

उस स्थानके पासही महलके एक बुर्जपरसे ब्रूक-बल्टन तथा लार्ड रोउसफ इस भयानक हत्याकाण्डको देख रहे थे। जब उन्होंने जिटकाके दलको इस तरह जी चोमकर लड़ते हुए देखा, तब ब्रूकके हृदयमें निराशा छा गयी और उसे अपना भविष्य बुरा दिखायी देने लगा। वह स्थान इतना छोटा और संकीर्ण था, कि वहां अधिक सेनाको गुजर न थी। थोड़े ही मनुष्य थोड़े ही मनुष्योंसे लड़ रहे थे और मरने तथा मारने वालोंकी चिल्लाहटसे वह स्थान श्मशान सा मालूम होता था। संध्या हो जानेके कारण एकाएक अस्त होते हुए सूर्य्यदेवकी सुनहली किरणें उस स्थान पर पड़ी और इस चमकमें लड़ाईकी भयानकताको देख सभी योद्धाओंका [illegible]। दिल गया और इसी उज्वल प्रकाशमें

यह झूठी मेरी जबानसे अधिक उस लोका हाल आपको बता सकेगी।

(पी० मू० नब्बे वा परिच्छेद)

तथा दूसरे थे, जो विवाहोत्सवमें आये थे, इसलिये उनके साथ उनके परिवारवालों स्त्रियां भी थीं। जिटकाके एकाएक आ पहुंचनेके कारण उनके भयका पारावार न था और जब अब तोपोंका गरजना उनके कानोंमें पहुंचा, तभी सब वे घबड़ाकर एक दूसरेसे चिपक जाती और अपनेको उस स्थानमें छिपानेका उद्योग करती, जहां वे भयंकर शब्द उनके कानोंमें न पड़ सकें।

लगातार तीन दिनों तक जिस तरह गोरखाने उस टापूपर आक्रमण हुआ उसी तरह बहादुरी और दृढ़तासे उसकी रक्षा भी की गयी। परन्तु तीसरे दिन, संध्याके समय टेनोरारट-सिपाही आग्रामी अधिक जोर बांधकर लड़ते और आगे बढ़ते हुए दिखायी देने लगे। उन लोगोंने उस स्थानको लेनेके लिये मानो प्रकृति अधिक उद्योग करना प्रारम्भ कर दिया और उसका फल यह हुआ, कि उस छोटेसे स्थानमें भयानक हत्याकाण्ड मच गया। मशालोंकी झलझलाहट, घोड़ोंके टापोंकी आवाज, तोपोंकी गरज, सिपाहियोंके सिंहनाद तथा मरने वालोंकी आहसे वह स्थान परिपूर्ण हो गया।

उस स्थानके पासही महलके एक कुञ्जपरसे ब्रूक-वटन तथा लार्ड रोडफर्ड इस भयानक हत्याकाण्डको देख रहे थे। जब उन्होंने जिटकाके दलको इस तरह जोर बांधकर लड़ते हुए देखा, तब ब्रूकके हृदयमें निराशा छा गयी और उसे अपना भविष्य बुरा दिखायी देने लगा। वह स्थान इतना छोटा और संकीर्ण था, कि वहां अधिक सेनाको गुजर न थी। थोड़े ही मनुष्य थोड़े ही मनुष्योंसे लड़ रहे थे और मरने तथा मारने वालोंकी चिल्लाहटसे वह स्थान श्मशान सा मालूम होता था। संध्या हो जानेके कारण एकाएक अस्त होते हुए सूर्य्यदेवकी किरणें उस स्थान पर पड़ी और इस चमकमें लड़ाईकी देख सभी योद्धाओंका कलेजा हिल गया और इसी उज्वल

लार्ड अल्टन तथा उसके साथियोंने देखा, कि टेवोराइट सिपाही अपना जी होमकर उस स्थानपर अधिकार जमानेकी चेष्टाकर रहे हैं। स्वय जिटका भी उसी स्थानपर था और बडी बहादुरीसे तथा अपनी सेनाको उत्साहित करता जाता था। हाथमें नगी तलवार थी जो सूर्य्य की उज्वल किरणोंमें चमक रही थी और जो कोई उसके पास जाता था, यमलोक पहुंचा देती थी।

अब अंधेरा हो गया था, परन्तु टेवोराइट दलने साथ ही एक बार जिटकाकी फौजने इस जोरसे राजकीय दल वालोंके पैर उखड गये और स्थानमें भर गयी, साथ ही राज-दल वालोंको भागकर उस टापूको खाली कर देना पडा। इस टेवोर-दल वालोंने उस टापूपर अपना अधिकार पहली विजय प्राप्त हुई।

दूसरे दिन सवेरा होते ही टेवोराइट आरम्भ कर दिया। चारों ओरसे टेवोर-दल अन्य बाधायें जो उसे अल्टनमहलमें पहु नाश करनेका उद्योग करने लगा। ज्यों उस आक्रमणकी भयकरता बढती ही गयी। डाल पात वाले पेड काट काटकर डाले देरमें जिटकाकी फौज उस खायीके पार अपने परिश्रम, अध्यवसाय तथा उद्योगके गयी जो पुलके पास था और जिसके बाद ही दीवार पड़ती थी।

पुल पारकर जब वह दल महलकी दीवार

कलाप उनकी प्रसन्नताकी सीमा न रही। लिटकाकी जय जयकारसे सब कानोंमें गूंज कर अलुग महलके अधिवासियोंको हतोत्साह कर दिया। अब टैवोराइट फौजके सामने अलुग-महलकी बड़ी और ऊंची पहाड़-दीवारी थी, जिसे पार करनेका कोई उपाय न दिखायी देता था।

अन्तमें टैवोराइट सिपाही दीवालोंमें बड़ी बड़ी कीलें गाड़कर उनपर चढ़नेका उद्योग करने लगे और कितने ही चढ़ भी गये। फिर दीवालपरसे बरछोंकी बौछार छूटने लगी और उनके सहारे और भी कितनेही मनुष्य ऊपर चढ़ गये; परन्तु दीवाल पार कर जाना कुछ लड़कोंका खेल न था, बल्कि भयानक, प्राण नाश और बड़े भारी जोखिमका काम था। उस स्थानपर किसीके प्राण बचनेकी आशा न थी; परन्तु लिटकाके बहादुर सिपाहियोंने इन बातोंका कोई विचार नहीं किया और उन अमर भारियोंके बीच अपना प्राण देनेके लिये घुस पड़े जो बूढ़ खार जानवरोंकी भांति उन्हें कटा हो चबा जानेके लिये तय्यार थे।

यह दशा देख टैवोराइट सेना जरा भी न घबरायी, बल्कि अपनी जान हथेलीपर रख मौतका सामना करनेके लिये तय्यार हो गयी और दृढ़ जोशसे लड़ने लगी। इसी समय राज-दलवाले सिपाहियोंने भी दीवालोंके ऊपर चढ़कर टैवोर-सिपाहियोंसे लड़ना आरम्भ किया और जो टैवोर सैनिक दीवालपर चढ़ते हुए दिखाई देने लगे, उनपर ऐसी बाढ़ दागनी शुरू की, कि कितने ही गोलोंसे मारे गये और कितने ही भूमिपर गिरकर परलोक सिधार गये।

भीतरसे सिपाहियोंका आक्रमण होनेके कारण टैवोराइट-दलवाले दीवारोंसे सटे जाते थे, कुछ दीवालोंमें मकड़ीकी भांति कीलें पकड़ पकड़कर चिपक गये थे और स्थान न मिलनेके कारण बहुतसे सिपाही अन्य सिपाहियोंके कांधेपर चढ़ चढ़कर दीवालपर पहुंचनेका उद्योग कर रहे थे।

बडी भयानक लड़ाई हुई, और यह लडाई कइ दिनों तक जारी रही। तोपोंकी गरजन -बादलोंकी गडगड़ाहटके समान सिपाहियोंके कान फाड़े डालती थी, कटे और मरे हुए आदमियोंकी लाशोंसे खायीका पानी लाल हो गया था और खायी एक प्रकारसे भरसी गयी थी तथा सड़े हुए मुर्दोंकी दुर्गन्धसे उस स्थानमें खड़े होना कठिन हो रहा था।

जिस तरह सरदार-जिटकाके सिपाही अपने प्राणोंकी पर्वाह न कर अपने सरदारकी आज्ञा पालनकर रहे थे, उसी तरह ह्यूक-अलटन भी अपने सिपाहियोंको उत्साहित कर लडाता और स्वय अपनी सेनाकी देखभाल करता था। कई दिन बाद जासूसों द्वारा जिटकाको पता लगा, कि महलकी बाई ओर रसद तथा भोजनका सामान भरा हुआ है, यदि किसी प्रकारसे उस अन्नपर अधिकार कर वह जला दिया जाये, तो लाचार हो किले वालोंको या तो भूखों मर जाना पडेगा अथवा सम्मुख युद्ध क्षेत्रमें आकर युद्ध करना पड़ेगा।

यह समाचार जिटकाके दलमें फैलते ही सबके हृदयमें दूना उत्साह भर गया और कितने ही बहादुर सिपाही भीतर घुसनेका उद्योग करने लगे।

परन्तु भीतर घुस जाना कोई सामान्य काम न था। चारों ओर शत्रुओंका भयानक भय था। खायी पार करने वाला पुल शत्रुओंके आगमनके पहले ही तोड दिया गया था, अत सरदारको फिर खायी पार करनेकी आवश्यकता पडी; क्योंकि खायी पार किये बिना उस रसदखाने तक पहुचना कठिन था।

यद्यपि यह काम कठिन था और इसके लिये उपाय सोचनेमें सरदार-जिटकाका कुछ समय भी गया, तथापि अन्तमें उसने एक उपाय

गोद निकाला और इसी विचारके अनुसार यह निश्चय हुआ, कि खाईके इस पारसे उस पार तक मोटे मोटे रस्से बांध दिये जायँ और उन्हीं रस्सोंके सहारे पुल पार किया जाये।

सरदार जिटकाका यही विश्वास मान्य रहा। खाईके इस पार दो मोटे मोटे काठ गाड़कर उनमें रस्से बांध दिये गये। उन दोनों रस्सोंको दोनों ओर दो बलवान् खाईमें कूद पड़े और उन लोहियोंको काट बनाते हुए (जो कि किलेकी दीवारपरसे आ रही थीं) उस पार पहुंचकर उन खानोंमें दीवालमें काठ गाड़ रस्से बांध दिये। उन्हीं दोनों रस्सोंमें 6 एक पर पैर रख तथा दूसरेको पकड़ कर सरदारके पीछे पीछे उसकी कुछ गिना खाईके पार उतरने लगी।

जब वह खाईके पार हो गयी तब फिर दीवाल लांघनेकी चेष्टाकी जाने लगी। अब दीवालपर चढ़नेका भी इसके अतिरिक्त दूसरा उपाय न था, कि रस्सेका एक आदमी ऊपर जाकर लटकाये और उसीके सहारे अन्य सिपाही ऊपर चढ़ जायें; पर दोनों रस्सोंका दूसरा छोर खाईके दूसरी ओर बंधा था और पासमें कोई तीसरा रस्सा न था। अतः सरदारके इशारा करते ही एक सिपाही फिर खाईमें कूद पड़ा और बड़ी कठिनतासे उस पार जाकर उसने रस्सा खोल दिया और फिर तैरता हुआ इस ओर आ निकला।

सरदार-जिटका सामान्य लड़ाका न था। मालूम होता था, कि यह युद्ध-विद्यामें अच्छी तरह निपुण तथा दूरदर्शी भी था। पहलेही कहा जा चुका है, कि अबका यह गोदाम महलके बाईं ओर था, अतः किलेवालोंका ध्यान घटानेके लिये जिटकाने अपनी सेनाका एक बड़ा भाग महलकी दाहिनी ओर भेज दिया था जो अस्टनके का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किये हुआ था। अस्तु,

जब रस्सा आ गया, उसे लपेटकर दीवालके दूसरे

का विचार स्थिर हुआ। अब एक मनुष्य दूसरेके तथा फिर उसपर एक मनुष्य चढा और इस तरह एक बहादुर दीवालके ऊपर जा पहुंचा और उसी रस्सेके सहारे अल्टन-महलके भीतर उतर पड़ा। उस पार जाकर वह मजबूतीसे रस्सेको पकडे रहा और इस तरह बहुतसे सिपाही उस पार जा पहुंचे।

इसके बाद भयानक काण्ड आरम्भ हुआ। एक लकड़ीमें कुछ कपड़े लपेट किरोसिन तेल डाल आग लगादी गयी और इस प्रकार अग्निने धीरे धीरे सुलग कर अन्नके साथही साथ अल्टन-महलको भी जलाना आरम्भ किया।

गल्लेमें आग लगते ही काले काले धुएके बादल उठकर महलमें फैल गये, आग जोरसे जल उठी और अन्नके जलनेकी दुर्गन्ध चारों ओर फैल गयी।

यद्यपि लार्ड अल्टन तथा उसके पुत्रको अपनी रसदकी रक्षा करनी आवश्यक थी, परन्तु उधर शत्रुओंका आना असम्भव समझ वे बेफिक्र थे। परन्तु जब वह धुएका बादल तथा आंचकी लहर उठकर अल्टन-महलको भस्म करने लगी, तब उन लोगोंको मालूम हुआ, कि उनका अनुमान झूठा निकला और शत्रु उधर भी आ पहुंचे।

ओह! परन्तु अब क्या हो [illegible] लार्ड अपने पुत्र तथा अन्य सैकड़ों सिपाहियों [illegible] लिये

रही थी और दूसरी ओर शत्रु उसका नाश करनेके लिये तय्यार थे। किसी ओर भी लाभ बचाकर निकल जानेका मौका न था।

जब कुछ उपाय न दिखायी दिया, तब सरदारने जान लड़ाकर युद्ध करना ही निश्चय किया। अब दोनों दलोंमें महलके भीतर ही गहरी लड़ाई छिड़ गयी।

एकबार पीछे हटता हटता जिटका आगके विहङ्गम ही पास जा पहुंचा और उसके कितने ही सिपाही आगमें गिरते गिरते बचे। अब प्राण देनेके अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय न देख जिटकाके सिपाही अल्टनको घेरकर इस तरह टूट पड़े, जिस तरह शेर घरिनीके झुण्डको सामने पाकर उसपर झपट पड़ता है। इस भयानक संग्राममें दोनों दलोंके बहुतसे मनुष्य मरे तथा घायल हुए और बड़ी कठिनतासे सरदार तथा उसके सिपाही फिर दीवाल पारकर किलेके बाहर निकल आये।

यह अवस्था तथा हाथमें आये हुए शिकारको निकल जाते देख जूक-अल्टन तथा रोडनफ आदि बहुत घबड़ाये; परन्तु उनके किये कुछ भी न हो सका। रसदखानेमें आग लग ही चुकी थी और जबतक युद्ध होता रहा, तब तक भोजनकी सब सामग्री जलकर खाक हो गयी। अन्तमें जूकको भूखों मरनेका सामान दिखायी देने लगा।

यद्यपि सरदार अपने बचे-खुचे सिपाहियोंके साथ महलके बाहर निकल आया, तथापि उसके कितने ही ऐसे होनहार और बहादुर सिपाही मारे गये, जिससे उसके हृदयपर बड़ी चोट पहुंची; परन्तु इसबार उसे बहुत बड़ी सफलता हुई थी और अल्टनके सिपाहियोंकी अपेक्षा उसके सिपाही बहुत कम मारे गये थे, अतः उसने सन्तोषकर फिर अपने कामोंमें ध्यान दिया।

का विचार स्थिर हुआ। अब एक मनुष्य दूसरेके तथा फिर उसपर एक मनुष्य चढा और इस तरह एक बहादुर दीवालके ऊपर जा पहुंचा और उसी रस्सेके सहारे अल्टन-महलके भीतर उतर पड़ा। उस पार जाकर वह मजबूतीसे रस्सेको पकडे रहा और इस तरह बहुतसे सिपाही उस पार जा पहुंचे।

इसके बाद भयानक काण्ड आरम्भ हुआ। एक लकड़ीमें कुछ कपड़े लपेट किरोसिन तेल डाल आग लगादी गयी और इस प्रकार अग्निने धीरे धीरे सुलग कर अन्नके साथही साथ अल्टन-महलको भी जलाना आरम्भ किया!

गल्लेमें आग लगते ही काले काले धुएके बादल उठकर महलमें फैल गये, आग जोरसे जल उठी और अन्नके जलनेकी दुर्गन्ध चारों ओर फैल गयी।

यद्यपि लार्ड अल्टन तथा उसके पुत्रको अपनी रसदकी रक्षा करनी आवश्यक थी, परन्तु उधर शत्रुओंका जाना असम्भव समझ वे बेफिक्र थे। परन्तु जब वह धुएका बादल तथा आंचकी लहर उठकर अल्टन-महलको भस्म करने लगी, तब उन लोगोंको मालूम हुआ, कि उनका अनुमान झूठा निकला और शत्रु उधर भी जा पहुंचे।

ओह! परन्तु अब क्या हो सकता था। यद्यपि लार्ड अल्टन अपने पुत्र तथा अन्य सैकड़ों सिपाहियोंके साथ गल्लेकी रक्षा करनेके लिये आ पहुंचा, परन्तु उस समय तक अन्नका अधिक भाग भस्म हो चुका था और स्वयं जेनरल जिटका अपने चुने हुए साथियोंके साथ उस स्थानमें मौजूद था। थोड़ेसे सिपाहियोंके साथ सरदार-जिटकाको देख राज दलके सिपाही उन्मत्त हो उठे और उन लोगोंने चारों ओरसे सरदार तथा उसके सिपाहियोंको घेर लिया।

अब जिटका भयानक विपदमें पड़ा। एक ओर भयानक आग जल

कुछ देर बाद जब वह हमारा रोगमें आयाँ तेरे उसे स्मरण हुआ, कि उसदार जिटकाका वह पत्र, जिसमें उसे ग्रेतानी और मालाकी एक ही बताया था, पढ़कर ही वह बेहोश हो गया था।

वह अपने चित्तको हजार समझाता था, कि ये सब स्वप्नकी बातें नहीं थीं, परन्तु उस कमरेमें अपनेको अकेला पाकर और उस खाली कोठरीको देखकर उसे उन घटनाओंपर विश्वास न होता था।

नहीं, जो कुछ उसने देखा था, वह केवल इतना ही नहीं था, बल्कि उसमें कुछ और बातें भी मिली हुई थीं और यही कारण था, कि उसे बहुत सी बातें याद आने लगीं। आज वह जिस पलङ्गपर पड़ा हुआ था, उसका बिछावन पहलेकी अपेक्षा अधिक मुलायम था और दरवाजेपर एक मोटे कपड़ेका पर्दा भी लटक रहा था, जिसमें कि सर्दी कमरेमें न घुस पाये। हवा न आने देनेके लिये खिड़कियोंके सूराखोंमें कपड़ोंके टुकड़े ठूंस ठूंसकर भर दिये गये थे और पलङ्गके पास कुछ दवायें भी रखी हुई थीं।

ज्यों ज्यों वह उन पदार्थों को देखता था, त्यों त्यों उसका जी घबड़ाता था और वह इतना घबड़ा उठता था मानो उसके दिमाग पर बर्फ जम गयी हो। जो हो, इन दृश्योंको देखकर उसे इतना विश्वास तो हो गया, कि वह यहाँ कई दिनोंसे पड़ा है।

इसके बाद उसके चित्तमें ग्रेतानी, मेटानमें ग्रेतानी [illegible]

सरदार-छिड़काका अनुमान बहुत ही सत्य निकला, क्योंकि एक सप्ताहके बाद ही अल्टन-महलके अधिवासियोंके भूखों मरनेका समाचार जेनरल जिटकाके कानोंमें आ पहुंचा।

पचासीवां परिच्छेद।

रोगी वीर।

यद्यपि शरद ऋतुमें सर्दी पड़ा ही करती है; परन्तु दोपहरके समय सूर्य्यकी ताप कुछ बढ़ जानेके कारण दिन उत्तम मालूम होने लगता है और यही कारण था, कि टूटाफूटा इल्डर-महल भी सूर्य्यकी चमकीली किरणें पड़नेके कारण इस समय चमक रहा था।

इल्डर महलके ऊपरकी उस कोठरीमें, जो जलनेसे बच गयी थी, हमारा पूर्व परिचित वीर सर अर्नेस्ट अब होशमें आकर इधर उधर देखने लगा। वह आज उसी पलङ्गपर लेटा हुआ था, जिसपर उसने सुन्दरी शैतानीको लेटे देखा था। यह बात उसे स्मरण आते ही सैकड़ों विगत घटनाये भी उसके मस्तिष्कमें स्मरण होने लगीं।

सबसे पहले उसके हृदयमें यही विचार उत्पन्न हुआ, कि यदि कोई मनुष्य मिल जाये, तो वह उससे पूछे, कि शैतानीकी क्या दशा हुई और वह इस तरह क्यों पड़ा है? क्या अर्नेस्टके हृदयमें इस बातका विचार उत्पन्न हो रहा था, कि उसके हृदयमें उत्पन्न हुए विचार सत्य हैं या नहीं और यदि वे सत्य हैं, तो कहांतक?

परन्तु यह क्या? ज्योंही सर अर्नेस्टने इधर उधर देखनेके लिये अपना माथा उठाया, त्योंही वह शीशेकी मारी चीजके समान तकियेपर गिर पड़ा और ज्योंका त्यों फिर बेहोश हो गया।

यह सुन्दरी दीवालसे सटकर खड़ी हो गयी और उसकी आंखें फिर अर्नेस्टके चेहरेपर गड़ गईं। इसी समय एक विचारसे उसके गालोंकी रंगत बदल दी; क्योंकि उसे स्मरण हो आया, कि अर्नेस्ट एक दूसरी ही स्त्रीको प्यार करता है, जिसका आचरण अब ऐ लोलासे छिपा नहीं है और वह अच्छी तरह जान गयी है, कि ईसानी और आदेला दो नहीं, बल्कि एक ही स्त्री हैं।

अब अर्नेस्टने फिर पूछा,—"तू मुझे छोड़कर क्यों चली जाती थी?"

इसपर ऐ लोलाने बड़े ही नम्र आवाजमें कहा,—"आपकी आज्ञा पालन करने और आपके प्रश्नोंका उत्तर देनेके लिये बनाडको बुलाने जाती थी; क्योंकि मैं जानती हूं, कि आप अवश्य ही बहुत सी बातें जानना चाहते होंगे।"

अर्नेस्टने इतनी मीठी और प्रेम भरी भाषामें, जिससे कि ऐ लोलाको उस कमरेसे हटना कठिन हो गया कहा,—"और क्या तुम मेरे उन प्रश्नोंका उत्तर नहीं दे सकती। मुझे ऐसा मालूम होता है, मानो मेरी इस अवस्थामें तुमने ही मेरी सेवा की है और तुम्हारी ही कृपासे मैं आज होशमें आया हूं। अच्छा, अब कृपाकर तब तक इस कमरेसे न जाना जबतक तुम्हें मैं धन्यवाद न दे सकूं।"

ऐ लोला तुरत ही बोल उठी,—"मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया है, जिसके लिये आप मुझे धन्यवाद दें। मैंने एक क्रिश्चियनकी भांति केवल अपना कर्त्तव्य पालन किया है और अब, जब आप होशमें आ गये हैं, मेरा यहां रहना वृथा है, इसीलिये मैं "

इतना कहकर वह चुप हो गयी। उसकी मद भरी आंखें क्षण भरके लिये अर्नेस्टके चेहरेपर जा पड़ीं और वह उसे इस तरह लगी, जिस तरह कोई प्रेयसी अपने प्रेमीको और इस दृष्टिसे अर्नेस्ट भी समझ गया, कि ऐ लोला

यह प्रश्न भी उत्पन्न हुआ, कि वह इस कोठड़ीमें कितने दिनोंसे पड़ा हुआ है, किसने मुझे बिछावनपर सुलाया है, पर्दा डाला है और इस तरह दवाओंका प्रबन्ध किया है।

यह विचार उदय होनेपर वह कुछ देर तक आंखें बन्द किये पड़ा रहा और शान्तिसे गत बातोंका स्मरण करनेकी चेष्टा करने लगा।

इसी तरह उसके चित्तमें कितने ही विचार उत्पन्न होकर विलीन हो गये। अन्तमें उसने घबड़ा कर फिर आंखें खोल दीं। इसबार उसकी दृष्टि एक ऐसी स्त्री पर पड़ी, जो किवाड़ खोल धीरे धीरे भीतर घुस रही थी और अर्नेस्टको होशमें आया जान पर्देके पास खड़ी हो गयी थी।

यद्यपि सर अर्नेस्ट उसकी ओर देख रहा था, तथापि उसके मुंहसे किसी प्रकारकी आवाज न निकलती थी। वह बोलनेकी चेष्टा करता था, परन्तु बोल न सकता था। उसकी यह अवस्था देख उस स्त्रीके मुंहसे खुशीकी एक चीख उस समय निकल पड़ी, जब उसने सर अर्नेस्टको अपनी ओर देखते हुए देखा, क्योंकि इस समय उस बहादुरकी आंखें सुन्दरी ऐलीनाके चेहरेपर जमी हुई थीं।

यद्यपि अर्नेस्ट उसकी ओर देख रहा था, परन्तु बोल न सकता था। अर्नेस्टकी यह अवस्था देख उस स्त्रीपर संकोच और लज्जाने अपना अधिकार जमा लिया और वह उस कमरेसे हट जानेके विचारसे अर्नेस्ट परसे अपनी दृष्टि हटा पीछेकी ओर झुक पड़ी।

उसको जाते देख अर्नेस्टके हृदयमें बड़ा दुःख हुआ और इस दुःखने उसकी जबान खोल दी। उसने बड़ी ही नम्रतासे कहा,—"प्यारी ऐलीना! मुझे छोड़कर चली न जाना।"

"प्यारी ऐलीना" शब्दने उस कुमारीके चित्त पर कितना असर किया यह हम नहीं बता सकते। "प्यारी ऐलीना" शब्द सुनते ही

अर्नेस्टने कहा,—"ओह, ऐ जोला! तूने मेरी जान बचा दी है। तू मेरी रक्षक ही नहीं बल्कि बहिनके समान है। अब आजसे तू जो कुछ कहेगी, मैं सब माननेके लिये तय्यार रहूंगा। परन्तु यह तो बता, कि क्या सचमुच ही मैं छः हफ्तेसे बीमार हूं।"

ऐ जोला बड़े दुःखसे बोली,—"हां, यह सत्य है। अफसोस! यह सत्य ही है।" इतना कहते कहते ऐ जोलाकी बड़े बड़े नेत्रोंसे आंसुओंकी बूंदें टपक पड़ीं।

अर्नेस्ट उसकी यह दशा देख दुःख और घबराहटसे बोला,—"ऐ जोला! तू रो रही है, जिससे मालूम होता है, कि मैं सचमुच ही बहुत बीमार हो गया था। अतः जो होना था सो हो गया, अब सब बातें साफ साफ मुझे समझा दे।"

ऐ जोला दुःखसे बोली,—"हां, आप बहुत बीमार थे और आपके जीवनसे मैं कईबार निराश हो चुकी थी।"

अर्नेस्टने कहा,—"अच्छा, मेरी दवा किसने की? और सेवा करनेवालेका नाम पूछनेकी तो अब कोई आवश्यकता ही नहीं है।"

ऐ जोलाने कहा,—"दयालु बर्नार्डने इस एकान्त वासमें जड़ी बूटियोंको इस तरह पहचान रखा है, कि आपके बेहोश होते ही वह स्वयम् आपकी चिकित्सा करने लगा।"

अर्नेस्टने कहा,—"और छः हफ्तोंसे तू भी मेरी रक्षा और सेवा कर रही है?"

ऐ जोलाने हर्षसे कहा,—"मैंने जो कुछ किया, वह अपना कर्त्तव्य समझ कर ही किया है। ईश्वरको धन्यवाद है, कि आपकी जान बच गयी और मेरा परिश्रम सार्थक हुआ। आपका स्वास्थ्य अब सुधर रहा है और आशा है, कि आप शीघ्र ही आरोग्य हो

अर्नेस्टने कहा,—"प्यारी ऐ जोला! तू छः सप्ताहसे

ऐ जोलाको इस तरह अपनी ओर देखते देख अर्नेस्टने कहा,—"तुम्हें उचित नहीं है, कि मुझे अकेले छोड़कर चली जाओ। तुमने मेरी सेवाकी है! अत मैं तुम्हें अपनी बहिनके समान समझता हूं। आओ, मेरे पास बैठ जाओ और सब बातें मुझे समझाकर कहो।"

अब ऐ जोला बहादुर अर्नेस्टकी बात टाल न सकी और सकुचाती हुई उसके पलङ्गके सिरहाने की ओर रखी हुई कुर्सीपर जा बैठी।

पाठकोंको स्मरण रखना चाहिये, कि ऐ जोला इस समय जंगी पोशाक नहीं पहने थी; बल्कि उसके बदले साफ सुथरे जनाने कपड़े पहने हुए थी, जिससे मालूम होता था, कि वह अभी तक कुमारी ही है और इन स्वच्छ वस्त्रोंके कारण उसकी सौन्दर्य्य राशि और भी फूट निकली थी।

उस अंधेरी कोठरीमें ऐसी सुन्दरीको देखकर अर्नेस्ट इस तरह हृदयमें प्रसन्न हो रहा था, मानो कोई ईश्वरी दूत ही उसके पास आगया हो।

कुछ देरतक अर्नेस्ट एक शब्द भी अपने मुंहसे न निकाल सका। वह ऐ जोलाकी कृपा, उसकी मधुर बोली, नम्रता और सीधेसादे स्वभावको देखकर चकित हो रहा था और उसके हृदयमें पवित्र प्रीति तथा दृढ़ भक्ति उत्पन्न हो गयी थी।

कुछ देर बाद अर्नेस्टने कहा,—"कहो, बताओ सुन्दरी! कितने दिनोंसे मैं इस तरह पलङ्गपर पड़ा हुआ हूं?"

ऐ जोलाने बड़ी नम्रतासे कहा,—"आपको बीमार हुए आज छः सप्ताह हो चुके हैं।"

अर्नेस्टने आश्चर्य्यसे कहा,—"ऐ! यह क्यों? क्या यह सम्भव है, कि मैं लगातार छः हफ्ते तक इस तरह बेहोश पड़ा रहा?"

ऐ जोलाने कहा,—"आप शान्त हूजिये। ईश्वरकी दयासे अब दुःखके दिवस निकल गये और आप शीघ्र आरोग्य हो जायंगे।"

है? नहीं, तू इस तरहकी अपराधिनी नहीं हो सकती। यह एकदम असम्भव है।"

पैंजोलाने कहा,—"असम्भव नहीं, सत्य है।"

इसपर अर्नेस्ट और भी घबड़ाकर बोला,—"पै, पै जोला! इसके मेरा क्या मतलब है? और तूने किस लिये मेरे साथ छल किया था? वह छल किस प्रकारका था?"

पै जोलाने कहा,—"और कुछ नहीं, केवल मैंने अपना भेष बदल लिया था।"

अर्नेस्ट आश्चर्य से बोला,—"भेष बदल लिया था? कैसा भेष?"

पै जोलाने कहा,—"मैंने लड़की पोशाक पहन ली थी।"

अर्नेस्टने कहा,—"ओह! मैं समझ गया।"

इसके बाद पैंजोला चुपचाप बैठ गयी और मन ही मन विचारने लगी, कि क्या अर्नेस्ट सचमुच ही मुझे प्यार करता है।

कुछ देर बाद अर्नेस्टने कहा,—"अब मैं सब बातें समझ गया। तेरे धर्मपिता लूक रोशनबर्गको प्रजा हैं और उनको लिटकाने कैद कर रखा था। इसीलिये तू उन्हें छुड़ानेके वास्ते भाग गयी थी और ईश्वरकी दयासे अपने कार्य्य में सफल मनोरथ भी हुई। इसके बाद उन लोगोंके साथ ही तू सफेद महलमें आयी और वहां मेरी मदद की। ओह! मैं तेरा कितना ऋणी हूं, तूने मेरी कितनी सेवा की है और कईबार मेरी जान बचाई है।"

इसपर पै जोलाने हंसते हुए कहा,—"यह आप क्या कह रहे हैं? क्या मैं आपकी ऋणी नहीं हूं? क्या आपने उस जङ्गलमें दुष्ट रोडल्फके चंगुलसे मुझे नहीं छुड़ाया था? क्या आपने मुझे मोलडाव नदीमें डूबनेसे नहीं बचाया था?"

अर्नेस्टने कहा,—"यद्यपि तेरा कहना बहुत

मेरी सेवा कर रही है। आह! तूने कितनी नम्रता और दयालुतासे मेरी सेवा की होगी। अच्छा, ऐ जोला! इस कष्टके लिये तुझे अवश्य ही उत्तम पुरस्कार मिलेगा। हां, इसका बदला तुझे अवश्य ही मिलेगा। यह मेरा पहला कर्त्तव्य होगा, कि तुझे निर्धन अवस्थासे छुड़ाकर अच्छे पदपर बिठा दूं।"

इतना कहते कहते अर्नेस्टके चेहरेपर एक ऐसी प्रतिभा छा गयी और ऐसा भाव उत्पन्न हो गया, जिससे स्पष्ट मालूम होता था, कि वह उसे अपनी अर्द्धाङ्गिनी बनानेके लिये तय्यार है।

कुछ देरतक दम लेकर अर्नेस्ट फिर बोला,—"प्रिय ऐ जोला! वास्तवमें तू मेरी जान बचानेवाली है और दयालु बर्नाडने मेरे प्रति जो दया दिखलायी है, उसके लिये भी मैं अशेष धन्यवादके साथ उचित पुरस्कार की व्यवस्था करूंगा।"

अर्नेस्टको उत्तेजित अवस्थामें देखकर ऐ जोलाने कहा,—"नहीं नहीं,। अभी आप इस प्रकार अपने मनको उत्तेजित न करें। इससे बीमारी बढ़ जानेका भय है।"

अर्नेस्टने कहा,—"अब न डरो, प्यारी ऐ जोला! अब डरकी बात नहीं है। मैं जो कुछ कह रहा हूं, अपने होशहवासमें कह रहा हूं। अच्छा, अब उन बातोंको छोड़ दे, मुझे अभी बहुतसे प्रश्न करने हैं और तुझे भी उनका स्पष्ट उत्तर देना पड़ेगा। अब यह बता, कि तू किस प्रकारसे यहां आ पहुंची?"

ऐ जोलाने बड़ी नम्रतासे माथा झुकाकर कहा,—"मैं आशा करती हूं, कि मैंने आपके साथ जो छल किया है, उसके लिये आप मुझे क्षमा करेंगे।"

अर्नेस्ट ऐ जोलाकी यह बात सुन चौंक पड़ा और बड़ी ही उत्कण्ठासे बोला,—"क्या, यह सम्भव है, कि तूने मेरे साथ छल किया

ऐ लोलाने कहा,—"नहीं, नहीं। ऐसी आज्ञा देकर मुझे भुलावेमें न डालिये।"

ऐ लोलाका यह उत्तर सुन अर्नेस्ट कुछ क्षणतक शान्त हो गया, फिर बड़ी व्यग्रतासे बोला,—"मैं हाथ जोड़कर विनती करता हूं, कि जबतक मैं दिल्लुस वापस न लौट आऊं, तबतक तू मेरे पाससे कहीं न हो। मेरे यहां आनेपर यह राज्य मेरे लिये और भी कष्टमय हो जायगा और मेरा जी घबड़ाने लगेगा। इसलिये मैं प्रार्थना करता हूं, कि तू अभी मुझे छोड़कर न जा।"

अर्नेस्टकी बातें सुन कुमारी ऐ लोला कुछ क्षणतक चुप रहकर बड़े ध्यानसे अर्नेस्टकी ओर देखती रही। इसी तरह कुछ देरतक देखनेके बाद वह बोली,—"अच्छा, मैं आपको न छोड़ूंगी।"

अभी ऐ लोलाके मुंहसे इतना निकला ही था, कि दरवाजा खुल गया और भग्न मूर्त्ति दयालु वर्नार्ड कमरेमें घुस आया।

छयासीवां परिच्छेद।

नाइट, वनकन्या और वर्नार्ड।

अब इस विषयको छोड़ थोड़ी देरके लिये हम ऐ लोलाकी ओर झुकते हैं और यह बताना चाहते हैं, कि वह किस तरह इतनी दूर उस भग्न किलेमें आकर अर्नेस्टकी सहायिका बनी।

पाठकों को स्मरण होगा, कि जिस समय अर्नेस्ट तथा ग्रेतानी इस टूटे हुए किलेमें आये थे, उस समय पादरीके आक्रमण करनेपर ऐ लोलाने लड़की पोशाकमें वहां आकर उन दोनोंकी सहायता पहुंचायी थी और फिर जब अर्नेस्ट ग्रेतानीको वर्नार्डके हाथ सौंप उससे मिलनेके लिये आया, तो वह नहीं मिली थी।

तेरा अधिक ऋणी हूं; क्योंकि उस मैदानमें, जहां, मैं बेहोश पड़ा था, तूने ही मेरी जान बचाई थी, इसके बाद सफेद महलमें तूने मेरी रक्षा की। फिर इसी मकानमें मुझे सहायता पहुंचायी, जब वह दुष्ट पादड़ी अपने दलबल समेत यहां आ पहुंचा था, और आज कई सप्ताहोंसे तू फिर मेरी सेवा कर रही है। प्यारी ऐंजीला! मैं सचमुच ही तेरे ऋणसे बहुत दबा हुआ हूं और किसी तरह भी उसका बदला नहीं चुका सकता।"

ऐंजीला बोली,—"इन बातोंको ध्यानमें लानेकी आवश्यकता ही नहीं है। आशा है, आप मेरे उस दोस्ताना व्यवहारको, जो मैंने आपके साथ किया है, अस्वीकार कर बदला चुकानेका उद्योग न करेंगे और मुझे क्षमा करेंगे। अब आप अच्छे हो गये, अतः मुझे अपने असली मकानमें जाना आवश्यक है।"

अर्नेस्ट एकाएक उसके मुंहसे जानेकी बात सुन अकचका कर बोला,—"नहीं, ऐंजीला! ऐसा नहीं, इतनी जल्दीकी आवश्यकता नहीं है। जबतक मैं पूरी तरहसे अच्छा न हो लूं, तबतक मुझे छोड़कर कदापि न जाना।"

इतना कह अर्नेस्टने ऐंजीलाका हाथ अपने हाथमें ले लिया और बड़े प्रेमसे उसके मुंहकी ओर देखने लगा।

"क्यों, अब मेरे ठहरनेकी क्या आवश्यकता है?" इतना कह ऐंजीलाने अर्नेस्टके हाथसे अपना हाथ छुड़ा लिया; क्योंकि वह जानती थी, कि कुछ दिन पहले अर्नेस्ट आयशाका हाथ बड़े प्रेमसे पकड़कर दबाया करता था।

अर्नेस्टने कहा,—"क्यों, अब ठहरनेकी क्या आवश्यकता है? ऐंजीला! तेरी यह बात मेरे कलेजेमें तीरकी तरह चुभती है। ऐंजीला! क्या तू मुझसे दोस्ती नहीं किया चाहती?"

पास बैठा हुआ वही भयङ्कर दृष्टि उसकी ओर देख रहा है। उनके पास ही कागजका एक टुकड़ा पड़ा हुआ था। यह कागजका टुकड़ा वही पत्र था जो लिटकाने अर्नेस्टके पास भेजा था और जिसमें लिखा था, कि ऐलोसा और आयशा दोनों एक ही जीव हैं।

ऐलोसा सिहरी उस कोठरीमें चली गयी और उस कागजके टुकड़ेको उठाकर पढ़ने लगी। ओह! इस बार उसके आश्चर्य, विस्मय तथा घबराहटका ठिकाना न रहा, परन्तु थोड़ी ही देरमें वर्नाडने उसे सब हाल समझा दिया और अब वह सोचने लगी कि अर्नेस्टके समान चालाक मनुष्य भी आयशाकी दुरभिसन्धि को न समझ सका और उसके प्रेममें मतवाला हो गया तथा यह भेद खुल जानेके कारण ही उसको यह दशा हुई है।

विचारा वर्नाड अर्नेस्टकी दुरवस्था देख बहुत ही घबड़ा रहा था और अकेला रहनेके कारण कोई भी उपाय न कर सकता था। यद्यपि वह बहुत सी दवायें जानता था; परन्तु अर्नेस्टको अकेले छोड़कर दवा लेने जाना उसके लिये कठिन हो रहा था। ऐसी अवस्थामें ऐलोसाका वहां पहुंच जाना अत्यन्त उपयोगी हुआ।

वर्नाड ऐलोसाको देखते ही प्रसन्न हो उठा और अर्नेस्टको आरसे उसके हृदयमें जो निराशा उत्पन्न हो चुकी थी; वह नाश हो गयी और वह उसके जीवित रहनेकी आशा करने लगा। उसी समय ऐलोसा तथा इश्वरका वर्नाडने बहुतसे धन्यवाद दिये और ऐलोसासे रोगीकी सेवा करनेका अनुरोध करने लगा। ऐलोसाने खुश हो उसकी बात मान ली, अतः ऐलोसाको अर्नेस्टके सुपुर्दकर वर्नाड जंगलमें जड़ी बूटियां खोजनेके लिये चला गया।

ऐलोसाने यह काम सहर्ष ग्रहण कर अर्नेस्टके एक नौकर द्वारा यह समाचार अपने घर कहला भेजा, जिसमें उसके

ऐ जोला अर्नेस्टके दिये हुए उसी घोड़ेपर सवार हो, अपने घर चली गयी थी। जिस समय वह घर पहुंची है, उस समय उसके माता-पिता वहीं थे और इतने दिनों बाद अपनी प्रिय पालिता कन्याको देख उन्हें बड़ा हर्ष भी हुआ था; परन्तु साथ ही साथ उनके आश्चर्यका भी वारापार न था, क्योंकि ऐ जोला जङ्गी पोशाक पहने हुए थी, परन्तु वह आश्चर्य उन्हें अधिक क्षणतक घबड़ाहटमें न रख सका, क्योंकि ऐ जोलाने शीघ्र ही सब वृत्तान्त उनसे कह सुनाया।

उसके माता पिता उसकी वीरताका समाचार सुन बारबार उसकी सराहना करने लगे और अपनी बड़ाई सुन ऐ जोला भी मन ही मन प्रसन्न होने तथा ईश्वरको अनगिनक धन्यवाद देने लगी।

ऐ जोलाको घुड़सवारीका बड़ा शौक था। वह नित्य घोड़ेपर चढ़ घूमने निकल जाया करती थी। एक दिन वह नित्यकी भांति ही घोड़ेपर चढ़ घूमने निकली थी, कि उसकी इच्छा डलडर-महल देखनेकी हुई और वह इधर ही आ निकली। डलडर महलसे ऐ जोलाका मकान अधिक दूर न था। अतः उसने मन ही मन तुरत ही लौट आनेका विचार भी कर लिया था।

बस ऐ जोला घोड़ेको एड लगाती हुई बातकी बातमें उस महलमें आ पहुंची और वहां उसने देखा कि लड़ाईके स्थानमें आज भी खूनका हल्का दाग पड़ा हुआ है। ऐ जोलाको स्मरण था, कि शैतानोंके घायल होनेपर बर्नार्ड उसे लेकर ऊपर चला गया था और अर्नेस्ट भी उसके पीछे पीछे दौड़ गया था। अतः ऐ जोलाको भी ऊपर जानेकी इच्छा हुई और वह धड़धड़ाती हुई छतपर जा चढ़ी।

परन्तु ऊपर जाते ही बर्नार्डकी कोठरीका दरवाजा खुला रहनेके कारण उसे जो दृश्य दिखाई पड़ा, उससे वह चौंक उठी। उसने देखा, कि बेहोश अर्नेस्ट जमीनपर पड़ा हुआ है और बुड्ढा बर्नार्ड उसके

अर्नाल्डने कहा,—"वास्तवमें सुन्दरी पि लोलाकी जितनी प्रशंसा की जाये उतनी ही थोड़ी है। इसकी प्रशंसा करनेके लिये भाषामें शब्द नहीं मिलते। आह! यदि ईश्वरकी दयासे यह मेरी कन्या होती तो मुझे कितना आनन्द प्राप्त होता।"

अर्नेस्टने कहा,—"यद्यपि यह आपकी कन्या नहीं है, तथापि इसके घनिष्ट परिचय हो जाने के कारण आपको प्रसन्न होना चाहिये।"

इस बार इच्छा न रहनेपर भी पि लोलाको अर्नेस्टकी ओर देखना पड़ा। क्योंकि अर्नेस्टके मुंहसे यह कर्णधार सुन चुकी थी, कि जिन लोगोंने उसकी सेवा की है, उन्हें यह बड़े बड़े पुरस्कार दिया चाहता है। इस घटनाके पहले जब पि लोलाने सफेद महलमें अर्नेस्टकी सहायता की थी और दोनों उस महलके बाहर निकले थे, उस समय भी अर्नेस्टने पि लोलासे कहा था, कि यह युवक ऐस्वर्टके दरबारमें उसे उत्तम पद दिला सकता है। और आज आरोग्यता प्राप्त करनेपर भी उसके मुंहसे ऐसी ही बातें निकली थीं।

ये बातें सुनकर पि लोलाको कुछ पता न लगता था, कि वास्तवमें यह कौन मनुष्य है, तथा उसकी बातोंके उत्तरमें उसे क्या कहना चाहिये। जो हो, कुछ देर तक वहां सन्नाटा छाया रहा। इसके बाद अर्नाल्डने कहा,—"हमें उचित नहीं, कि सर नाइटको बातोंमें लगा कर अधिक कष्टमें डालें अथवा यहां उपस्थित रहकर उन्हें उत्तेजित करें। चलो, अब उन्हें आराम करने दो।"

परन्तु इसी समय अर्नेस्टने घबड़ाहटसे कहा,—"नहीं नहीं, आप लोग यहांसे न जाय और कृपाकर मेरे दो तीन प्रश्नोंका उत्तर दे दें, जिनके लिये मेरा हृदय व्याकुल हो रहा है। उत्तर [illegible] हृदय शान्त हो जायगा और तभी सम्भव है, कि मैं कुछ [illegible] सकूंगा।"

(बर्नार्ड की ओर देखकर) परन्तु आपने ये बातें मुझसे पहले क्यों न कहीं ?"

बर्नार्डने कहा,—"आप सदा नाटकी सेवामें लगी रहती थी ; उनकी आरोग्यता सम्बन्धी बातोंके अतिरिक्त आपका और कुछ न सोहाता था। इसके अतिरिक्त इस घटनासे आपका कोई सम्बन्ध भी न था, ये ही बातें सोचकर मैंने उस सम्बन्धमें आपसे कोई जिक्र नहीं किया।"

ऐ जोला बोली,—"आपका कहना सत्य है।"

इतना कहकर ऐ जोलाने अपना दाहिना हाथ पहले भौं और पीछे होठों पर रखा और उदास होकर बैठ रही।

उसकी यह दशा देख अर्नेस्टने कहा,—"प्यारी ऐ जोला ! वास्तव में इस दुःख जनक घटनाको सुनकर तुम्हें बड़ा कष्ट हुआ है।"

ऐ जोलाने कहा,—"ओह ! उन बातोंको न पूछिये।"

इतना कहते कहते ऐ जोलाको खयाल हो आया, कि कहीं उसके मुंहसे सफेद लेडीसे सम्बन्ध रखनेवाली गुप्त बातें न निकल पड़ें, इसलिये उसे न अर्नेस्टको बातोंका अधिक उत्तर न दे, बर्नार्डसे कहा,—"अच्छा ! आप अपनी बातें कहें।"

बर्नार्ड बोला,—"बहुत सी बातें थोड़े शब्दोंमें ही कही जा सकती हैं, अस्तु आप सुनिये, रानी एलोजावेथके दफनके तीसरे ही दिन जिटका अपने दलबलके साथ अल्टनमहलपर चढ़ गया।"

अब ऐ जोलासे चुप न रहा गया, वह बोली,—"यह बातही आपने मुझसे न कही अच्छा फिर क्या हुआ ?"

बर्नार्ड बोला,—"आक्रमण अभी तक चल रहा है, परन्तु उस रक्षाही अच्छी तरह की जा रही है, परन्तु अनाज [illegible] गया है और सुननेमें आता है, कि महलमें [illegible]

ये लोगोंने मोजकर कहा,—"मूर्खों मर रहे हैं।"

इतना कहकर वे लोग चुप हो गये और उसका दमकता हुआ चेहरा फीका पड़ गया; उसके हृदयमें सफेद सिंहोंका अत्यन्त प्रेम था अतः उसे उसीकी चिन्ता थी और वह फिर घबड़ाहटसे बोल उठी,—"बर्नार्ड! सच बताओ, क्या यह सच्ची खबरें हैं?"

बर्नार्ड बोला,—"सच झूठ मैं नहीं जानता, परन्तु समाचार ऐसा ही सुननेमें आया है।"

अर्नेस्टने कहा,—"यह निश्चय है, कि विजय सरदार विटकाको ही होगी क्योंकि वह बड़ा बहादुर और नामी योद्धा है।"

बर्नार्ड बोला,—"टेवीराइट-दल सभी स्थानोंमें विजयी होता है। दस दस बारी पूर्व, पश्चिम तथा उत्तरमें राज्यकर हो रहे हैं यदि इस बार दक्षिणमें भी वे जीत गये तो सारी बोहेमिया उनके अधिकारमें आ जायगी।"

अर्नेस्ट बोला,—"अवश्य।" बर्नार्ड बोला,—"अभी तक तो मैंने बोहेमियाके राजकाजके विषयमें ही कहा है, पर आपकी जन्म-भूमि आस्ट्रियाके बारे में कुछ भी नहीं कहा।"

अर्नेस्ट उत्कण्ठासे बोला,—"हां, वहांका सब हाल मुझे सुनाइये।"

बर्नार्ड,—"मैं सब समाचार आपको सुनाता हूं। जर्मनीका बादशाह "

अर्नेस्टने कहा,—"आप इतना कहकर ही क्यों रुक गये? शीघ्र बताइये, जर्मनीके बादशाहका क्या हुआ?"

बर्नार्डने कहा,—"नहीं, रुकनेकी कोई आवश्यकता नहीं; मैं आप से अब कुछ न छिपाऊँगा।"

अर्नेस्ट बोला,—"शीघ्र बताइये कि जर्मनीके बादशाहके सम्बन्धमें आपको क्या मालूम हुआ है?"

बर्नार्ड बोला,—"जर्म्मनीका बादशाह 'सिगमण्ड' अब इस संसारमें नहीं है।"

अर्नेस्ट बड़ी घबड़ाहटसे बोला,—"ऐं! जर्म्मनीका बादशाह मर गया? ओह!!"

बर्नार्ड बोला,—"मुझे ऐसेही समाचार मिले हैं?"

अर्नेस्टने पूछा,—"वहाका और भी कोई समाचार मालूम हुआ है?"

बर्नार्ड बोला,—"सुना है, गद्दी किसी दूसरेको दी गयी है?"

अर्नेस्टने पूछा,—"गद्दी किसे मिली?"

बर्नार्डने कहा,—"सुना है, कि गद्दी एक ऐसे राजकुमारको मिली है, जिसने न तो कभी गद्दी पर बैठनेकी इच्छा ही प्रकट की थी और न उस समय वह वहा उपस्थित ही था।"

अर्नेस्ट बोला,—"क्या उनका नाम भी आपने सुना है?"

बर्नार्डने कहा,—"हा, सुना है, उनका नाम 'प्रिन्स एल्बर्ट ड्यूक आफ आस्ट्रिया है।"

बर्नार्डकी बातें सुन अर्नेस्ट उठकर बैठनेकी चेष्टा करने लगा; परन्तु किसी तरह भी उठ न सका और उसका सारा पलग हिल गया।"

इसके बाद अर्नेस्ट फिर बेहोश हो गया और ऐ जीला घबड़ाहटसे उसके नाक तथा मुहमें दवा छोड़ने लगी।

विचारा बर्नार्ड भी अपनी बातों पर पश्चाताप करने लगा, परन्तु अब कोई उपाय न था। अस्तु, बर्नार्डने उठकर उसे एक ऐसी दवा पिलाई, जिससे उसे नींद आ गयी।

सत्तासीवां परिच्छेद ।

विदा ।

बारह बजे रातिके समय अर्नेस्टकी आंखें खुलीं, इस समय भी कमरेमें चिराग जल रहा था और विपारी पे जोला उसके पलंगके नीचे बैठी हुई थी।

पे जोलाने अर्नेस्टके लिये एक बलदायक औषध तय्यार किया था और इसी आशामें बैठी थी, कि आंखें खुलें तो उसे पिला दे।

अर्नेस्ट पे जोलाकी इतनी कृपा और गाढ़ी प्रीति देख, मुग्ध होकर कहने लगा,—"ऐ बहिन पे जोला, क्योंकि अब मैं तुझे बहिन कहकर ही पुकारूंगा, कृपाकर यह बताओ कि सचमुच 'प्रिन्स अल्बर्ट ब्रूक' आज अस्तिया की राज्य पर बैठा है अथवा मैं स्वप्न देख रहा हूं।"

पे जोला बोली,—"हां, बर्नार्डकी बातोंसे तो ऐसा ही मालूम होता है, परन्तु आप कृपाकर ऐसी ऐसी चिन्ताजनक बातोंमें न उलझिये, क्योंकि इससे हानिकी सम्भावना है।"

अर्नेस्ट बोला,—"मेरी दयालु पे जोला! मैं भी तुम्हारे आदेशानुसार ही चलना चाहता हूं। इसी लिये मेरी इच्छा है, कि अपने एक नौकरको वायना भेजूं। अभी कितने बजे हैं।"

पे जोला बोला,—"बारह बजे हैं। मैं शीघ्र बर्नार्डको जाकर जगाती हूं। वह आपके नौकरोंमेंसे किसी एकको अवश्य वायना भेज देगा।'

अर्नेस्ट बोला,—"नहीं नहीं, इस कामको अब सवेरेके लिये रख दो। मैं मेरेनी सहना इससे उत्तम समझता हूं, कि तुम्हें इस अन्धकारमें बाहर भेजूं।"

ऐंजोला बोली,—"क्या केवल इसी कारणसे आप इस कामको सवेरेके लिये रख छोड़ना चाहती हैं ?"

ऐंजोलाके इस कथनका बड़ा प्रभाव पड़ा और सर अर्नेस्ट समझ गया, कि ऐंजोला उसे हृदयसे प्यार करती है।

अब ऐंजोला अर्नेस्टके लाख मना करने पर भी उस कमरेसे बाहर चली गयी और थोड़ीही देर बाद एक नौकर अर्नेस्टके कमरेमें आ पहुंचा। लगभग बीस मिनिट तक मालिक नौकरमें बातें होती रहीं, इसके बाद वह नौकर अस्तबलमें चला गया और अपने तेज घोड़े पर सवार हो, वायनाकी ओर रवाना हो गया।

नौकरको घरसे निकलते देख, ऐंजोला फिर अर्नेस्टके पास आई परन्तु इस समय अर्नेस्ट सो रहा था। अत वह भी अर्नेस्टके पलंगसे कुछ दूरी पर एक कोनेमें लेट रही और आराम करने लगी।

दूसरे दिन सवेरे ही ऐंजोलाने फिर बलकारक शोरूवा बनाकर सर अर्नेस्टको पिलाया और फिर अर्नेस्टके पास बैठकर बातें करने लगी।

अर्नेस्टने कहा,—"प्रिय ऐंजोला ! कल बर्नार्डके मुंहसे अल्टन-महलकी बातें सुनकर तुम्हारा दिल कुछ घबड़ा गया था। ऐसा क्यों हुआ ? यदि इसमें तुम्हारा कोई गुप्त भेद न हो तो कृपाकर कारण बताओ और यह अच्छी तरह जान रखो, कि मैं तुम्हारा गुप्त भेद नहीं जानना चाहता।"

ऐंजोला बोली,—"इसके लिये आपको धन्यवाद है, परन्तु आप कृपाकर यह तो बताइये, कि यहांसे टेवीराइट-दलमें घुसकर अल्टन-महलमें जानेका कोई उपाय है ?"

अर्नेस्ट बोला,—"मालूम होता है, वहां तुम्हारा कोई ऐसा सुहृद है, जिसकी सहायता करना तुम्हें अत्यन्त आवश्यक है।"

ऐंजोलाने कहा,—"हां ऐसीही बात है।"

अर्नेस्टने कहा,—"यह काम जरा कठिन है। कोई कितना ही बहादुर क्यों न हो, उसके लिये यह काम सहज साध्य नहीं है।"

ऐ लोला बोली,—"इसी लिये मैं आपसे पूछ रही हूं, क्योंकि आप बहुत सी लड़ाइयां देख चुके हैं। यदि कोई उपाय हो तो बताइये।"

अर्नेस्ट बोला,—"उपाय कोई न कोई निकल ही आयेगा, परन्तु कृपाकर यह तो बताओ, कि वह कौनसा भाग्यवान पुरुष है, ? जिसको तुम्हें इतनी चिन्ता लग रही है।"

ऐ लोला बोली,—"मैं जिसके लिये इतनी चिन्तित हूं, वह एक कैदी ही है। मैं समझती हूं, कि अब भी वह उसी महलमें है। आशा है, इसके अतिरिक्त आप और कुछ न पूछेंगे।"

अर्नेस्ट बोला,—"नहीं, अब कुछ पूछनेकी मुझे आवश्यकता नहीं है; परन्तु मैं चाहता हूं, कि स्वयं तुम्हारे साथ चलकर तुम्हारी कुछ सहायता करूं।"

ऐ लोलाने कहा,—"यदि आप अच्छे रहते तो अवश्य ही मेरी सहायता करते। यह आपकी कृपाका ही फल है, कि कई बार मेरी रक्षा हुई और अभी तक आप की सेवाके लिये जीवित रह सकी; परन्तु यह समय ऐसा नहीं है, कि मैं आपको सहायता करनेके लिये अनुरोध कर सकूं।"

अर्नेस्टने बड़े प्रेमसे कहा,—"प्यारी ऐ लोला! मुझमें ऐसी सामर्थ्य नहीं कि तुम्हारे एहसानोंका बदला चुका सकूं।"

ऐ लोलाने बड़ी नम्रतासे कहा,—"उन बातोंकी अभी कोई आवश्यकता नहीं है, मैं आपसे प्रार्थना करती हूं, कि ऐसी ऐसी चिन्ताओं से अपना चित्त न दुखाइये। और यदि कोई ऐसा उपाय मालूम हो, जिससे मैं टेवोराइट दलके बीचसे अहटन-महलमें जा सकूं, तो कृपाकर बता दीजिये।"

अर्नेस्टने अपने हाथसे जिटकाकी दी हुई अगूठी निकाल कर उसे देते हुए कहा,—"यह अगूठी मुझे स्वय सरदार-जिटकाने दी थी। इसका गुण तुम्हें स्वय मालूम हो जायगा और अब तुम अनायास ही अस्टन-महलमें पहुच जाओगी।"

अर्नेस्टके हाथसे अँगूठी लेती हुई ऐ जोला बोली,—"यद्यपि आप कह रहे हैं, कि इस अगूठीका गुण मुझे पीछे मालूम हो जायगा; परन्तु मुझे यह जाननेकी प्रबल इच्छा है, कि इस अगूठीमें क्या गुण नहीं हैं। आप कृपाकर इस अगूठीके सब भेद मुझे बता दीजिये।"

अर्नेस्टने कहा,—"इसमें सबसे बड़ा गुण यह है, कि चाहे कितना ही सघन टेवीराइट दल क्यों न हो, और कितनी ही रोक टोकका स्थान क्यों न हो, जिसके हाथमें यह अंगूठी रहेगी, वह अनायास ही सब स्थानोंमें पहुच सकेगा।"

अगूठीका गुण सुन ऐ जोला प्रसन्न होती हुई बोली,—"यह आपकी दया है, जो आपने मुझे इतनी बडी सहायता पहुचायी है।"

अर्नेस्टने कहा,—"इसमें कृपाकी कोई बात नहीं है। परन्तु यह निश्चित है, कि इस अगूठीके बिना अपना काम कर लेना तुम्हारे लिये असम्भव था। अब तुम्हारा मनोरथ सिद्ध हो जायगा।"

ऐ जोलाने अर्नेस्टको धन्यवाद देते हुए कहा,—" मैं आपकी अत्यन्त अनुगृहीत हू। मैं जो चाहती थी, वह आपकी कृपासे अनायास ही प्राप्त हो गया।"

इतना कह ऐ जोला विदा होनेके लिये उठ खडी हुई। इस समय उसके हृदयमें मानो भयानक कष्ट हो रहा था,-उसकी आँखें डबडबा । और कलेजा जोर जोरसे धड़कने लगा था।

उसके हृदयका यह भाव समझकर कहा,—"ऐ जोला! सचमुच ही मुझे इसदशामें छोडकर चली जाओगी?"

ऐ लीला इङ्गित स्वरमें बोली,—"लाचार हूं। यद्यपि आपको इस दशामें छोड़ जाना अत्यन्त अनुचित मालूम होता है और इसी लिये मैं अभी तक आ भी नहीं सकी, तथापि अब देखती हूं, कि बिना गये काम न चलेगा। आप अब आरोग्य होरही हैं और एक सप्ताह बाद यहांसे रवाना होनेके लायक भी जायंगे, जबतक आप यहां रहेंगे तबतक दयालु अर्मेस्ट आपकी रक्षा करेगा। इससे आपको किसी प्रकार का कष्ट भी न होगा। यही बातें सोच मैंने निश्चय किया है, कि अपने पति, सहृदयकी भी सहायता पहुंचानी अत्यन्त आवश्यक है इसी लिये आज मैं आपसे प्रार्थना करती हुई विदा होना चाहती हूं।"

अर्मेस्टने कहा,—"यदि तुम दयाकर कुछ दिन और ठहर जाओ तो क्या तुम्हारी किसी प्रकारकी हानि होनेकी सम्भावना है।"

ऐ लीलाने कहा,—"हां, अवश्य है। सम्भव है, कि उस सफेद मुखका फिर दर्शन ही न मिले।"

अर्मेस्टने कहा,—"इसका क्या कारण?"

अब ऐ लीला आश्चर्यसे अर्मेस्ट की ओर देखती हुई बोली,—"मालूम होता है, आप सब बातें समझ बूझकर मुझसे दिल्लगी कर रहे हैं, शायद

अर्मेस्टने अप्रतिभ होकर कहा,—"नहीं नहीं, मैं दिल्लगी नहीं करता। तुम क्या विश्वास करती हो, कि मैं तुमसे दिल्लगी करूंगा?"

ऐ लीला,—"फिर यह रोगके आक्रमणका कारण है, जो आप ऐसा सवाल कर रहे हैं।"

अर्मेस्टने कहा,—"हां, यह सम्भव है। परन्तु अब साफ साफ बताओ, कि उनके जीवनमें तुम सशय क्यों कर रही हो।"

ऐ लीला बोली,—"इसका कारण स्पष्ट ही है। सरदार जिटकाने अष्टन-महलपर आक्रमण किया है, रसदखाना जला दिया गया है।

और सुनती हूं, महलके रहने वाले भूखों मर रहे हैं, फिर वह सफेद स्त्री किस तरह जीवित रह सकेगी।"

अर्नेस्टने सकुचाकर कहा,—"तुम ठीक कहती हो, ऐंजीला! वर्नार्डने ऐसा ही समाचार सुनाया था।"

ऐंजीला बोली,—"अच्छा, अब मुझे क्या आज्ञा होती है?"

अर्नेस्टने उदास होकर कहा,—"अब तुम मुझसे क्या कहलवाया चाहती हो? मेरे हृदयका कोई भाव तुमसे छिपा नहीं है। अतः तुम जो उचित समझो, कर सकती हो।"

अर्नेस्टकी बाते सुन ऐंजीलाको रोमाञ्च हो आया। उसका गला भर्रा उठा और वह अपना चेहरा पीछेकी ओर फेर कुछ सोचने लगी।

ऐंजीला सोचने लगी, कि क्या अर्नेस्ट सचमुच ही उसे हृदयसे प्यार करता है। परन्तु साथ ही वह अभी तक यह भी न भूली थी, कि आयशासे भी उसकी गहरी प्रीति थी और वह उसके प्रेममें मतवाला मालूम होता था। जो कुछ ही अर्नेस्टके प्रति उसने अपना कर्त्तव्य पालन किया है और अब उसे एक दूसरा काम पूरा करना अत्यन्त आवश्यक है।

कुछ देर बाद ऐंजीलाने अपना हृदयवेग रोककर अर्नेस्टकी ओर मुंह फेरा, मानो वह बिदा होनेके लिये तय्यार हो गयी।

अर्नेस्टने उसका चेहरा उदास देखकर कहा,—"ऐंजीला! तुम घबड़ाओ नहीं! तुम अब प्रसन्नतासे जा सकती हो।"

ऐंजीलाने बड़े ही कातर शब्दोंमें कहा,—"इससे आपके हृदयमें किसी प्रकारका कष्ट तो न होगा?"

अर्नेस्टने कहा,—"कष्ट तो अवश्य ही होगा, परन्तु"

ऐंजीला,—"परन्तु क्या? आप चुप क्यों हो गये?"

अर्नेस्ट,—"अब उन बातोंको प्रकट कर लाभ ही क्या है।"

ऐ लीला बोली—"नहीं, आप किसी प्रकारका संकोच न करें, यदि आपके मनमें दुःख हुआ तो मेरा सब परिश्रम ही वृथा हो जायगा; क्योंकि मैं आपके हृदयको प्रसन्न रखना अपना कर्त्तव्य समझती हूं और अपना कर्त्तव्य समझकर ही मैंने आपकी इतनी सेवा की है। यद्यपि आपका रोग अब घट गया है, तथापि आप अभी पूरी तरहसे आराम नहीं हुए हैं। इसलिये आप विशेष चिन्ता या परिश्रम करेंगे तो आपका रोग फिर बढ़ जायगा और मेरा इतने दिनोंका किया कराया वृथा हो जायगा।"

अर्नेस्टने कहा,—"हां, तुम्हारा यह कथन सत्य है; परन्तु क्या करूं, जी नहीं मानता। ऐ लीला तू नहीं समझती कि मैं तुझे कितने प्रेम और आदरकी दृष्टिसे देखता हूं।"

ऐ लीलाने कहा,—"इतना बाध्य होनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। जिसको जितनी शक्ति रहती है, और जो जिस कामको अपना कर्त्तव्य समझता है, वह उसे पूरा करता है। आपने भी कई बार मेरी जान बचाई है और इस समय भी मेरी सहायता की है, फिर इसमें बाध्य होनेकी आवश्यकता ही क्या है?"

अर्नेस्टने कहा,—"जो कुछ हो, तुझे हानि पहुंचाकर अपने स्वार्थ के लिये मैं तुझे नहीं रोका चाहता।"

ऐ लीला बोली,—"मैं भी आपके पास अभी और कुछ दिन रहती; परन्तु अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनी मुझे भी आवश्यक मालूम होती है और इसी लिये आपसे बिदा होना चाहती हूं।"

अर्नेस्टने कहा,—"ऐ लीला! अच्छा जाओ; परन्तु मुझे आशा है, कि फिर तुझे देखनेका अवसर मिलेगा।"

ऐलीला समझ गयी, कि अर्नेस्टके इस कथनका विरुद्ध और कुछ नहीं हो सकता, कि वह उसे

जाया चाहता है; क्योंकि एक बार पहले भी जब वह जगी पोशाकमें उससे मिली थी, तब अर्नेस्टने उसे उच्च पद देनेका जिक्र किया था।

ऐ जीला,—"यद्यपि ईश्वरकी इच्छासे सब काम हो सकते हैं; परन्तु अब आपका दर्शन मिलना किस तरह सम्भव है?"

अर्नेस्टने कहा,—"ईश्वरकी इच्छाके साथ ही साथ उद्योग करनेसे भी बहुतसे काम हो सकते हैं।"

ऐ जीला बोली,—"इसका क्या मतलब है?"

अर्नेस्टने हसते हुए कहा,—"तो क्या मेरा तुम्हारा सम्बन्ध यहीं तक अन्त हो गया?"

अर्नेस्ट की यह बात सुन ऐ जीलाको अपना अनुमान और भी निश्चित मालूम होने लगा और वह बोली,—"क्या आप मुझे अपने साथ वायना ले जाया चाहते हैं?"

अर्नेस्टने कहा,—"क्यों? इसमें हर्ज ही क्या है?"

ऐ जीला मुस्कराती हुई बोली,—"नहीं नहीं, क्षमा कीजिये, मुझे महल अटारियों की अपेक्षा अपना जगली मकान ही अच्छा मालूम होता है।"

यद्यपि ऐ जीलाका यह उत्तर सुन अर्नेस्टके हृदयमें दुःख हुआ, तथापि वह समझ गया, कि आयशासे घनिष्ट सम्बन्ध रहनेके कारण ही ऐ जीलाने ऐसा उत्तर दिया है। जो हो, अर्नेस्टके हृदयमें दृढ़ विश्वास था, कि ऐ जीलासे उसकी फिर भेंट होगी। यह विचारकर उसने उससे उसके जगली मकानमें मिलनेकी प्रतिज्ञा ही कर डाली।

कुछ क्षण बाद ऐ जीला अर्नेस्टको धन्यवाद दे चलनेको तय्यार हो गयी, यह देख अर्नेस्टने जोरसे उसका हाथ पकड़ लिया और कुछ तक दबाये रहा।

ऐ जीला भी थोड़ी देरके लिये मुग्ध हो गई; परन्तु तुरत ही उसे

अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनेका ध्यान हो आया और आयशाकी ओर अर्नेस्टका अनुराग भी स्मरण हो गया। अतः वह तेजीसे अपना हाथ छुड़ा तत्क्षणे बाहर निकल आयी और अपने घोड़े पर सवार हो अष्टन महलकी ओर रवाना हो गयी।

अट्ठासीवां परिच्छेद।

अष्टन महलपर आक्रमण असमाप्त।

हा! इधर कई दिनोंसे अष्टन-महलमें अकालने अपना भयानक प्रभाव जमा रखा था।

लगभग पांच रुपये तक आक्रमण बराबर जारी रहा और इतने दिनोंमें अष्टन-महलमें अन्नके बिना हाहाकार मच गया; क्योंकि पहले ही कहा जा चुका है, कि टेयोराइट लोगोंने रसदखाना जलाकर खाक कर दिया था।

सरदार जिटकाकी इस बुद्धिमत्ता, दूर दर्शिता और चतुरतासे राजकीय दल वालोंको बड़ा भारी धक्का पहुंचा; परन्तु अन्नके बिना जान बचनी कठिन हो रही है, यह कष्ट उन्होंने बड़ी सावधानतासे छिपा रखा।

अब अष्टनका ड्यूक, फादर सोप्रियन तथा लार्ड रोडल्फ सभी मिलकर इस युद्धमें विजय पानेका उद्योग करने लगे। उन लोगोंका यह अनुमान सत्य था, कि टेयोराइट-दलवालोंको यदि जरा भी सन्देह हो गया, कि अन्नके बिना महलके अधिवासियोंको बड़ा कष्ट हो रहा है, तो वे कदापि हटनेका नाम न लेंगे, क्योंकि उन्हें विश्वास हो जायगा, कि कुछ दिनोंतक महलके ओर भी घेर रखनेसे राजदल भूखों मर जायगे। परन्तु इसके विपरीत यदि टेयोर दलको

प्रवास दिलाया जाय, कि रसदखाना जल जाने पर भी महल वालोंको कोई विशेष हानि न हुई और न उन्हें किसी प्रकारका कष्टही पहुंचा बल्कि वे अभी तक उसी प्रकारसे महलकी रक्षा करनेके लिये तय्यार हैं, तो वास्तवमें टेवोराइट-दल अपने दलका तोप, गोला आदि यथेष्ट सामान व्यय करेगा, जिसका फल यह होगा, कि उनका समान घट जायगा और सामान घट जानेके कारण उन्हें महलका घेरा छोड़ पीछे हट जाना पड़ेगा।

वास्तवमें महल वालोंकी यह नीति सराहनीय थी, क्योंकि यदि ऐसा न किया जाता तो जिटका वृथा ही अपना धन बल और जन बल क्यों नष्ट करता।

यद्यपि जिटकाको धोखेमें डालनेके लिये अलटन-महल वालोंने यह कारंवाई कर रखी थी, परन्तु वास्तवमें उन लोगोंकी बड़ी खराब दशा हो रही थी और भूखने भयकर रूपसे उन लोगोंका शिकार करना आरम्भ कर दिया था।

जो हो, यह गुप्त भेद बहुत दिनों तक छिपा न रह सका। एक बार भयकर लड़ाई हुई और उसमें जिटकाके दल वालोंने राजकीय दलवालोंके कुछ मनुष्य कैदकर लिये, बस उन्हें थोड़ा कष्ट देतेही सब भेद खुल गया। यद्यपि दीवालकी लड़ाईमें गोलोंकी भयकर चोटके कारण टेवोराइट-दल वालोंको पीछे हटना पड़ा; परन्तु कैदियोंके कथनसे उन्हें यह विश्वास हो गया, कि अकालने महलमें घुसकर उन लोगोंकी अत्यन्तसहायता पहुंचायी है।

जो हो, जिस दिनसे रसद खाना जला, उसी दिनसे सेना तथाअधिवासियोंके भोजनमें कमी होने लगी और यह कमी धीरे धीरे कसूसी पहुंच गयी तथा अन्तमें अफसरोंको अपने सिपाहियोंसे साफ कह देना पड़ा, कि महलमें रसदकी कमी हो गयी है।

पहले तो उन लोगोंने यह बात इसलिये सुनी अनसुनी करदी; कि अब शीघ्रही महलका फाटक खोल सम्मुख युद्धमें उतरना पड़ेगा तथा इस युद्धका फैसला भी जल्द ही हो जायगा क्योंकि विलम्ब होनेसे सामग्री दिनपर दिन घटती ही जाती थी और अन्तमें उन्हें भूखोंमर कर मृत्युके मुखमें जाना ही पड़ता। परन्तु जब उन्हें एक दिन यह समाचार मिला, कि अब भोजनागारमें एक दाना भी अन्न नहीं है तथा सम्मुख युद्ध भी न होगा, तब तो वे सब घबड़ा उठे।

यह बात सुनतेही सिपाहियोंमें निराशाकी घटा छा गयी और लोग व्याकुल हो भेड़ तथा बैलोंको मार मारकर अपना उदर भरने लगे। महलमें जहां कहीं ये जानवर दिखायी देते वहीं सिपाही उन्हें मारकर खा जाते थे। अब सिपाही अपने अफसरोंको इतनी कड़ी दृष्टिसे देखने लगे, मानो वे ही उनके शत्रु हों। इस समय सिपाहियोंने एक और भी चाल चली, अर्थात् अफसरोंके सामने घोड़ोंको मारनेका विचार प्रकट न किया। नहीं तो अफसर लोग घोड़ोंको भगा देते या अपनी जान बचानेके लिये उन्हें छिपा रखते। जो हो, अब सिपाहियोंने छिपे छिपे घोड़ोंको भी साफ करना आरम्भ किया और कुछ ही दिनोंमें अस्तबल घोड़ोंसे शून्य हो गया। इसके बाद कुत्तोंकी बारी आयी और दो चार दिनोंमें महलके सब कुत्ते भी सिपाहियोंके पेटमें घुसे

परन्तु अब बड़ी ही भयानक दशा आ पहुंची, महलमें कुत्तोंका ही क्या किसी जानवरका नाम निशान तक न रह गया, किसीकी उदर ज्वाला बन्द न हुई। अब सिपाही हताश हो दल बांधकर महल-में बादशाहके सामने एकत्र हुए और हाथ जोड़ उससे इस तरह प्रार्थना करने लगे —

"ऐ मेरे प्रभु! अब हम लोगोंके लिये विलम्ब करनेका समय नहीं भूखके मारे हम लोगोंके प्राण निकलना चाहते हैं,

कुत्ते टूट पड़ते हैं।" यदि महलके किसी भागमें भोजनका सामान रहनेका उन्हें सन्देह भी हो जाता था तो वे जी-जान छोड़कर उस ओर दौड पडते थे वे नौकर जो कुछ दिन पहले अपने मालिकोंके भयसे थर थर कांपा करते थे और सदा भक्ति भावसे उनकी सेवा किया करते थे, आज वही उनके मुखसे ग्रास छीननेके लिये तय्यार थे। अब ऊंचे नीचे दर्जेका कुछ भी विचार न रह गया था। भले भले तथा ऊंचे घरोंकी स्त्रियां नीच औरतों तथा मजदूरिनोंसे खाना छीनती झगड़ती तथा हाथापाही करती थीं। बहुत सी सुन्दर सुन्दर स्त्रियां तथा नययुवतियां भूखकी ज्वालाका प्रभाव न पडनेके लिये बेहद शराब पी जाती थीं और नशेकी झोकमें नीच पुरुषोंको आत्म समर्पण कर देती थी और वे बदमाश उन अबलाओं पर मनमाना अत्याचार करते थे।

इस तरह महलकी भीतरी दशा अत्यन्त शोचनीय हो गयी थी, कोई भी सिपाही किसी अफसरकी आज्ञा नहीं मानता था, सैनिक नियम सब टूट गये थे और किसीको किसीकी पर्वाह न थी। अभी तक महलके बचे रहने का एकमात्र कारण यही था, कि फादर सीप्रियन सिपाहियोंकी झूठी झूठी रिपोर्टें सुना उन लोगोंका हृदय न टूटने देता था।

परन्तु अन्तमें एक विचित्र किम्वदन्ती किले में फैलगयी जिसको सुनते ही सबके सब कलेजा थामकर बैठ गये और एक दूसरेका मुंह इस तरह देखने लगे मानो किसीको कुछ होश-हवास ही नहीं है।

ओह! - वास्तवमें यह किम्वदन्ती नहीं बल्कि एक सच्चा समाचार था और सचमुच ही मनुष्य मनुष्यको खाने लगे थे। सबल निर्बलको मार उसका-मांस भूंजकर खा जाता था। कितने ही स्थानोंपर छोटे छोटे बच्चोंकी हड्डियां पडी हुई मिली थीं तथा कितने ही मस्तक

इधरसे उधर लौटती पाई गयी थी। यद्यपि अक्सर लोग इन हथियारोंका पता लगा लगाकर उन्हें छिपा देते थे, परन्तु यथार्थमें किसीकी हिम्मत न पड़ती थी, कि किसीको सजा दे।

क्योंकि अब लोग जानवर लोगोंके लिये तय्यार हो गये थे और उनमें एक प्रकारका जोश आ गया था, जिससे उनको दण्ड देनेकी किसीकी हिम्मत नहीं पड़ती थी। यही दशा इस समय अल्टन महल की होरही थी। जब बहुतसे मनुष्य भूखसे पीड़ित हों, लोगोंको दबानेके लिये तय्यार होगये और सब प्रकारके नियम भंग होगये, ऐसी अवस्थामें इस नर भक्षणको रोक देना कोई साधारण काम न था और न किसीकी हिम्मत ही पड़ती थी, कि यह नर भक्षण बन्द कर सके।

अब आक्रमण आरम्भ हुए पांच सप्ताह बीत चुके थे और छठा सप्ताह आरम्भ हो गया था। सर अर्नेस्टको बीमार पड़े भी छः दिन हो गये थे। यही समय था, कि पिजीला सर अर्नेस्टसे विदा हो, अल्टन महलकी ओर रवाना हुई थी।

अभी तक सरदार-लिटकाको अल्टन महलकी यथार्थ अवस्थाका समाचार न मिला था; परन्तु अब धीरे धीरे कैदियोंके द्वारा महलके सब समाचार उसे मिलने लगे, उसे यह भी मालूम हो गया, कि अब महलमें मनुष्य-भक्षण आरम्भ हो गया है। यह सब समाचार सुनकर उसने प्रतिज्ञाकी, कि महलपर अधिकार जमाये बिना वह अब आराम न करेगा।

अल्टन-महल वालोंने भी मूर्खसे लड़ कर निश्चय कर लिया कि अब अन्तिम समय आ गया है और अब फैसला हो ही जाना चाहिये। या तो अब टेलोराइट दल वालोंको कुचलकर यहांसे भगा देना चाहिये अथवा स्वयं मारकर विविध कष्टोंको झेलना चाहिये।

टेलोराइट दल वाले भी इतने दिनों तक लड़ते लड़ते व्याकुल

गये थे और उन लोगोंकी इच्छा भी कुछ शीघ्र युद्ध समाप्त कर देनेकी थी। अत दूसरे ही दिवससे दोनो दलोंमें भयानक युद्ध आरम्भ हो गया।

नवासीवां परिच्छेद।

भयानक युद्ध।

आकाश स्वच्छ रहनेके कारण सूर्य्य देव अपनी अनन्तकिरणोंके साथ चमककर आखे खोल युद्धका दृश्य देखनेके लिये तय्यार हो रहे थे। टेवोर पर्व्वतके योद्धागण अल्टन-महलको चारों ओरसे घेरनेके लिये तय्यार हो रहे थे और पूर्वकी ओरसे सूर्यदेव की जो किरणे तालाब तथा महलकी छतोपर पड रही थीं तथा जिनकी चमकसे ढाल, तलवार, बल्लम, बर्छे, सभी चमचमा रहे थे और ऐसा मालूम होता था, मानो बाग बगीचा, महल, अटारी सभी चमकीले शस्त्र बन गये हैं।

टेवोर दल वाले इस तरह दल बाधकर चलते थे, कि उनका रोकना असम्भव मालूम होता था। महल वाले भी भूख प्याससे व्याकुल शेरकी तरह लडनेके लिये तय्यार हो गये थे। एक ओरसे सरदार-जिटका अपनी सेनाके साथ आगे बढ रहा था तो दूसरी ओरसे ड्यूक-अल्टन तथा रोडल्फ उनका स्वागत करनेके लिये अपनी सेनाके साथ तय्यार खड़े थे। बहुतसे टेवोराइट दल वाले जगलसे पेड काट काटकर तालाबमें भरने लग गये थे और अन्तमें उस तालाबको उन लोगोंने पाट दिया। अब अनायास ही सिपाही महल तक पहुचने लगे। कुछ बहादुर सिपाहियोंने तैर कर ही महलको छू लिया और शत्रुओंपर आक्रमण करने लगे। इस तरह सूर्य्योदयके दो घण्टे बाद ही लड़ाई धूमधामसे आरम्भ हो गयी।

एकबार फिर भी दीवालोंपर चढ़नेके लिये सीढ़ियां लगायी गयीं और टेयोराइट सिपाही गोपालपर चढ़नेका उद्योग करने लगे, परन्तु इसका फल विपरीत ही हुआ और दीवालोंपर से बरसती हुई गोलियोंके शिकार बन वे परलोक सिधारने लगे। दोपहर होते होते इस लड़ाईने और भी भयंकर रूप धारण किया क्योंकि अमटन-महलके भूखे सिपाहियोंने फाटक खोल दिया और झुण्डके झुण्ड सिपाही बाहर निकलकर इस तरह टेयोराइट दलपर टूट पड़े और इतनी तेजीसे उन्हें पीछे खदेड़ने लगे, जिस तरह भेड़ियाँ भेड़ोंको खदेड़ा करती हैं।

अपनी सेनाको इस तरह पराजित होते देखकर सरदार जिटका बहुत ही घबड़ा गया, परन्तु उसने अपनी घबड़ाहट किसीपर प्रकट न होने दी क्योंकि वह अच्छी तरह समझ गया, कि राजकीय दलवालोंको यह अधिक प्रबलता प्राप्त हुई है और उनकी हानि बहुत ही भयानक हुई है। तो भी, घबड़ाहटपर भी सरदार जिटकाने इसे अन्तिम युद्ध समझ शेष तक लड़नेका ही विचार स्थिर किया।

अन्तमें सरदार जिटकाका अनुमान सत्य निकला; क्योंकि महलवाले पहलेसे ही भूख प्याससे तङ्ग हो रहे थे। अब टेयोराइट सिपाहियोंकी मारते देख उन्होंने अमटनके ड्यूकसे उनका पीछा करनेके लिये अत्यन्त हठ किया।

अमटनका ड्यूक यद्यपि अच्छी तरह जानता था, कि इसका परिणाम भयानक होगा, तथापि सिपाहियोंका इतना हठ देख, उसे आज्ञा देनी ही पड़ी और राजदलके अधिकांश सिपाही शत्रुओंके पीछे धावा करने लगे, क्षणभरमें ही समस्त सड़कें सिपाहियोंकी भीड़से भर गयीं तथा पैदल सिपाहियोंके पैरोंकी चाप, घोड़ोंकी टापोंकी धूलसे गगनमण्डल इस तरह भर गया मानो घनघोर घटा छा गयी हो।

सरदार-जिटकाने देखा, कि उसकी सेना चारों ओर तितर-बितर हो गयी है, अतः उसने तुरत ही अपने चुने हुए बारह पैदलोंको अपने भागते हुए सिपाहियोंको रोकनेके लिये भेजा। उन्हें यह भी कह दिया, कि उन्हें समझा दे, कि सरदार लड़नेसे पीछे नहीं हटते।

जिटकाकी इस चालने बड़ा काम किया। उन पैदलोंके मुंहसे अपने सरदारकी इच्छा सुन, भागते हुए सिपाही जमकर खड़े हो गये और दूसरे ही क्षण पीछा करनेवालोंको रगेदते हुए, अलटन-महलकी ओर बढ़ने लगे।

अब लड़ाई अलटन-महलकी चहारदीवारीके बाहर होने लगी। धूल उड़ उड़कर आकाश मेघाच्छन्न सा हो गया और तोप तथा बन्दूकोंकी आवाज बिजलीकी कड़क सी मालूम होने लगी। ओह! सचमुच ही यह युद्ध बड़ा भयानक था।

लड़ाईके मैदानमें, जिस ओर सरदार जिटका जाता था, उसी ओर घमासान युद्ध होने लगता था; क्योंकि सरदारको देखते ही बहादुर टेवोरके हृदयमें एक प्रकारका जोश उत्पन्न हो जाता था। यह देख जेनरल जिटकाकी हिम्मत और भी बढ़ती जाती थी और उसके उस प्रचण्ड उत्साहके सामने किसीकी खड़े रहनेकी हिम्मत नहीं पड़ती थी। वह जिधर जाता उसी ओर मानो प्रलय मच जाता था और उसकी लम्बी तथा न रुकनेवाली तलवार सामने पड़नेवालोंका सर धड़से अलग किये बिना न रहती थी तथा उस जगह पर लाशोंका ढेर लग जाता था।

देखते देखते दोनों दलोंके सरदारोंमें मुठभेड़ हो गयी और ड्यूक-अलटनने बड़ी बहादुरीसे जिटकाको अपनी तलवारका शिकार बनाना चाहा पर बहादुर सरदार-जिटकाने उसका वार बचाकर बड़े वेगसे उसपर आक्रमण किया। दोनों सरदारोंकी तलवारें आपसमें गुथ गयीं। यह मौका रोडल्फको अच्छा मिल गया और उसने

जिटकापर दाहिनी ओरसे आक्रमण किया। लड़ाईके फनमें अच्छा उस्ताद और बहादुर रहनेके कारण जिटकाने रोडनकका वार अच्छी तरह बचा लिया और अपनी तलवार इस जोरसे उसकी तलवारपर मारीकी रोडनकके हाथकी तलवार टूटकर जमीनपर गिर पड़ी।

अब ब्रूक अस्टनने देखा, कि उसका पुत्र निःशस्त्र हो गया है और सम्भव है, कि वह शीघ्र ही जिटकाकी तलवारका शिकार बने, अतः उसने एक क्षण भी विलम्ब न कर जिटकाके घोड़ेकी पीठमें अपना बर्छा घुसेड़ देना चाहा; परन्तु जिटकाका घोड़ा बर्छेकी चोट खाकर भी डरा न भड़का और इसके विपरीत जिटकाकी तलवारने अस्टनके ब्रूकको घोड़ेसे नीचे गिरा दिया।

दूसरे ही क्षण वह घमण्डी ब्रूक तथा उसका पुत्र बन्दी कर लिया गया और यह समाचार बिजलीकी तरह सिपाहियोंमें फैल गया, कि राजकीयदलका नेता ब्रूक अस्टन तथा उसका पुत्र कैद कर लिया गया।

यह समाचार सुनते ही राज-दलवाले सिपाही एकदम हतोत्साह हो गये और टेयोराइट दलवालोंका उत्साह दूना बढ़ गया।

इस समाचारके थोड़ी ही देर पहले दोनों सेनाओंके सिपाही अपनी अपनी जान हथेलीपर रखकर लड़ रहे थे, खूनकी धारा बह रही थी, लाशोंका ढेर लग गया था और लगता ही जाता था, कोई भी सिपाही अपनी जानकी पर्वाह नहीं करता था; परन्तु यह समाचार सुनते ही राज-दलवालोंका जोश एकदम ठण्डा पड़ गया और सबके सब शिथिल हो गये। भूख प्याससे वे पहले ही व्याकुल हो रहे थे, इस समय केवल उत्साहमें आकर लड़ रहे थे। अब इस समाचारके सुनते ही वे मुर्देकी तरह थरथराकर जमीनपर बैठ गये और फिर कुछ कर न सके।

राज-दलवालोंका घमण्ड चूर हो गया, राजकीय झण्डा गिरा दिया गया और राज दलवाले हताश हो अपना भविष्य विचारने लगे।

इसके विपरीत प्रजातन्त्र-दलवाले मनुष्योंका हौसला बढ़ता ही गया। भागते हुए शत्रुओंका पीछा करनेसे वे बाज न आये और मूली गाजरकी तरह उन्हें काट काटकर जमीनपर गिराने लगे। कोई सरदार न रहनेके कारण ड्यूक अल्टनकी सेना एकदम निराश हो गयी और जिसे जिस ओर राह मिली वह उसी ओर भाग गया।

यह दृश्य बड़ा ही हृदय विदारक तथा भयङ्कर हो रहा था। जिस तरह किसान अन्न काटकर मैदानमें छोड़ देते हैं, उसी तरह इस युद्ध-क्षेत्रमें चारों तरफ मुर्दों का ढेर दिखाई देता था। सड़कोंपर लाशें पड़ी थीं, बाग बगीचोंमें मुर्दे सड़ रहे थे, तालाबके किनारे मरेहुओंकी संख्या बढ़ी हुई थी, घायलोंके कराहनेकी आवाजसे सुननेवालोंका हृदय-विदीर्ण हो रहा था, कहीं प्यासके कारण घायल तड़प रहे थे, परन्तु मुंहसे बोलनेकी शक्ति न रहनेके कारण जल माग नहीं सकते थे, वे केवल मुंह फाड़ फाड़कर अपने इधर उधर देखते और हाथ पैर पटक रहे थे।

तालाबका वह जल जो सदा चमका करता था, आज रक्तके कारण लाल हो रहा था, लाशोंपर चील, कौवे, गिद्ध, बैठ उनका मांस नोच नोचकर खा रहे थे, अधमरे और घायलोंपर जब वे पक्षी अपना अत्याचार करते तो उन्हें भयानक कष्ट होता था और वे अपने हाथ पैर पटक असह्य वेदना प्रकट करते थे।

अल्टनकाड्यूक और रोडरिक दोनोंही काठके पुतले बने हुए थे। उन्हें किसी प्रकारकी रियायतकी आशा न थी और जान भिटकाकी प्रकृति को वे अत्यन्त निष्ठुर समझते थे। इन दोनों घमण्डियोंकी इस समय वही दशा हो रही थी, जो विषैले सांपकी जहरमोहरा सूंघने बाद होती है।

दुर्दैव अथवा पर्वतपर पधारना ही चाहते थे, सन्ध्याका समय हो चुका था, साथ ही कटटन महलभी उजाड़ हो गया था। जो कुछ बचिलुचे सिपाही थे, वे मृतकके समान हो रहे थे और इसमेंपर भी टैरोरदमवालोंके हाथों अपनी जान बचनेकी उन्हें यदापि आशा न थी। महल, अटारियां, बाग, बगीचे, सभी श्मशानके समान मालूम हो रहे थे और अंधेरा पड़नेके कारण गीदड़, सियार, भयानक आवाजें सिखा रहे थे।

जब सन्ध्या हो गयी तब सरदारने सिपाहियोंको अपने अपने डेरोंमें जानेकी आज्ञा दे दी। बहुतसे घोड़े जिनके मालिक सवार मर गये थे और जो इधर उधर भागे हुए थे, अब निराश होकर मुर्दों के बीचमें घूमने और अपने सवारको ढूंढ़नेके लिये लाशोंको सूंघने लगे। परन्तु जब उन्हें मालिक जीवित न मिले, तब पागल होकर इधर उधर दौड़ने लगे, मानो उनके हृदयमें किसी तरह शान्ति ही नहीं मिलती थी।

हां, इस समय रणभूमिकी यही दशा हो रही थी। बाग तथा मैदानोंके वे पेड़, जो काट डाले गये थे, उनके अतिरिक्त जितने पेड़ थे, वे इस तरह खड़े थे, मानो अपने बन्धु वियोगमें वे भी उदास हो रहे हों। लाशोंके बीच ढाल, तलवार, बर्छे, बल्लम, आदि शस्त्र इधर उधर बिखरे पड़े थे। जङ्गली जानवरोंकी भयानक आवाजें सुन पड़ती थीं और इससे भी बढ़कर अवस्था उस स्थानकी थी, जहांकी जमीन खूनके कारण कीचड़के समान हो रही थी और उसमें सिपाहियोंकी हड्डियां तथा कपड़े लिपटे रहनेके कारण उस स्थानपर पैर रखना कठिन हो रहा था।

ऐसे ऐसे कितने ही स्थानोंमें तोपके गोलोंके गिरनेके कारण गड्ढे पड़ गये थे और तोपकी गाड़ियोंके भारी पहियोंने नहर सी

रखी थी, जिसमें रक्त भर रहा था और पेडकी काटी हुई बडी बडी आखें हाथियोंके समान पडी हुई थी।

ऐसे भयानक दिल दहलानेवाले स्थानपर अस्त होते हुए सूर्यकी किरणे पड़नेके कारण उसका दृश्य और भी भयानक हो रहा था, परन्तु ओह! इन बातोंको, मुर्दों को, टूटे फूटे अस्त्रोंको तथा ऊबड खाबड भूमिको, कुछ भी पर्वाह न कर वनकन्या ऐ जोला दृढ पदोंसे आगेकी ओर बढती ही चली जाती थी।

नव्वेवां परिच्छेद।

ऐंजोला और टेवोराइट सिपाही।

हा, यह वही बहादुर स्त्री थी जिसने कुछ देर पहले सर अर्नेस्टसे एक ऐसे दूसरा उपकारका काम करनेके लिये विदाली थी, जिसे उसका उदार हृदय पूरा करनेके लिये बाध्य कर रहा था।

परन्तु ओह! उसके हृदय पर इस समय कैसे कैसे भयानक भाव उदय हो रहे थे। ज्यों ज्यों वह मुर्दों के बीचसे आगे बढती जाती थी, त्यों त्यों उसके हृदयमें भयानकसे भयानक भाव उत्पन्न होते जाते थे अन्तमें और एक ऐसा भाव उसके हृदयमें उत्पन्न हो गया, जिससे उसका समूचा शरीर काप उठा, पैर लड़खडाने लगे और भयानक दृश्य न दिखाई देनेके लिये उसने अपनी आंखे बन्द कर लीं तथा धीरे धीरे ऐसा भाव उसके हृदयमें उत्पन्न हो गया और वह इतनी कमजोर हो गयी, कि उसे किसी छत्र अथवा तोप खींचनेवाली गाडीका सहारा ले खड़े हो जाना पडा।

कुछ देरमें जब उसका चित्त शान्त हुआ, तब वह फिर आगे बढी और तुरत ही एक टेवोराइट सिपाहीसे उसकी चार आंखें हुई।

आयशाने जोरसे उसका माथा मूर्त्तिके भीतर ढकेल दिया।

(पो० मू० बानवेवां परिच्छेद)

Burman Press, Calcutta

उसे देखते ही वह सिपाही बोल उठा,—"तुम कौन हो ?"

ऐंजोलाने बड़े ही मीठे स्वरमें उत्तर दिया,—"मैं शत्रु नहीं हूं।" इतना कह ऐंजोलाने अपना वह हाथ आगे बढ़ा दिया, जिसमें वह अर्नेस्टको दी हुई वह अंगूठी पहने हुए थी जो अर्नेस्टको स्वयं जान लिटकाऐ लिखी थी।

उस अंगूठीको देखते ही सिपाही बोला,—"चलो आओ।"

और ऐंजोला उस विचित्र अंगूठीके प्रभावसे मन ही मन प्रसन्न होती हुई, उस रणक्षेत्रमें और भी आगे बढ़ने लगी।

इसी तरह दूसरा, तीसरा, चौथा, पांचवां और छठा सभी सिपाही उस अंगूठीको देखकर सन्तुष्ट होते गये और अब वह बनकन्या ठीक टेवोराइट पड़ावके पास जा पहुंची और उस स्थानको भी तेजीसे पार करती हुई उस ओरके गिरजेके पास पहुंची जो अल्टन-महलके दक्षिण भागमें जङ्गलके बीचोबीच बना हुआ था।

वह उस गिरजेमें घुस गयी और यद्यपि ईसामसीहका क्रूश चिह्न टेवोराइट दलवालोंने उठा दिया था, तथापि वह घुटने टेककर प्रार्थना करने लगी और कुछ देर बाद उठकर यह देखने लगी, कि कोई उसे देख तो नहीं रहा है।

उस गिरजेका भीतरी भाग बहुत लम्बा चौड़ा न था और अस्त होते हुए सूर्य्यकी सुनहरी किरणें पेड़ोंके छिद्रोंसे छन छनकर उसमें आ रही थीं। इसी कारण उसमें वैसा अन्धेरा न था और वह उस पदार्थको अच्छी तरह ढूंढ़ सकती थी, जो उसे आवश्यक था। फिर इस बातकी परीक्षा करनेके लिये कि उसे कोई देख तो नहीं रहा है, वह उस गुप्त दरवाजेको खोजने लगी, जो अल्टन महलके तहखानेमें घुसनेकी राह थी।

वह एक पत्थरकी पटिया थी, जिसके उठानेसे तहखानेमें

राह निकल आती थी। गिरजेकी सहनमें जितने पत्थर जड़े हुए थे, उनमें से ही एक ऐसा पत्थर था, जिसका सङ्केत उस सफेद बुड्ढोंने ऐ जीलाको बता दिया था।

परन्तु ऐ जीला उस पत्थरके निशानको भूल गयी थी, कईबार उसने मनमें सोचा, कि उस बुड्ढोंने पत्थर पहचाननेके कौन कौनसे निशान बताये थे, परन्तु किसी तरह भी उसे वे निशान याद न आये, अन्तमें वह लाचार हो, उसी स्थानपर गाढ़ चिन्तामें निमग्न हो गयी।

इसी तरह दस मिनिटका समय और बीत गया, ऐ जीलाने बहुत खोज ढूंढ की, परन्तु किसी प्रकार भी उसे तहखानेमें जानेकी राह न मिली।

अब धीरे धीरे रात्रिका अन्धकार बढ़ता ही गया और उसके लिये उस पत्थरका पहचानना और भी कठिन हो गया, पर उस राहका खोजना उसके लिये बहुत ही आवश्यक था।

अचानक उसके कानोंमें कुछ शब्द सुन पड़े और अब ऐ जीला, जो झुककर पत्थर खोज रही थी, सीधी होकर खड़ी हो गयी और ध्यानसे सुनने लगी, कि वे शब्द किधर से आ रहे हैं?

इसी समय किसीने पूछा,—"कौन पहरेपर है, जिसे छुट्टी देनी होगी और दूसरा कौन सिपाही पहरेपर आयेगा?"

यह शब्द किसी अफसरके मुंहसे निकला हुआ मालूम होता था।

वह फिर बोला,—"क्या इस भागमें कोई पहरा नहीं है?"

सिपाहीने उत्तर दिया,—"नहीं।"

अफसरने फिर पूछा,—"क्यों?"

उस सिपाहीने कहा,—"नित्यका यही नियम है, कि इस छोटे गिर्जेके अतिरिक्त इस भागमें और कहीं पहरा नहीं रहता।"

इसके बाद ही घोड़ों की टापोंके शब्द सुन पड़े और ऐंजोला तुरन्त ही समझ गयी, कि अपने मातहतोंके साथ कोई टेवोराइट अफसर इधर ही आ रहा है।

अब ऐंजोला डरी और गिर्जेके एक कोनेमें, जहां घोर अन्धकार था, छिपकर खड़ी हो गयी।

परन्तु उन सिपाहियोंमें से एक, जो अभी उस अफसरके साथ आये थे, हाथमें बड़ी मशाल लिये हुए आगे बढ़ा, जिसने गिर्जेका समस्त अन्धकार क्षणभरमें दूर कर दिया। रोशनीसे समूचा गिरजा जगमगा उठा।

भीतर घुसते ही उस मनुष्य की दृष्टि ऐंजोलापर पड़ी और वह घबड़ाहटसे बोल उठा,—"कौन इस गिर्जेमें छिपा है?"

यह बात सुनते ही वह अफसर अपने दस बारह सिपाहियोंके साथ गिर्जेमें घुस आया।

उस सिपाही की बात कानमें पड़ते ही ऐंजोलाने दबदबासे कहा,—"न तो मैं इस स्थान की रहने वाली हूं और न टेवोराइट-दलकी दुश्मन।"

इतना कह ऐंजोला उस अफसरके सामने आकर खड़ी हो गयी, साथ ही उसके हाथकी अंगूठी चमक पड़ी।

उस अंगूठी को देखते ही उस अफसरने कहा,—"अब इस खोसे कुछ पूछनेकी आवश्यकता नहीं है; क्योंकि इसके हाथ की अंगूठी ही सब प्रश्नोंका उत्तर दे रही है।"

इसी समय एक सिपाही आश्चर्य्यसे बोल उठा,—"ओह! क्या यह सम्भव है?"

इतना कह वह सिपाही बड़े आश्चर्य्यसे ऐंजोलाको घूर घूर कर देखने लगा।

तुरत ही ऐंजोलाकी स्मरण हो आया, कि इस मनुष्यको उसने कहीं देखा है, परन्तु उसे यह स्मरण नहीं आता था, कि उसने उस सिपाही को किस स्थान पर देखा था।

कुछ देर बाद वह सिपाही फिर बोल उठा,—"ईश्वरकी कसम! यह वही चेहरा है।"

दूसरा सिपाही बोला,—"नहीं, झूठ न बोलो, इनको तुमने कहां देखा होगा?"

पहला सिपाही,—"ईश्वरकी कसम खाता हूं, फिर भी मुझे झूठा बनाते हो?"

तीसरा सिपाही,—"अच्छा, बताओ इन्हें कहां देखा था?"

पहला सिपाही,—"ये बातें पीछे होंगी पहले मुझे इनसे कुछ बातें पूछ लेने दो।"

चौथा सिपाही,—"तुम अच्छी तरह पूछ सकते हो, इस कामके लिये तुम्हें कोई न रोकेगा?"

पहला सिपाही बोला,—"आह! इस चेहरेको मैं मरने पर भी नहीं भूल सकता, यह वही चेहरा है। परन्तु आश्चर्य्य यह है, कि यह एक स्त्री है। (ऐंजोलाकी ओर देखकर) ऐ सुन्दरी! पहले मैंने आपको एक पेजकी शक्लमें देखा था, आपने लगी पोशाक भी पहन रखी थी। वास्तवमें आप बड़ी धोखेबाज हैं।"

अब अफसरने अपने सिपाहियोंको ऐंजोलाकी ओर घूर घूर कर देखते हुए देख बहुत ही बुरा माना और डपटकर कहा,—"तुम्हारा क्या मतलब है; यह स्त्री कौन है?"

सिपाही,—"आप कहते हैं, कि यह कौन है?"

अफसर बोला,—"हां मैं यही जानना चाहता हूं।"

सिपाहीने कहा,—"हां, हां, मैं इसे अच्छी तरह पहचानता हूं ।"

अफसर चिढ़कर बोला,—"फिर बताते क्यों नहीं, कि यह कौन है ?"

सिपाही बोला,—"क्या यह वही चोर नहीं है, जिसने मुझे धोखा दिया था ?"

अफसरने पूछा,—"ठीक बताओ, कि कहां और कब धोखा दिया था ?"

सिपाहीने पहले की तरह ही कहा; क्योंकि उसके हृदयमें स्वयं सन्देह हो रहा था,—"जब मैं पहरा दे रहा था ।"

अफसरको सिपाहीका यह व्यवहार बहुत बुरा मालूम हुआ और उसने छड़ी आवाजमें कहा,—"कहां देखा था ?"

सिपाही बोला,—"बैरक्स इस किलेमें, जहां तीन शरीफ कैद किये गये थे ।"

अफसरने अब ध्यानसे ऐंजीला की ओर देखते हुए कहा,—"सो होकर इसने तीन कैदियोंको छुड़ानेका साहस किया ?"

सिपाहीने कहा,—"अब मुझे कोई सन्देह नहीं है ।

अफसर बोला,—"यह असम्भव बात है ।"

सिपाहीने कहा,—"आप भले ही विश्वास न करें; परन्तु मैं कहता हूं, कि असम्भव कुछ भी नहीं है । मैं इस चेहरेको कदापि भूल नहीं सकता ।"

इसी समय एक दूसरा सिपाही बोल उठा,—"तुमने कोई नशा तो नहीं खाया है, जो इस तरह बक रहे हो ?"

इतनेमें ही तीसरा बोला,—"वास्तवमें बात ऐसी ही है ।"

इसी समय चौथा सिपाही कह बैठा,—"नहीं नहीं; इसकी बुद्धि लोप हो गयी है । भला इस दुबली पतली स्त्रीका क्या कभी इतना

साहस हो सकता है, कि यह प्रेंगके किले में घुसकर तीन तीन कैदियोंको छुड़ा दे?"

पांचवां सिपाही,—"यह अवश्य भूलता है।"

दूसरा सिपाही बोला,—"सम्भव है, कि यह भूलता हो और इसी प्रकारका कोई दूसरा चेहरा इसने देखा हो।"

पहला सिपाही,—"तुम लोग इतना हल्ला क्यों मचा रहे हो?"

अब अफसरको ये बातें अच्छी न मालूम हुईं और वह झिड़ककर बोला,—"इसीलिये, कि तुम्हारी ये बातें सबको असम्भव मालूम होती हैं।"

पहला सिपाही,—"यदि ऐसा ही है, तो फिर इस स्त्रीसे ही पूछा जाये।"

दूसरा सिपाही,—"और यदि इनकार कर दे।"

पहला सिपाही,—"मुझे विश्वास है, कि यह कदापि इन्कार न करेगी।"

दूसरा सिपाही,—"यह तुम्हें कैसे विश्वास होता है?"

पहले सिपाही ने कहा,—"इन बातोंसे तुम्हें कोई मतलब नहीं, स्वयं सब बातें बता देगी। मुझे विश्वास होता है, और मैं कसम खाकर कह सकता हूं, कि यह एक बार का देखा हुआ चेहरा मुझे कदापि भूल नहीं सकता।"

अफसरने कहा,—"हां, इस चेहरेको देखने पर फिर भूलना असम्भव है।"

इतना कह उस अफसरने ऐ जौलाकी ओर देखा तो उसे कुछ घबड़ायी हुई पाया।

अब उस अफसरने ऐ जौलासे कहा,—"यदि हम लोगोंका कोई अपराध हो तो आप क्षमा करें। यदि आप यह अंगूठी न दिखातीं

तो भी मैं आपकी शुभाभिलाषा करता अब कृपाकर यह बताइये, कि मेरे सिपाहियोंने जो कुछ कहा है, क्या वह सत्य है?"

ऐंजीला गर्वसे माथा उठाकर बोली,—"मैं यह कदापी नहीं कह सकती, कि उसका अनुमान असत्य है।"

इतना सुनते ही वह सिपाही बोल उठा,—"मैंने पहले ही कहा था मैं।"

अफसर बोला,—"अच्छा, अब तुम बकवाद न करो और सुनो कि यह सुन्दरी क्या कहती है।"

उस अफसरके मुंहसे इतना निकलते ही ऐंजीलाने कहा,—"अब मुझे कुछ कहना सुनना नहीं है। केवल इतना ही कहना है, कि यदि इस अंगूठीमें कुछ बल है, तो आप लोग मुझे यहां से जाने दें।"

अफसरने कहा,—"नहीं; सुन्दरी! आप माफ करें, अब ऐसा नहीं हो सकता।"

ऐंजीला कुछ घबड़ाहटसे बोली,—"नहीं होनेका कारण? क्योंकि यह अंगूठी कई बार अपना प्रभाव जमा चुकी है।"

अफसरने कहा,—"और इसलिये इसका प्रभाव अच्छा हो सकता है।"

ऐंजीला बोली,—"फिर आपकी जो इच्छा हो करें।"

अफसर बोला,—"आप माफ करें, यह मेरी इच्छा नहीं, बल्कि सरदार की इच्छा है।"

ऐंजीला—"परन्तु मुझे आपकी बातें सुन आश्चर्य्य होता है।"

अफसरने कहा,—"इसमें आश्चर्य्य की कोई बात नहीं है।"

ऐंजीला,—"आश्चर्य्य की बात इससे अधिक और क्या हो सकती, कि सरदार लिटकाकी दी हुई अंगूठीका प्रभाव अब नहीं रहा?"

अफसरने कहा,—"कारणवश ऐसा होना कोई आश्चर्य्य की बात नहीं है।"

गये थे, तब अर्नेस्ट नामके एक मनुष्यने यही अंगूठी दिखाकर उ
मनुष्यको छुड़ा दिया था।"

दूसरा सिपाही बोला,—"हां, उस समय इस अंगूठीके प्रभाव
कुछ भी उलट फेर न हुआ था।

तीसरा सिपाही बोला,—"सरदारने यह अंगूठी देकर उसकी भला
की थी; परन्तु उसके बदले इसका बुरी तरह उपयोग किया गया।"

चौथा सिपाही बोला,—"और यही कारण है, कि उसका फल भी
विपरीत हुआ।"

पहला सिपाही,—"मुझे अफसोस है, कि इस अंगूठीसे यदि अनुचित
कार्य न लिया गया होता तो यह सुन्दरी अवश्य ही बच जाती।"

दूसरा बोला,—"जब यह प्रमाणित हो गया, कि इसीने कैदियों
को छुड़ाया है, तब कौन इसे बचाना चाहेगा?"

अफसर बोला,—"ऐसी बातें कदापि अपने मुंहसे न निकालो
जो कुछ फैसला करना होगा; वह स्वयं सरदार करेंगे। हमें औरतों
के साथ भलमनसाहतसे पेश आना चाहिये।"

वह सिपाही बोला,—"आपका कहना ठीक है; क्योंकि हमारे
सरदार औरतोंकी बड़ी खातिर किया करते हैं।"

दूसरा सिपाही ऐ जीलाकी ओर देखकर बोला,—"आशा है, आप
क्षमा करेंगी। यदि सरदार हम लोगोंकी बातें सुन पावेंगे तो बहुत
ही अप्रसन्न होंगे।"

अफसरने कहा,—"हां, हमलोग अपने अपराध के लिये आपसे
क्षमा मांगते हैं।

ऐ जीला चुप रही। अब वह अफसर ऐ जीलाको साथ ले वहांसे
बाहर निकलना ही चाहता था, कि उसके पैरोंमें एक पोटली लगी
वह आश्चर्य्य से बोल उठा,—"अरे! यह क्या है?"

इतना सुनते ही सब सिपाही चढ़ा कर उस स्थानपर आ पहुंचे। इसी समय उस अफसरने कहा,—"ठहरो, पहले इस पोटलीकी परीक्षा करनी चाहिये।"

इसके बाद वह ऐंजीलाकी ओर देखकर बोला,—"मालूम होता है, यह पोटली आपकी है और आपके प्रति कोई अनुचित व्यवहार करना मैं उचित नहीं समझता; परन्तु कर्त्तव्य वश पोटलीकी परीक्षा करना अत्यन्त आवश्यक है।"

ऐंजीलाने कहा,—"आप अवश्य ही अपना कर्त्तव्य पालन करें। मैं आपकी दयालुता देखकर बहुत ही प्रसन्न हूं। आप अब किसी प्रकारकी चिन्ता न करें और आनन्दसे अपना कर्त्तव्य पालन करें।"

अफसरने कहा,—"मैं आपको इस कार्य में सहायता देनेके लिये धन्यवाद देता हूं।"

इतना कहकर उस अफसरने पोटली खोली तो उसमें किसानोंके पहिरनेके कपड़े दिखाई दिये। इसके अतिरिक्त उनमें कुछ खाने पीनेकी चीजें थीं। उनमें ऐसा कोई भी सामान न था जो टेंगोराइट-दलके विरुद्ध मालूम होता। अतः उस अफसरने वह पोटली ज्योंकी त्यों बांधकर ऐंजीलाको अपने पीछे पीछे आनेके लिये कहा।

अफसरने कहा,—"अब आप कृपाकर मेरे साथ आइये।"

ऐंजीलाने कहा,—"मैं चलती हूं।"

इसके बाद उस अफसरने अपने सिपाहियोंसे कहा,—"तुम लोग कुमारीसे दूर हटकर चलो, जिसमें उन्हें सन्देह न होने पावे कि हम लोग उनके साथ सख्तीका व्यवहार कर रहे हैं।"

ऐंजीलाने इस व्यवहारके लिये अफसरको धन्यवाद देते हुए कहा,—"वास्तवमें आपका व्यवहार बहुत ही उत्तम है और इससे सरदार-

जिटकाने इस तरह हसते हुए, जिससे उन सिपाहियोंके अफसरको पूरा पूरा विश्वास हो गया, कि ऐ जीलाको कठोर दण्ड न मिलेगा, कहा,—"टैवोराइट-दलके विरुद्ध यह काम करनेसे तुम्हें क्या लाभ मिला? तुम सत्य सत्य बताओ, कि इतने भय और खतरेमें अपनी जान डालकर तुमने यह काम क्यों किया?"

ऐंजीला बड़ी ही कोमल आवाजमें बोली,—"सरदार! मैं जानती हूं, कि आपको ऐसा प्रश्न करनेका पूरा पूरा अधिकार है और मुझे भी आपकी दया-भिक्षा मागते हुए आपको उत्तर देना ही चाहिये; परन्तु कारणवश मैं आपके प्रश्नोंका उत्तर नहीं दे सकती।"

सरदारने फिर उसी तरह हसते हुए कहा,—"तब मालूम होता है, कि उन तीनोंमें से किसीके साथ तुम्हारा प्रेम था।"

ऐंजीलाने जरा जोरदार और गम्भीर आवाजमें, जिससे उसके हृदयकी शुद्धता और दृढ़ता मालूम होती थी कहा,—"नहीं सरदार! ऐसा नहीं है।"

सरदारने कहा,—"अच्छा, इस विषयमें मैं तुमसे कुछ अधिक न पूछूंगा (उस अफसरकी ओर घूमकर) परन्तु यह क्यों कैद की गयी है?"

अफसरने कहा,—"सरदारकी जय हो! यह स्त्री अल्टन-महलके दाहिने ओरवाले गिर्जेमें छिपी हुई दिखायी दी।"

इसपर जिटकाने ऐंजीलाकी ओर देखकर आश्चर्यसे कहा,—"ऐ! तुम हमलोगोंके पड़ावके भीतर किस लिये आयी थीं और किस तरह उन सिपाहियोंकी दृष्टि बचाकर यहांतक आ पहुंची, जो जगह जगहपर पहरा दे रहे थे।"

उस अफसरने कहा,—"यह आपकी खास अगूठी पहने है।"

ऐ जीलाने कहा,—"सरदार! और इसी अगूठीके बदलेमें क्या मैं आपसे दया-भिक्षा मांग सकती हूं?"

लिटकाने आश्चर्य में आकर कहा,—"मेरी अगूठी! यही जो मैंने उस आस्ट्रियन बहादुरको दी थी? यह क्या बात है! इस स्त्रीका और उस बहादुर नाइटका क्या सम्बन्ध है?"

ऐ जीलाने कहा,—"केवल सामान्य प्रीति! यह प्रीति जिसकी बदौलत मैं बहनकी और बहन भाईकी सहायता करनेके लिये बाध्य है और यही कारण है, कि जब मैंने अपना काम उन्हें बतलाया तब उन्होंने यह आश्चर्यजनक अगूठी मुझे प्रदान की।"

लिटकाने कहा,—"और वह काम क्या है?"

ऐ जीलाने कहा,—"वह काम! वह काम अल्टन महलमें घुसना है। आप देखते हैं, कि मैं आपके प्रश्नोंका उत्तर सच और साफ साफ दे रही हूं।"

उस बहादुर सरदारने कहा,—"तुम्हारी प्रत्येक बातोंसे तुम्हारे हृदयकी उदारता और सत्यता मालूम होती है।" इसके बाद कुछ ठहरकर उसने उस अफसरको बाहर चले जानेका इशारा किया और फिर ऐ जीलाकी ओर देखकर बोला,—"अब हमलोग अकेले हैं और तुम और भी साफ साफ बातें बता सकती हो। मुझे मालूम होता है, कि तुम्हारी बातोंमें यह रहस्य-जाल छिपा है, जिसे मैं सुलझा नहीं सकता। अब यह बताओ, कि तुम कौन हो और क्यों तुमने इतने बड़े खतरेके काममें हाथ डालकर प्रेगके किलेसे उन राजकीय कैदियोंको छुड़ा दिया? फिर उस आस्ट्रियन बहादुरसे तुम्हारी किस तरह जान-पहचान हुई, जिसने तुम्हें यह अगूठी दी और इसके बाद तुमने इस भयानक अल्टन महलमें घुसनेकी इच्छा क्यों प्रकट की?"

ऐ जीलाने कहा,—"आपके तीनों प्रश्नोंका उत्तर देनेके लिये

तुझे पहले यह कह देना अत्यन्त आवश्यक है, कि मैं ड्यूक रोशनबर्गके जङ्गलके रखवाले विल्डनकी पालिता पुत्री हूं और इसीलिये मेरा नाम ऐंजीला-विल्डन रखा गया है।"

जिटका बोला,—"ऐंजीला-विल्डन! हां मैंने यह नाम पहले भी सुना है। ओह! मुझे याद हो गया। ऐ सुन्दरी, तुमको सर अर्नेस्टने मोल्डाव नदीमें डूबनेसे बचाया था और इसके बाद तुम प्रेगके किलोंमें कुछ दिनोंतक आयशाकी मेहमान भी रही थीं।"

उस जङ्गली कन्याने कहा,—"हां, मैं वही ऐंजीला-विल्डन हूं, और वह दूसरा सवाल जो आपने मुझसे पूछा है, बहादुर सरदार! उसका भी जवाब हो गया, क्योंकि आप जानते हैं, कि सर अर्नेस्ट डी कोमरने मेरी जान बचायी थी और इसी तरह आप खयाल कर सकते हैं, कि घटनाने मुझे आयशासे मिलाया और इसके बाद समयने उसे दोस्तियोंमें बदल दिया। आपका तीसरा प्रश्न अल्टन महलके सम्बन्ध में है। और मैं साफ साफ कहती हूं, कि उस महलमें एक ऐसी स्त्री है, जिसपर मेरी आन्तरिक भक्ति है और जिसे आराम पहुंचानेके लिये मैं सब कुछ सहनेको तय्यार हूं तथा उसी लिये अल्टन-महलमें जाना चाहती थी, ताकि उसे अकालके करालगालसे बचाऊं।"

इतना कहते कहते ऐंजीलाने अपनी पोटली खोलकर सरदार-जिटकाके पैरोंके पास रख दी।

सरदार जिटकाने बड़े प्रेमसे कहा,—"तुम एक ही सुन्दरी हो। जिस तरह तुम्हारा हृदय उदार है, उसी तरह तुम अत्यन्त बहादुर भी हो। परन्तु वह स्त्री कौन है, जिसने तुम्हारा हृदय आकर्षित कर लिया है? अच्छा, अब मुझे साफ साफ बताओ, कि वह कौन है? मैं इसी क्षण उसकी रक्षाके लिये आवश्यक सामान और सहायता भेजूंगा

र यदि यह अकाल पीड़ित महलसे निकल जाना चाहेगी तो उसे
ी दूंगा। साथ ही मैं यह भी प्रतिज्ञा करता हूं, कि चाहे
प्रजातन्त्र की कितनी बड़ी विरोधिनी क्यों न हो।" चाहे उसने
ोराइट दलके विरुद्धमें कितने ही कर्म क्यों न किये हों और चाहे
उसने उस राज-दलके लिये कितना ही उद्योग क्यों न किया हो,
उसका भूतकाल भूल लिया दिया गया है, मैं उसे अवश्य अवश्य माफ
तीके लिये क्षमा कर दूंगा। हां, अब शीघ्र बताओ, वह स्त्री कौन
? क्योंकि मैं अभी उसको सहायता पहुंचाया चाहता हूं।"

ऐंजीलाने कांपती आंखें बढ़ाते हुए कहा,—"हे दयालु सरदार!
आपका हृदय जितना बहादुर है उतना ही उदार भी है। आपने उसपर
बड़ी दया दिखायी है, पर मैं तुम्हें क्या उत्तर दूं, क्योंकि मैं स्वयं
ही जानती, कि वह स्त्री कौन है, जिसने मेरे हृदयपर इस तरह
अधिकार जमा लिया है। उसका नाम, ओहदा और विपत्ति जिसने
उसको बुरी दशामें पहुंचा दिया है—ये सब बातें मुझसे छिपी हुई हैं।"

जिटकाने कहा,—"तुम्हारी सभी बातें रहस्यमयी और मुझे
अन्धकारमें डालने वाली हैं। अच्छा यही बताओ, कि तुम्हारी वह
जान बहिनी रहती कहां है और किस तरह मैं उसके पास सहा-
ता पहुंचा सकता हूं?"

ऐंजीलाने कांपते हुए कहा,—"सरदार! मुझे क्षमा करें और
सफेद स्त्री! तू भी मुझे क्षमा करना; क्योंकि मैं जो कुछ करना
चाहती हूं, वह तेरी भलाईके लिये ही है।"

इसके बाद उसने अपनी जाकेटके पाकेटमें से एक बेग निकाला।
उसे उस मखमली बेगके भीतरसे एक अंगूठी निकाली जो उस
फेद स्त्रीने उसे दी थी और सरदार-जिटकाके आगे घुटने टेककर
घबराहट भरी आवाजमें कहने लगी,—"कोई गुप्त आवाज, मेरी

आत्मासे कह रही है, कि यह अगूठी मेरी जबानसे अधिक उस स्त्रीका हाल आपको बता सकेगी।"

ओह! इस समय यदि जिटकाके पास वज्र गिर पड़ता तो भी उसपर इतना प्रभाव न पडता, जितना कि उस अगूठीके जवाहरातकी चमकसे पडा। उसने झपटकर वह अगूठी ऐंजोलाके हाथसे छीन ली। उसपर एक दृष्टि पड़ते ही वह समझ गया, कि इस अगूठीमें क्या भेद भरे हैं और साथ ही हजारों तरहके गुप्त विचार, जिनमें प्रेम और परिताप सम्मिलित था, उसका वीर हृदय मसोसने लगा। साथ ही जिस तरह एक लम्बे समूची झोपडीका अन्धकार दूर कर देता है, उसी तरह उस अगूठीने आइनेकी तरह उसे सब भेद समझा दिये।

वह टूटी-फूटी और कापती हुई आवाजमें बोला,—"ऐ जोला! अब मुझे सन्देहमें न रख, शीघ्र बता, कि वह स्त्री, जिसने तुझे यह अगूठी दी है, क्या अभीतक जीवित है?"

ऐ जोलाने उदास शब्दोंमें कहा,—"वह अलटन-महलके भयानक तहखानेमें कैदियोंकी तरह अभी भी जीवित है।"

इतना सुनते ही जिटका जोशमें आकर अपने हाथ मलने लगा। इसके बाद कुछ विचार मनमें उठते ही वह ऐ जोलाकी ओर झुका और उसके चेहरेकी परीक्षा करता हुआ बोला,—"हां—ओह! हां, यह वही है। परन्तु अब मुझे सन्देहमें न रहना चाहिये। अच्छा सुन्दरी! क्या तूने कभी अपने माता पिताको भी देखा है?"

ऐ जोलाने कापते हुए कहा,—"नहीं, मैं अपने बचपनमें ही उन इमान्दार पुरुष और स्त्रीके जिनके विषयमें मैं पहले ही कह चुकी हूं, सुपुर्द कर दी गयी थी।"

अब और भी जोशमें आकर जिटकाने कहा,—"और तेरी उम्र! तेरी उम्र क्या है?"

ने जोलाने उसी तरह कहा,—"तेरह वर्षको।"

लिटका इतना सुनते ही बोल उठा,—"ओह! तब यह वही है। प्रकृति मुझे स्वयं बता रही है, मैं अच्छी तरह समझ रहा हूं, सब समझ रहा हूं। ओह! ऐ जोला! आ, मेरी गोदमें आ, कि जिस तरह हम दोनोंको मिलानेवाला ईश्वर सच है, उसी तरह यह भी सच है, कि तू मेरी बेटी है और मैं तेरा पिता हूं।"

"ओह! मेरे पिता।" यह कहती हुई ऐ जोला जोरसे चिल्ला उठी। उसपर एक विचित्र प्रकारका जोश छा गया और दूसरे ही क्षण वह बहादुर लिटकाकी गोदमें जा गिरी।

एकानवेवां परिच्छेद।

अल्टन-महलके तहखानेमें अन्तिम प्रवेश।

ऊपर कहे हुए दृश्यके लगभग आध घण्टे बाद ऐ जोला और लिटका दोनों ही उस छोटे गिरजेकी ओर चले, जो अल्टन-महलके दक्षिण भागमें था। इस समय लिटका अच्छी पोशाक पहने हुए था; परन्तु उसके माथेपर एक मखमली टोपी थी, जिसकी आभा उसके बहादुर चेहरेपर पड़ रही थी और वह बन कन्या बड़ी साड़ी पोशाक पहने हुई थी। दोनों तेजीसे उस पड़ावको पार कर रहे थे और इस तरह वे शीघ्र ही उस स्थानपर पहुंच गये, जिसका जिक्र ऊपर किया जा चुका है।

इस समय भी उस गिर्जेमें वही सिपाही पहरा दे रहा था, जिसने जोलाको पहचाना था। अब लिटकाको उसके साथ देख और यह समझकर, कि सरदारकी इसपर बड़ी कृपा है, वह कांप उठा

और मन ही मन भय खाने लगा, कि पहचाननेके कारण यह कहीं कुछ शिकायत न कर दे; परन्तु ऐ जोलाने उसका डरा हुआ चेहरा देखते ही उसपर एक ऐसी स्नेहमयी दृष्टि डाली, कि उस सिपाहीका सारा भय दूर हो गया और उसका चेहरा दमक उठा।

गिर्जेमें पहुंचकर दीवालसे लगा हुआ वह लोहेका चिराग, जिसकी धुंधली रोशनी उस छोटे गिर्जेमें फैल रही थी, जिटकाने अपने हाथमें उठा लिया और गौरसे गिर्जेकी सहनमें जड़े हुए पत्थरोंके जोड़ोंको देखने और पोला मालूम करनेके लिये पैरोंसे ठोंकने लगा, परन्तु बहुत कुछ परिश्रम करनेपर भी उसे ऐ जोलाके समान ही निराश होना पड़ा।

अब जिटकाने ऐ जोलाकी ओर देखकर कहा,—"क्या तुम्हें निश्चय है, कि अल्टन-महलमें जानेकी राह इसी जगहसे है और यहींका पता तुम्हें बताया गया था?"

ऐ जोलाने कहा,—"हां, प्रिय पिता! मुझे विश्वास है, कि मैं भूल नहीं कर रही हूं। वह गुप्त दरवाजा यहीं कहीं है।"

जिटकाने कहा,—"परन्तु वह अल्टन-महलपर आक्रमण होनेके कारण बन्द तो नहीं कर दिया गया?"

जिटकाकी बातने ऐ जोलाको चौंका दिया और वह कुछ कहना ही चाहती थी, कि इसी समय गिर्जेका वही पहरेदार भीतर घुस आया।"

जिटका उस पहरेदारका चेहरा देखते ही समझ गया, कि यह कुछ कहना चाहता है; इसलिये उसको अपने पास आते देख उसने पूछा,—"तुम क्यों हम लोगोंका पीछा कर रहे हो?"

उस सिपाहीने नम्र शब्दोंमें कहा,—"सरदार! क्षमा करें। आपको देखकर यही मालूम होता है, कि आप कोई चीज खोज रहे

हैं, जो आपको अभीतक नहीं मिली है, और आपके भागने यह भी मालूम होता है, कि इस गिर्जेकी मदनमें आप कोई गुप्त दरवाजा जो किसी घटकेके सहारे खुलता है, खोज रहे हैं।"

जिटकाने कहा—"परन्तु यह कदापि सम्भव नहीं है कि मेरे चेहरेको देखकर ही तुमने इतनी बातें समझ ली हों। यह सच है, कि मैंने तुमसे कोई बात छिपानेका उद्योग नहीं किया है; परन्तु आप ही मैं यह नहीं समझ सकता, कि तुम इस गुप्त भेदको किस तरह समझ गये। तुम साफ साफ बताओ . . . "

उस सिपाहीने कहा,—"वीर सरदार! मुझे आपसे छिपानेकी कोई आवश्यकता नहीं है। सच बात यह है, कि आज दस दिन या दस रात हुई, मैं इसी स्थानपर पहरा दे रहा था। गिर्जेमें कोई चिराग नहीं था और क्षीण चन्द्रमाकी हलकी रोशनी पड़ रही थी। दिनभर खड़े रहनेकी थकावटसे मैं थककर गिर्जेकी सीढ़ीपर बैठना ही चाहता था, कि "

जिटकाने घबड़ाहटसे कहा,—"फिर क्या हुआ।"

उस सिपाहीने कहा,— सरदार! क्षमा करें। मैं उस दिन बहुत ही थक गया था और सीढ़ीपर बैठते ही ऊँघने लगा था, कि एकाएक एक प्रकारकी आवाजने मुझे चौंका दिया और चन्द्रमाकी हलकी रोशनीसे मैंने देखा, कि कब्रमेंसे उठते हुए मुर्देके समान एक मनुष्यकी गर्दन उस खदनसे बाहर निकली हुई है। ओह! उस मनुष्यका चेहरा बहुत ही पीला और दुबला हो रहा था तथा उसके सब केश पक गये थे। वह घबड़ाहटसे अपने चारों ओर देख रहा था।"

बीचमें ही ऐ लोला बोल उठी,—"हाँ, यह अल्टन-महलका बड़ा खानसामा ह्यूबर्ट था। इस सिपाहीका कथन अक्षरशः सत्य है।"

उस सिपाहीने अब प्रसन्न होकर कहा,—"मैं धर्म्मपूर्वक

विश्वास दिलाता हूं, कि मैंने कुछ ही क्षण उसका चेहरा देखा; परन्तु उस चेहरेको देखकर मैं इतना घबडा और डर गया, कि घण्टो-तक उसका प्रभाव मुझे मालूम होता रहा।"

जिटकाने पूछा,—"और क्या वह फिर तुरत ही गायब हो गया?"

सिपाहीने जवाब दिया,—"हां, वह तुरत ही गायब हो गया, क्योंकि मैं भयके कारण चिल्ला उठा था। बस मेरी आवाज सुनते ही वह फिर जमीनमें गायब हो गया और इसके बाद ही ऐसी आवाज आयी, मानो कोई भारी चीज गिर पडी हो।"

जिटकाने कहा,—"तुम ठीक कहते हो। अच्छा, फिर क्या हुआ?"

सिपाहीने कहा,—"आपकी कृपाके लिये धन्यवाद है। अब मैं अपना किस्सा शीघ्र ही समाप्त करता हूं। मैं सत्य कहता हूं, कि मैं कोई डरपोक मनुष्य नहीं हूं, परन्तु मैं यह निःसङ्कोच कह सकता हूं, कि इस घटनाने मुझे बहुत ही डरा दिया था। मैं इस तरह अपनी आखें मलने लगा, मानो मैं कोई स्वप्न देखकर जाग रहा होऊं, परन्तु बहुत गौरकर देखनेपर भी फिर उस मनुष्यका कोई चिन्हतक न दिखायी दिया। तब मैंने स्थिर कर लिया, कि आज अवश्य ही मैंने कोई भूत देखा है। इसलिये कि मेरी बाते सुनकर सब कोई हसेंगे, मैंने यह बात किसीसे न कही। दूसरे दिन सवेरे ही मैं यहा आकर पत्थरोंकी परीक्षा करने लगा, परन्तु उस घटनाके सम्बन्धमें कुछ भी स्थिर न कर सका। तब मैंने यह सिद्धान्त निकाला कि या तो मैंने स्वप्न देखा था अथवा सचमुच ही मुझे भूत दिखायी दिया था।"

अब दरवाजेका पता न लगनेके कारण निराश होकर जिटकाने कहा,—"क्या तुम्हें कुछ और भी कहना है या तुम्हारा कथन समाप्त हो गया?"

उस सिपाहीने कहा,—"मैं इस लिये ठहरा था और अब इतना कहना है, कि जब मैं तीन घण्टे पहरा देनेके लिये यहां नियुक्त किया गया, तब मैं बहुत ही अप्रसन्न हो उठा था। परन्तु मैं नहीं कह सकता, कि इसमें या लज्जा जिसमें मेरी जबान रोक ली और मैं कुछ भी न कह सका। जो हो, जीहो गार्ड चला गया, मैं इन पत्थरोंकी परीक्षा करनेसे अपनेको रोक न सका और ठीक उसी जगह परीक्षा करने लगा, जहां उस बुड्ढेने माथा उठाया था। बड़ी प्रसन्नताकी बात है, कि इसबार मेरे हाथ एक ऐसा खटका लगा, कि जिसके दबाते ही तहखानेका दरवाजा आपही आप खुल गया।"

जिटकाने इसबार बड़ी ही तेजी और घबराहटसे पूछा,—"कौनसा पत्थर? कहां है वह खटका?"

उस टैलोराइट-सिपाहीने हाथसे खटका दबाते हुए कहा,—"यहां इस पत्थरको दबाइये तुरत ही यह गुप्त द्वार खुल जायगा।" और सचमुच ही वह दरवाजा खुल गया।

इसबार जिटकाने बड़ी खुशीसे कहा,—"मेरे प्रिय बन्धु! तुमने मेरा बड़ा काम निकाला है और इसके लिये तुम्हें पूरा पूरा इनाम भी मिलेगा। अब तुम इस दरवाजेपर पहरा दो, मैं भीतर जाता हूं तथा ध्यान रखो, कि यदि मैं आध घण्टेके भीतर न लौट आऊं, तो तुम पचास सिपाहियोंको सावधान कर इस तहखानेमें तुरत भेज देना।"

उस सिपाहीने कहा,—"आपकी आज्ञा अच्छी तरह पालन की जायेगी।"

"बहुत अच्छा।" जिटकाने कहा,—(ऐ जोलाकी ओर घूमकर) "अब हमलोगोंको इस तहखानेमें उतरना चाहिये।"

इतना कह सरदार जिटका हाथमें मशाल ले तेजीसे ..

उतरने लगा और उसकी बेटी ऐ जोला उसके पीछे पीछे जाने लगी। ज्यों ज्यों वे आगे बढ़ने लगे, त्यों त्यों वहांके भयानक दृश्य और भिन्न भिन्न प्रकारकी कब्रे देखकर उनका कलेजा हिलनेलगा। उस तहखानेमें उन दोनोंके जूतोंकी आवाज गूंजने लगी।

इस स्थान पर हम उन लोगोंका भाव वर्णन करनेमें अधिक समय नष्ट न करेंगे, क्योंकि घटनाके भयानक चक्रने उन दोनोंको तुरत ही घेर लिया था।

पाठकोंको स्मरण होगा, कि जिटकाने लोहेका चिराग अपने हाथमें ले लिया था और वह टेवोराइट-सिपाही गिर्जेके अन्धकारमें ही वहां रह गया था। यदि उसे किसी प्रकारकी रोशनी मिलती थी, तो वह पेड़ोंसे छनकर आती हुई चन्द्रमाकी चांदनी थी, जिससे उस छोटे गिर्जेका अन्धकार किसी कदर दूर हो रहा था। बिचारा सिपाही जिटका और ऐ जोलाके सम्बन्धपर मन ही मन विचार रहा था और यह भी सोच रहा था, कि इतनी हड़बड़ीके साथ उनके तहखानेमें जानेका कारण क्या है? हां, जिस समय उसका ध्यान इन्हीं विचारोंमें लग रहा था, उस समय भी चन्द्रमा की धीमी रोशनी उस गिर्जेके भीतरी भाग पर पड़ रही थी और इसी रोशनीमें एक स्त्रीको आगे बढ़ते हुए देख, वह चौंक कर घबड़ा उठा।

"कौन आ रहा है?" सिपाही ने जोरसे पूछा और इसके बाद ही उसकी तेज आखोंने बता दिया कि एक लांबी और सुन्दर स्त्री-काली लबादेसे अपनेको छिपाये हुई आगे बढ़ती चली आ रही है।"

सिपाही फिर जोरसे बोल उठा,—"कौन आ रहा है?"

अब उस स्त्रीने बड़ी ही मोहनी भाषामें कहा,—"कौन आ रहा है। तुम पूछते हो कौन आ रहा है? और मैं तुम्हे विश्वास दिलाती हूं, कि मैं एक दास ही हूं।"

यह सुन आवाजको सुनते ही सिपाही प्रसन्नतासे बोल उठा,—"आह! इस आवाजको मैं बहुत पहचानता हूं।"

"हां जिस तरह तुम मेरी आवाज पहचानते हो, उसी तरह मेरा चेहरा भी पहचानते होगे।" इतना कहकर उस स्त्रीने अपने चेहरेको काली नकाब हटाकर और अपना चेहरा इस तरह घुमाकर उस सिपाहीके सामने कर दिया; कि चन्द्रमाकी निर्मल चांदनी उसके दमकते हुए चेहरेपर बहुत पड़ने लगी।

वह सिपाही चेहरा देखते ही प्रसन्न होकर बोला,—"ओह! आप फिर इस लोगोंके दलमें आ गयी? आपके विषयमें तो बड़ी ही दुःख भरी बातें सुननेमें आयी थीं। परन्तु जो हो, अभी टैवोराइट-सिपाही आपको किसी प्रकारका कष्ट न पहुंचाकर आदर ही करेंगे।"

उस स्त्रीने हंसकर कहा,—"नहीं, नहीं, अभीको मुझपर ऐसी ही दया नहीं है; परन्तु हां, तुम्हारी प्रकृति कुछ उदार मालूम होती है। अच्छा अब यह बताओ, कि सरदार जिटका उस स्त्रीके साथ किधर गये हैं? मैंने यहां तक उनका पीछा किया था, उन्हें इस गिर्जेमें घुसते देखा था, परन्तु नहीं कह सकती, कि यहां आकर फिर वे लोग किधर गायब हो गये।"

वह सिपाही बोला,—"वे यहीं तक गये हैं।" इतना कहकर वह उस गुप्त दरवाजेकी ओर देखने लगा, जिसका पत्थर अभी तक खुला हुआ था।

"ऐं; इस तहखानेसे क्या मतलब है? और तुम्हारी बातों तथा दृष्टि से क्या मतलब निकल रहा है।" उस स्त्रीने आश्चर्यमें आकर कहा और फिर कोई बात मनमें आते ही वह घबड़ाहट तथा आश्चर्यसे बोल उठी,—"क्या यह राह अल्टन महलके उसी तहखानेमें पहुंचती है, जिसके विषयमें बहुत सी भयानक बातें सुननेमें आयी हैं?"

उस सिपाहीने कहा,—"आपका अनुमान नि सन्देह ठीक है, और सरदार तथा वह स्त्री दोनों ही इसी तहखानेमें गये हुए हैं।"

"तब मैं भी जाऊंगी।" इतना कहकर वह तेजीसे उस दरवाजेमें घुसने लगी।

वह सिपाही अब घबड़ाकर बोल उठा,—"तुम उनका पीछा करोगी! परन्तु मैं कदापि ऐसी आज्ञा नहीं दे सकता।"

"ऐ, तुम मुझे न जाने दोगे, तो देखो, तुम्हारी यह बात मुझे अच्छी न लगेगी।" वह स्त्री बोली।

सिपाहीने कहा,—"मुझे क्षमा कीजिये, मैं क्या करूं? क्या सरदार जानते हैं, कि आप इस टेवोराइट पडावके भीतर ही हैं? यदि यह बात भी हो तो, फिर आप इस तरह उनका पीछा क्यों कर रही हैं?"

उस स्त्रीने कहा,—"बहुत ठीक, अब तुम्हारा प्रश्न बहुत ही उचित हुआ।"

सिपाहीने कहा,—"ईश्वरकी शपथ, मैं आपको दूसरे भावसे नहीं देखता। अच्छा, आप जाये और मैं ईश्वरसे प्रार्थना करता हूं, कि वह आपको कुशलसे रखे।"

वह स्त्री बोली,—"अच्छा, तुम कुछ न डरो, तुम्हारा बाल बांका न होगा।" इतना कहकर वह तेजीसे उस तहखानेमें उतर गयी।

बानवेवां परिच्छेद।

घटना-चक्र।

हां, इस समय जिटका और ऐंजोला उस तहखानेमें आगे बढ़ते चले जाते थे और कुछ ही क्षण बाद वे उस स्थानपर जा पहुंचे,

कहा, "बेरोनेस धर्मिष्ठाकी कब्र बनी हुई थी। उस पर कन्या उसपर लगे हुए पत्थरको चार अपने पिताका नाम भी दिखाया, जो उसपर लिखी हुई इबारतको पढ़ते ही लोगोंने बोल उठा,— "ओह! इस सहस्रानेका भयानक गुप्त भेद और झूठी इबारत!"

इतना कह सरदार लिटकाने उस कब्र परसे अपनी दृष्टि फेर ली और ऐंलोलाके साथ तेजीसे आगे बढ़ने लगा। अब उस चिराग़की धुंधली रोशनी, जो लिटका हाथमें लिये हुए था, दो सफेद कपड़ोंके बीचमें रखे हुए एक ताबूतपर पड़ी और ऐंलोला उस नीलको देखते ही गहरा चौंक पड़ी; परन्तु लिटका, जो बड़ी बड़ी लड़ाइयां देख चुका था और जिसके हृदयसे मुर्दों का भय दूर हो गया था, तुरत ही उस ताबूतके पास जा पहुंचा और झटपट उसने उसपरका काला कपड़ा उठा दिया।

ऐंलोलाने उस ताबूतमें रखे हुए मुर्देपर दृष्टि न पड़नेके लिये अपनी आंखें घुमा ली थीं; परन्तु इसी समय लिटकाके मुंहसे निकली हुई आश्चर्यजनक चीखने उसका ध्यान फिर उस ओर आकर्षित कर लिया और उसने भी बड़े आश्चर्यसे देखा, कि उस ताबूतमें मुर्दा और उसकी कफनके बदले सोने-चांदीके गहने, सिक्के तथा जवाहरातका ढेर लगा हुआ है।

लिटकाने कहा,—"आह! यही वह खजाना है, जो राजा ने जेस अपनी उस कन्याके लिये छोड़ गया था, जो अकालमें ही इस संसारसे उठ गयी; परन्तु आश्चर्य की बात तो यह है, कि वह बेरोनेस-डेमलेन क्या हो गयी, जिसने एलोआवेश तथा उसका खजाना मेरे सुपुर्द करनेकी प्रतिज्ञा की थी?"

इतना कहते हुए लिटकाने उस ताबूतका ढकना ज्योंका त्यों रख दिया और फिर ऐंलोलाके साथ ही साथ आगे बढ़ने लगा और

कुछ ही देरमें वे दोनों उस कमरेमें पहुंच गये, जिसमें पीतलकी मूर्त्तिसे सम्बन्ध रखने वाली मेशीनरी रखी हुई थी।

"ओह! यह बड़ा ही भयानक और भीषण दृश्य है।"—उस वन-कन्याने कांपते हुए कहा और भयसे वह अपने पिताकी बाहोंसे लिपट गयी। फिर बड़ी ही कांपती हुई आवाजमें कहने लगी,—"इसका भयानक काम याद आते ही मेरा हृदय "

"हां, मनुष्य की सूरत में रहने वाले दैत्योंका यह काम है—" इतना कहते कहते बहादुर लिटकाका वीर हृदय भी कांप उठा और उसकी लोहे जैसी मजबूत नसें तड़तड़ा उठीं तथा एक प्रकारका भय सूचक भाव उसके चेहरेपर उस समय छा गया, जब उसने ध्यानसे उस मेशीनरीकी ओर देखा।

इसी समय ऐ जोला बड़े ही मधुर शब्दोंमें बोल उठी,—"पिता जी! मैंने तो आपसे पहले ही कहा था, कि आपको यहां बहुत सी काले, भयानक मेशीनें और भीषण सन्नाटा दिखायी देगा और इन्हीं भयानक स्थानोंमें उस जीवको खोजना पड़ेगा, जिसे पानेके लिये आपका हृदय तड़प रहा है? क्या मैंने आपसे पहले ही निवेदन नहीं कर दिया था, कि अल्टन-महलका तहखाना ऐसे ऐसे गुप्त भेदों तथा डरावने पदार्थों से परिपूर्ण है, जिनका प्रभाव मनुष्यके हृदयको दहला देता है?"

लिटका बोला,—"तुमने अवश्य कहा था, और मैं भी ईश्वर की शपथ खाकर कहता हूं, कि मैं इस महलके इन नारकीय यन्त्रोंको शीघ्रही समूल नष्ट कर डालूंगा।"

इतना सुनते ही ऐ जोला घबड़ाहटसे बोल उठी,—"ऐसा न करें पिता! हम लोगोंको स्मरण रखना चाहिये, कि हम लोग एक उदार और धार्म्मिक कार्यके लिये यहां आये हैं।"

जिटका बोला,—"हां, तुम ठीक कहती हो। अच्छा, अब हम भयानक कमरेमें चलें चलो।" इसके बाद वह आप ही आप कहने लगा,—"सम्भव है, कि आपका भी इसी पीतलकी मूर्त्तिके भयानक दर्शनका शिकार बनी हो।"

इसी समय ऐ जोलाने एक ओरको ओर इशारा करके कहा,—"अब हमलोग शीघ्र ही उस स्थानपर पहुंच जायंगे, जहां अभिलषित पदार्थ जिन आंखोंको मुझे दर्शन आया है।"

सरदारने एक ठण्डी सांस लेकर कहा,—"मालूम होता है, कि वह इस तहखानेमें कब नहीं रहती। हां, शायद मुझे यह बात मनमें ही न लानी चाहिये।"

ऐ जोलाने बड़ी घबड़ाहटसे कहा,—"ऐ ईश्वर! कृपाकर उसे अकालके कराल गालसे बचा दे।" इतना कहते कहते उसका सारा शरीर कांप उठा। वह बड़ी व्याकुलतासे फिर बोली,—"परन्तु यदि वह जीवित है, तो अवश्य ही हम लोगोंको इसी अन्धकारमय तहखानेमें मिलेगी?"

जिटका बोला,—"ईश्वर करे, ऐसा ही हो।"

अब पिता पुत्री दोनोंने पीतलकी मूर्त्ति वाले कमरेमें प्रवेश किया और ज्यों ज्यों जिटका के हाथ वाली चिरागकी धुंधली रोशनी उस मूर्त्ति पर पड़ती गयी, त्यों त्यों बहादुर जिटकाका शरीर भी कांपने लगा।

जिटकाकी यह दशा देख ऐ जोला बोली,—"यहां अधिक ठहरनेकी आवश्यकता नहीं। इस मूर्त्तिको देखतेही भयसे मेरी रगोंका खून जमने लग जाता है।"

जिटका बोला,—"अच्छा, चलो फिर इस भयानक

लोग अपना काम शुरू

अब जिटका तथा ऐ जीलाने एक गोल कमरेमें प्रवेश किया। अभी उस कमरेमें उन दोनोंने पैर ही रखे थे, कि इसी समय किसी कल-पुर्जेके चलनेकी भयानक आवाज उनके कानोंमें पड़ी, जिसके सुनते ही वे लोग घबड़ाकर एक दूसरेका मुंह देखने लगे और तुरत ही उन्हें दीवालके समान एक बड़ा दरवाजा अपने सामने ही खुलता हुआ दिखायी दिया।

ओह! जिटका और ऐ जीलाको आपसमें दृष्टि मिलाने और एक शब्द कहनेका भी अवसर न मिला, कि एक मनुष्य हाथमें एक तेज रोशनीका चिराग लिये हुए उस कमरेमें आ पहुंचा, परन्तु ज्योंही अपने हाथकी रोशनीमें उसने उस कमरेमें दो मनुष्योंको देखा, वह आश्चर्य और भयसे चिल्लाकर भागना ही चाहता था, कि ऐ जीला बोल उठी,—"हावर्ट! हावर्ट! हम लोग मित्र हैं, शत्रु नहीं!"

ऐ जीलाकी मधुर आवाज सुनते ही हावर्ट ठहरकर बोला,—"ओह! क्या यह सम्भव है? ऐ ऐ जीला! तू यहां क्या कर रही है, और यह तेरा साथी कौन है?"

ऐ जीलाने अपने पिताकी ओर घूमते हुए उसका हाथ पकड़कर कहा,—"ये, मेरे प्यारे पिता, टेरोराइट-दलके सरदार जान जिटका हैं।"

इसबार हावर्ट कांपती हुई आवाजमें बोला,—"ओह! तुम्हें सब भेद मालूम हो गये! तब तुमने सरदारको निश्चय ही वह अगूठी दे दी है, जो तुम्हें उस सफेद लेडीने दी थी, परन्तु अफसोस! अफसोस!! तुम पहले क्यों न आयीं? ओह! क्यों न आयीं?"

इतना कहते कहते हावर्टने आंखोंसे बहती हुई आंसुओंकी धारा अपने हाथसे पोंछ डाली।

ऐ जीला उसकी यह अवस्था देख घबड़ाकर बोली,—"हे ईश्वर!

कहो सरदार क्या मतलब है? तुम्हारी ऐसी दशा क्यों हो रही है?"

सरदार लिटकाने भी अपना सब परिश्रम तथा जाति द्वेष हटाकर आगे कहा,—"बोलो, सब मनुष्य, जल्द बताओ।"

डाक्टरने टूटी फूटी और घबड़ाहट मिली आवाजमें कहा,—"बोह! तुम लोगोंको सुनानेके लिये मेरे पास ऐसे समाचार हैं।"

तुरत ही ऐ जोला बोल उठी,—"और वे समाचार? मैं प्रार्थना करती हूं, कि अब मुझे सन्देहमें न रखकर सच्ची बातें बतादो। क्या मेरी माकी कोई दुःख पहुंचा है? हां, अब मैं जान गयी हूं, कि वे मेरी माता हैं?"

लिटका अब दोनों आवाजमें बोल उठा,—"ऐ जोला! तुरंत पूरा समाचार सुननेके लिये अब तय्यार हो जा। क्या तू नहीं देखती, कि यह दयालु बुड्ढा तेरी बातोंका उत्तर नहीं दे सकता है? रंज तथा दुःखसे इसका कण्ठ बन्द हुआ जाता है, तथा इसकी आंखोंसे लगातार आंसुओंकी धारा बह रही है। इसीसे हम लोग उस सत्य बातका पता लगा सकते हैं, जो इसके हृदयमें छिपी हुई है। (डाक्टरकी ओर देखकर) क्या मेरा अनुमान सत्य नहीं है?"

डाक्टरने रोते हुए कहा,—"बहादुर सरदार! आपने बहुत ही ठीक कहा है। वह हृदयानन्दमय स्त्री अब इस संसारमें नहीं है।"

लिटकाने बड़ी ही दर्दभरी आवाजमें कहा, जिससे मालूम पड़ता था, कि भीतरही भीतर उसका कलेजा मसोस रहा था,—"अब नहीं है!!"

ऐ जोला भी बोल उठी,—"ऐ अब नहीं है!" इसके बाद ही वह कलेजा थामकर उसी खाटपर बैठ गयी।

लिटकाने तेजीसे अपनी कन्याको उठाया और कुछ कहना ही

चाहता था, कि उस बड़े कमरेसे, जिसका दरवाजा अभी खुला हुआ था, बहुतसे स्त्री-पुरुष कई निकल आये। वे लम्बे लम्बे काले गाउन पहने हुए थे और स्त्रियां ननोंके समान सफेद वस्त्र पहने थीं। वे सभी ऐ जोला, सरदार तथा ह्वार्टको घेरकर खड़े हो गये, परन्तु ह्वार्टके अनुरोध करनेपर वे जिटका तथा ऐ जोलाको साथ लिये हुए एक दूसरे बड़े कमरेमें चले गये।

ह्वार्टने दरवाजा बन्द कर दिया। जिटका अपनी कन्याको सम्हालनेकी चेष्टा करने लगा। यद्यपि जिटकाके ढाढस दिलाने-पर ऐ जोला बहुत कुछ सम्हल गयी, तथापि उसके चेहरेपर आंसुओंकी धारा बराबर ही बहती रही और दुःखसे उसकी छाती फूलने लगी।

कुछ देर बाद ह्वार्ट बोला,—"यद्यपि इस महलके सभी मनुष्य भूख-प्याससे व्याकुल हो रहे हैं, तथापि हमारी मालिकिन अकालके कारण परलोक नहीं सिधारी है। बहुत दिनोंतक दुःखमें पड़ी रहनेके कारण एकाएक उनके हृदयकी चाल बन्द हो गयी। इसके अतिरिक्त छः हफ्ते पहले उनके हृदयपर मार्क्विस-सोमवर्ग और बैरोनेस हेमलनके बलिदानका ऐसा धक्का पहुंचा, कि उनका हृदय और भी टूट गया और अन्तमें उनकी यह दशा हुई।"

यह सुन जिटका बोल उठा,—"ओह! बैरोनेस-हेमलेनकी यह दुर्दशा हुई! अच्छा ह्वार्ट! अब और हाल बताकर ऐ जोलाका सन्देह निवृत्त करो।"

ह्वार्ट एक ठण्डी सांस लेकर बोला,—"उस स्त्रीको मरे आज केवल तीन दिवस हुए हैं और अभीतक उसकी लाश कब्रमें नहीं पहुंचायी गयी है। यद्यपि दुःख, शोक, सन्ताप तथा इस महलपर आयी हुई आफतने हम लोगोंको उनकी अन्तिम क्रिया करनेसे अभीतक

रोक रखा है तथापि आप देखते हैं, कि उनको आज्ञाके लिये दुःख करनेवालोंकी संख्या कम नहीं है।"

इतना कहकर आर्वटने उन मनुष्योंकी ओर देखा, जो भय तथा विकलसे लिटकाकी ओर देख रहे थे। लार्लि और कोनार्डने लिटकाको देखते ही पहचान लिया था और अपने साथियोंसे लिटकाका नाम और उसके आगमनपर आश्चर्य कर रहे थे।

लिटकाने कहा,—"हां, बहुतसे दुःख करनेवाले हैं, यदि ये सभी उस स्त्रीके लिये आंसू गिराने और प्रार्थना करनेके लिये तय्यार हों।"

आर्वटने कहा,—"हां, ऐसा दुःख इन लोगोंको कभी न हुआ होगा; क्योंकि ये सभी उस स्त्रीकी कृपासे पोतलकी मूर्त्तिके आगे बलिदान होनेसे बचाये गये हैं।"

इसपर उन स्वार्थी भाइयोंमेंसे एकने आर्वटको ओर इशारा करके कहा,—"और आपकी दयालुताने इसमें विशेष सहायता पहुंचायी है।"

अब उस पवित्र और दयालु खानसामाका हाथ पकड़कर उसका आंसू बहाता हुआ चेहरा देखते हुए ये लोगोंने कहा,—"अभी तुमने कहा है, कि उस स्त्रीकी लाश दफनायी नहीं गयी है?"

आर्वटने कहा,—"हां प्रिय सुन्दरी! और तुम अपनी माका सुन्दर चेहरा अन्तिमबार देख सकती हो।"

इतना कह वह लिटका तथा वे लोगोंको अपने साथ ले उस कमरेकी ओर चला, जिसमें वह लाश रखी हुई थी।

अब आर्वटने बड़ी धीरतासे एक कमरेका दरवाजा खोला। उस कमरेमें एक पलङ्गपर उस स्त्रीकी लाश पड़ी हुई थी।

इस समय भी वह स्त्री सफेद कपड़े पहने हुई थी, जिन्हें अपने जीवन भर पहिननेका उसे अभ्यास पड़ गया था। उसके दोनों ह

छातीपर रखे हुए थे और उसके चेहरे पर इस समय भी उसके हृदयके छिपे हुए पवित्र भाव झलक रहे थे।

ऐ जीला अपनी मृत माताका मुख चूमकर पलगकी बगलमें बैठ गयी और उसकी आखोंसे लगातार आसुओंकी धारा बहने लगी। जिटका भी उस पलंगपर झुक पडा था था और उसके पत्थरके समान हृदयपर भी उस समय जब, कि वह उस लेडीके चेहरेकी ओर देख रहा था, कैसे कैसे भाव उदय हो रहे थे, यह बताना किसी भी लेखककी शक्तिके बाहर है। ओह! आज कितनेही वर्ष बाद उसे उस स्त्रीकी सूरत दिखायी थी, जिसे जीवित या मृत देखनेकी उसे कदापि आशा न थी।

हा, इसके बाद सरदार-जिटका तथा ऐ'जीला दोनोंही घुटने टेक कर उस पलंगकी बगलमें बैठ गये। इसी समय पादड़ियोंकी भांति दोनों हाथ फैलाकर ह्यूवर्ट कहने लगा,—"ऐ भाई और बहिनो! घुटने टेककर बैठ जाओ और बैरोनेस अर्मेनेगडाकी आतमाकी शान्तिके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करो।"

और अब उन लोगोंको, जिन्होंने ह्यूवर्टकी आज्ञा पालनकी थी, मालूम हुआ, कि इतने दिनोंसे उनकी रक्षा और बच्चोंकी तरह पालन करने वाली कोई दूसरी नहीं, बल्कि निर्दयी अलटनके ड्यूककी स्त्री प्रिन्सेस अर्मेनेगडा ही थी, जिसको कब्र उसकी मृत्युके पहले ही बनाकर ससारको उसकी मृत्युके सम्बन्धमें धोखा दिया गया था।

लगभग एक घण्टे तक वह दल प्रार्थना करता रहा। जिटका तथा ऐ जीला पलगकी बगलमें घुटने टेककर बैठे रहे, ह्यूवर्ट खड़ा रहा और उस दलके अन्य मनुष्य उस दूसरे कमरेमें घुटने टेके बैठे रहे, जो उस कमरेसे सटा हुआ था। इसके बाद जिटका, ऐ जीला तथा ह्यूवर्ट, तीनों प्रिन्सेसकी अन्तिम क्रियाके विषयमें विचार करनेके लिये उस कमरेसे बाहर चले आये।

लिटकाने कहा,—"मुझे दिल्लीके आज आज रातिके समयही दरबारी लायनी और इतने दिनोंतक यह कष्ट, जो कि सब दिखोंसे बड़ी हुई थी, सबके सम्मुख ही काममें लायी लायगी। मैं अभी अपने साथियोंमें जाता हूं और कुछ ही देर बाद लौट आऊंगा तथा अपने साथ इन लोगोंके भोजनका सामान तथा कपड़े मार्ग्स पत्थर उखाड़नेका औजार इत्यादि आवश्यक पदार्थ भी लेता आऊंगा। ऐ लोगो! जब तक मैं नहीं रहूं और ग्रूवर्टसे जो कुछ मैं पूछूंगी, वह मुझे बता देगा। साथ ही यदि मेरी माताने अन्तिम समय मुझसे कहनेके लिये कोई बात कही होगी, तो वह भी बता देगा। मैं ठीक आध घण्टेमें लौट आऊंगा और तब ही अन्तिम क्रिया आरम्भ होगी। इसके बाद हम लोग उन मनुष्योंको छोड़ देंगे, जिन्हें यहां कैद रखनेकी अब कोई आवश्यकता नहीं है।"

इतना कहकर सरदारने अपनी दृष्टि उन मनुष्यों पर डाली, जो उसकी बातें बड़े ध्यानसे सुनकर मनही मन प्रसन्न हो रहे थे। परन्तु कभी बढ़कर प्रसन्नता अर्नेस्टके उन मित्रोंकी हुई, जो थोड़ेही दिन हुए कैद हुए थे।

इस समय लिटका अकेला ही उस कमरेसे आगे बढ़ गया था और ऐ लोगो ग्रूवर्टके पास ठहर गयी थी। यद्यपि उन मनुष्योंने लिटकाको सुरंगके बाहर बढ़ जाने देनेका आग्रह किया, परन्तु उसने उनकी बातों पर कुछ ध्यान न दिया, क्योंकि उसे विश्वास था, कि वह शीघ्र ही सुरंगके मुहाने पर पहुंच जायगा। इसी आशामें उसने चिराग हाथमें उठा लिया और तेजीसे सुरंगके मुहानेकी ओर बढ़ने लगा। उसके उस कमरेसे बाहर निकलते ही ग्रूवर्टने पिछला दरवाजा बन्द कर लिया।

गोल कमरेको पार करता हुआ लिटका अब उस कमरेमें पहुंचा, जिसमें पीतलकी मूर्त्ति बनी हुई थी, और इस समय कुछ क्षण

लिये घुस गया और उसकी बातें सुन जिटकाके खूनके प्यासे सिपाही बदला लेनेके विचारमें जोरसे हस उठे।

फिर उन छुरियोंकी अच्छी तरह परीक्षा कर लेने बाद जिटकाको कष्ट देनेके लिये कुछ विलम्ब करनेके अभिप्रायसे फादर सौप्रिथन कुछ क्षणों तक उन छुरियोंकी ओर देखता रहा, जो मूर्त्तिके भीतरी भागमें जडी हुई थी।

परन्तु इसी समय जिस तरह बाज अपने घोंसलेसे निकलकर शिकार पर झपट पड़ता है, अथवा शेर अपनी मादसे निकल छोटे हरिनके बच्चे पर टूट पड़ता है, उसी तरह एक स्त्री उस कमरेमें झपटती हुई घुस आयी। यह स्त्री और कोई नहीं, पाठकोंकी पूर्व परिचिता आयशा थी। इस समय उसके कपडे तेजीके साथ उड रहे थे, नकाब इधर उधर झूल रही थी, दोनों हाथ आगे पीछे जोरसे झोंके खा रहे थे और उसके मनोहर केश जोरसे लहरा रहे थे। इसी तरह शानदार आयशा दौडती हुई अपने मामा जिटकापर झपट पडी, परन्तु अभी किसीके मुंहसे आश्चर्यकी चीख निकलना ही चाहती थी, कोई उसे पकडनेके लिये हाथ बढाया ही चाहता था, कि वह शेरनीकी तरह पीतलकी मूर्त्तिकी ओर झपट पडी। इस समय पादडी मूर्त्तिके बाहर अपना माथा निकालना ही चाहता था और आयशापर उसकी दृष्टि पडनाही चाहती थी, कि आयशाने जोरसे उसका माथा मूर्त्तिके भीतर ढकेल दिया।

फिर क्षणभरका काम था। उस मूर्त्तिके भीतर चाण्डाल पादडी जोरसे घुस गया! उसके दोनों बहादुर साथी घबड़ाकर गिर पड़े और मूर्त्तिका हाथ सिमट जानेके कारण दरवाजा आपसे आप बन्द हो गया तथा बलिदानकी घण्टी जोरसे बजने लगी।

इसके बाद आयशा उपस्थित मनुष्योंकी ओर अपने दोनों हाथ

फैलाकर बोली,—"पापका भोग्य प्रति फल दिया ! इस तरह इस अत्याचारीका नाश होता है, मा मैरीराइका कांटा दूर हुआ था।"

अभी वे शब्द उसके मुंहसे निकले ही थे, कि इसी समय मेकडा मनुष्योंके पैरोंकी आवाज सुन पड़ी मानों और कुछ ही क्षण बाद टैरोराइट-सिपाहियोंने पीतलकी मूर्त्तिका कमरा भर गया।

बात यह थी, कि आध घण्टेसे अधिक समय व्यतीत हो जानेके कारण, उस गिर्जेके रक्षक सिपाहीने अन्य सिपाहियोंको सावधान कर जिटका को आज्ञा पालन की थी और उसीके आदेशानुसार इतने मनुष्य उस गहरमें तहखानेमें घुस आये थे।

इसके बाद जिस समय फादर सोप्रियन अपने कुकर्मका फल भोग रहा था, जिस समय दूसरोंको कष्ट देनेके समान वह आप भी कष्ट पा रहा था, और जिस समय दूसरोंको बलिदान चढ़ानेका प्रायश्चित्त-स्वरूप वह स्वयं कुमारीके पुण्यका गला घूंट रहा था, ठीक उसी समय टैरोराइट सिपाहियोंने पीतलकी मूर्त्तिके सेवकोंके हथियार छीनकर उन्हें बांध लिया। जिटका छुड़ा दिया गया और आवश्यक उन मनुष्योंसे बदला ले गयी, जो फादर सोप्रियनका बदला उससे चुकाया चाहते थे।

इसके कुछ ही क्षण बाद उस भयानक कल-पुर्जों ने अपना काम समाप्त किया। हजारों घावोंसे पादड़ीका शरीर छिद गया, दोनों आंखें अन्धी हो गयीं और खूनसे लथपथ उसका मांसपिण्ड उन बड़ी बड़ी चर्खियोंपर जा गिरा। फिर उन चर्खियोंने घूम घूमकर पादड़ीके शरीर-को काटना आरम्भ किया और यह काम उस समयतक जारी रहा, जबतक उसके शरीरका खण्ड-खण्ड न हो गया। इसके बाद पानीकी प्रबल धारा ने संसारसे पादड़ीका नाम निशानतक मिटा दिया।

एक आश्चर्य्यकी बात थी, तथापि उसे सबसे अधिक आश्चर्य इस बात पर हो रहा था, कि वह जिटकाको बगलमें इस तरह आनन्दसे क्यों बैठी हुई है। इसके अतिरिक्त बूढ़े खानसामाको सरदारकी बगलमें खड़े देख उसके भय, विस्मय तथा आश्चर्य्यका न रह गया था।

उन पहरेवालोंको जो अल्टनके ड्यूकके साथ आये थे, चले जानेका इशारा कर जिटकाने अल्टनके ड्यूकको एक कुर्सीपर बैठनेके लियेकहा और अब वे चारों उस कमरेमें एकत्र हो आपसमें बातचीत करने लगे।

अल्टनका ड्यूक उस कुर्सीपर बैठ गया, जिसकी ओर जिटकाने इशारा किया था और आखे फाड फाड़कर खानसामा ड्यूवटंकी ओर देखने लगा। इसके बाद वह ऐ जोलाको भी इस टटोलनेवाली दृष्टिसे देखने लगा, मानो यह जानना चाहता हो, कि उनका क्या अभिप्राय है, और वे इस तरह क्यों एकत्र हुए हैं। परन्तु ड्यूवटंने अपने इतने पुराने मालिकसे आखे न मिलायीं और ऐ जोला इन घटनाओंके कारण अपने पिताकी ओर इस दृष्टिसे देखने लगी, मानो वह उससे ड्यूकके लिये दया भिक्षा मागती हो।

कुछ क्षण बाद उस निस्तब्धताको भङ्गकर जिटकाने बडी ही दृढ़ नाक तथा गम्भीर आवाजमें कहा,—"मैं तुम्हारे प्राणके सम्बन्धमें अभी तुम्हारी चिन्ता दूरकर दूंगा। यद्यपि तुम्हारे अपराध बहुत ही अधिक हैं; परन्तु मैं तुम्हारा एक बाल भी बाका न होने दूंगा। परन्तु इतना और भी कह देना मैं उचित समझता हू, कि भविष्यमें तुम्हारे साथ वही व्यवहार होगा, जिससे तुम फिर किसी प्रकारके अत्याचार करने योग्य न रहो। तुम्हे सदा कैद रहना पड़ेगा; परन्तु कैदमें तुम उसी तरह रहोगे, जैसा तुम्हे अभ्यास पडा हुआ है, और तुम्हें किसी प्रकारका कष्ट न होगा। यही वह सजा है, जो मैं तुम्हें दिया चाहता हू।"

बूक बन्दूकने कहा,—"इस भेद-दानके लिये मुझे क्या धन्यवाद देना उचित है—बख्शीश दिजिये ?"

लिटकाने घोर भी गम्भीर शब्दोंमें कहा,—"अपनेको संकुचित हृदय न बनाओ ; क्योंकि मुझे कुछ ऐसी बातें कहनी हैं, जो तुम्हारे हृदयपर चोट पहुंचायेंगी ; और मुझे विश्वास नहीं होता, कि तुम अपेक्षा कोई दूसरा मनुष्य भी मुझे ऐसा दिखाई देगा, जिसने अन्य बुराइयोंके साथ ही साथ मानव हृदयकी सब दयालुताओंका भी नाश कर दिया हो, तथा प्रेम और प्रीतिका सब बन्धन तोड़ डाला हो।"

अपने हृदयको छठती हुई धड़कनको दबाकर बटलरने बूकसे कहा,—"आपके इस कथनका मतलब क्या है ?"

लिटका बोला,—"मैं तुम्हारी बहुत सी बातें बनाकर समय नष्ट न करूंगा। अच्छा, समझ लीजो, कि जिस स्त्रीकी मृत्युके सम्बन्धमें आज बीस वर्ष पहले तुमने "

एकाएक चिल्लाकर बीचमें ही बूक बोल उठा,—"आह ! मेरी स्त्री !" (खानसामाकी ओर देखकर) क्या तुमने यह भेद भी खोल दिया ?"

लिटकाने बड़े ही जोरदार शब्दोंमें कहा,—"बूकने उस समय तक अपने मुंहसे एक शब्द भी नहीं निकाला, जबतक कि घटना-चक्रने, अथवा यों समझना चाहिये, कि ईश्वरने ही मुझे ये भेद इस तरह नहीं बता दिये, जिससे झूठ बोलना, बहाने बाजी करना अथवा छिपाना सब तरहसे वृथा हो गया, परन्तु ऐ बूक ! मैं समझता हूं, कि इस धार्मिक खानसामाको झूठा बनाकर तुम मुझे वृथा ही उत्तेजित न करोगे ; क्योंकि जिस समय मैं तुम्हें यह बताऊंगा, कि तुम्हारी वह स्त्री जिसकी मृत्युका समाचार तुम

आजसे बीस वर्ष पहले चारो ओर फैला चुके हो और जिस केलिये कब्र भी बना दी गई है,—जीवित थी।"

जिटकाकी इस बातने अल्टनके ह्यूकपर अपना विचित्र प्रभाव जमाया और वह लगभग एक मिनिट तक आश्चर्य्यसे उसके चेहरेकी ओर देखता ही रह गया; परन्तु एकाएक मानो किसी आकस्मिक विचारके हृदयमें उत्पन्न हो जानेके कारण वह अपनी कुर्सी परसे उठकर बोला,—"अब मैं सब समझ गया। हा, ऐसा हो सकता है, और जिटका! तुमने सत्य ही कहा है, परन्तु ह्यूवर्ट! तुमने मुझे धोखा दिया। तुमने उसको बचा लिया। तुमने ही उसे जीवित रहनेकी आज्ञा दे दी। और उस दिन, जब कि मेरा पुत्र बोहेमियाका राजा होने वाला था,—हा, हा, उसी दिन,—यह बड़ी थी, अर्मेनेगडा ही थी।"

इतना कहते कहते इस तरह कांपकर मानों उसे जड़ैया आ गई हो; वह फिर अपनी कुर्सीपर बैठ गया।

जिटका बोला,—"अच्छा, अब ध्यानसे सुनो और यदि सामर्थ्य हो तो अपनेको सम्हालो। क्योंकि इस मृत बैरोनेसकी स्मृतिमें मैं कुछ बातें कहना चाहता हू

बीचमें ही ह्यूक बोल उठा,—"ओह! अब एक बात मुझे और भी याद आ गयी और मुझे गत इतिहासकी एक घटना और भी स्मरण हो आयी! तुम—जेनरल जिटका, तुम ही मेरी स्त्रीके चाहने वाले थे।"

जिटकाने बड़ी ही गम्भीरता और दुःख भरी आवाजसे कहा,—"हां, यह मैं ही था; जिसे उसने अपने हृदयका समस्त प्रेम अर्पण किया था और जो उसे अपने प्राणोंसे भी बढ़कर मानता था। ओह! ईश्वर ही जानता है, कि मैं भी उसे कितना प्यार करता था; परन्तु

कर्तव्यता विवाहके पहले मुझे कितना क्यों न चाहती थी, मैं कसम खाता हूं ईश्वरकी साक्षी कहता हूं, कि उसके बाद वह कभी भी उस प्रकारसे विचलित न हुई जो तुम्हारे साथ उसने तिरेसठ वर्ष थी। यद्यपि उस प्रकारसे उसका कलेजा मसोस डाला था और हृदय टुकड़े टुकड़े कर दिया था, परन्तु वह कदापि अपने वचनसे नहीं हिली थी।"

यह सुन कन्टनके चूकने कांपकर कहा,—"हे, वह निर्दोष थी! अवश्य ही निर्दोष थी!! तथा मैंने बोटमकको माताको प्यारी माताको दण्ड देकर अपराध किया? तो हो, ईश्वरको धन्यवाद है, कि वह उस भयानक मृत्युसे बच गयी, और मेरे निष्ठुर व्यवहारपर धिक्कार देती हुई अबतक जीवित रही, पर "

लिटकामें चूपर्टकी ओर देखकर कहा,—"हां जीवित रही और इसका सब श्रेय इस धर्मात्मा बूढ़े खानसामा को है; परन्तु चूक कन्टन! अभी मुझे बहुत कुछ कहना और जानना बाकी है; परन्तु ये बातें अभी नहीं कहीं सुनी जा सकतीं; कल सवेरे तुम्हें ये बातें मालूम होंगी। अभी तक मुझे भी केवल साधारण बातें ही मालूम हुई हैं, और चूपर्टने वादा किया है, कि पूरा पूरा हाल वह पीछे बतायेगा; परन्तु इस योगमें एक आवश्यक और धार्मिक कार्य करना बहुत ही जरूरी है और मैं समझता हूं, कि तुम भी उसमें मेरा साथ दोगे। मैं बेरोनेस की अन्तिम क्रियाके विषयमें कह रहा हूं।"

कन्टनके चूकने बड़ी ही दुःख भरी आवाजमें कहा,—"आह! विवाहके बाद वह मुझे बहुत ही प्यार करती थी, यह मैं अच्छी तरह जानता हूं; परन्तु इसके बाद मेरी ऐसी धारणा हो गयी, कि वह व्यभिचारिणी है। इसीलिये मैंने उसे इस तरहका दण्ड दिया था और यही धारणा आज बीस वर्षोंसे बनी हुई थी। परन्तु आह! ईर्ष्याने मुझे उचित पथसे दूर कर दिया था और इसीसे अन्धे होकर; मैंने

बिना विचारे ही उसे इतना कठोर दण्ड दे दिया था । हां, जिटका अब मैं अवश्य ही तुम्हारी बात मानूंगा; क्योंकि अब मुझे विश्वास हो गया, कि वह निरपराधिनी थी और इसी लिये मैं उसकी कब्र तक जानेके लिये तय्यार हूं ।"

जिटकाने कहा,—"तुम्हारे व्यवहारमें यह परिवर्त्तन देख मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ हूं, परन्तु अभी उस कार्य्यमें थोड़ा विलम्ब और है। मैंने रोशनवर्गके काउण्टको बुलानेके लिये मनुष्य भेजा है, क्योंकि वह उसका भाई है। उसकी राह देखना हम लोगोंके लिये आवश्यक है और इतने समयके बीचमें मैं तुम्हें उस बालिकाके सम्बन्धमें कुछ कहूंगा, जो मेरी बगलमें बैठी हुई है।"

जिटकाने इतना कहकर बड़े प्रेमसे ऐ जोलाकी ओर देखा, जो अपनी माताके सम्बन्धकी बातें सुन सुनकर आंसू बहा रही थी।

जिटका बोला,—"यह बहादुर लड़की जिसने प्रेगके राज-महलसे तुम्हें छुड़ाया था, मेरी ही कन्या है जो मृत अर्मेनेण्डाके गर्भसे उत्पन्न हुई है ।"

ड्यूक इतना सुनतेही चिल्ला उठा,—"हे ईश्वर ! और रोल्डफ उसे प्यार करता था ! और यदि घटना-क्रम इसमें बाधा न डालता तो वह उसे अवश्यही अपनी स्त्री बना लेता। परन्तु ईश्वरको हजार हजार धन्यवाद है, कि यह भयानक बात पूरी न हो सकी परन्तु आह ! उस समय रोडल्फके हृदयमें कितना दुःख होगा, जब वह सुनेगा, कि उसकी माता भयानक तहखानेमें कैद पड़ी थी, संसारसे उसका सम्बन्ध छिन्न हो रहा था और वह केवल ड्यूवर्टकी दयासे ही उस भयानक मृत्युसे बच सकी थी। जब वह ये बातें सुनेगा, अवश्य ही मुझे श्राप देगा और अपने पुत्रका श्राप मैं किसी तरह भी सहन न कर सकूंगा। परन्तु यदि मैं स्पष्ट रूपसे सब बातें कह दूं "

लिटकाने कहा,—"इस समयको यह बात चलनी उचित नहीं है क्योंकि यह बात बहुतसे मनुष्योंको मालूम हो चुकी है, कि मेरोनेस कर्नेलका बाजी तीन दिन पहले तक उस भयानक तहखानेमें कैद थी। मैं अपना कहता हूं, कि इस भेदको अब इतनेमनुष्य जान गये हैं, कि यह बात रोडल्फके कानों तक न पहुंचने देना एक प्रकारसे असम्भव ही है।"

बूकने कहा,—"और अपने पुत्रके सामने यह कहनेको कहेंगा कि मैं बीस वर्ष तक पीतलकी मूर्त्ति वाले दलका सरदार रहा, मेरा आशय ही उचित समझता हूं, क्योंकि वह अभी तक उस भयानक भेदके सम्बन्धमें कुछ भी नहीं जानता और न उस तहखाने और कल पुर्जों का ज्ञान ही उसे मालूम है। उस पीतलकी मूर्त्तिके दलके सरदार का पद मुझे अपने पिताके प्राप्त हुआ था। यद्यपि मैंने सत्य और धर्म पूर्वक अपने पिताके सामने की हुई शपथ पूरी की है, यद्यपि मैं अपने वचनके अनुसार पीतलकी मूर्त्तिके दलका धर्म बराबर पालन करता आया हूं और यद्यपि मैंने अपने पिताकी आज्ञा अक्षरशः पालन की है तथापि मैं इस भेदको कभी पसन्द नहीं करता, और इसीलिये मैंने एक अक्षर भी रोडल्फके कानोंमें आजतक न जाने दिया। मैं उसे इस भेदको बतानेकी अपेक्षा मार डालना उचित समझता हूं। एक बात और भी है। एक रजिस्टरमें पीतलकी मूर्त्तिके आगे बलिदान पड़े हुए मनुष्योंका नाम लिखा हुआ है और सम्भव है, कि रोडल्फ उसमें अपनी माताका नाम देख ले।"

लिटका बोला,—"बस बस, बहुत हुआ, घटनाके प्रभावसे इन कई गत घण्टोंमें ही मैंने अपनी आंखों पीतलकी मूर्त्तिके भयानक दण्ड की सजा देख ली है।"

बूकने घबड़ाकर कहा,—"तुमने अपनी आंखों देखा है?"

लगता है, उसी तरह ड्यूक अल्टनने सिपाहीकी बातका सहारा पाकर कहा,—"गोली मार दी। परन्तु तुम्हारा मतलब यह नहीं है, कि वह मर गया। मालूम होता है, वह जख्मी हो गया है, और उसने मेरे पास समाचार कहनेके लिये तुम्हें भेजा है। बताओ, बताओ, जल्दी बताओ।"

सिपाही बड़े ही दुःखसे बोला,—"मैं आपसे सत्य घटना नहीं कहा चाहता।"

ओह! इतना सुनतेही—"हा रोडल्फ! हा रोडल्फ!" कहकर,—ड्यूक चिल्ला उठा। वह दुःखसे कातर हो घुटनेके बल बैठ गया और अपने हाथोंसे माथा पीटता हुआ जोरसे बोला,—"हे ईश्वर, यह सच्चा बदला और सच्चा प्रायश्चित्त है।"

इसके बाद फिर दरवाजा खुला और सहसा कोण्ट रोशनबर्गने उस कमरेमें प्रवेश किया।

चौरानबेवां परिच्छेद।

ऐ जोन्नाका मामा।

कोण्ट रोशनबर्ग अल्टन-महलमें घटी हुई घटनाओंके सुननेके लिये पहलेसे ही तय्यार था, क्योंकि जिटकाके दूतके पहुंचनेके पहले ही वह टेवोराइट-दलकी बहादुरीके सब समाचार सुन चुका था और इसीलिये वह अपनी धनसम्पत्ति बटोर, जो कुछ नकद रुपये थे, उन्हें एकत्र कर और जो कुछ जवाहिरात मिल सके, उन्हें लेकर, वह बोहेमिया छोड़ अपने कुछ साथियोंके साथ आस्ट्रिया भाग जाना चाहता था। इसी समय जिटकाका पत्र लेकर दूत उसके पास आ गया। यह पत्र जो जिटकाका दूत लेकर गया था और जिसमें

लिटकापि अपने हाथोंमें लिखा था, कि उसी पत्र पाते ही तुरत घर आना चाहिये; क्योंकि बहुतसे आवश्यक और दुःखदायी विषयोंपर उसके साथ विचार करना है; और इसी पत्रमें उसने यह भी लिख दिया था, कि उसकी अनुपस्थिति तथा तुममें किसी प्रकारकी बाधा नहीं पहुंचानी चाहती, रोशनबर्गके कोरनी लिटकापर विश्वास कर लिया और उस दूतके साथ ही अल्टन-महलमें चला आया। राहमें ही उस लिपाहीसे उसे मालूम हुआ, कि अल्टन महलके तहखानेकी बहुत सी रहस्यमयी तथा भयानक गुप्त बातें प्रकट हुई हैं।

परन्तु इन घटनाओंका पूरा पूरा हाल कोरट रोशनबर्गको अबतक नहीं मालूम हुआ था और यद्यपि वह अल्टन महलकी घटनाओंको सुननेके लिये पूरी तरह तय्यार था, तथापि उसे स्वप्नमें भी गुमान न था, कि ये घटनायें बड़ी भयानक होंगी, उसके परिवारसे भी उन घटनाओंका सम्बन्ध होगा और उसके हृदयपर भी उनकी चोट पहुंचेगी।

परन्तु हम उसकी दारुण अवस्थाका वर्णनकर पाठकोंका समय नष्ट नहीं किया चाहते और उसके अनुमान करनेका भार पाठकों पर छोड़ देते हैं, कि जब लगातार दुःखदाई घटनायें उसके कानोंमें पड़ी होंगी, तो उसके हृदयकी कैसी अवस्था हुई होगी, यह पाठक स्वयम समझ सकते हैं। सबसे पहले जब पीतलकी मूर्त्तिके सम्बन्धमें इतने दिनोंतक फैली हुई किम्वदन्तीके समाचारकी सत्यता, अल्टन-महलके तहखानेके गुप्त भेद, गत बीस वर्षों में बोहेमियासे बहुतसे मनुष्योंके गायब हो जाने तथा अल्टन महलके तहखानेमें रहने, कोरट रोशनबर्गकी बहिन बेरोनेस अर्मेनिग्डाके गत तीन दिनोंतक जीवित रहकर और अन्धकारमय तहखानेमें मरने आदिका हाल, तथा किस तरह जान लिटका वही पुरुष है, जिसे अपनी -

लाश उस स्थानके ठीक बीचोबीचमें रखी हुई थी। उसके एक ओर भ्रातृ-समितिके पुरुष सभासद खड़े थे, और दूसरी ओर स्त्रियां खड़ी थीं। सब पुरुष काले वस्त्र पहने हुए थे और स्त्रियां ननों जैसे सफेद पोशाक पहने हुई थीं। वेदीके पास एक रोमन कैथोलिक मतका पादरी खड़ा था, क्योंकि सरदार-जिटकाने रोमन कैथोलिक मतके अनुसार ही उसकी अन्तिम क्रिया करनेकी आज्ञा दे दी थी; इसका कारण यही था, कि अर्मेनेण्डा, उसके पति तथा भाईका उसी मतपर विश्वास था। कौण्ट रोशनबर्ग जिटकाकी इस उदारतापर बहुत ही प्रसन्न हो रहा था और उसे पूरी तरह विश्वास हो गया था, कि जिटका सचमुच ही उदार-हृदय मनुष्य है।

अब अन्तिम क्रिया आरम्भ हुई। भ्रातृदलके मनुष्योंने पादरीके स्वरमें स्वर मिलाकर उस अभागिनी बैरोनेसकी आत्माकी शांतिके लिये बड़े प्रेमसे प्रार्थना की। प्रार्थना समाप्त होनेपर लाश कब्रमें उतार दी गयी और उसी स्थानमें उस लाशको मिट्टी दी गयी, जो उसके मरनेके बीस वर्ष पहले ही तय्यार कर और जो, अब सचमुच ही अपना नाम सार्थक करनेके लिये तय्यार की गयी थी। बस इसी तरह उस काले मार्बल पत्थरके नीचे अभागिनीने अर्मेनेण्डा सदाके लिये सुला दी गयी।

अब यह कार्य्य समाप्त हो गया, शोक प्रकाश करनेवाले मनुष्य उस स्थानसे चले गये, बत्तियां बुझा दी गयीं और साथ ही रात्रि समाप्त हो गयी तथा उषाकी लालिमा अल्टन-महलके ऊंचे-ऊंचे गुम्बदोंपर अपनी प्रभा फैलाने लगी।

ऐ जीला अपने उस कमरेमें चली गयी, जो उसके आरामके लिये मुकर्रर किया गया था। ड्यूक अल्टन भी अपने कर्मपर पश्चात्ताप करनेके लिये अपने कमरेमें चला गया, परन्तु जान जिटका, कौण्ट-

रोशनवर्ग और बुड्डा ब्राण्डाना ये दोनों मनुष्य सब विषयोंपर विचार करते और इस कथानिकी केलीनेवाले सम्बन्धकी सब बातें जानेके लिये उत्सुक रहे थे।

हम विषयमें अधिक लिखकर हम पाठकोंका समय नष्ट नहीं किया चाहते और अपने लिखनेके उसी भागपर झुकते हैं, जो सबसे आवश्यक है तथा जिसके सम्बन्धमें इन दोनोंमें बातें हुई हैं।

पञ्चानवेवां परिच्छेद ।

धर्मेनेण्ड्राका इतिहास ।

इस घटनाके पचीस वर्ष पहले, जिसका जिक्र अभी अभी किया जा चुका है, बुड्डा कोण्ट रोशनवर्ग अपने साथी जमींदारोंके हाथसे लड़ाईमें मारा गया। उसके मरने बाद उसके घरमें दो सन्तानें तथा एक विधवा स्त्री रह गयी। पुत्रको पिताका ही पद मिला और वह रोशन वर्गका कोण्ट कहलाने लगा जिसके विषयमें हम ग्रन्थमें कई बार लिख आ चुका है तथा कन्या बड़ी सुन्दरी परन्तु अभागिनी धर्मेनेण्ड्रा थी।

यह बुड्डे कोण्ट रोशनवर्गकी स्त्री उन स्त्रियोंमेंसे थी जिनकी बढ़ी हुई सुन्दरता गजब रहा करती है, जिनकी बड़ी बड़ी काली आंखोंसे सदा अहंकार और मद टपका करता है और जिनके ओठों पर आयी हुई मुस्कुराहटमें सदा मिठास भरी डाहा करती है तथा जिनकी प्रत्येक चालमें अमीराना ढंग झलका करता है। बोहेमियाके एक धनी मानी खानदानमें ब्याही जानेके कारण उसे अपने पदका बहुत ही अभिमान था, साथ ही उसे अपने पुत्र तथा कन्याओंका भी बड़ा गर्व था जो उसकी प्रकृतिके अनुकूल तथा वैसे ही सुन्दर थे।

अपने पिताकी मृत्युके समय कौण्ट-रोशनवर्गकी अवस्था तेईस वर्षके लगभग थी और अर्मेनेण्डा पन्द्रह वर्षकी थी। जिस तरह कौण्ट-रोशनवर्ग देखनेमें सुन्दर था, उसी तरह अर्मेनेण्डा भी अद्वितीया सुन्दरी थीं। कौण्ट-रोशनवर्गने अपनी माताके समान ही अपनेसे कम हैसियत वालों तथा रोशनवर्गकी जायदादके रक्षक तथा नौकर चाकरों पर घृणा करनी सीखी थी। कौण्टेस अपनी युवावस्थामें एक अच्छी शिकारिन थी, इसी लिये उसने अपनी कन्याको भी घोड़े पर चढ़ना सिखाना आरम्भ किया और इसी लिये केवल एक नौकरके साथ उसे शिकार खेलनेके लिये विदा करने लगी। यह नौकर, जो उसके साथ जानेके लिये चुना गया, सचमुच ही घुड़ सवारीके फनमें पक्का उस्ताद था, परन्तु उस समय कौण्टेसके हृदयमें ही यह विचार न उत्पन्न हुआ, कि बीस वर्षके एक सुन्दर युवकके साथ अर्मेनेण्डाको जङ्गलमें अकेले जाने देना उचित नहीं है और इस अवस्थामें उस युवककी सङ्गतिका उसपर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। यद्यपि कौण्टेस अपने पुत्र और पुत्रियोंको नौकरोंके साथ दयाका वर्ताव करनेके कारण सदाही झिड़का करती थी; परन्तु उसे स्वप्नमें भी यह विश्वास न था; कि रोशनवर्गके शरीफ और ऊंचे खानदानकी लड़की, एक साधारण, पेज जान जैकटिजके प्रेम-पाशमें उलझ पड़ेगी।

हां, माताके अविचारके कारण एक निर्दोष अबोध बालिकाको एक खूबसूरत पेजकी संगतिमें सदा देनेके कारण ऐसा ही परिणाम हुआ; क्योंकि उन दोनोंको एकान्तमें मिलनेका अवसर बराबर ही मिला करता था। जान जैकटिज केवल सुन्दर ही नहीं था, बल्कि उसके शरीरकी गठन भी अत्यन्त सुडौल और मनोहर थी। घुड़-सवारीमें उसकी चालाकी ध्यान देने योग्य थी, उसकी शिकारकी दक्षता बुड्ढे बुड्ढे शिकारियोंका मानमर्दन कर देती थी और उसकी

अब चालन करनेकी शक्ति है। कोई मनुष्य उसकी प्रभुता करनेका साहस न करता था। इन गुणोंके अतिरिक्त वह दयालु तथा उदार था। ऐसोंमें जब कभी झगड़ा होता तो वह निर्बलका पक्ष लेनेके लिये सदा तैयार रहता था। लेकटिलज इन व्यवहारोंसे तथा उसकी सुन्दरतासे धीरे धीरे एक निर्दोष, अबोध बालिका धर्मनेष्टाके हृदयपर इस तरह प्रभाव जमाना आरम्भ किया, कि बिचारी धर्मनेष्टाको कुछ भी मालूम न हुआ, कि वह क्या कर रही है। इस तरह धर्मनेष्टा धीरे धीरे लेकटिलको प्यार करने लगी, और केवल धर्मनेष्टा ही क्या, लेकटिल भी उसी तरह हृदयसे प्यार करने लगा।

हां, लेकटिलका प्रेम भी उस बालिकापर उतना ही सच्चा तथा पवित्र था, जितना कि धर्मनेष्टाका। परन्तु दोनों ही दोनोंके प्रेमसे अपरिचित थे, क्योंकि न तो धर्मनेष्टाने ही कभी अपना प्रेम लेकटिलपर प्रकट किया और न कभी लेकटिलने ही धर्मनेष्टाके सामने इस विषयमें कुछ कहा। परन्तु घटनाके प्रभावसे एक दिन यह भण्डा आप ही आप फूट गया। धर्मनेष्टा आप ही आप विचारने लगी, कि यह क्या हो गया? क्योंकि एक दिन सूअरका शिकार करता हुआ लेकटिल भयानकरूपसे आहत हुआ और यह समाचार धर्मनेष्टाके कानोंमें पहुंचते ही वह फूट फूटकर रोने लगी। इसी समय उसके हृदयमें यह प्रश्न भी बराबर उठने लगा, कि वह ऐसा क्यों कर रही है?

बस इस घटनाके बादसे ही उसके हृदयमें यह बात निश्चित हो गई, कि वह लेकटिलको प्यार करती है। उसके हृदयमें प्रेमका बीज उत्पन्न हो गया है और इस घटनाके बाद जब वे दोनों एकत्र हुए, उसी समय दोनोंकी दृष्टिने आपसमें हृदयकी बातें कह डालीं। इसके बाद प्रतिज्ञा-सूचक कई शब्द दोनोंने कहे, दोनोंने आपसमें हाथ

मिलाये, कुछ क्षणमें स्वार्थी और प्रतिज्ञाकी मूर्त्तिकी मोहरके समान फिर दोनोंके ओठ आपसमें मिल गये।

इसके बाद कितने ही सप्ताह और महीने बीत गये। अर्मेनेण्डा तथा जैकटिक दोनों ही इतने प्रसन्न रहने लगे, मानो यह पृथिवी उनके लिये स्वर्गके समान हो। वे मौका मिलते ही आपसमें मिलते—तस्वीरोंकी गैलरीमें, किलेके रसदखानेमें, बागमें तथा जङ्गलमें उनका आनन्द निकेतन होता। उनका यह प्रेम उस मकानमें रहनेवाले नौकरोंसे भी छिपा न रह सका, परन्तु, जैकटिकके विरुद्ध एक शब्द भी किसीको मुंहसे निकालनेका साहस न हुआ। हां, इतना अवश्य हुआ, कि जैकटिक तथा अर्मेनेण्डाके प्रेमपर वेलोग बराबर तर्कवितर्क करने लगे। जो हो, यह बात अभीतक नवीन कौण्ट-रोशनवर्ग तथा उसकी माताको न मालूम होने पायी। परन्तु ओह! जैकटिकका इतना पवित्र चरित्र तथा अर्मेनेण्डाका निर्मल प्रेम और हृदयकी स्वच्छता, कोई भी उन्हें रोक न सके, और कामदेवने अपना जबर्दस्त प्रभाव दिखला ही दिया।

इसके बाद महीनों बीत गये और इस तरह अर्मेनेण्डाने अपने सत्रहवें वर्षमें पदार्पण किया एक दिन सबेरे ही उसकी माताने उसे अपने दरबारके कमरेमें बुला भेजा। इस बुलाहटको सुनते ही अर्मेनेण्डाके हृदयमें भयानक सन्देह उत्पन्न हो गया और भेद खुल जानेके भयसे वह कांप उठी। परन्तु यह भेद ऐसा नहीं था, जो अधिक दिनोंतक छिपा रह सकता और यही आश्चर्यकी बात थी, कि उसकी माता अभीतक उसे न जान सकी थी।

वह कांपते हुए हृदय और झुकी हुई आंखोंसे उस कमरेमें घुसी। इस समय भयसे उसका चेहरा पीला हो रहा था। उसकी माता, जिसकी अवस्था इस समय लगभग पचास वर्षके होगी, एक मखमली

पर्दाके पीछे बैठी हुई थी। उसके बाईं ओर उसका पुत्र कोल्ट रोबनबर्ग बैठा हुआ था और उसके दाहिनी ओर एक लम्बा, खूबसूरत परन्तु कोई रंगका मनुष्य खड़ा था। उसकी अवस्था लगभग उन्नीस वर्षकी थी और वह बड़े ही मनोहर वस्त्र पहने हुए था।

इस कमरेमें कोई नौकर नहीं था। यह सब ठाट ऐसे ही धर्मनेण्डा समझ गई, कि उसीके सम्बन्धमें आज कोई नवीन बात होनेवाली है। उसकी शङ्कित दृष्टि भयसे अपने भाईकी ओर देखने लगी, जिसने केवल एकबार मुस्कराकर उसकी ओर देखा और उसकी माताने भी उसी तरह उसका साथ दिया। अब धर्मनेण्डाको विश्वास हो गया, कि उसका गुप्त भेद अभी नहीं खुला है; परन्तु इसी समय अन्य घटनाका एक आभास उसके हृदयमें आ गया और वह समझ गई, कि यह घटना उसके विवाहसे सम्बन्ध रखती है। हां, उसका अनुमान सच था, क्योंकि धर्मनेण्डाके भविष्य सुधरकर जीवनके विषयमें दो चार बातें कहकर तथा उस मनुष्यकी कुछ प्रशंसा करते हुए, जो उसके दाहिने ओर खड़ा था, उसकी माताने उस मनुष्यका हाथ पकड़ कर धर्मनेण्डासे कहा,—"प्रिय पुत्री! तुम अबतक उसके ही साथ ब्याही जानेवाली थी।"

इसके बाद लगभग पन्द्रह मिनिटतक धर्मनेण्डाकी माता अपनी मातृत्व शक्ति दिखलाती रही और इस बीचमें धर्मनेण्डा भयसे कांपती हुई केवल उसके चेहरेकी ओर देखती रही। इन घटनाओंको देखकर वह घबड़ा गई थी। और उसके हृदयमें भयानक धड़कन उठ रही थी। वह मानो एक कलदार पुतलीके समान खड़ी थी और ऐसा मालूम होता था, मानो एक दम हटते ही वह गिर पड़ेगी। उसके ऊपर एक तरहका भय छाया हुआ था और उसी भयने उसका मुंह उस समयतक बन्दकर रखा था, जबतक कि उसकी

माता बोल रही थी; परन्तु ज्योंही उसकी माता चुप हुई और उसने अर्मेनेण्डाकी ओर मुस्कराकर देखा, त्योंही मानो उसका भय दूर हो गया, उसे ऐसा मालूम होने लगा, मानो उसकी नस नसमें साहस भर आया, उसके हृदयमें एक विचित्र उत्साह और मस्तिष्कमें एक विचित्र भाव पैदा हो गया। सहसा वह पागलोंकी तरह जोरसे कह उठी,—"नहीं, नहीं, मैं इस मनुष्यकी स्त्री नहीं हो सकती। मैं प्यार करती हूं। हे प्रभो! मैं दूसरेको प्यार करती हूं,—मैं जान लेक-टिलको प्यार करती हूं और—ओह! मुझपर दया करो! दया करो।"

इतना कहकर उसने अपने बर्फके समान सफेद हाथ अपनी माताकी ओर फैला दिये और उसके शब्द जोरको दखनाही हवाके समान सुननेवालोंके कानमें घुस गये। इसके बाद अभागिनी अर्मेनेण्डा बेहोश हो गिर पड़ी, परन्तु अभीतक उसकी बातोंकी सत्यतापर न तो कौण्टेसको विश्वास हुआ और न उसके भाईको ही, परन्तु इसके बाद जब कि उसे होशमें लानेके लिये डाक्टर बुलाया गया, तब उसने लार्ड अल्टनडर्फके सामने ही कह दिया, कि अर्मेनेण्डा गर्भवती है; और वास्तवमें अर्मेनेण्डा शीघ्र ही एक बच्चेकी माता हुआ चाहती थी।

पाठकोंको स्वयं ही समझ लेना चाहिये, कि उस समय कौण्टेस तथा रोशनबर्गके कौण्टकी क्या अवस्था हुई होगी, जब उन्हें इस घटनाकी सत्यतापर विश्वास हुआ होगा। कौण्ट रोशनबर्ग डाक्टरके मुंहसे इतनी अपमानजनक बात सुनते ही उससे अपनी बहिनके अपमानका बदला लेनेके लिये झपट पड़ा और चाहता था, कि उसे गर्दनिया दे महलसे बाहर निकलवा दे, इसी समय उसकी माता, बूढ़ी कौण्टेसने उसे रोका; क्योंकि उसे पूरा विश्वास हो गया था, कि डाक्टरका कथन सत्य है और सबसे आवश्यक और विचारकी बात यह थी, कि अब यह बात किस तरह छिपाई जाये, जिससे केवल

धर्मनिष्ठा का ही अपमान नहीं था, बल्कि रोशनबर्ग घरानेकी उज्वल कीर्तिमें सदाके लिये कलङ्क-कालिमा लग जाती थी।

जो हो, बटलरके चूकने प्रतिज्ञा की, कि वह यह भेद किसी पर प्रकट न होने देगा और अपनी जबानसे चौथीजी इस विषयका एक अक्षर भी बाहर न निकालेगा; क्योंकि धर्मनिष्ठाकी सुन्दरताने उसपर अपना विलक्षण प्रभाव जमा लिया था। इसीलिये उसने कोण्ट रोशनबर्ग तथा उसकी माताको यह भी प्रार्थना की, कि उसपर किसी प्रकारकी कठोरता न की जाये। डाक्टरको यह भेद छिपानेके लिये एक बहुत बड़ी रकम घूसमें दी गयी और मवयुवक पेज जान जेकटिन उसी समय रोशनबर्गके किलेसे निकाल बाहर किया गया। उसकी बहादुरी तथा उस कामाक्षा उसे यही पारितोषिक मिला, कि उसे किसी प्रकारकी सजा न दी गई और उससे प्रतिज्ञा करा ली गयी, कि अब वह कोई ऐसा काम न करेगा जिससे धर्मनिष्ठाके सम्मानमें बाधा पहुँचे।

इसके कुछ दिन बाद कोण्ट रोशनबर्ग, उसकी माता तथा दुःखित हृदया धर्मनिष्ठा सभी बटलर महलमें चले गये। इसका प्रधान कारण यही था, कि इसमें धर्मनिष्ठाका भेद छिपा रहनेकी विशेष सम्भावना थी। इस तरह लगभग तीन माससक सब लोग बटलर महलमें रहे और यहीं धर्मनिष्ठाके गर्भसे एक सुन्दरी कन्या उत्पन्न हुई।

इस प्रसवको छिपानेका पूरा पूरा उद्योग किया गया। कन्या उत्पन्न होते ही बटलरके चूकके विश्वासी खानसामा ह्यूबर्टके सुपुर्द कर दी गई और वह उसे लेकर एक ऐसे परिवारकी खोजमें निकल पड़ा, जो दरिद्र हो तथा बिना विशेष जांच किये ही, कन्याको रखनेके लिये तैयार हो जाये। साथ ही वह परिवार ऐसा हो, जो उस कन्याका अच्छे ढंगसे लालन पालन कर सके। यह सब प्रबन्ध हो गया और इस

तरह रौशनवर्गका खान्दान एक भारी अपमानसे बच गया। अब सब कोई लौटकर रौशनवर्गके किलेमें चले गये और इस घटनाके कई सप्ताह बाद ड्यूक-अल्टन उनसे मिलनेके लिये फिर वहां जा पहुंचा।

अर्मेनेण्डाकी विपदका क्या पूछना था। उसका एक मात्र प्रेमी, जिसके आगे संसारके यावत पदार्थों को वह तुच्छ समझती थी, उससे अलग कर दिया गया; उसके प्रेमकी निशानी एकमात्र कन्या जन्म लेते ही उसकी गोदसे छीन ली गयी। सन्तान होनेके समय उसकी विशेष सेवा-सुश्रुषा भी न हो सकी और सबसे बढ़कर बात तो यह हुई, कि लार्ड अल्टनकी बात माननेके लिये उसे बाध्य होना पड़ा।

अल्टनका ड्यूक उसकी सुन्दरतापर इतना मोहित हो गया था, कि इतना सब होनेपर भी उसने अर्मेनेण्डासे विवाह करनेकी इच्छा न त्यागी। अन्तमें लाचार होकर अपमान तथा समाजके भयसे अर्मेनेण्डाको भी उसकी बात माननी ही पड़ी और जिस समय अल्टन महलके ड्यूकको उसने यह समाचार भेजा, कि वह उसकी सब आज्ञायें माननेके लिये तय्यार है, उस समय उसकी प्रसन्नताका ठिकाना न रहा। इसका एक कारण और भी था। अर्मेनेण्डा सब ओरसे निराश की जा रही थी, उसकी माताने उसको एकमात्र सन्तानके मरनेका झूठा समाचार उसे सुना दिया था, साथ ही यह भी कह दिया था, कि स्वयं ड्यूवर्ट उसे इस मृत्यकी सूचना दे गया है। यह समाचार सुन अर्मेनेण्डा बड़ी ही कातर हो गई और घण्टों एकान्तमें बैठकर आंसू बहाती रही। इसके बाद उसका शोक कुछ ही कम हुआ था और इस घटनाको लगभग दो मास ही बीते थे कि एक दिन उसकी माताने फिर उसके पास आकर कहा, कि उसे और भी हृदय-भेदी समाचार सुननेके लिये तय्यार हो जाना चाहिये। अपनी माताके ये शब्द सुनकर वह एकबार जोरसे कांप

उठी और साथ ही समाप्त गई, कि कोई अदालत समाचार फिर यह कहा चाहती है! हाँ, उसका अनुमान सत्य ही था। क्योंकि इसके बाद ही उसे अंतिमबार यह समाचार सुनाया गया।

परन्तु इस समाचारपर फर्मेनेस्ताको विश्वास न हुआ। वह उस समाचार पर विश्वास न कर सकी, जो उसकी धर्म-पुत्री अन्तिम आज्ञाको रक्षार्थमें मेजनेके लिये तय्यार था। परन्तु यह तो उसे उन्माद-विभो-पागलसी बन गयी और उसे रह-रहकर मूर्छा आने लगी। इसके बाद ही वह खाटपर जा पड़ी और इस अन्तिम आज्ञाके टूटनेके साथ ही अपना जीवन विसर्जन करनेके लिये तय्यार हो गयी; परन्तु कोशिश कोई सामान्य की न थी। जब उसने देखा, कि फर्मेनेस्ताको विश्वास नहीं हुआ; तब उसने उसे एक पत्र दिखाया, जिसमें रोमन लोगोंके युद्धोंका समाचार लिखा था और साथ ही यह भी लिखा था, कि बोहेमियाका रहनेवाला जेकटिज नामक मनुष्य मारा गया है। अब फर्मेनेस्ताको उस समाचार पर बाध्य होकर विश्वास करना ही पड़ा और इसबार उसने बड़ी धीरतासे यह दुःख सहन करते हुए पवित्र जीवन बितानेकी प्रतिज्ञा की।

इसके बाद ही बुड्टो कोशिश आफ रोमनवर्ग बीमार पड़ी। उसकी बीमारी बढ़ती ही गई और अन्तमें जब उसने देखा, कि अब वह कुछ ही दिनोंके लिये इस संसारकी मेहमान है, तब अल्टनके ब्रूकके पास मनुष्य भेजकर पूछवाया, कि क्या वह अब भी फर्मेनेस्तासे विवाह करनेके लिये तय्यार है? उत्तर उसकी इच्छाके अनुकूल ही मिला और ब्रूक-अल्टन विवाह करनेके लिये तय्यार हो गया। तब उसने फर्मेनेस्ताको अपनी मृत्यु-शय्याके निकट बुला उससे प्रतिज्ञा करा ली, कि वह अल्टनके ब्रूकसे विवाह करेगी। पागलपनके झोंकमें ही फर्मेनेस्ताने यह प्रतिज्ञा करली। उसने रोते, काँपते तथा हाँफते हुए अपनी

माताकी अन्तिम आज्ञापर अपनी सम्मति प्रकट कर दी। इसके बाद एक हल्की मुस्कुराहट कोण्टेसके मुर्देके समान पीले चेहरेपर दिखाई दी और कुछ ही देर बाद उसने अपनी आत्माको ईश्वरके सुपुर्द कर दिया।

इसके बाद एक वर्ष बीत गया। एक खूबसूरत पत्थर मृत कोण्टेसकी कब्रपर लगाया गया और अब सुन्दरी, परन्तु अभागिनी अर्मेनेण्डा उस प्रतिज्ञाको पूर्ण करनेके लिये तय्यार हुई, जो उसने अपनी माताकी मृत्यु-शय्याके पास की थी। वह अल्टनके ड्यूकके साथ गिर्जेमें गई और इस तरह उस लेडीने अपने हाथों ही अपने कलेजेको कुचल डाला। यह कह देना भी आवश्यक है, कि अल्टनका ड्यूक अर्मेनेण्डाके साथ सदय तथा प्रीतियुक्त व्यवहार करता था और उसने वह लज्जाजनक भयानक भेद इसके बाद कभी भी अपने मुंहसे बाहर न निकाला। विवाहके दस महीने बाद ही अर्मेनेण्डाके गर्भसे अल्टन-महलकी बड़ी जायदादका एक वारिस उत्पन्न हुआ और उस लड़केका नाम रोडल्फ रखा गया।

यद्यपि अर्मेनेण्डा अपनी शक्तिभर सच्चे दिलसे अपने पतिकी सेवा करती थी, यद्यपि वह गिर्जेमें की हुई शपथके अनुसार ही सब काम करती थी, यद्यपि अपने पुत्र रोडल्फपर पूरी पूरी प्रीति दिखलाती थी, तथापि कभी कभी निराशाके भयानक बादल अर्मेनेण्डाके हृदयपर फैल जाते थे और वह उन्मादिनीकी भांति अकेली जङ्गलोंमें घूमने निकल जाती थी। वृक्षोंके अन्धकारमय कुञ्जोंमें शान्ति खोजती थी या कभी कभी कटे हुए पेड़ोंके बड़े बड़े कुन्दोंपर बैठकर घण्टों सोचा करती थी।

इसी तरह रोडल्फके जन्मके एक वर्ष बाद एक ऐसे ही अवसरपर अर्मेनेण्डाने एक लम्बे, पथश्रान्त मनुष्यको उसी जङ्गलकी राहसे जाते देखा। परन्तु, ओह! जिस समय उन दोनोंकी आंखें चार हुईं, उस

अनन्त आश्चर्य, प्रसन्नता और घबड़ाहटसे वे दोनों चिल्ला उठे और इसके दूसरेही क्षण एक दूसरेके गलेसे चिपट गये।

छानवेवां परिच्छेद ।

अर्मेनेल्डाके इतिहासकी समाप्ति ।

हां, सन्देह उस समय विश्वासमें परिवर्तित हो गया, जिस समय बहुत देरतक उन दोनोंके ओठ आपसमें मिले रहे और चारोंओर अविरल आंसुओंकी धारा बहती रही, जिसने दो तीन गालोंको तर कर दिया। इसके बाद बहुत ही धीरे धीरे, मानो सुगन्धित फूलोंके भीतरसे आवाज आ रही हो,—"प्यारे लेकटिल!" "प्यारी अर्मेनेल्डा!" इसके दूसरे ही क्षण अविरल गुञ्जनोंके शब्दोंकी आवाज आने लगी, मानो हरी-हरी दूबमें कीड़े बोल रहे हों, और फिर खुली मिली हुई आवाज इस तरह आने लगी, जिस तरह वसन्तकी सुगन्धित हवा मीठा मिलती हो कभी जोरसे और कभी धीरे-धीरे शब्द करने लगती है।

इसके बाद उन घटनाओं तथा वियोग व्यथित दिनोंके समाचारोंके वर्णनका समय आया, जिसे सुननेके लिये दोनों ही लालायित हो रहे थे। जो हो, पहले अर्मेनेल्डा ही अपनी कहानी कहनेके लिये तय्यार हुई, कि वह किस तरह अस्टन महलमें लाई गई, किस तरह उसकी कन्या उसकी गोदसे छीन ली गई, किस तरह उसे विश्वास दिलाया गया, कि लेकटिल मर गया, फिर किस तरह उसने अपनी माताकी मृत्यु-शय्याके पास खड़े हो अस्टनके पुत्रसे विवाह करनेकी प्रतिज्ञा की, उसने किस तरह अपनी प्रतिज्ञा पूरी की और किस तरह उसे रोडरिक नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

ओह! यह सुनते ही, कि अर्मेनेल्डा दूसरेकी स्त्री है, लेकटिल

दुःखसे मर्माहत हो गया और कुछ क्षण तक उसे शीघ्र श्वास न रहा, परन्तु अन्तमें अपने उठते हुए भावोंको दबाकर वह अपनी कथा कहनेके लिये तय्यार हुआ। अर्थात् जब अर्मेनेण्डाकी प्रीतिका भंडा फूट गया, तब कौण्ट-रोशनबर्गने उसे बुलाकर कहा,—"तुम्हारी सब चालोंका पता लग गया और अब तुम्हें इसी क्षण यह महल छोड देना पडेगा। यह तो तुम जानते ही हो, कि अपने रुतबे तथा सम्मानकी ओर ध्यान देकर मैं या मेरी मा कोई भी अर्मेनेण्डाके साथ तुम्हारा विवाह करनेमें प्रस्तुत नहीं हो सकता, क्योंकि तुम कईबार स्वयं कह चुके हो, कि तुम्हें डाकू उठा लाये थे और तुम अपने माता-पिताका नाम भी नहीं जानते, न तुम्हारे पास सिवा तलवार या चालचलनकी उत्तमताके कोई दूसरा सबूत ही है। तब क्या तुम समझ सकते हो, कि एक ऐसे मनुष्यको, जिसके वंशका पता तक नहीं है, मेरी माता अपनी प्रिय कन्याको सौंप देगी और अपने मान सम्मानमें बट्टा लगायगी? मैं तुम्हारे साथ कोई कठोर व्यवहार नहीं किया चाहता, बल्कि एक सम्मानीय मनुष्यके समान समझता हूं और तुम्हें सावधान करता हूं कि मेरी बहिनके प्रेमके कारण अब तुम उसे कुराहपर ले जानेकी कदापि चेष्टा न करना। यह थैली लो, इसमें भरपूर रकम है और मेरे अस्तबलसे सबसे बढ़िया घोडा लेकर, शान्तिके साथ यहांसे चले जाओ।"

लेकटिजने कहा,—"हां, मैं अभी चला जाता हूं। परन्तु मैं अपनी चालोंसे अपनेको ऊंचे पदपर पहुंचाकर प्रमाणित कर दूंगा, कि मैं अर्मेनेण्डासे विवाह करनेके सर्वथा योग्य हूं। आपके दिये हुए घोड़ेको मैं स्वीकार करता हूं; परन्तु यह थैली नहीं लिया चाहता, क्योंकि मैं अपने भागनेके लिये घूस लेना नापसन्द करता हूं। नहीं, मेरा प्रेम ऐसा नहीं है, जो सोने चांदीके बदलेमें बेचा जा सके।"

इन्हीं अब बार्लिन पर्वतका जवान और सुन्दर लेकटिज यह ज्ञान हुआ बहुत कीड़कर गया दिया और इसको निर्मल भरती चीजर दुष्ट चैतमें जमा रहा, क्योंकि इस समय रामन लोगोंका इसको साथ अच्छा युद्ध छिड़ा हुआ था। उस युद्धमें लेकटिजने इतनी बहादुरी दिखाई, कि कुछ ही दिनोंमें वह उस दलका सरदार बना दिया गया। इसके बाद लेकटिजने कोल्ट-रोमनवर्गको एक पत्र लिखा, जिसमें उसने इन सब घटनाओंका वर्णन करने बाद धर्मनिष्ठाकी अवस्थाको भी कुछ पूरी की। वह पत्र रोमनवर्गके कोल्टके हाथोंमें पहुंचने न पहुंच सका, कि बीचमें ही धर्मनिष्ठाको मालूम उसे लादेव कर दिया था और उसी पत्रको फेर-फेरकर उसने धर्मनिष्ठाको सुनाया था, कि ज्ञान लिटका मर गया। अतु

लिटकाने जब यह लड़ाई जीत ली और टस्कनीके 'मेगट' युद्धने उसे बहुत गरदनके इनाम, एकराम तथा तगमे दिये, तब वह पैम्पम पर्वतकी राहसे फिर बोहेमियाकी ओर लौटा; परन्तु राहमें ही डाकुओंका एक ऐसा दल मिला जिसने उसके पासकी सब जमा-पूंजी लूट ली और उसका घोड़ा भी छीन लिया, क्योंकि लेकटिजने उनके बहुत कुछ कहनेपर भी उनके दलमें मिलना अस्वीकार कर दिया था। इसलिये वह निर्जीवतक उसे पैदल ही अपनी सफर पूरी करनी पड़ी और केवल उन किसानोंकी दया और कृपापर निर्भर करता हुआ, जिनके यहां वह बीच बीचमें ठहर जाता था, लेकटिज इस आशामें किसी रोमनवर्गकी जमींदारीमें आ पहुंचा था, कि उसे धर्मनिष्ठा अभी तक अविवाहिता ही मिलेगी।

परन्तु जब धर्मनिष्ठाकी जबानी उसे यह मालूम हुआ, कि उसका विवाह हो चुका है, तब वह बड़ीही निराशाजनक आवाजमें बोला,—"मेरे हृदयमें आज भयानक चो[illegible] हो रही है। आजसे यह समस्त

संसार मेरे लिये अन्धकारमय हो गया है। आजतक मेरे हृ
केवल एक ही आशा लहलहा रही थी, जो प्रेममयी थी, परन्तु
वह प्रेम मन्दिर भी चूर चूर हो गया। अब मेरी इच्छा तनिक भी
होती, कि इन सांसारिक झगड़ोंमें पड़ूं; क्योंकि संसारके प्र
कर्त्ताओंपर मुझे एक प्रकारकी विरक्ति सी हो गई है। (कुछ
हित होकर) सम्भव है, कि एक दिन वह आये, जब मैं इस संसा
शासनप्रणाली हो पलट दूं।"

अर्मेनेयडा घबड़ाकर बोल उठी,—"ऐ ईश्वर! यह क्या?
क्या?" इतना कह वह जेकटिजके शरीरमें जोरसे चिपट गयी
टक लगाकर उसका चेहरा देखने लगी।

जेकटिज बोला,—"नहीं अर्मेनेयडा! मैं पागल
हूं; परन्तु अब मेरे मस्तिष्कमें नवीन विचार और हृद
उत्पन्न हो रहे हैं। अब मैं केवल तुम्हारे प्रेमके
रह सकता, क्योंकि वह आशा टूट गई। अतः अब
दूसरी ही सामग्री होनी चाहिये। बस, अब मेरे
उद्देश्य अपने भाइयोंकी उन्नति करना है। यह उद्देश्य
होगा, यह अभीतक ईश्वर ही जानता है और मेरे-
कितने दिन लगेंगे, यह भी ईश्वर ही जानता है; परन्
दिन वह अवश्य आवेगा, जब मेरा उद्देश्य निश्चय सिद्ध
अर्मेनेयडा! तुमने मेरे हृदयका भाव नहीं समझा; पर
कि एक दिन ऐसा आवेगा, जब तुम्हें मालूम होगा, कि
था। तुम एक दूसरेसे ब्याही गई हो, इसलिये तबतक
प्रेमसे निराश हो जाना चाहिये, जबतक कि वह दिन
मैं तुम्हें उद्धार कर सकूं और जब कि हम दोनोंका हाथ
मिल सके, जिस तरह हृदय मिला हुआ है। अच्छा

हम लोगोंको अलग हो जाना चाहिये, क्योंकि अब हम लोगोंका
ग रहना उचित नहीं है। और यह गुप्त सम्मिलन भयानक और
हारे भविष्यमें बड़ा सताने वाला भी है; क्योंकि यदि हम लोगोंको
ें एकत्र देख लिया और यदि यह कह देगा कि अर्मेनियाका एक
वकके साथ .. "

अर्मेनिया दुःखसे रोती हुई बोली,—"मेरे प्यारे! मेरी ओरसे
हारे कैसे विचार हैं, उसके लिये मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूं; परन्तु
ह! क्या हम लोगोंको इतना शीघ्र अलग हो जाना चाहिये?
र क्या हमलोग अब न मिलेंगे?"

जेकटिलने धीमी, दुःखभरी तथा गम्भीर आवाजमें कहा,—
ोओ—विदाई, अर्मेनिया! अब तुम दूसरेकी हो चुकी हो। मैं अपने
र्थके लिये तुम्हें अपने पतिकी ओरके उचित कर्त्तव्य, धर्म तथा
हारों को हुई शपथसे हटाना नहीं चाहता। तुम्हारे प्रेमके कारण
तुम्हें अपमान, लज्जा तथा भयमें न गिरने दूंगा। ओह! गत
टनाओंने मुझे अच्छी तरह सिखा दिया है, कि ऐसे शीघ्र कार्य्य न
रने चाहिये। लगातारकी ये आनन्दमयी बातें, मेरा निराश प्रेम और
त सन्तान .. !"

अर्मेनियाने कोमल स्वरमें कहा,—"तुम्हें कैसे मालूम हुआ, कि
मारी सन्तान मर गयी? क्या जिस तरह तुम्हारी मृत्युके विषयमें
के धोखा दिया गया था; उसी तरह उस लड़कीके विषयमें भी न
कया गया होगा? क्या ये सब रचनायें तुम्हारी ओरसे मेरा ध्यान
टानेके लिये न की गई होंगी? हां, अब मैं अच्छी तरह समझती हूं,
कि ये बातें अल्टनके साथ विवाह करनेमें बाधाके समान थीं और
उन्हीं बाधाओंके दूर करनेके लिये यह चाल चली गयी थी।"

जेकटिलने कहा,—"परन्तु तुम सुनो अभी कह चुकी हो, कि

संसार मेरे लिये अन्धकारमय हो गया है। आजतक मेरे हृदयमें केवल एक ही आशा लहलहा रही थी, जो प्रेममयी थी, परन्तु आज वह प्रेम मन्दिर भी चूर चूर हो गया। अब मेरी इच्छा तनिक भी नहीं होती, कि इन सांसारिक झगड़ोंमें पड़ूं, क्योंकि संसारके शासन कर्त्ताओंपर मुझे एक प्रकारकी विरक्ति सी हो गई है। (कुछ उत्साहित होकर) सम्भव है, कि एक दिन वह आये, जब मैं इस संसारकी शासनप्रणाली ही पलट दूं।"

अर्मेनेगडा घबड़ाकर बोल उठी,—"ऐ ईश्वर! यह क्या? यह क्या?" इतना कह वह जेकटिनके शरीरमें जोरसे चिपट गयी और टक लगाकर उसका चेहरा देखने लगी।

जेकटिन बोला,—"नहीं अर्मेनेगडा! मैं पागल नहीं हो गया हूं; परन्तु अब मेरे मस्तिष्कमें नवीन विचार और हृदयमें नये ही भाव उत्पन्न हो रहे हैं। अब मैं केवल तुम्हारे प्रेमके भरोसे जीवित नहीं रह सकता, क्योंकि वह आशा टूट गई। अतः अब मेरे जीवनकी दूसरी ही सामग्री होनी चाहिये। बस, अब मेरे जीवनका एकमात्र उद्देश्य अपने भाइयोंकी उन्नति करना है। यह उद्देश्य किस तरह पूरा होगा, यह अभीतक ईश्वर ही जानता है और मेरे उद्देश्यकी पूर्त्तिमें कितने दिन लगेंगे, यह भी ईश्वर ही जानता है; परन्तु एक न एक दिन वह अवश्य आवेगा, जब मेरा उद्देश्य निश्चय सिद्ध होगा। ओह! अर्मेनेगडा! तुमने मेरे हृदयका भाव नहीं समझा; परन्तु याद रखो कि एक दिन ऐसा आवेगा, जब तुम्हें मालूम होगा, कि मैंने क्या कहा था। तुम एक दूसरेसे व्याही गई हो, इसलिये तबतक मुझे तुम्हारे प्रेमसे निराश हो जाना चाहिये, जबतक कि वह दिन न आवे, जब मैं तुम्हें उद्धार कर सकूं और जब कि हम दोनोंका हाथ फिर उसी तरह मिल सके, जिस तरह हृदय मिला हुआ है। अच्छा, अर्मेनेगडा!

अब भाग-पूर्वक, ईमानदारीसे काम करना, और जो कोई उपाय मैं अपने जीवन बिताऊँगा उसमें, यह सम्मानसे परिपूर्ण रहेगा। चाहे बहुत दिनोंतक मुझे कष्ट भोगना पड़े, चाहे बरसों मैं एक कोनेमें छिपा पड़ा रहूँ, परन्तु लेना कि कभी, कभी लड़ चुका हूँ, एक दिवस अवश्य ऐसा आवेगा, जब मैं अपने सारे भाइयोंका उपकारकर सकूँगा। चाहे मैं कितनी ही विपत्तिमें क्यों न पड़ूँ, तुम्हारी स्मृति, तुम्हारा प्रेम और तुम्हारे सुन्दर सुखमण्डलकी याद मुझे सदाही बनी रहेगी। साथही यह भी स्मरण रखो, कि सम्भव है, कि ऐसी घटना आ पड़े, जिससे मुझे अपना नाम भी बदल देना पड़े, ऐसी दशामें तुम स्मरण रखना, कि मेरे नामसे यही अक्षर रहेंगे, जो इस समय हैं। इस तरह चाहे मेरी जो दशा हो और चाहे संसार मुझे कोई दूसरा ही मनुष्य समझे, परन्तु तुम इन बातोंका यदि स्मरण रखोगी, तो मुझे प्रत्येक समाज और दलमें पहचान लोगी; करोड़ों मनुष्योंमें मैं पहचाना जा सकूँगा और तुम्हें कभी अड़चन न पड़ेगी। अच्छा अब विदा—अर्मेनेण्डा,—विदा,—जब तकके लिये विदा, जब तक हमलोगोंके लिये सुखका समय नहीं आता,—नहीं तो फिर सदाके लिये ही विदा!"

अब अर्मेनेण्डा और जैकलिज अन्तिम मिलनके समान ही गले गले मिले, परन्तु इस अन्तिम मिलनमें ही बाधा आ पड़ी और शिकारियोंका एकदल एकाएक जंगलकी झाड़ीमें से उनके पासही निकल पड़ा। इस दलमें चूक-चकटनको देखतेही अर्मेनेण्डा जोरसे चीख उठी और जैकलिज अपने हाथकी तलवार म्यानके बाहर खींच, शेरकी तरह अकेलाही सामने दलपर झपट पड़ा। ओह! जिस समय अर्मेनेण्डाके कानोंमें शस्त्रोंकी झनझनाहट सुन पड़ी, उसी समय वह बेहोश हो गिर गयी। और जैकलिजको भी उन शिकारियोंने गिरफ्तार कर लिया।

खानसामा ह्यूबटकी सच्चरित्रता पर तुम्हें कुछ कुछ विश्वास है और उसने कई बार तुमसे नहीं कहा है, कि विचारी लड़की जन्मके कुछ ही दिन बाद परलोक सिधार गयी ?"

अर्मेनेण्डाने कहा,—"हां, बात तो ऐसी ही है और इसमें कोई सन्देह नहीं, कि ह्यूबर्टका हृदय उदार तथा दयालु है। मैं नहीं समझती, कि उसने मुझे धोखा दिया होगा।"

मानो किसी आकस्मिक विचारसे चौंककर जेकटिज बोल उठा, —"सुनो, अर्मेनेण्डा! अब हमलोगोंको अलग हो जाना चाहिये। तुम्हारी इज्जत तथा पद-मर्य्यादा मुझे अब यहांसे चले जानेके लिये बाध्य करती है। परन्तु सुनो सुनो, ऐ सुन्दरी! तुम्हें मैंने सदासे प्यार किया है और जबतक जीवित रहूंगा, करता रहूंगा, लो इस अगूठीको देखो (इतना कह उसने अपनी जेबसे एक अगूठी निकाल अर्मेनेण्डाके हाथमें देदी) यही वह एक माल पदार्थ है, जो उन डाकुओंने भूलसे मेरे पास छोड़ दिया था, नहीं तो यह भी चला जाता। अस्तु, तुम इसे ग्रहण करो, हिफाजतसे छिपाकर मेरी स्मृतिमें इसे अपने पास रखो और यदि ईश्वरने वह दिन दिखाया, कि हमलोग मिल सकें, तो यही अगूठी मुझे तुम्हारी पहिचान और तुम्हारी आज्ञाओंके पालन करनेका आदेश बतावेगी। साथही यदि तुम्हें यह मालूम हो जाये, कि तुम्हारी सन्तान जीवित है ."

अर्मेनेण्डा रोती हुई बीचमें ही बोल उठी,—"तब यही अगूठी देकर मैं उसे तुम्हारे पास इस लिये भेज दूंगी, कि वह तुम्हें पिता कहकर पहचान ले। परन्तु आह! तुम अब कहां जाते हो? तुम्हारी क्या इच्छा है? तुमने अपने लिये अब क्या विचारा है?"

जेकटिजने कहा,—"मैंने अभी तक कुछ निश्चित नहीं किया है। परन्तु सुनो, मैं कह सकता हूं, कि अबसे जो कुछ मैं उपार्जन करूंगा,

कोपने लगा, कि दासी यह विचारी दुःखिनी मर गयी अथवा उसके पति उसे बदला लिया है। यही बात सोच सोचकर जब एक दिन अलटन में बैठा हुआ यह आंसू बहा रहा था, तब उसे उसी मनुष्योंमें का एकने देख लिया, जिनसे पहले दिवस उसकी मुठभेड़ हो चुकी थी। एकबार फिर लंगलमें घोर युद्ध हुआ; परन्तु जेकटिनने फिर अपनी जान बचायी और हरहर-महलमें आकर मौजूद हो गया।

यह किस जगहमें हरहर-महलमें पहुंचा, तथा किस तरह राजा हरहरने उसको दया पर दयाकर उसे अपने यहां रख लिया, आदि बातें मनोज्ञ अपने इतिहासमें वर्णन कर चुका है, अतः हमें इतनाही कहना है, कि हरहर-महलमें आकर केवल अलटनके खूनकी दृष्टिसे बचने तथा अपना यह उद्देश्य पूरा करनेके लिये, जो अर्मेनियाके कहा था, उसने केवल अपना नाम बदल डाला और जेकटिनकी जगह लिटका रख लिया। अपना भविष्य कर्तव्य भी जेकटिनने ठीक कर लिया था, तथापि अर्मेनियाके वियोगके कारण कभी कभी उसका जैसा हृदय व्यथित हो जाता था और वह पागलोंकी तरह सोच विचारमें बैठा रह जाता था।

परन्तु अर्मेनिया मरी नहीं थी, उसके पतिने उसपर अविश्वास कर कुमारीके चुम्बनका दण्ड देनेके लिये उसे अपने विश्वासी खानसामा ब्रूटके सुपुर्द कर दिया था और यह ब्रूटही पीतलकी मूर्त्तिका उस समय निरीक्षक और प्रबन्धकर्ता था। उसकी कृपासे ही बिचारी अर्मेनियाका जीवित रह गयी परन्तु ब्रूटने उससे कसम खिलाकर प्रतिज्ञा करालीथी, कि जब तक समय आपसे आप उसे बाहर निकलनेका अवसर न दे, तब तक वह मुर्दों की भांति ही अलटन महलके तहखानेमें पड़ी रहे। इसी लिये वह एक मुर्देके समान अलटनमहलके तहखानेमें रहने लगी और फिर उन दोनोंने मिलकर पीतलकी मूर्त्तिके

इसी समय अलटनके ड्यूकने चिल्लाकर कहा,—"इन्हें जल्द किलेमें ले जाओ।" और जिस समय उस दलके कुछ मनुष्य बेहोश अर्मेनेण्डाको घोड़े पर लाद महलकी ओर ले चले उसी समय ड्यूक-अलटनने जैकटिजके पास जाकर बहुत ही धीमे स्वरमें कहा,—"तूमने आज फिर मेरा अपमान किया। यह तुमने दुबारा अपमान किया है और इसका दण्ड मृत्यु है। इस ढंगकी, इतनी कष्ट दायक तुम्हारी मृत्यु होगी, कि इसका पूरा प्रतिफल तुम्हे मिल जायगा। (अपने साथियोंकी ओर देखकर) इसे ले जाओ।"

परन्तु अपनी शक्ति, बहादुरी तथा चालाकी से जैकटिजने झटका देकर उनके हाथोंसे अपनेको छुडा लिया और उनके खाली घोड़ेपर झपटकर इस तरह सवार हो वहासे हवाकी तरह भागा, कि वे किसी तरह उसे पकड न सके। बहुत दूर तक उन लोगोंने उसका पीछा किया और कुछ देर बाद मृत अवस्थामें उन्हें अपना घोडा दिखायी दिया। परन्तु जैकटिज का अब भी पता न मिला। मृत घोडेको देख उन लोगोंको बडी प्रसन्नता हुई, कि अब जैकटिज शीघ्रही पकडा जायगा, परन्तु तथाही उन्होंने जङ्गलमें टक्करे मारीं, तथा हो समूचा जगल छान डाला, अलटनको विवाहिता स्त्री बेरोनेस अर्मेनेण्डाके प्रेमीका उन्हे बिल्कुलही पता न लगा।

इसमें कोई सन्देह नहीं, कि जैकटिज उसी स्थानपर जगलमें ही कहीं छिपा था, परन्तु उसने अपनी चालाकीसे अपनेको इस तरह छिपा रखा था, कि उन लोगोंको किसी तरह पता न लगा और वे लाचार हो लौट गये। कई दिनों तक वह उस जगलमें और अलटन-महलके आसपास अर्मेनेण्डाका समाचार जाननेके लिये घूमता रहा। और अन्तमें उसे यह समाचार मिला, कि अर्मेनेण्डा मर गयी। ओह! इस समाचारको सुनते ही वह विकल होगया और मनही मन

भी बहुत कुछ भार उसी पर था। इसी लिये उसे कभी किसी बातकी कमी न होती थी और उस आत्म-समितिके लिये सब प्रकारके सामान वह अनायास ही जुटा लेता था। तथा यही कारण था, कि उस पर किसीको कभी सन्देह भी नहीं होता था। परन्तु उस तहखानेमें रहनेके कारण वह डाक्टरने देखा, कि बेरोनेस अर्मेनेस्ताका शरीर दिनों दिन खराब हुआ जाता है, तब उसने उसे अस्टन महलके दक्षिण-भागकी छतोंपर घूमनेकी आज्ञा दे दी। इस तरह बेरोनेसको दो तीन बार कई मनुष्योंने देख भी लिया, परन्तु सदा सफेद गवन पहननेके कारण लोगोंने उसे भूत बेरोनेसकी आत्मा समझ लिया और इसी घबड़ाहटके कारण कोई कुछ भी न बोला। बस फिर क्या था, कुछ ही दिनोंमें यह खबर प्रान्त भरमें फैल गयी, कि अस्टन महलके दक्षिण भागमें प्रेत-लीला दिखायी दिया करती है। यह बात भी डाक्टर और अर्मेनेस्ताके लाभकी ही हुई और अब महलके दक्षिण भागकी ओर वे रहनेका भी कोई साहस न कर सका। महलका दक्षिण भाग बिलकुल बन्द कर दिया गया और इस तरह अर्मेनेस्ताको स्वतन्त्रता पूर्वक उस भागमें घूमनेका अवसर मिल गया। परन्तु अब भी उसे साफ वस्त्र न मिलते थे, इसलिये डाक्टरने उसे जङ्गलमें घूमनेकी आज्ञा भी दे दी तथा भी वह कई बार देखी गयी और इस तरह यह बात और भी पक्की हो गयी, कि अस्टन महलमें भूतोंका डेरा है।

अब पाठक सहजमें ही समझ सकते हैं, कि उस आधी कमरेसे ये लीला तथा अर्मेनेने जो सफेद भूत देखा था, वह असलमें क्या था और उसके एकाएक गायब हो जानेका यही कारण था, कि वह जरा भी सन्देह होते ही गुप्त राहसे तहखानेमें उतर जाती थी।

बेरोनेसके कैद होनेके आठ महीने बाद तीनों खार्ज-भाई भी उस समितिके सभासद बनाये गये। वे तीनों पीतलकी मूर्त्तिके आगे

आगे बलिदान पड़ने वाले मनुष्योंको बचाना आरम्भ किया। इसी तरह कितने ही मनुष्य बचाये गये और अन्तमें एक भ्रातृ-समिति ही स्थापित हो गयी। इसके बाद उन बचाये हुए मनुष्यों पर धार्म्मिक प्रभाव डालनेके लिये उसने नन्हीं सा सफेद वस्त्र पहनाना और समयोचित दयार्द्र व्यवहार करना आरम्भ किया। अन्तमें उसके इसभावका इतना प्रभाव पड़ा, कि ऊंचेसे ऊंचे दर्जेके स्त्री पुरुष भी उन किसानों तथा छोटे दर्जेके मनुष्योंके साथ भी समान ही व्यवहार करने लगे और किसी प्रकारका प्रभेद न मालूम होने लगा। इसके अतिरिक्त धर्म-नेष्ठाकी दया, सहानुभूति तथा कृपाने उन मनुष्योंका हृदय अपनी ओर इतना आकर्षित कर लिया, कि सभी उसके लिये प्राण देने और उसके एक इशारे पर सब प्रकारका काम करनेके लिये तय्यार होगये।

वह सफेद लेडी, जो अब घटनाक्रमसे धर्मनेष्ठा प्रमाणित हो चुकी है, समय समय पर हावर्टसे उन लोगोंका समाचार पूछ लेती थी, जिनका उससे सम्बन्ध था, और इस तरह उसे बाहरके सब हाल मालूम हो जाया करते थे। सबसे अधिक खयाल उसे अपने पुत्र रोलडफका था और उसकी चाल-चलनके विषयमें वह अधिक पूछताछ किया करती थी। इसके बादही उसे यह भी समाचार मिला कि 'जिटका' नामका कोई मनुष्य राजा बंजलकी कृपासे बहुत ही ऊंचे दर्जे पर पहुंच गया है। इतना सुनतेही उसे मालूम हो गया; कि यह वही मनुष्य है, जिसकी मूर्त्ति अभीतक वह भूल नहीं सकी है और जिसकी उन्नतिके लिये वह नित्यप्रति ईश्वरसे प्रार्थना किया करती है।

उसे भ्रातृ-समितिको हावर्ट ही सब प्रकारके भोजन पहुंचाता था, क्योंकि उसने घटनके चाबूकको इस तरह अपने वशमें कर रखा था, कि केवल उसके घरेलू कामोंमें ही उसका अधिकार न था, बल्कि किसानोंसे अन्नकी पैदावार लेने और किलेकी देख रेख करनेका

इस तहखानेका यह गुप्त भेद यदि किसी तरह खुल जाता और किसी तरह उसकी तलाशीका अवसर आ पड़ता, तो यह बात कदापि छिपी न रह सकती, कि अर्मेनेण्डा अभीतक उसी तहखानेमें जीवित है और फिर दाराग्र हृदय शुक अर्मेनेण्डाको मारे बिना नहीं छोड़ता। मोंसेर पोतलकी दृष्टिका इस इतना बड़ा, विस्तृत तथा भयानक था, कि उसके लोग इधरे उधरे दिशामें भी घूमा करते थे और इस तरह इधरे दिशामें भाग जानेवाले कैदियोंका पता लग जाना कोई कठिन बात न थी। इसीलिये सब तरहसे सोच विचारकर यही निश्चित किया गया था, कि पोतलकी मूर्त्तिके आगे बलिदानसे बचाये हुए मनुष्योंको अन्तिम सहनमें ही रहना चाहिये।

इसी तरह बरसों बीत गये और अब डावर्टके हृदयमें अर्मेनेण्डासे सम्बन्ध रखनेवाले भेद भारसे मालूम होने लगे; क्योंकि अब उसकी तबीयत बड़ी गयी थी और वह मन ही मन विचार करता था, कि सम्भव है, कि मेरी मृत्यु हो जाय और यह भेद छिपाही रहे। यह भेद और कुछ नहीं, केवल अर्मेनेण्डाकी प्रीतिका उपहार, जान लिटका तथा अर्मेनेण्डाकी औरस जात कन्या थी, जो अबतक जीवित थी। अन्तमें यह भेद डावर्टने अर्मेनेण्डासे कह दिया और यह भी बता दिया, कि उसकी कन्या केवल जीवित ही नहीं है, बल्कि उसके अत्यन्त निकट, केवल कई मीलोंकी दूरीपर रहती है। ओह! यह बात सुन अर्मेनेण्डाके हृदयमें बहुत ही अधिक आनन्द हुआ। यदि इस समय डावर्ट अर्मेनेण्डाको सनक बचाये हुए मनुष्योंको कुशल तथा अन्य कितने ही भेद समझाकर न रोकता, तो सम्भव था, कि अर्मेनेण्डा उसी समय ये जोलाको गले लगानेके लिये विल्डनकी झोपड़ीकी ओर दौड़ पड़ती और उसे लिटकाकी दी हुई अंगूठी देकर, प्रेममें लिटकाके पास भेज देती; परन्तु डावर्ट अच्छी तरह जानता था, कि लिटका

बलिदान देनेके लिये लाये गये थे; परन्तु जल्लादोंकी कमी रहनेके कारण वे जल्लाद बना लिये गये, क्योंकि वे पुरुष, जो जल्लादका काम करते थे, एक एक कर क्रमशः मर गये थे।

जब अल्टनके ड्यूकने उन तीनोंको जल्लादके कामका भार लेनेके लिये कहा, तब पहले तो उन लोगोंने इस कामका भार लेनेसे इन्कार किया, पर ह्यूबटने उन्हें इशारेमें ही स्वीकार करनेके लिये समझा दिया। उन लोगोंने उसकी बात मान ली और इस तरह जब उन लोगोंको यह मालूम हुआ, कि कैसी भयानक मृत्युसे वे बचा लिये गये हैं, तब उन लोगोंकी कृतज्ञताका वारापार न रहा और वे ह्यूबटको बड़ी ही श्रद्धा और भक्तिसे देखने लगे। इसके बाद वे सब शिकारोंको अवसर मिलते ही बचा लेते थे; परन्तु जब वे ड्यूक-सीमवग और बैरोनेस-हेमलेनको न बचा सके, तब उन लोगोंके हृदयमें बड़ा ही कष्ट पहुंचा।

यह बात पाठकोंको आगे चलकर मालूम होगी, कि तीनों स्वार्ज-भाई किस तरह उस भयानक मृत्युके लिये पीतलकी मूर्त्तिके आगे लाये गये थे, क्योंकि उनके किस्सेसे सफेद महल तथा हेमलेन कैसलका बहुत बड़ा सम्बन्ध है। अब हमें यह बताना है, कि ह्यूबर्ट तथा अर्मेनेण्डा उन मनुष्योंको, जो मृत्युसे बचा लिये जाते थे, उसी महलमें क्यों रोक रखते थे और दूसरे देशमें क्यों न भाग जाने देते थे।

सबसे बड़ी बात तो यह थी, कि उन्हें उन मनुष्योंसे भेंट हो जानेका सन्देह था, जो इधर उधर बराबर घूमा ही करते थे और जो उन लोगोंको पकड़ लाये थे। यदि किसी तरह वे लोग पहचान कर पकड़ लिये जाते, तो सब दोष ह्यूबर्ट खानसामापर मढ़ा जाता और फिर उसकी जान बचनी कठिन हो जाती। दूसरे अल्टन-महलके

लिये रह जानेके बाद हार्वटने अर्मेनिआको यह बात कह दी। अर्मेनिआका चित्त शान्त रखनेके लिये हार्वट बराबर उसे ऐ जोलाका समाचार सुनाया करता था और यह इस बातपर दृष्टि रखता था, कि अर्मेनिआकी सहायताको किसी प्रकारका कष्ट तो नहीं पहुंचता। इसी तरह हार्वटको यह भी मालूम हो गया था, कि विसडनने उस कन्याका नाम सर्फ एक निर्दय पादरीके सम्मानके लिये ऐ जोला ही रख दिया है, क्योंकि उस पादरीका नाम ऐ जोला था। उसी छल, दुरदर्शी तथा धार्मिक पादरीने ऐ जोलाकी उत्तम गुणोंको क्रिया पायी थी और उसे मनुष्य जीवन सम्बन्धी ऐसे ऐसे भेद मालूम हुए थे, जिन्होंने उसके हृदयको उदार तथा सदाशय बना दिया था। यद्यपि यह पादरी मर गया; परन्तु उसकी क्रियाका प्रभाव ऐ जोलाके अन्तःकरणमें वर्त्तमान रह गया।

ये सब बातें दुःखिनी अर्मेनिआ बड़े प्रेमसे सुना करती थी; परन्तु इसके कुछ ही दिन बाद हार्वटको मालूम हुआ, कि रोडल्फकी दृष्टि ऐ जोलापर पड़ी है और वह उससे मिलनेके लिये बराबर उसकी झोपड़ीके चारों ओर जङ्गलमें चक्कर लगाया करता है। यह बात सुनते ही उसे विश्वास हो गया, कि रोडल्फका अपनी बहिनपर ही अनुचित प्रेम उत्पन्न हुआ है। हार्वटने यह बात तो अर्मेनिआसे कह देनी उचित समझी और बहुत देरतक आपसमें विचार करने बाद यह स्थिर हुआ, कि एक पत्र लिखकर ऐ जोलाको इस विषयसे सावधान कर दिया जाये। इसी विचारके अनुसार बेरोनेस अर्मेनिआने एक पत्र लिख और उसे एक मखमली थैलीमें बन्दकर ऐ जोलाके पास भेज दिया।

इस पत्रके भेजनेके एक वर्ष बाद हार्वटने एक दिन अर्मेनिआसे कहा, कि उसकी लड़कीको रोडल्फने शाही कमरेमें कैद किया है। यह घटना सुन बेरोनेस अर्मेनिआ बहुत ही घबड़ा उठी;

जिस प्रकृतिका मनुष्य है; उससे इन सब बातोंका पूरा पूरा पता लगाये बिना वह कदापि चुप नहीं रह सकता और इस तरह पीतलकी मूर्त्तिका भेद, उसके बलिदानसे इतने मनुष्योंका बचाये जाना आदि सभी बातें खुल जातीं और फिर ह्वावर्ट तथा अर्मेनेण्डा दोनोंकी ही जान बचनी कठिन हो जाती। केवल इतना ही नहीं, बल्कि कि जिन मनुष्योंकी जाने इस तरह बचाई गई थीं, वे भी फिर मृत्यु-मुखमें जा पड़ते। अस्तु, ये बातें विचारकर ह्वावर्टने अर्मेनेण्डापर इतना असर डाला, कि वह एक ठण्ढी सांस लेकर आंसू बहाती हुई चुप रह गयी। अस्तु।

जब अर्मेनेण्डाके गर्भसे सुन्दरी ऐ जोला उत्पन्न हुई थी, तब वह घटना भलीभांति गुप्त रखी गयी थी और ह्वावर्टको यह आज्ञा मिली थी, कि यह कन्या ऐसे मनुष्यको सौंप दी जाये, जो यह जाननेकी इच्छा भी न प्रकट करे, कि यह किसकी कन्या है। इसी विचार और आज्ञाके अनुसार ह्वावर्टने ऐ जोलाको एक गरीब स्त्रीके हाथोंमें दे दिया, परन्तु कुछ ही दिनों बाद उसने उसे विलडनके सुपुर्द कर दिया। विलडन तथा उसकी स्त्रीने नि सन्तान रहनेके कारण बड़े ही प्रेमसे ऐ जोलाका लालन-पालन किया और कुछ ही दिन बाद उस स्त्रीकी मृत्यु हो जानेके कारण विलडनसे भी ऐ जोलाके माता पिताका भेद बिल्कुल ही छिपा रह गया और इस भेदका जाननेवाला केवल ह्वावर्टके दूसरा कोई न रहा। अर्मेनेण्डाकी माताने उसको पुत्रीका मृत्यु-समाचार केवल उसे धोखा देनेके लिये कहा था और जब वह ब्याह कर अल्टन-महलमें आई, तो ह्वावर्टने भी अर्मेनेण्डासे यह कहना उचित न समझा, कि उसकी कन्या वर्त्तमान है और जिसे अपने जीवनमें वह कदापि देख नहीं सकती।

परन्तु अन्तमें अपनी मृत्यु होजाने तथा इस भेदके सदाके लिये

लिये रह जानेके भयसे हार्वटने अर्मेनिण्डाको यह बात कह दी। अर्मेनिण्डाका चित्त शान्त रखनेके लिये हार्वट बराबर उसे ऐलोताका समाचार सुनाया करता था और सदा इस बातपर दृष्टि रखता था, कि अर्मेनिण्डाको कन्याको किसी प्रकारका कष्ट तो नहीं पहुंचता। इसी तरह हार्वटको यह भी मालूम हो गया था कि विल्हलमने उस कन्याका नाम अपने एक मित्र पादरीके सम्मानके लिये ऐलोता ही रख दिया है, क्योंकि उस पादरीका नाम ऐलोता था। उसी उच्च, हृदयवाले तथा धार्मिक पादरीसे ऐलोताने उत्तम गुणोंकी शिक्षा पायी थी और उसे मनुष्य जीवन सम्बन्धी ऐसे ऐसे भेद मालूम हुए थे, जिन्होंने उसके हृदयको उदार तथा सदाशय बना दिया था। यद्यपि वह पादरी मर गया। परन्तु उसकी शिक्षाका प्रभाव ऐलोताके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें वर्त्तमान रह गया।

ये सब बातें तु ग्विनी अर्मेनिण्डा बड़े प्रेमसे सुना करती थी; परन्तु इसके कुछ ही दिन बाद हार्वटको मालूम हुआ, कि रोडल्फकी दृष्टि ऐलोतापर पड़ी है और वह उससे मिलनेके लिये बराबर उसकी झोपड़ीके चारों ओर जङ्गलमें चक्कर लगाया करता है। यह बात सुनते ही उसे विश्वास हो गया, कि रोडल्फका अपनी बहिनपर ही अनुचित प्रेम उत्पन्न हुआ है। हार्वटने यह बात भी अर्मेनिण्डासे कह देनी उचित समझी और बहुत देरतक आपसमें विचार करने बाद यह स्थिर हुआ, कि एक पत्र लिखकर ऐलोताको इस विषयसे सावधान कर दिया जाये। इसी विचारके अनुसार बेरोनेस अर्मेनिण्डाने एक पत्र लिखा और उसे एक मखमली बेगमें बन्दकर ऐलोताके पास भेज दिया।

इस पत्रके भेजनेके एक वर्ष बाद हार्वटने एक दिन अर्मेनिण्डासे कहा, कि उसकी लड़कीको रोडल्फने शाही कमरेमें कैद किया है। यह घटना सुन बेरोनेस अर्मेनिण्डा बहुत ही घबड़ा उठी; क्योंकि

जिस प्रकृतिका मनुष्य है; उससे इन सब बातोंका पूरा पूरा पता लगाये बिना वह कदापि चुप नहीं रह सकता और इस तरह पीतलकी मूर्त्तिका भेद, उसके बलिदानसे इतने मनुष्योंका बचाये जाना आदि सभी बातें खुल जातीं और फिर हावर्ट तथा अर्मेनेण्डा दोनोंको ही जान बचनी कठिन हो जाती। केवल इतना ही नहीं, बल्कि कि जिन मनुष्योंकी जाने इस तरह बचाई गई थीं, वे भी फिर मृत्यु-मुखमें जा पड़ते। अस्तु, ये बातें विचारकर हावर्टने अर्मेनेण्डापर इतना असर डाला, कि वह एक ठण्ढी सांस लेकर आंसू बहाती हुई चुप रह गयी। अस्तु।

जब अर्मेनेण्डाके गर्भसे सुन्दरी ऐंजोला उत्पन्न हुई थी, तब वह घटना भलीभांति गुप्त रखी गयी थी और हावर्टको यह आज्ञा मिली थी, कि यह कन्या ऐसे मनुष्यको सौंप दी जाये, जो यह जाननेकी इच्छा भी न प्रकट करे, कि यह किसकी कन्या है। इसी विचार और आज्ञाके अनुसार हावर्टने ऐंजोलाको एक गरीब स्त्रीके हाथोंमें दे दिया, परन्तु कुछ ही दिनों बाद उसने उसे विल्डनके सुपुर्द कर दिया। विल्डन तथा उसकी स्त्रीने नि सन्तान रहनेके कारण बड़े ही प्रेमसे ऐंजोलाका लालन-पालन किया और कुछ ही दिन बाद उस स्त्रीकी मृत्यु हो जानेके कारण विल्डनसे भी ऐंजोलाके माता पिताका भेद बिल्कुल ही छिपा रह गया और इस भेदका जाननेवाला केवल हावर्टके दूसरा कोई न रहा। अर्मेनेण्डाकी माताने उसको पुत्रीका मृत्यु-समाचार केवल उसे धोखा देनेके लिये कहा था और जब वह ब्याह कर अल्टन-महलमें आई, तो हावर्टने भी अर्मेनेण्डासे यह कहना उचित न समझा, कि उसकी कन्या वर्त्तमान है और जिसे अपने जीवनमें वह कदापि देख नहीं सकती।

अपनी मृत्यु हो जाने तथा इस भेदके सदाके लिये

जिसे इस बातके सबसे हानिमें अर्मेनेलाकी यह बात कह दी। अ
नेलाका चित्त शान्त रखनेके लिये हावर्ट बराबर उसे ऐंजोला
कमाचार सुनाया करता था और सदा इस बातपर दृष्टि रख
था, कि अर्मेनेलाकी मनोवृत्तिको किसी प्रकारका कष्ट तो नहीं प
चला। इसी तरह हावर्टको यह भी मालूम हो गया था, कि विहड
इस कारणका भाग अपने एक मित्र पादरीके सम्प्रदायके लिये ऐंजो
को रख दिया है। क्योंकि उस पादरीका नाम ऐंजोला था। उसी
हृदयसे तथा धार्मिक पादरीने ऐंजोलाने उत्तम गुणोंको शिक्षा पा
थी और उसे मनुष्य जीवन सम्बन्धी ऐसे ऐसे भेद मालूम हुए थे, जिन्हें
उसके हृदयको उदार तथा सदाशय बना दिया था। यद्यपि
पादरी मर गया; परन्तु उसकी शिक्षाका प्रभाव ऐंजोलाके अ
अन्तःकरणमें वर्तमान रह गया।

ये सब बातें दुःखिनी अर्मेनेला बड़े प्रेमसे सुना करती थी; पर
इसके कुछ ही दिन बाद हावर्टको मालूम हुआ, कि रोडल्फ क्रोध
ऐंजोलापर बड़ा है और वह उससे मिलनेके लिये बराबर उसकी ग
ड़ीके चारों ओर जङ्गलमें चक्कर लगाया करता है। यह बात सु
ही उसे विश्वास हो गया, कि रोडल्फका अपनी बहिनपर ही अनुचि
प्रेम उत्पन्न हुआ है। हावर्टने यह बात भी अर्मेनेलासे कह दी
उचित समझी और बहुत देरतक आपसमें विचार करने बाद
स्थिर हुआ, कि एक पत्र लिखकर ऐंजोलाको इस
कर दिया जाये। इसी विचारके अनुसार वेरोनिस अर्मे
लिखा और उसे एक मजबूती बेगमें बन्दकर ऐंजोलाके

इस पत्रके भेजनेके एक वर्ष बाद हावर्टने एक दिन
कहा, कि उसकी लड़कीको रोडल्फने अपनी कमरेमें
— — — — वेरोनिस अर्मेनेला बहुत ही घबड़ा

जिस प्रकृतिका मनुष्य है; उससे इन सब बातोंका पूरा पूरा पता लगाये बिना वह कदापि चुप नहीं रह सकता और इस तरह पीतलकी मूर्त्तिका भेद, उसके बलिदानसे इतने मनुष्योंका बचाये जाना आदि सभी बातें खुल जातीं और फिर ह्वावर्ट तथा अर्मेनेण्डा दोनोंको ही जान बचनी कठिन हो जाती। केवल इतना ही नहीं, बल्कि कि जिन मनुष्योंकी जाने इस तरह बचाई गई थीं, वे भी फिर मृत्यु-मुखमें जा पड़ते। अस्तु, ये बातें विचारकर ह्वावर्टने अर्मेनेण्डापर इतना असर डाला, कि वह एक ठण्डी सांस लेकर आंसू बहाती हुई चुप रह गयी। अस्तु।

जब अर्मेनेण्डाके गर्भसे सुन्दरी ऐ जोला उत्पन्न हुई थी, तब वह घटना भलीभांति गुप्त रखी गयी थी और ह्वावर्टको यह आज्ञा मिली थी, कि यह कन्या ऐसे मनुष्यको सौंप दी जाये, जो यह जाननेकी इच्छा भी न प्रकट करे, कि यह किसकी कन्या है। इसी विचार और आज्ञाके अनुसार ह्वावर्टने ऐ जोलाको एक गरीब स्त्रीके हाथोंमें दे दिया, परन्तु कुछ ही दिनों बाद उसने उसे विल्डनके सुपुर्द कर दिया। विल्डन तथा उसकी स्त्रीने नि सन्तान रहनेके कारण बड़े ही प्रेमसे ऐ जोलाका लालन-पालन किया और कुछ ही दिन बाद उस स्त्रीकी मृत्यु हो जानेके कारण विल्डनसे भी ऐ जोलाके माता पिताका भेद बिल्कुल ही छिपा रह गया और इस भेदका जाननेवाला केवल ह्वावर्टके दूसरा कोई न रहा। अर्मेनेण्डाकी माताने उसको पुत्रोंका मृत्यु-समाचार केवल उसे धोखा देनेके लिये कहा था और जब वह ब्याह कर अल्टन-महलमें आई, तो ह्वावर्टने भी अर्मेनेण्डासे यह कहना उचित न समझा, कि उसकी कन्या वर्त्तमान है और जिसे अपने जीवनमें वह कदापि देख नहीं सकती।

परन्तु अन्तमें अपनी मृत्यु होजाने तथा इस भेदके सदाके लिये

लिये रह जानेके सबबी हार्वटने अर्मेनिण्डाको यह बात कह दी। अर्मेनिण्डाका चित्त शान्त रखनेके लिये हार्वट बराबर उसे पैंजोलाका समाचार सुनाया करता था और सदा इस बातपर दृष्टि रखता था, कि अर्मेनिण्डाको कन्याको किसी प्रकारका कष्ट तो नहीं पहुंचता। इसी तरह हार्वटको यह भी मालूम हो गया था, कि विल्डनने उस कन्याका नाम अपने एक मित्र पादरीके सम्मानके लिये पैंजोला ही रख दिया है, क्योंकि उस पादरीका नाम पैंजोला था। उसी तरह, इन्द्रजाल तथा धार्मिक पादरीपैंजोलाकी उत्तम गुणोंकी शिक्षा पायी थी और सभी मनुष्य जीवन सम्बन्धी ऐसे ऐसे भेद मालूम हुए थे, जिन्होंने उसके हृदयको उदार तथा महाशय बना दिया था। यद्यपि वह पादरी मर गया; परन्तु उसकी शिक्षाका प्रभाव पैंजोलाके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें वर्त्तमान रह गया।

ये सब बातें तो जिनी अर्मेनिण्डा बड़े प्रेमसे सुना करती थी; परन्तु इसके कुछ ही दिन बाद हार्वटको मालूम हुआ, कि रोडल्फ कौंदूटि पैंजोलापर पड़ी है और वह उससे मिलनेके लिये बराबर उसकी कोठड़ीके चारों ओर जङ्गलमें चक्कर लगाया करता है। यह बात सुनते ही उसे विश्वास हो गया, कि रोडल्फका अपनी बहिनपर ही अनुचित प्रेम उत्पन्न हुआ है। हार्वटने यह बात तो अर्मेनिण्डासे कह देनी उचित समझी और बहुत देरतक आपसमें विचार करने बाद यह स्थिर हुआ, कि एक पत्र लिखकर पैंजोलाको इस विषयसे सावधान कर दिया जाये। इसी विचारके अनुसार बेरोनेस अर्मेनिण्डाने एक पत्र लिखा और उसे एक मखमली थैलीमें बन्दकर पैंजोलाके पास भेज दिया।

इस पत्रके भेजनेके एक वर्ष बाद हार्वटने एक दिन अर्मेनिण्डासे कहा, कि उसकी लड़कीको रोडल्फने ग्राही कमरेमें कैद किया है। यह घटना सुन बेरोनेस अर्मेनिण्डा बहुत ही घबड़ा उठी, क्योंकि

उसे उसके प्रतिकारका कोई उपाय न सूझता था। वह नहीं चाहती थी, कि ऐ जोला और रोडल्फ दोनों भाई बहिनमें कामभय प्रेम उत्पन्न हो; परन्तु उस शाही कमरेसे उसे एकदम भगा देना कोई ऐसा काम न था, जो रोडल्फको बिना सन्देह हुए पूरा हो जाता। और रोडल्फको जरा सा सन्देह होते ही वह उसके प्रत्येक भाग की तलाशी लेता तथा तहखानेका गुप्त भेद भी, जो अभी तक उससे छिपा हुआ था, उसके सामने प्रकट हो जाता। इन्हीं विचारों तथा घबड़ाहटमें तीन दिन और भी बीत गये। यद्यपि अर्मेनेण्डा गुप्त पथसे बराबर उस कमरे तक जाकर ऐ जोलाके कमरेके बगलमें ही खड़ी रहती थी, परन्तु उसके छुटकारेका कोई उपाय नहीं कर सकती थी। अन्तमें वह दिवस आ पहुंचा, जब कि रोडल्फने उसके पास जाकर उसे बहुत तरहसे धमकाते, प्रलोभन दिखाते तथा समझाते हुए बहुत सी बातें कहीं। ये बातें भी अर्मेनेण्डाने सुन लीं।

आह! इन बातोंने अर्मेनेण्डाके हृदयपर इतना प्रभाव जमाया, कि वह आपेसे बाहर हो गयी। घबड़ाहट, चिन्ता, तथा मानसिक वेदनाने उसकी अवस्था खराब कर दी और वह बड़े ही भयसे ऐ जोलाके छुटकारेका उपाय सोचने लगी। अन्तमें यही स्थिर हुआ, कि जो होना हो सो हो, ऐ जोलाको भगाना ही होगा, और इसी विचारके अनुसार उस रातिमें ऐ जोला उस ढंगसे भगायी गयी, जो पहले ही वर्णन किया जा चुका है।

अर्मेनेण्डाने ऐ जोलाको भगाकर रौशनवर्गके ड्यूकके यहां ही भेजना स्थिर किया था, परन्तु उसी समय हार्बर्टको यह समाचार मिला, कि जिटकाने अर्मेनेण्डाके भाई ड्यूक-रौशनवर्ग, उसके पति ड्यूक फ्रहटन तथा सोमवर्गके मार्क्विसको प्रेगके महलमें कैद कर रखा है। इसलिये हार्बर्टने यह सलाह दी, कि ऐ जोला ही उनके उद्धारके लिये

भेज दी जायँ ; क्योंकि हावर्टको विश्वास हो गया था, कि ये लोग यह काम अच्छी तरह पूरा कर सकेंगी और इसका नतीजा भी यह होगा, कि इस पीतलकी मूर्त्तिके इसका नाश हो जायगा ।

अब हम लिखी धर्मनैण्डाके सम्बन्धमें थोड़ी ही बातें और लिखनी रह गयी हैं, अतः, अब हम उस घटनाकी ओर झुकते हैं, जो रोडल्फ और एलीजाबेथके विवाहसे लगभग हुई थी । पाठकोंको स्मरण होगा, कि उस घटनाके एक दिन पहले हावर्ट खानसामा उस कमरेके बगल वाले कमरेमें छिपा था, जिसमें ब्रूक अल्टन तथा पादरी बातें कर रहे थे और बहुत देर तक एलीजाबेथके साथ रोडल्फके विवाहके सम्बन्धमें वादविवाद हुआ था । उस समय जो कुछ कहा गया था, उसीसे हावर्ट अच्छी तरह समझ गया था, कि रानी एलीजाबेथ अपने सतीत्व रत्नसे वंचित हो गयी है । निःसन्देह उसका यह रतन, जो सब रत्नोंमें श्रेष्ठ है, पादरीने नाश कर दिया था, और यही कारण था, कि ब्रूक-अल्टन भी अपनी पुत्रीके साथ उसका विवाह होनेमें राजी न था; परन्तु पादरीके बहुत जोर देनेपर तथा अपना स्वार्थ देखकर उसको बात भी माननी पड़ी थी । ये सब बातें हावर्टने धर्मनैण्डासे कह दी थीं और यही सबब था, कि उस समय उसका चेहरा बहुत ही दुःखित तथा चिन्तित था, जब अर्नटके दोनों पैरोंने धर्मनैण्डासे उसके दुःखित रहनेका कारण पूछा था । अस्तु यह समाचार सुन धर्मनैण्डाने यह विवाह होने देना उचित नहीं समझा और इसका उपाय भी सोच लिया गया । परन्तु आह ! उस समय धर्मनैण्डाके ध्यानमें ही यह बात नहीं आयी, कि इस उपायका परिणाम इतना भयानक और उसीके लिये दुःखप्रद हो उठेगा । असलमें यह उपाय उन मनुष्योंको चकड़ा देने तथा उनका विचार बदल देनेके लिये किया गया था; जिनका सम्बन्ध उस विवाहसे था । और इसीलिये उस गिर्जेके पीछे की राहमें, जो अल्टन-महलके

तहखानेमें गयी थी, उन पीतलकी मूर्त्तिके दलसे बचाये हुए एक रासायनिक मनुष्यने एक प्रकारकी लाल आग, जो बारूद मिलाकर बनायी गयी थी, छुड़वादी और उन खार्ज-भाइयोंमें से एक इस तरह चिल्ला उठा, जिस तरह मृत्युकालमें मनुष्य चिल्ला उठता है।

यद्यपि इस उपायसे काम निकल गया; परन्तु वह ढङ्ग ठीक नहीं उतरा क्योंकि भयके कारण बोहेमियाकी अभागिनी रानी ऐलीजावेथ परलोक सिधार गयी और यह दशा देख, अर्मेनेण्डा निराश तथा दुःखित हृदयसे अपने अन्धकारमय तहखानेमें लौट आयी। उसी समयसे अर्मेनेण्डाका हृदय बहुत ही दुःखित रहने लगा। इसके पहले उसके हृदयपर बैरोनेस तथा ड्यूक-सोमवर्गकी भयानक मृत्यु का जो धक्का पहुंचा था, उसका प्रभाव अभी दूर न हुआ था, कि एकाएक यह दूसरा सदमा पहुंचा और इसने उसका शरीर तथा कलेजा एकदमसे तोड़ दिया। इसके बाद अल्टन-महलपर आक्रमण आरम्भ हुआ और अल्टन-महलके अधिवासी भूखों मरने लगे। इन सब घटनाओंने एकत्र होकर अर्मेनेण्डाके हृदयपर इतना प्रभाव जमाया, कि उसे रह रहकर ज्वर आने लगा और थोड़े ही दिनोंमें वह परलोक सिधार गयी। अब आल्ट-समिति के स्त्री और पुरुष सभासदोंको ऐसा मालूम होने लगा मानों कोई ईश्वरीय दूत उन लोगों को निराशामें छोड़ कर चल दिया हो। इसके बाद उस समय उनके जीमें जी आया; जब सरदार-जिटका और ऐ जीला उस तहखानेमें आ पहुंचे।

इस तरह अल्टन-महलके गुप्त भेद तथा उस सफेद स्त्री अर्मेनेण्डा के सम्बन्धकी कुल घटनायें पाठकोंपर प्रकट कर दी गयीं।

सत्तानवेवां परिच्छेद ।

जिटकाकी उदारता तथा न्याय ।

हम पहले कह चुके हैं, कि युवककी उपेक्षा अल्टन महलके बुर्ज-पर उस समय फैलना ही चाहती थी, जब कि जिटका, डावर्ट तथा कोण्ट रोशनबर्ग, ये तीनों विगत घटनाओंपर विचार करनेके लिये एकत्र हुए थे। इस तरह तीनोंने अपनी बीती घटनायें कह डालीं।

परन्तु इसके पहले, कि हम किसीके मिसलिनेकी ओर मुड़ें, हमें दो तीन छिपे हुए गुप्त भेद प्रकट कर देने आवश्यक मालूम होते हैं, जिनमें कि आगे की घटनायें पाठक भलीभांति समझ सकें।

सबसे पहले ध्यान देनेकी बात यह है, कि जिटकाके इतने उत्तम काम देखकर तथा कई बार उससे साक्षात होनेपर भी कोण्ट रोशनबर्ग अथवा ब्लूक अल्टन किसीके मनमें भी यह गुमान न हुआ, कि यह वही मनुष्य है, जो इतने दिनों तक एक सामान्य पेज था और जिसे अर्मेन्ड्रा बहुत ही प्यार करती थी। न उन लोगोंने उस समय ही उसे पहचाना, जिस समय वह प्रेमके किलेमें बैठी हुई कोन्सिलमें घुस गया था, कि यह वही लेफ्टिनेन्ट है, जो अब घटनाओंका एक आंखमें खोल तथा रंगमें भूला हो गया है।

दूसरे जिस समय सरदार-जिटकाने ब्लूक-अल्टन, कोण्ट रोशनबर्ग तथा मार्किस सोमवर्गको, प्रिन्सेस ऐलीजाबेथ तथा उसका खजाना उसके हवाले करनेके समय तक कैदमें रखने और निश्चित समयपर पता न मिलनेपर उन्हें प्राण दण्ड देनेकी आज्ञा दी, उस समय यह भी निश्चित था, कि अर्मेन्ड्रा की बजहसे जिटकाके हृदयमें कुछ विद्वेषाग्नि उन दोनोंकी ओरसे अवश्य ही उत्पन्न हो गयी थी; क्योंकि वह अच्छी

तरह जानता था, कि ये ही दोनों मनुष्य हैं, जिन्होंने अर्मेनेण्डाके प्रेमसे उसे वंचित किया है। यद्यपि जिटका बहुत ही उचित पथपर चलनेवाला मनुष्य था और अपने स्वार्थके लिये किसीसे बदला नहीं लिया चाहता था, न अपने निज-स्वार्थके लिये उन्हें कैद ही किया चाहता था, तथापि जब उसे उसके भाई और पतिको दण्ड देनेके लिये यह मौका मिल गया था, तब जिस तरह मनुष्य-हृदयमें प्रकृतिका प्रभाव पहुंच जाता है, उसी तरहकी दशा जिटकाकी भी होगई थी।

एक बात और भी है, जिसपर ध्यान देनेकी परम आवश्यकता है और जिसका सम्बन्ध कौण्ट-रोशनबर्गसे है, जिसे आज बीस वर्ष पहले ही धोखा देकर कहा गया था, कि उसकी बहन मर गयी है। बात यह थी, कि कौण्ट रोशनबर्गने अपने बहनोई पर पूरी तरह विश्वास कर लिया था, क्योंकि उसने उसे कहला भेजा था, कि अर्मेनेण्डाको प्लेगके समान ही एक रोग हो गया था, जिससे दो घण्टेके भीतर ही उसकी मृत्यु हो गयी। साथ ही अल्टनके ड्यूकने जिटका और अर्मेनेण्डासे सम्बन्ध रखने वाली सब घटनायें इस तरह छिपा रखी थीं, कि उसका एक अक्षर भी कौण्ट रोशनबर्ग तथा उसके परिवार वालोंके कान तक न पहुंच सका था। इसके सिवा उसने विवाहके बाद उससे किसी प्रकारका बुरा व्यवहार भी न किया था। यद्यपि ड्यूक-अल्टनका हार्दिक प्रेम उसपर न था, तथापि उसका व्यवहार उत्तम था और इन सब घटनाओंने एकत्र होकर कौण्ट-रोशनबर्गके हृदयमें किसी प्रकारका सन्देह न उत्पन्न होने दिया।

अस्तु अब हम फिर अपने किस्सेके सिलसिलेकी ओर झुकते हैं।

सूर्य्यास्त हुए लगभग डेढ़ घण्टा बीत चुका था और उन तीनोंने जो कुछ करना था, वह निश्चय कर लिया था, अपनी-अपनी गत घटनायें सभी वर्णन कर चुके थे और एक दूसरेके हृदयका भाव अच्छी तरह

समझ गया था, इसलिये वह टैपोराइट-दलके सरदार आन जिटकाने अपना आन दूसरी ओर फेंका और एक पेशकी बुलाकर उससे पूछा, कि पीतलकी मूर्त्तिके सम्बन्धमें उसने जो आज्ञा दी थी, उसके अनुसार सभी काम हुआ है या नहीं? उत्तरमें उस पेशने कहा, कि फोजी इंजीनियरोंने उस भयानक मूर्त्ति उसका नाश कर दिया है।

हाँ, अवश्य ही टैपोराइट दलवालोंने बड़ी निर्दयता और एकाके साथ उस मूर्त्तिको नाश कर दिया था। वे भयानक अंग पूर्ण तोड़ डाले गये थे और वह खूबसूरत मूर्त्ति हथोड़ोंकी चोटसे टुकड़े टुकड़े कर भट्ठोंमें गलानेके लिये डाल दी गयी थी, जो खासकर उसके लिये ही तय्यार की गयी थी। वे बड़ी और छोटी छुरियाँ लगी हुई पर्त्तियाँ जला दी गयी थीं और तीव्र अग्नि जिसने पीतलकी मूर्त्तिको गलाकर धातुके रूपमें परिणत कर दिया था।

डायटके कथनानुसार उस भयानक दलसे सम्बन्ध रखनेवाले सब कागज पत्र लोहेके बक्सेसे निकालकर, जिसमें वे बड़ी हिफाजतसे रखे हुए थे, जला दिये गये थे और पीतलकी मूर्त्तिसे सम्बन्ध रखनेवाली सभी पदार्थों का नाश हो चुका था। इस तरह पीतलकी मूर्त्ति, उससे सम्बन्ध रखनेवाले कागज पत्र और उस दलकी स्मृतितक विलुप्त कर दी गयी थी और अब उनका नाम निशान तक न रह गया था।

अभी, जब जिटका, ह्यूवर्ट तथा कोएट-रोशनवर्गको यह समाचार मिला ही था, कि पीतलकी मूर्त्तिका अच्छी तरह अन्तिम संस्कार हो गया है, इसी समय सुन्दरी ऐलीसा उस कमरेमें आ पहुँची। उसके पिता तथा मामाने बड़े प्रेमसे उसका स्वागत किया और ह्यूवर्टने बड़ी भक्ति और सम्मानके साथ उठकर उसका आदर किया। इस समय उसका चेहरा पीला पड़ रहा था और यह उन भिन्न-भिन्न विचारोंका परिणाम था, जो उसके हृदयमें उठ रहे थे; क्योंकि

कितनी ही विषम घटनाओंने उसका कलेजा हिला दिया था। उसकी वह माता, जिसे उसने अपने जीवनमें केवल एक ही बार देखा था, परलोक सिधार चुकी थी और उसका वह भाई, (रोडल्फ) जिसे अब अपनी माताके समान ही वह प्रेम-दृष्टिसे देखा चाहती थी, मर चुका था। यदि खुशीकी बात थी, तो इतनी ही, कि उसे उसका पिता मिल गया था, उस भयानक मूर्त्ति तथा यन्त्रका नाम निशान नहीं था और इसीलिये अब उसके हृदयमें उस आस्ट्रियन बहादुरकी याद आ रही थी, जिसे वह प्यार करती थी; परन्तु परिवर्त्तनमें जिससे प्यार की जानेकी उसे आशा न थी।

जो कुछ हो, कुछ ही देर बाद एक दूसरे दृश्यने उसका ध्यान उस नाइटकी ओरसे फेर दिया और ज्यों ही सबेरेका जलपान समाप्त हुआ, त्योंही सरदार-जिटकाने उन मनुष्योंको बुला भेजा, जो पीतलकी मूर्त्तिका दण्ड पाकर अभीतक कैद भोग रहे थे। उनके सामने आते ही बड़ी प्रेममयी तथा दुःख भरी भाषामें जिटकाने उन्हें समझा दिया, कि अब वे सदाके लिये स्वतन्त्र हो गये और अब अपने नातेदार, परिवार वाले तथा उन मनुष्योंके पास स्वच्छन्द जा सकते हैं, जिनसे उनका सम्बन्ध है। उनमें कितने ही मनुष्य ऐसे भी थे, जिनके परिवारवालोंका अब पता मिलना कठिन था और लावारिस होनेके कारण जिनकी सब सम्पत्ति या तो दूसरोंने हजम कर ली अथवा खरीद ली थी। इन सब बातोंको विचारकर तथा विगत घटनाओंकी उलझनोंको समझकर सरदार-जिटकाने आज्ञा दे दी, कि रानी-ऐलोजावेथकी समस्त सम्पत्ति उन लोगोंमें बाट दी जाये।

जिटकाकी यह आज्ञा सुन सभीके आश्चर्य तथा प्रसन्नताका ठिकाना न रहा और उदार-हृदय ह्यूबटकी देख-रेखमें सब धन उस आत्म-समितिके सभ्योंमें बांट दिया गया। अर्नेस्टके दोनों पैज लानेल

और कोलाहलपर दृष्टि पड़ती थी जिटकाने उन्हें अपने पास बुलाकर कहा, कि उनका मालिक बीमार होकर दरदर महलमें पड़ा है। खैर! यद्यपि उन्हें अपने मालिकके इतना निकट रहनेका समाचार सुन बड़ी थी प्रसन्नता हुई; परन्तु उनको बीमारीका समाचार सुन उतना ही दुःख भी हुआ। इसी कारणसे यद्यपि वे यहांसे शीघ्र विदा होनेके लिये उद्यत हो रहे थे, तथापि जिटकासे इतना पूछे बिना अपनेको न रोक सके, कि गोतानी तथा उसकी दोनों सहेलियां लिण्डा और हेटारिस इस समय कहां हैं?

यह प्रश्न सुनते ही जिटकाके हृदयपर कुछ चोट पहुंची और वह उन्हें इस सम्बन्धमें एक बात भी मुंहसे न निकालनेके लिये कहना ही चाहता था, कि एकाएक कमरेका दरवाजा खुल गया और एक टेढ़ी-नाक-सिपाहीने भीतर आकर कहा,—"वेही आयशा भाग गयी।"

हां, बात ऐसी ही थी; क्योंकि उस कोठरीको देखते ही, जिसमें वह कैद थी, यह अच्छी तरह मालूम हो गया, कि अपने विश्वासके पात्रोंकी सहायतासे वह बीस फुट लम्बी खिड़कीसे नीचे उतर गयी है। उस खिड़कीके नीचेकी भूमि दलदलके समान थी और उसपर उस के खूबसूरत पैरोंका चिह्न स्पष्ट दिखायी देता था, जिससे साफ मालूम होगया था, कि इसी राहसे वह भाग कर महलकी चहारदीवारीके पास पहुंची है। चहारदीवारीमें तोपके गोलोंने कितने ही बड़े बड़े छेद बना दिये थे, उन्हीं छेदोंका सहारा पा, आयशा उस चहारदीवारी को पारकर भाग सकी। इन बातोंपर ध्यान देनेसे स्पष्ट मालूम होता था, कि आयशाने बड़े ही साहसका काम किया है।

इस घटनाने जिटकाका दिल हिला दिया और उसने अपने बहुतसे मनुष्य उसकी खोजमें इधर उधर भेज दिये, परन्तु साथ ही उन लोगोंको भलीभांति समझा दिया, कि यह घटना अच्छी तरह

छिपायी और गुप्त रखी जाये। इसतरह उसने अपना दुःख छिपानेका भी पूरा पूरा उद्योग किया और इस बातका पता किसीको भी लगने न दिया, कि इस घटनाने उसके हृदयपर कोई प्रभाव जमाया है।

इस बीचमें ऐलीजाबेथका खजाना अच्छी तरह बराबर बराबर भागोंमें बांट दिया गया था और अब जिटकाने उस महलके तहखानेके कैदियोंको अपने-अपने इच्छित स्थानोंपर जानेकी आज्ञा दे दी। पुरुषों तथा युवती स्त्रियोंके लिये घोड़ोंका प्रबन्ध कर दिया गया और बूढ़ी तथा अवस्था प्राप्त उन स्त्रियोंके लिये, जिनका शरीर खराब हो रहा था, गाडियां मगा दी गयीं। इस तरह दोपहर होते होते इस मातृ-समितिके सभी मनुष्य उस अलटन-महलसे चले गये, जहां उनका जीवन-इतने कष्टसे कटा था, जहां वे कब्रके मुर्दोंके समान ही कैद पड़े थे और जहांसे इस तरह छुटकारा मिलनेकी उन्हें स्वप्नमें भी आशा न थी।

जितने मनुष्य इस कैदसे छूटे थे, उनमें लानेल और कोनार्डके समान किसीका भी घोडा तेज जाता हुआ न दिखायी दिया। इस समय उन दोनोंके घोड़े हवासे बाते करते जङ्गली झाडियोंकी चोटोंपर बिना ध्यान दिये हुए, सरपट इल्डर-महलकी ओर चले जाते थे। अस्तु, पीतलकी मूर्त्तिके कैदियोंको छोड़ देने बाद जिटकाका ध्यान अब उन शरीफों, उनकी स्त्रियों तथा उन पुरुषोंकी ओर आकर्षित हुआ; जिन्हें उसने अलटन-महलमें कैदकर रखा था। इन पुरुषोंमें जिनका सम्बन्ध पीतलकी मूर्त्तिसे था और जिन्हें हावर्टने बताया था, कि ये पीतलकी मूर्त्तिके शपथ ग्रहण किये हुए सेवक हैं, उन्हें जिटकाने तुरत ही आस्ट्रियामें चले जाने और फिर कभी बोहेमियामें पैर न रखनेकी आज्ञा दे दी, साथ ही उन्हें समझा दिया, कि अब वे यदि

कहेंगे। उन लोगोंको छोड़ देनेके बाद उसने उन गरीबोंकी ओर देखकर, जिन्हें उसने कैद कर रखा था, बोहेमिया देश त्याग देनेकी आज्ञा देदी और बता दिया, कि अबसे यदि कभी बोहेमियाके प्रजा तथा देशमें दिखायी दिये, तो उन्हें फांसीकी सजा दी जायेगी; परन्तु उसने उन पादरी, लिपि, अफसरों तथा सिपाहियोंको एकदम छुड़ाकर दिया, जिन्होंने केवल राजतन्त्र वालोंका साथ दिया था।

इतनी देरमें जिटका भी उस महलमें आ पहुंचा; क्योंकि पहले ही लिखा जा चुका है, कि उसे बुलानेके लिये भी मनुष्य भेजा गया था। उसके आते ही ऐलोनाने उसका बड़ा सत्कार किया और समस्त गत घटनायें उसे सुना दीं।

परन्तु अभी जिटका उधर कुछ हुए कामकर निश्चिन्त हो चुका था, कि इसी समय एक आदमी दौड़ता हुआ आ पहुंचा और बड़ी ही घबड़ाहटसे जिटकाके पास आकर बोला,—"बोलेण्डके जर्मन-अधिवासियोंने बहुत बड़ी सेना लेकर बोहेमियापर चढ़ाई कर दी है और प्रजा-तन्त्र देशको पापस लिगिटके सुपुर्द करनेके लिये बड़ी ही तेजीसे प्रेगकी ओर बढ़ती आ रही हैं।

यह सुन जिटकाने एक क्षणका समय भी नष्ट करना उचित न समझा और एकबार अपनी कन्याको गले लगा, उसे फिर विल्डनके सुपुर्द कर दिया तथा अपनी बहादुर सेनाको एकत्र कर जर्मन आक्रमण कारियोंकी ओर चल पड़ा।

जानेसे पहले उसने एक मजबूत सेना दल अस्टन महलकी रक्षाके लिये भी छोड़ दिया और अब उस महलकी मालकिन लेडी ऐलोना-जिटका हुई।

जिटकाकी उदारता, दयालुता तथा बहादुरीने कोष्ट-रोशनवर्गका ध्यान भी राज-तंत्रसे हटाकर प्रजा-तन्त्रकी ओर फेर दिया था।

लिये वह भी जिटकाके साथ ही अपने प्रजा तंत्र देशकी रक्षा करनेके इरादेसे, आक्रमण कारियोंको रोकनेके लिये चल पड़ा।

परन्तु अल्टनका ड्यूक उसी महलमें कैद रहा, जो अबतक उसका महल ही कहलाता था, और जिसे अपने भयानक कर्मों के कारण उसने इस दुर्दशा पर पहुंचा दिया था।

अट्ठानवेवां परिच्छेद।

इल्डर-महलमें हमारा उपन्यास नायक।

ऐ जोलाके चले जाने बाद अर्नेस्टको अपना समय बिताना बड़ा ही भार मालूम होने लगा। समस्त दिन वह ऐ जोलाकी सज्जनता, उसके उत्तम व्यवहार, वीरता तथा दयालुतापर विचार करता हुआ अपनी खाटपर पड़ा रहा, और ज्यों ज्यों अपनी उस एकान्त कोठड़ीमें, जिसमें बीमारीके कारण वह पड़ा हुआ था, इन विषयोंपर विचार करता गया, त्यों त्यों उसके दुःख और चिन्ताकी माला बढ़ती ही गयी। उस सुन्दरीके वियोगके कारण, जिसकी आवाज सदा उसके कानोंमें संगीत सी गूंजा करती थी और आखें सदा उसकी ओर टकटकी लगाये देखा करती थीं, इस समय उसे बड़ा ही कष्ट हो रहा था। यद्यपि धर्मात्मा बर्नार्ड कई घण्टों तक उसके पास बैठकर उसका जी बहलाता रहा; परन्तु उस वृद्ध मनुष्यकी बातें उसके सन्तप्त हृदयपर अपना प्रभाव न जमा सकीं।

इसी तरह सन्ध्या हो गयी। रात्रिने अपनी घोर नीले रंगकी चादर समस्त जगत्पर डाल दी और फिर चमकीला निर्मल चन्द्रमा उदय हो गया। अब सर अर्नेस्टको लाचार हो, सोनेके लिये अपनी आखें बन्द करनी पड़ीं; परन्तु जितने स्वपन उसने देखे, सभीमें उसे

ऐ लोला की दिखायी देती रही। एकबार उसने देखा, कि एक स्वर्गीय दूत उसी आकाशपर खड़ा है, जहां वह बैठा हुआ है, और उस स्वर्गीय दूतके पास भी उसे ऐ लोलाकी सुन्दर मूर्त्ति दिखायी दी। दूसरी बार उसने देखा, कि माथेपर ताज पहने तथा अन्यान्य सुन्दर स्वच्छ आभूषणोंसे सुसज्जित कोई देवी प्रतिमा उसके पास खड़ी है; परन्तु ज्यों ही उसने दृष्टि उठाकर उसके चेहरेकी ओर देखा, त्यों ही उसे ऐसा मालूम हुआ, मानो यह चेहरा उसकी प्यारी ऐ लोलाका ही है। यह देखकर ज्यों ही वह मुस्कराया, त्यों ही उसे ऐसा मालूम हुआ, मानो यह देवी-मूर्त्ति भी उसकी ओर देखकर मुस्कराई है। इस तरह ऐ लोलाकी मूर्त्ति ही उसके इस स्वप्नोंमें नायिकाका खेल खेलती रही और उसका यह परिणाम हुआ, कि उसका मुर्झाया हुआ चेहरा फिर लहलहा उठा और उसकी सन्तप्त आत्मा शान्त हो गयी।

सवेरे जब अर्नेस्टकी आंखें खुलीं, तब सूर्य देव उदय हो चुके थे। आज वह कलकी अपेक्षा अधिक प्रसन्न, उत्साहित तथा बलवान मालूम होता था। कुछ देर बाद बनार्ड भी उस कमरेमें आ पहुंचा और अर्नेस्टके हाथमें एक पत्र देकर बोला,—"एक मनुष्य यह पत्र लेकर बहुत सवेरे ही आया था; परन्तु आप घोर निद्रामें सो रहे थे, इसलिये मैंने आपको जगाना उचित न समझा। वह मनुष्य अपने साथ एक बड़े टोकरेमें बहुतसे ऐसे सामान भी लेता आया है, जिनकी रोगी मनुष्योंको आवश्यकता पड़ा करती है, और वह इसी-लिये अभी तक बैठा हुआ है, कि शायद इन चीजोंके भेजने वालेको आप कोई उत्तर भी देंगे।"

अर्नेस्टने वह पत्र खोल डाला, जो लाल रेशमी फीतेसे बंधा हुआ था और जिसपर लाल मोहर पड़ी हुई थी। उसमें ये बातें लिखी थीं ——

"मैं, टेरोराइट-दलका सरदार, ये पदार्थ उस मनुष्यके लिये भेजता हूं, जिसका नाम कारणवश मैं नहीं लिया चाहता। सम्भव है, कि किसी तरह यह पत्र उस मनुष्यके हाथमें न पड़कर, जिसके लिये ये भेजा गया है, किसी दूसरेके हाथोंमें पड़ जाये।

"बहुत सी घटनायें घटी हैं, कितनी ही आश्चर्य्यजनक बातें मालूम हुई हैं और बहुतसे छिपे हुए भयानक भेद खुल गये हैं। राज तखका नाश हो गया है। अल्टन-महल मेरे अधिकारमें है और उस महलके तहखानेमें छिपा हुआ, भयानक भेद भी प्रकट हो गया है। परन्तु ये बातें और ये घटनायें उतनी आनन्दवर्द्धक नहीं हैं, जितनी कि एक नवीन बात मुझे मालूम हुई है। अर्थात् सुन्दरी ऐंजीला खास मेरी ही कन्या है।

"अति शीघ्रतामें उससे आपका जो कुछ हाल सुना है, उससे मालूम हुआ है, कि आप बीमार होकर इलडर-महलमें पड़े हैं। यह निश्चित है, कि ऐंजीला वह भेद नहीं जानती, जिसका सम्बन्ध आपसे है और न मैं उसे यह भेद उस समय तक कहूंगा ही, जब तक, कि आप बोहेमियाके बाहर न हो जायगे, इसलिये आपसे प्रार्थना है, कि आप शीघ्र ही इलडर महल छोड़कर अल्टन-महलमें, जहांसे यह पत्र लिखा गया है, चले आवें। यहां आपकी भली प्रकारसे सेवा-सुश्रुषा तथा चिकित्सा हो सकेगी और आपको आराम मिलेगा। परन्तु इसके विपरीत यदि आप अपने देशमें जानेके लिये बड़े ही उत्सुक हों, तो लिखें, आपके जानेकी सब प्रकारसे सुविधा कर दी जायगी, जिससे आपको राहमें किसी प्रकारका कष्ट न होगा।

"मैंने आपके लिये कुछ पदार्थ भेजे हैं, जो इस समय मेरे पास मौजूद थे और मेरी पुत्री ऐंजीलाने आपको हार्दिक धन्यवाद दिया है।

"आपकी मित्रता तथा सज्जनता का मुझे बड़ा भरोसा है ।

"—जान जिटका ।"

इस पत्रने अर्नेस्टका हृदय आनन्दसे परिपूर्ण कर दिया। वह आनन्दमें मग्न हो मन ही मन विचारने लगा,—"यह कन्या ऐंजोला-विल्कुल सरदार जिटकाकी कन्या है, यह विश्वासमें नहीं आता; परन्तु यह पत्र स्पष्ट जिटकाके हाथका लिखा हुआ है और इस पर जिटका थोड़ा हस्ताक्षर तथा चिह्न भी वर्त्तमान है।

"बस्टन महलका पतन हो गया है, यह टेवोर-दलके हाथमें है तथा उसके सब भेद खुल गये हैं।" सर अर्नेस्ट भी पीतलकी मूर्त्ति, आतङ्क मैदान, गुप्त कमरे, गुप्त पथ और तहखाने आदिकी बात ही विचारने लगा; परन्तु बहुत कुछ सोचनेपर भी उसे इस बातका कुछ भी पता न लगा, कि वे भेद और क्या हैं, जिनकी ओर सरदार-जिटकाने इशारा किया है। क्योंकि बेरोनेस अर्नेनेल्डा, जो ऐंजोला को यथार्थ माता थी, उसका हाल अर्नेस्टको कुछ भी मालूम न था।

सर अर्नेस्ट ने यह पत्र बनाडेको न दिखाया; क्योंकि उसमें उसे एक गुप्त भेद का सम्बन्ध बताया गया था, परन्तु उसने और सब हाल उससे कह दिया।

यह सुनते ही बनाडे चिल्ला उठा,—"ऐं ! ऐंजोला जान-जिटका-की कन्या है ! अहा ! मैं यह सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुआ हूं; क्योंकि अब यह एक सम्माननीया लेडी हो गयी, और वह उसी योग्य है भी। था था, वह राजकुमारी ही है; क्योंकि उसका पिता किसी राजासे कम नहीं है और अब उसके आगे कितनी ही टोपियां उतारी जायगी, कितने ही सर झुकेंगे, जो पहले एक सामान्य जंगली किसानकी कन्या समझी जाती थी। (अर्नेस्टके चेहरेपर ध्यानसे देखते हुए) लाइट। निस्सन्देह अब यह वन कन्या, जिसने कुछ दिनों तक आपकी

सेवा मजदूरिनोंके समान की है, अवश्य ही यूरोपके किसी नामी राजाके साथ व्याही जायगी, क्योंकि कौनसा ऐसा राजा होगा, जो बहादुर जिटकासे अपना सम्बन्ध न स्थापित किया चाहता हो।"

अर्नेस्टने कहा,—"यदि वह अब भी वन-कन्या ही रहती, तो भी वह एक ऐसा उत्तम रत्न है, जो यूरोपके अच्छेसे अच्छे रत्न-भाण्डारमें रखने योग्य है।"

बर्नार्डने कहा,—"पर इस पत्रके उत्तरमें क्या आप भी कुछ लिखा चाहते हैं? वह मनुष्य आपके उत्तर की राह देख रहा है।"

अर्नेस्टने कहा,—"उत्तर जबानी ही देना होगा, क्योंकि मेरी ऐसी अवस्था नहीं है, कि मैं कुछ लिख सकूं। ऐ बर्नार्ड! तुम दयाकर उससे कह दो, कि मैंने सरदारके भेजे हुए पदार्थ धन्यवाद पूर्वक स्वीकार कर लिये हैं; परन्तु मुझे भय है, कि वहां रहनेसे मेरा स्वास्थ्य फिर न बिगड जाय। यद्यपि अल्टन-महलमें जान-जिटका तथा उसकी कन्याके साथ रहकर मैं अवश्य ही प्रसन्न होऊंगा, तथापि अपने स्वास्थ्यके विचारसे मैं अभी वहां जाना उचित नहीं समझता। इसके अतिरिक्त मैंने एक आवश्यक कार्यके लिये अपना मनुष्य वायना की ओर भेजा है, क्योंकि वायनामें शीघ्र ही पहुंचना, मेरे लिये अत्यन्त आवश्यक है, और सम्भव है, कि मेरा मनुष्य राहकी सुविधाओंके सब सामान अपने साथ लिये शीघ्र ही यहां आ पहुंचे। तुम यही बातें उत्तरमें कहला दो।"

यह सुन दयावान बुड्ढा बर्नार्ड तुरतही उस कमरेसे निकल अर्नेस्ट-का सन्देसा उस मनुष्यको सुनानेके लिये चला गया और कई घण्टों तक अर्नेस्ट बिस्तरेपर पड़ा पड़ा जिटकाके पत्र पर विचार करता रहा।

* * * * *

इस घटनाके छठे दिन चार घोड़ोंकी एक खूबसूरत और भड़कीली

आड़ी बादशाही इमारत महलके दरवाजे पर आ पहुंची और सर अर्नेस्ट को कीमत, जो अब एक प्रकारसे आरोग्य हो गया था, उसपर सवार हो बादशाहकी ओर रवाना हो गया।

चलते समय सर अर्नेस्ट, आरामकी जगह तथा सुखपूर्वक प्रेम जीवन बितानेकी स्वतंत्रता मिलेका चयन देकर मनार्डको भी अपने साथ ही लिया गया और यह पवित्र युवती उन आदमी मनुष्योंके साथ, जो कर अर्नेस्टको लेनेके लिये आये थे बादशाहकी ओर रवाना होगया।

निन्नानवेवां परिच्छेद।

समाप्तिकी ओर।

कई महीने बीत गये और अब पेड़ोंकी पत्तियोंको पीठाने वाला, झरनोंके पानीको बहुत ठण्डा बनाने वाला तथा अटलन महलके पुर्जोको बर्फसे ढक देने वाला जाड़ा गुजर गया। परन्तु इसके बाद ही समस्त संसार पर प्रसन्नताकी तरंग उठाने वाली बसन्त ऋतु आ पहुंची। जंगलोंने फिर अपना पूर्व्वत सुहावना रंग धारण किया, झरने फिर उसी प्रकारसे झरझराकर चक्र उसमें बहने लगे और अटलन महलका किला फिर उसी तरहसे भूरा दिखायी देने लगा, जिस तरह पहले दिखायी देता था।

हां, यह अप्रेलका महीना था और चिड़ियायें चहक चहककर चारों ओरके जंगलोंको प्रतिध्वनित कर रही थीं। इसी समय ए लीलाको याद आया—परन्तु ओह! क्या वह कभी भूल गई थी? वह प्रतिज्ञा, जो आस्ट्रियन माइट सर अर्नेस्टने उस समय उसके साथ की थी, जब वह इलडर-महलके टूटे-फूटे कमरेमें उससे विदा हुई थी; क्योंकि यह वही महीना था, जब कि वह एक ऐसे मनुष्यसे मिलनेकी

बाट जोह रही थी, जिसने उसे एक दोस्त और भाईके समान प्यार करनेका वचन दिया था।

परन्तु ऐंजीला इस समय कहां है? और उसका पिता टेबोराइट-दलका सरदार जान जिटका ही कहां है?

इस बीचमें वीर हृदय बहादुर सरदारने जर्मन-हौस्पिटेलरोंपर आक्रमण कर उसकी सेनाको छिन्न-भिन्न कर डाला और उसके जेनरल तथा प्रधान प्रधान अफसरोंको कैद कर लिया था, परन्तु इसके बाद ही एक नयी और ताजा दम फौज फिर पोलैण्डसे आ पहुंची और इस दूसरे युद्धमें भी आक्रमणकारियोंको जिटकाने भूसेकी तरह उड़ा दिया। मगर इतने पर भी पोलैण्डकी सीमापर एक बहुत बड़ी सेना एकत्र थी। सरदार जिटकाने मनही मन उसको भी तहस नहसकर डालनेका विचार किया। परन्तु इसके लिये और भी अधिक सेनाकी आवश्यकता थी, तथा इस सैन्य-संग्रहके लिये समयकी बड़ी जरूरत थी, अत जिटका प्रजा-तल शासित बोहेमियाका उत्तरीय अंश देखनेके लिये चला गया। इसी अवसर पर उसे पोपका भी एक पत्र मिला, जिसमें उन्होंने बोहेमियाका शासन-भार जर्मन-हौस्पिटेलरोंके नेता कार्डिनेल लिगरेका देदेनेके लिये लिखा था; परन्तु जिटकाने पोपकी आज्ञापर कुछ भी ध्यान न दिया, बल्कि उत्तरमें उन्हें लिख भेजा, कि पोपको बोहेमिया परसे अपना समस्त अधिकार हटा लेना चाहिये। इसके बाद जिटका पोलैण्डकी रक्षित सेनाकी ओर बढ़ा और उसने अपनी वीरता, दूर दर्शिता तथा परिश्रमसे सहजमें ही उसे परास्त कर दिया। इस तरह बोहेमियामें फिर दोनों दलोंमें सन्धि हुई और शान्ति स्थापित होने बाद जान-जिटका वीरता और विजयके सम्मानसे सम्मानित न होता हुआ फिर प्रेगमें लौट आया।

पाठकोंको याद रखना चाहिये, कि कुछही दिन बाद ब्रूक-

कष्टन हेतु किसीमें कैद रहनेके लिये कष्टन-महलसे निकालकर प्रेग भेज दिया गया था तथा यह महल केवल ऐ लोलाके रहनेके लिये ही उसके अधिकारमें छोड़ दिया गया था, परन्तु यद्यपि ऐ लोला कष्टन-महलकी अधिष्ठात्री बनायी गयी थी, और यद्यपि वह अपने मामा कोष्ट रोजनबर्गके यहां भी रह सकती थी, तथापि उसने कुछ दिनोंके लिये अपने उस पुराने जंगली मकान में ही रहना स्थिर किया, जहां उसके कितने ही वर्ष अत्यन्त प्रसन्नतासे बीत चुके थे। वहीं वह चूर्ट तथा विस्टनके आने उस समय तक रहनेके लिये चली गयी, जब तक पूरी तरहसे शान्ति स्थापित न हो जाये और वह अपने पितासे प्रेगमें न मिल सके।

इसीतरह जब दूसरी बार फिर वसन्त ऋतु आयी, तब भी ऐ लोला अपने उसी पुराने जंगली झोपड़ेमें मिली, परन्तु आह! क्या ऐ लोला बिना किसी कारणके उस जंगली मकानमें जाकर रहने लगी थी? क्या उसके हृदयमें किसीके आगमनकी आशा उस समय नहीं लहलहा रही थी; जब कि वह अपने झोपड़ेके बाहर एक शिला-खण्डपर बैठी शून्य दृष्टिसे जंगलकी ओर देख रही थी? हां, अवश्य ही कितनेही प्रकारके विचार उस सरल हृदया सुन्दरी ऐ लोलाके हृदयमें उस समय उठा करते थे, क्योंकि उसके हृदयको विश्वास नहीं होता था, कि वह आस्ट्रियन बहादुर उसे इतना शीघ्र भूल गया है, कि यदि वह न आ सका तो एक पत्र भेजकर भी उसकी सुधि न लेगा।

अभी अप्रैल महीनेका पहला सप्ताह ही बीता था, कि प्रेगसे एक दूत आ पहुंचा। वह जिटकाका एक बहुतही लम्बा-चौड़ा तथा प्रीतिपूर्ण पत्र लेकर आया था, जिसमें कितनी ही घटनायें लिखी थीं, और यह भी लिखा था; कि सन्धि हो जानेके कारण शान्ति स्थापित हो गयी है और अब उसे बिना विलम्ब प्रेग चले आना चाहिये।

अपने पिताकी आज्ञानुसार, एक ठण्डी सांस लेकर तथा आंसू बहाते हुए, ऐंजीलाने सफरकी तय्यारी की। यह निश्चित हो गया, कि सवेरा होते ही यह सफर आरम्भ हो जायगा। बिलडन और ह्यूबर्ट दोनों ऐंजीलाके साथही जायंगे और बारह सिपाहियों का एक दल अस्टन-महलकी रक्षक-सेनामें से चुनकर उसकी रक्षाके लिये साथ ले लिया जायगा।

सध्याके पांच बजनेका समय था, जब ये सब बातें स्थिर हो गईं और ऐंजीला अन्तिमबार उस जगलको प्रेमसे देखनेके लिये अपने झोपड़ेसे बाहर निकल आयी, जिसके प्रत्येक भागसे वह भली-भांति परिचित थी। बाहर निकलकर दरवाजेके पासही रखी हुई एक बेंचपर वह बैठ गयी और बड़े ध्यानसे उस जगलको देखने लगी। इसी समय उसके हृदयसे ठण्डी सासें निकलने लगीं और चेहरा सुर्ख गया।

वह उस समय भी इसी स्थानपर बैठा करती थी, जब वृद्ध पादरी फादर-ऐंजीलो उसे शिक्षा दिया करता था। वहीं वह अपनी पालिता भेंड़को खिलाया करती थी और नाना प्रकारके फूलोंसे उसका शृंगार किया करती थी। वहीं वह उस समय तक अपने छोटे टट्टूपर चढ़कर इधर-उधर घूमा करती थी, जब तक कि सर अर्नेस्टने उसे दूसरा बढ़िया घोड़ा नहीं दिया था। ये सब बातें याद आ आकर उसका कलेजा मसोस रहीं थीं और यद्यपि वह अब उस जंगली स्थान-को छोड़कर अपने प्रिय पिताके पास जाया चाहती थी, तथापि उसकी आत्माको भयानक कष्ट पहुंच रहा था।

परन्तु ओह! अप्रेलका महीना लगकर बीत रहा था, सूर्यकी चमकीली किरणें वृक्षोंपर शोभा दे रही थीं और चिड़ियाओंके चहकने की आवाजें ऐंजीलाके कानोंमें पड़ रही थीं, परन्तु अभी तक उसके साथ किया हुआ वादा पूरा न हुआ था। अर्थात् सर अर्नेस्ट की

कोमल भाव था और उसी समय होते ही वह स्थान छोड़कर चले जाना आवश्यक था।

इस समय इसी तरहके विचार ऐलोलाके हृदयमें उठ रहे थे और वह बड़ी ही व्याकुलतासे इधर उधर देख रही थी; परन्तु आह! सुनो ये कैसी आवाजें हैं। जो ऐलोलाके कानोंमें पड़कर उसे चौंकाती हुई धीरे धीरे निकट ही होती जाती हैं। उनका बातोंको सुनतेही वह खड़ी हो जाती है और ध्यानसे सुनने लगती है। हां, माथा आगे बढ़ाकर इस तरह सुनने लगती है, जैसे कोई हरिनी किसी शिकारी-की आहट या घबराकर चारों ओर देखने लगती है।

परन्तु ओह! वह घोड़ोंके टापोंकी आवाजें और मर्दोंका शब्द था, जो ऐलोलाके कानोंमें पड़ा था और जिससे एक प्रकारकी आशा-की, तरंत उसकी नस नसमें इस तरह दौड़ गई थी, जिस तरह जीवको नस नसमें ताजा खून दौड़ा करता है।

परन्तु एकाएक वह आवाज रुक गयी, मानो कोई चीज गायब हो गयी हो अथवा घुड़सवारोंका कोई दल सहसा ठहर गया हो। यह देख फिर ऐलोलाका गर्म खून एकाएक जम गया तथा उसका चेहरा उदास हुआ ही चाहता था, कि इसी समय भड़कीले वस्त्र पहने हुआ एक घुड़सवार हटात उसके सामने आ पहुंचा।

ऐलोलाने एकबार आश्चर्य भरी दृष्टिसे उसकी ओर देखा और साथ ही उसके मुंहसे प्रसन्नताकी एक चीख निकल पड़ी! इसके बाद ही उसके बदनमें एक प्रकारकी कमजोरी छा गयी, मानो उसे इतनी प्रसन्नता हुई, जिसका भार वह सम्हाल न सकी, अथवा उसने ऐसा पदार्थ देखा हो, जिसपर सहसा वह विश्वास नहीं कर सकती थी।

परन्तु दूसरे ही क्षण वह बहादुर घुड़सवार अपने घोड़े से कूद पड़ा और तेजीसे झपटते हुए ऐलोलाके पास आकर उसने उसे गलेसे

लगा लिया; क्योंकि यह वही बहादुर आस्ट्रियन नाइट था, जिसे वह हृदयसे प्यार करती थी।

हा, अब वादा पूरा हुआ और अन्तमें वह दिन आ गया, जब ऐ जोलाने देखा, कि जंगल भेदकर उसके दरवाजे पर, उसके सामने आने वाला कोई दूसरा मनुष्य नहीं, बल्कि वही पुरुष है, जिसके प्रेम-को अपने हृदय मन्दिरमें स्थापित कर वह इतने दिनोंसे पूजन कर रही है।

सर अर्नेस्टने ऐ जोलाको बेंचपर बैठाकर उसके बगलमें स्वयं भी बैठते हुए कहा,—"क्या तुमने कभी विचारा भी था, कि मैं यहा आऊंगा, प्रिय ऐ जोला?"

ऐ जोलाने बहुतही धीमे स्वरमें कहा,—"हा, मैंने सोचा था,—मुझे आशा थी,—मुझे विश्वास था, सर नाइट! कि तुम मुझे भूल न जाओगे।"

सर अर्नेस्टने कहा,—"क्या तुमने क्षणभरके लिये भी यह विचारा था, कि मैं तुम्हे भूल जाऊंगा? नहीं, नहीं, मैं एक क्षणके लिये भी तुम्हें भूल नहीं सका और अब भी मैं केवल उस प्रतिज्ञाको पूरी करनेके लिये, अथवा तुम्हे अपनी सेवाके बदलेमें धन्यवाद देनेके लिये ही यहा नहीं आया हू। नहीं, प्यारी ऐ जोला! मैं इन सामान्य बातोंके लिये तुमसे यहा मिलने नहीं आया हू, बल्कि तुम्हें यह कहने आया हू, कि तुम्हारे बिना अब यह जीवन भार हो रहा है। मैं एक क्षण भी तुम्हे छोड़कर नहीं रह सकता। एक विचित्र पागलपनने मुझे अभीतक एक ऐसे जीवकी मोहब्बतमें उलझा रखा था, जिसने मुझे सब तरहसे धोखा दिया, और इसीलिये मेरे हृदयमें पवित्र भाव उदय हो गये जिससे तुम्हारी सच्चरित्रता, वीरता तथा उदारता आदि गुण देख, तुमपर मेरी एकान्त प्रीति उत्पन्न हो गयी। और ऐ जोला!

यदि तुम भी मुझे इसी तरह प्यार करती हो, तो मैं अपना हाथ तुम्हें देने के लिये तैयार हूँ और कसम खाकर कहता हूँ, कि तुमने मेरे हृदयपर अधिकार जमा लिया है।"

परन्तु यद्यपि वे लोग उसकी बातोंका उत्तर न दे सकी, तथापि उसने उन्हीं की ओर अपनी दृष्टि उस बहादुरके चेहरेपर डाली, और उस भरके लिये आँखें उठाकर उसके खूबसूरत चेहरेकी ओर देखा, उन्हीं दोनों दृष्टियों ने उसे स्पष्ट उत्तर दे दिया, कि जितना एक दूसरे को कहीं दिया न सकता। उसके चेहरेपर इतनी अधिक प्रसन्नता दिखायी दी, जितनी कि उस लोगकी होती है, जो कोई दुर्लभ वस्तु पाजाता है।

तब ईसाने ही अधिक आनन्दसे गद्गद् हो बोल उठा,—"तब तुम मेरी हो?"

इसी समय विल्डन अपने झोपड़ेके बाहर निकल आया और उसने तुरत ही पहचान लिया, कि यह वही बहादुर मनुष्य है, जिसने रोडरिकके हाथोंसे ऐलीनाको बचाया था। इसके बाद ही दयावान हार्पर भी झोपड़ेसे बाहर निकल आया और उसने भी पहचान लिया, यह वही आस्ट्रियन नाइट है, जिसे लार्ड रोडरिकने अटलन-महलके किसी गुप्त कमरेमें टिकाया था।

जिस समय हार्पर तथा विल्डन उस झोपड़ेसे बाहर निकले, उस समय उनके आश्चर्यका पारावार न रहा, क्योंकि उन दोनोंने देखा, कि ऐलीना उस मनुष्यके हाथका सहारा लिये खड़ी है, जिसका सुन्दर चेहरा प्रसन्नतासे दमक रहा है और पोशाक बादशाहों ऐसी भड़कीली है।

इसी समय एक आश्चर्यजनक घटना और भी हुई—अर्थात् बहुमूल्य वस्त्र आभूषणोंसे सुसज्जित कितने ही शरीफ तथा लेडियां उस जङ्गलसे निकल झोपड़ेकी ओर आती हुई दिखाई दीं।

इसके बाद ज्यों ही वे आस्ट्रियाके अधिवासी शरीफ अपनी सुन्दरी लेडियों सहित उस झोपड़ेके अत्यन्त निकट, उस स्थानपर आ पहुंचे, जहां ऐ जीलाके बगलमें सर अर्नेस्ट खड़ा हो बड़े प्रेमसे उसके चेहरेको निहार रहा था, त्योंही सभीने अपनी अपनी टोपियां उतार लीं और अर्द्धचन्द्राकार व्यूहके आकारमें घुटने टेककर खड़े हो गये।

अब अर्नेस्टने अपनी पूरी ऊंचाईमें तनकर आगन्तुकोंकी ओर देखते हुए कहा,—"मेरे लार्ड और लेडियो! बहादुर जिटकाकी इस कन्याको देखो, जिसे मैं अपनी प्राणप्यारी बनाना चाहता हूं। (जोरकी प्रसन्नता भरी आवाजमें) यदि कभी वह अवसर आया, कि मैं तख्तपर बैठा, तो मैं वचन देता हूं, कि संसारके सबसे बड़े राज्यके तख्तकी यह बहादुर और सुशीला स्त्री अर्द्धभागिनी बनेगी।"

इतना सुनते ही ऐ जीलाने जो घबड़ाकर अपने चारों ओर देखा, तो उसे एक ओर धनाढ्य शरीफ तथा लेडियोंका अर्द्धचन्द्राकार व्यूह बड़ी भक्ति और आदरसे उसके प्रेमीकी ओर देखता हुआ दिखायी दिया, और दूसरी ओर ड्रावर्ट तथा विल्डन घुटने टेककर खड़े दिखायी पड़े, क्योंकि अब वे समझ गये थे, कि वास्तवमें यह पुरुष कौन है। अब ऐ जीलाने घबड़ाकर एक दृष्टि उस पुरुषके चेहरेपर डाली, जिसने अभी अभी उसे अपनी अर्द्धाङ्गिनी बनानेकी प्रतिज्ञा की थी और जिसकी बाहोंका सहारा लिये वह अभीतक खड़ी थी।

उसने कहा,—"हां, मेरी प्राण प्यारी! अब भेद और छिपावके दिन गये। तेरे इन गुणोंके कारण ईश्वरने तुझे संसारमें सबसे बड़ा पद दिलाया है और वह तुझे शीघ्र ही मिलनेवाला है। वहां तुझे अपने गुणोंको काममें लानेका पूरा पूरा अवसर मिलेगा। आह! क्या अब तू भी नहीं समझ सकी, कि मैं कौन हूं? और क्या मुझे कहना

रहेगा, कि यह मनुष्य, जिसे तू अभीतक 'गर्ल्स डो कोमर' समझे हुए थी; वास्तवमें जर्मन सम्राट् ऐलवर्ट है?"

यह सुन ऐ लोलाने भौंचो तथा कांपती हुई आवाजसे कहा,—"ओह! सत्य थी? हां, हां, सत्य थी यह सब बातें एक मनोहर स्वप्न है, जिसके टूटनेपर कोई भयानक परिणाम होगा।" इतना कहती कहती वह इस तरह घबरा गयी, कि यदि जर्मन-सम्राट उसे न पकड़ते, गिरे होते, तो वह अवश्य ही भूमिपर गिर पड़ती।

"नहीं, यह स्वप्न नहीं है, बल्कि प्रसन्नता और सत्य मिश्रित एक मनोहर दृश्य है!"—इतना कह जर्मन सम्राट ऐलवर्टने अपनी बातोंके उपरान्त बड़े प्रेमसे चुम्बन दोनों गाल चूम लिये।

यह देखते ही उपस्थित सभी लोग पुकार जोरसे चिल्ला उठे,—"ईश्वर जर्मनीकी भविष्य सम्राज्ञी ऐ लोला लिटकाको चिरंजीव रखे।" यह देख ऐ लोलाको किसी प्रकारका सन्देह न रह गया और वह समझ गयी, कि अब उसे स्थायी प्रसन्नता मिली है।

इसके बाद जर्मन-सम्राटके अनुरोधसे ऐ लोलाका प्रेग जाना स्थगित रहा और उसी राजदूतके साथ, जो लिटकाका पत्र लेकर आया था, सब हाल लिखकर एक पत्र लिटकाको भेज दिया गया।

उस विदुषीके अनुरोधसे जर्मन-सम्राटने अपने साथियों सहित रात भरके लिये उसकी मेहमानी मञ्जूर की और दूसरे दिन सवेरे ही ऐ लोला, विदुषी पति पत्नी तथा दयालु ग्रूवर्टको साथ ले जर्मन-सम्राटने दलबल सहित आस्ट्रियाकी ओर कूच कर दिया।

सौवां परिच्छेद ।

एक्स-ला चैपेल ।

इस घटनाको दो महीने बीत गये और अब जूनका महीना जा रहा है। इस महीनेमें जर्म्मनीकी राजधानी एक्सलाचैपेलमें दो बड़े उत्सव हुए। पहला उत्सव जर्मन-सम्राट ऐलवर्टका लेडी ऐंजोला-जिटकाके साथ विवाह, और दूसरा उस प्रसन्न-हृदय जोड़ीका शीशरके जगत् प्रसिद्ध सिंहासनपर बैठना।

पहला उत्सव जर्म्मनीके उस प्रधान गिर्जेमें हुआ था, जिसमें उसके बनाने वाले बहादुर चारमेंलेन की कब्र बनी हुई थी और जहां पीतल तथा मार्बल-पत्थरके बने ऐसे ऐसे राजाओंके स्मारक रखे हुए थे, जिनका नाम इतिहासमें विख्यात हो रहा है।

अहा! उस समयका दृश्य बड़ा ही शानदार, भड़कीला तथा दर्शनीय था, जब कि लेडी ऐंजोला, सम्राट 'ऐलवट' की धर्म्म पत्नी बनी। यह उत्सव सन्ध्याके समय हुआ था और उस गिर्जेका भीतरी भाग रोशनीसे जगमगा रहा था। सभी खम्भोंमें सुनहली दीवालगीरें लगी हुई थीं, जिनमें सुगन्धित मोमबत्तियां जल रही थीं, और उसकी ऊंची तथा बड़ी छत रेशमी वस्त्रोंसे मढ़ दी गयी थी। केवल यही गिर्जा नहीं, बल्कि उस दिन जर्म्मनीके सभी गिर्जों और उन महात्माओंकी कब्रोंपर भी रोशनी जला दी गयी थी, जिन्होंने धार्म्मिक भावके प्रचारमें ही अपना जीवन बिता दिया था। प्रधान गिर्जेकी संगमर्मरकी बनी हुई भूमि पर बैंगनी रंगकी मखमल बिछी हुई थी। दीवालोंपर झण्डे तथा छोटी छोटी झण्डियां, जिनपर कीमती जरदोजीका काम किया हुआ था, शोभा दे रही थीं और उसी प्रकारसे सुगन्धित फूलोंकी

कटकी हुई आकर्षित मालायें भी जिसकी सुशोभित कर रही थी और चमकीली रोशनीकी आभा समेत लिये हुए रत्न जटित कण्ठहारोंपर पड़कर मोतीकी आभाएं चमकीली पैदा कर रही थी। मेहमानोंकी मण्डलीकी पोशाकें, लियोंकी चमकीली आंखें और जिसकी अनोखी सजावट, सभीने मिलकर बड़ा ही मनोहर तथा हृदयग्राही दृश्य बना रखा था।

इस सुअवसर पर राज्यके प्रधान प्रधान पदाधिकारी और जर्मनीके कितने ही छोटे बड़े राजकुमार, सभी उपस्थित थे। कितने ही बहादुर अफसर और खूबसूरत पेज सम्राटके आगे पीछे घूम रहे थे और उनके आनन्दानको कितनी ही सुन्दरियां लिये हुए लोला-लिटकाकी सहेलियां बनी हुई थीं। इस महोत्सवमें सम्राटके दोनों प्यारे पेज 'कोण्ट हानेस आर्लेन' तथा 'बेरन को हार्ड डी विनों' भी उपस्थित थे। पर उन दोनोंके चेहरेपर उदासीकी एक चीज आभा भी लिखा तथा बेटारिसकी स्मृतिमें पड़ी हुई थी।

उस गिर्जेमें सजायी हुई कुर्सियोंकी अगली कतारमें सबसे आगे एक विद्वान अपनी स्त्रीके बगलमें बैठा हुआ था। वह सुनहरा तगमा, जिसे वह सज्जन पुरुष अपनी छातीपर लगाये हुआ था, उससे मालूम होता था, कि सम्राटने उसे कितना उत्तम पद दिया है, क्योंकि अब विल्हेल्म जर्मनीके समस्त जङ्गलोंका प्रधान रक्षक बन गया था। दोनों ही स्त्री पुरुष अपने पदके अनुसार सुन्दर-सुन्दर वस्त्र पहने हुए थे और मालूम होता था, कि अपनी बुद्धि, सदिचार तथा उत्तम प्रबन्धके कारण उन दोनोंने अपना पद और भी गौरवमय बना लिया है। परन्तु इस समय उनके चेहरेपर जो प्रसन्नता दिखायी देती थी, वह वास्तवमें इतना उत्तम पद पानेके कारण न थी, बल्कि इसका घनिष्ट सम्बन्ध सुन्दरी ऐलोसे था, जिसे उन दोनोंने इतने दिनोंतक बड़े प्रेमसे पाल-पोसकर बड़ा किया था।

पवित्र बर्नार्ड भी दूसरी ओरकी सबसे आगेवाली कुर्सीपर बैठा हुआ था और शाही दरबारमें एक ऊंचा पद मिल जानेके कारण उसकी गणना भी शरीफोंमें हो गयी थी। हां, और सामनेवाली कुर्सी पर सबसे आगे हमारा दयावान बुड्ढा ह्यूबर्ट बैठा हुआ था, जो इतने दिनोंतक यद्यपि अष्टन-महलका एक खानसामा था; परन्तु अब सम्राटकी कृपासे जर्म्मनीके समस्त शाही महलोंका प्रबन्धकर्त्ता हो गया था।

अहा! क्या विल्हेलमने अपनी खुशीके उत्तमसे उत्तम अवसरपर भी कभी यह विचारा था, कि उसकी पालिता पुत्रीको हठात् इतना सौभाग्य प्राप्त होगा? क्या ह्यूबर्टने ही ऐ जोलाको यह कहते समय, कि किसी दिन इसका नाम इतिहासमें अमर हो जायगा, विचारा था, कि उसकी भविष्यवाणी सत्य निकलेगी? और क्या बुड्ढे बर्नार्डको कभी स्वप्नमें भी यह गुमान था, (जब कि उसने कहा था, कि ऐ जोलाको अपनी प्रियतमा बनाकर यूरोपका बड़ेसे बड़ा सम्राट भी अपनेको गौरवान्वित समझेगा) कि ऐ जोला इतने उत्तम पदपर पहुंच जायगी और उसके पैर यूरोपके सबसे ऊंचे तख्तपर जा पड़ेंगे?

परन्तु इस समय उस नव-वधूका पिता जान-जिटका कहां था? वह बहादुर सरदार, जो अपनी कन्याको प्राणसे भी बढ़कर प्यार करता था, इस अवसरपर न तो गिर्जेमें उपस्थित था और न इस राजनगर में ही आया था। बल्कि वह पेरिसमें—प्रजातंत्रशासन-की राजधानीमें बैठा हुआ था। तब क्या अपनी पुत्रीके इस अभ्युदयसे वह अप्रसन्न था? अथवा क्या उसका प्रेम जानकर उसने उसका साथ देना छोड़ दिया था? नहीं, वह हृदयसे हर्षित था और उसे इस बातका बड़ा ही आनन्द था, कि उसकी कन्याने एक [illegible] मनुष्यको वरण किया है और चाहे वह प्रजातंत्रका कितना ही

सरदारी था; परन्तु कर्मिष्ठताकी एक मात्र पूंजीकी इतने ऊंचे पदपर पहुंचा देख, उसका हृदय प्रसन्नतासे गद्‌गद् हो रहा था।

इसीलिये जब इस प्रेमका समाचार उसे मिला, उसी समय उसने आनन्दसे अपना मत भी प्रकट कर दिया। केवल इसी विचारसे नहीं, कि उसकी कन्या एक सुरक्षित, सुयोग्य तथा ऊंचे पदपर पहुंच गयी है; बल्कि वह किसीके हार्दिक निर्मल और प्रेमसे कदापि बाधा न पहुंचाया चाहता था। इसके अतिरिक्त वह सम्राट एडवर्ड को भली-भांति, उसके गुण तथा व्यवहारसे अच्छी भांति परिचित हो रहा था। इसीलिये सरदार जिटकाने इस विषयमें अपनी सम्मति दे दी थी; परन्तु उसने मन ही मन निश्चय कर लिया था, कि उसका जर्मनी जाना किसी अवस्थामें भी उचित नहीगा; क्योंकि यह विवाह उस रीतिनीतिके अनुसार होगा, जिसपर टेवोराइट दल सदासे घृणा प्रकट करता आया है तथा दूसरी बात यह थी, कि वहां सभी काम राज तथा शासनके अनुसार होते हैं, जिसपर प्रजा-तन्त्र शासन चाहने वालोंको आन्तरिक घृणा रहती है। ये ही कारण थे, कि जिटका मौनमें ही रह गया; परन्तु उसके आशीर्वाद ऐ लीलापर उसी समय फलीभूत हुए, जब कि वह बोहेमिया त्याग जर्मनीकी ओर सिधारी।

और अब देखिये। वह सुन्दरी एकलता-पैसेलके प्रधान गिर्जेमें लोगोंके पास किस ठाटसे खड़ी है और उसका मामा कोष्ट रोशनबर्ग किस उत्साहसे उसका हाथ सम्राटके हाथमें देनेके लिये खड़ा है। वायनाके प्रधान पादड़ी आर्च-बिशाप अपने पेजों तथा अन्य छोटे छोटे पादड़ियोंके साथ किस तरह उत्साहसे यह वैवाहिक कार्य सम्पादन करनेके लिये तय्यार है। ऐ लीला इतनी सुन्दरी, इतनी मनोहर तथा इतनी खुश आजके पहले कभी दिखायी नहीं दी थी। वह सफेद वस्त्र पहिने हुई थी, बड़े बड़े मोतियोंका कंठा उसके गलेमें शोभा दे

था और बहुमूल्य हीरेके टुकड़े उसकी गाउनमें लगे हुए थे। साथ ही एलवर्ट भी बड़ी प्रीतिसे इस समय अपना समस्तध्यान उसकी ओर ही आकर्षित किये उसे देख रहा था।

इस तरह उस जीवकी, जिसे वह पहले एक गरीब 'सर अर्नेस्ट-डी-कीमर' जानती थी और जिसकी सुन्दरता तथा वीर-कार्यावली पर प्रसन्न होकर, उसने अपना हृदय दान कर दिया था, वही आज ईश्वरकी साक्षी रखकर सदाके लिये उसका हाथ पकड़नेको तय्यार था, अपने सुविशाल राज्यकी उसे अर्द्धभागिनी बनाना चाहता था, क्योंकि वह राजा नहीं, राजाओंसे भी बड़ा सम्राट था, जो इस समय उसका पति बना! और वह स्त्री, जो अब तक ऐंजीला जिटकाके नामसे परिचित थी, वैवाहिक कार्य समाप्त कर ज्योंही उठी, त्यों ही जर्मनीकी सम्राज्ञी कहकर सभोंने उसका सम्मान किया।

दूसरे दिन समस्त एक्स-ला-चेपेल प्रसन्नताकी उमङ्गमें हिलोरे ले रहा था। सवेरा होते ही मनुष्यों की भीड़ पुराने गिर्जेके पास एकत्रित होने लगी थी। सड़कोंपर फूल बिछा दिये गये थे और खिड़कियोंमें मखमली पर्दे उड़ रहे थे। राहमें जगह जगह फूलोंके महराब बना दिये गये थे। गिर्जोंके घण्टोंकी आवाज आ रही थी और फौजी बाजोंकी आवाज, मनुष्योंकी ध्वनिसे मिलकर आकाश मार्गमें गूंज रही थी।

और सुनो, कुछ ही क्षण बाद किलेसे तोपोंकी आवाज सुन पड़ने लगी। वह इस बातकी सूचना थी, कि सम्राट किलेसे रवाना हो चुके। यह जुलूस किलेसे निकलकर प्रधान सड़कपर होता हुआ गिर्जेमें जा रहा था, हजारों शरीफ, पादड़ी तथा बड़े बड़े शरीफोंके साथ सम्राट-सामाज्ञीकी गाड़ी आ रही थी।

तोपोंकी आवाज शहरमें पहुंच रही थी। घण्टियां रही थे तथा बाजोंकी मधुर ध्वनि गूंज रही थी। हम समझते हैं, कि पाठकोंको अब यह बतानेकी आवश्यकता नहीं है, कि ए लोला देवियोंके समान रूपवती तथा सम्राट देवताओंके समान रूपवान मालूम होते थे, जब कि वे प्रजाके समागमके उत्तरमें हाथ हिलाते हुए जा रहे थे।

कल आधी मर्यके पुराने गिर्जेके भीतर सम्राट तथा सम्राज्ञी पहुंच चुके थे।—उनके सामने कितने ही राजकुमार, पदाधिकारी और प्रतिनिधि बैठे हुए थे। इसी समय वायनाके प्रधान पादरीने उन दोनोंको सम्राट तथा सम्राज्ञीके पदसे अभिषिक्त किया। इस विवाहका विवरण गिर्जेके रजिस्टरमें इस तरह लिख लिया गया—

"ऐम्पट-फ्रेंसिस जूर्ज, आर्क्ड आफ कोमर, बेरन आफ ऐजबर्ग, आस्ट्रियाके आर्क आफ आस्ट्रिया, किङ्ग आफ हंगरी और जर्मनीका सम्राट।

"ए लोला मिन्टन जिटका, डिडो आफ कोमर, बेरोनेस आफ ऐजबर्ग मार्बेन हनेज आफ आस्ट्रिया, हंगरीकी रानी और जर्मनीकी सम्राज्ञी।"

इस तरहपर बैठनेका उत्सव समाप्त हो जानेपर सम्राट तथा सम्राज्ञी उस गिर्जेसे चले गये। जाते समय उसी प्रकारका जुलूस नये रूपसे ही निकला और तोपोंकी गरज, घण्टोंकी गनगनाहट, बाजोंकी मधुर ध्वनि तथा जन समूहके कोलाहलके बीचसे होते हुए, वे ऐक्सला-चैपेलमें जा पहुंचे।

एक महीना बीत गया, तीस दिवस स्वप्नकी तरह सम्राट तथा सम्राज्ञीको मालूम हुए। इसके बाद एक ऐसी घटना घटी, जिसने पहलेके कितनेही छिपे हुए भेदोंको प्रकट कर दिया।

एक दिन संध्याके समय सम्राट ऐलबर्ट और सम्राज्ञी ए लोला, दोनों हाथमें हाथ मिलाये महलसे सटी हुई वाटिकामें टहल रहे थे।

घटनाओं पर विचार कर रहे थे, कि एकाएक कौण्ट लानेल आलन उनकी ओर आता हुआ दिखायी दिया।

वह तेजीसे उनकी ओर बढ़ रहा था। और ज्यों ज्यों पास आता जाता था, त्यों त्यों मालूम होता था, कि किसी प्रसन्नता जनक घटनाने उसके हृदयको हर्षित तथा प्रफुल्लित कर दिया है यहां तक कि उस खुशीने उसे सम्राट-सम्राज्ञीके दिखायी देने पर भी चाल कम करने और चेहरा गम्भीर बनाने न दिया और वह लपकता हुए उनके पास जा पहुंचा।

सम्राट ऐलवर्टने उसे देखतेही कहा,—"प्रिय लानेल! मालूम होता है, कि किसी नवीन घटनाने तुम्हे प्रसन्न कर दिया है। इसीसे आज तुम्हारा ढग कुछ बदला हुआ दिखायी देता है। (ऐ जीलाकी ओर देखकर) तुम्हें भी स्मरण होगा, कि जिस समय दरबारके प्रत्येक अवसर पर सभी मनुष्योंका चेहरा प्रसन्नतासे दमक रहा था, उस समय इसके तथा लार्ड कोनार्ड डी पिर्नाके चेहरे पर गम्भीर उदासीकी छाया दिखायी देती थी।"

ऐ जीला हसती हुई वीणा विनिन्दित स्वरमे बोली,—"आपने दो सुन्दरी स्त्रियों, लिण्डा तथा वेटारिसके सम्बन्धमें एकबार मुझसे कुछ कहा भी था।"

ऐलवर्टने कहा,—"हां हां, मुझे याद आ गया (लानेलकी ओर देखकर) क्या तुम्हें उन दोनोंके विषयमें कोई समाचार मिला है?"

कोनार्डने बड़े भक्ति भावसे कहा,—"सम्राटकी जय हो। वे स्त्रियां, जिनके विषयमें श्रीमान पूछ रहे हैं, इस समय इसी महलमें हैं और कोनार्ड उनके पासही बैठा हुआ है। मैं भी उनका साथ इतना शीघ्र नहीं छोड़ना चाहता था। न मैं श्रीमानके एकान्त सम्मिलनमें डालना चाहता था यदि "

इतना कहता कहता एकाएक घबड़ाकर लानेल चुप हो गया और डरी हुई दृष्टिसे सम्राट् ऐडवर्टकी ओर देखने लगा; क्योंकि सम्राटके सामने इस तरह बोलना उसे उचित न था।

परन्तु उदार हृदय ऐडवर्टके हृदयमें इन बातोंका कोई विचार न था, उसने लानेलको यह अवस्था देख हँसते हुए कहा,—"मैं तुम्हारा मतलब समझ गया। मालूम होता है, ये दोनों लियों जान-लिटका की मालो आयशाका कोई सन्देशा लेकर आयी हैं। क्योंकि वह स्त्रियोंमें सम्राज्ञीको बहन होती है।" इतना कह ऐडवर्ट अपनी नव-वधूके चेहरेको बड़े प्रेमसे देखने लगा।

लानेलने कहा—"लिज़ा तथा पेटारिस कोई सन्देशा लेकर नहीं आयीं। बल्कि उनकी मालिकी लेडी आयशा

बीचमें ही पेटा बोल उठी,—"यदि मेरी बहिन इस महलमें आई होगी तो उसका पूरा पूरा सत्कार किया जायगा। (ऐडवर्टके कानमें बहुत ही धीरे धीरे) प्यारे ऐडवर्ट; तुम जानते हो, कि चाहे उसने कितनेही अपराध किये हों पर मैं उसे अन्यथाकी दृष्टिसे नहीं देख सकती। सम्भव है, कि किसी घटना वश उसे ऐसे कार्य करने पड़े हों, अतः अब उसकी ओरसे चित्तमें मैल रखना उचित नहीं है।"

ऐडवर्टने प्रेम भरी और कृतज्ञता सूचक आवाजमें कहा,—"तुम दया तथा क्षमाकी देवी हो (लानेलकी ओर देखकर) लेडी आयशा-को सम्राज्ञीके कमरेमें बैठाओ, कुछ ही क्षणमें हम लोग आते हैं।"

लानेल माथा झुकाकर चला गया। कुछही क्षण बाद सम्राट तथा सम्राज्ञी, बिना किसीको साथ लिये उस कमरेमें जा पहुंचे, जिसमें आयशा बैठी हुई घबड़ाहटसे उनकी राह देख रही थी।

इस समय आयशा काले वस्त्र पहने हुई थी, उसका चेहरा पीला पड़ गया था और उसके गालोंका वह चमकता हुआ गुलाबी रंग

गायब हो गया था, परन्तु अभी तक उसकी आखोंकी वह चमक दूर न हुई थी और न उसके ओठोंकी वह लाली ही अभी तक गायब हुई थी। उसके वे मनोहर केश अभी तक उसी तरह हवामें लहराते थे। जो कुछ हो, उसके चेहरे पर उदासी की एक भयानक छाया पड़ी हुई थी और उसकी चमकीली आखे उस समय और भी अधिक चमक उठीं जब उसने सम्राट तथा सम्राज्ञी पर अपनी दृष्टि डाली।

हा, एकबार ऐलवर्टका भी हृदय उस सुन्दरीको देखकर कांप उठा, जो उसके सामने इस समय खड़ी थी; जो उसे अपने प्राणोंसे अधिक प्यार करती थी और जिसने प्रेतानीके स्वरूपमें उसका हृदय हर लिया था। परन्तु इस समय सम्राटके हृदयमें विगत घटनाओंकी तरङ्गें उठ रही थीं और प्रीतिके बदले दयाने उसके हृदय पर अधिकार जमा लिया था। उसकी सुन्दरी सम्राज्ञी भी किसी तरहसे ईर्षान्वित दिखायी देती थी, जब कि उसकी बहिन और उसके पतिकी आंखें मिल रही थी, क्योंकि वह अच्छी तरह जानती थी, कि उसके पति ऐलवर्टके हृदयमें यह भाव दृढ़ हो गया है, कि आयशा उसे प्यार न करके धोखा देना चाहती थी। वह नि स्वार्थ प्रेम नहीं था, बल्कि स्वार्थमय कार्य-साधन था। इसीलिये ऐ लीलाको पूर्ण विश्वास था, कि उसके पतिके समस्त प्रेमकी एकमात्र वही स्वामिनी है।

कुछ क्षण बाद ऐ लीला बड़े प्रेमसे बोली,—"प्यारी बहिन! मैं तुम्हारा हार्दिक स्वागत करती हूं। यदि तुम्हारे हृदयमें किसी प्रकारका दु ख हो तो हमलोग उसमें शान्ति पहुचायेंगे। यदि तुमहारे कोई शत्रु हों, तो हमलोग उनसे तुम्हारी रक्षा करेंगे और यदि तुम किसी आनन्दमय स्थानमें रहना चाहती हो तो, यह महल तुम्हारे लिये तय्यार है। यद्यपि मैं ही ये बातें कह रही हू, तथापि ऐलवर्ट भी इन सब बातोंको पूर्ण करनेके लिये तय्यार है।"

ऐलवर्टने कहा,—"तुम्हारा कहना यथार्थ सत्य है। आयशाको पहली बातें बिलकुलही भूल जानी चाहिये और अब भविष्यतकी ओर ध्यान रखना चाहिये।"

आयशाने गम्भीर, मोटी तथा मनोहर आवाजमें कहा,—"और यह भविष्य न तो तुम्हारे मस्तकमें, न तुम्हारी मनतिमें ही बीतना चाहिये। तथापि ऐलवर्ट और ऐंजोला! मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूं कि तुम दोनोंने मुझपर बड़ी दया दरसायी है और तुम्हारी बातें, तुम्हारा व्यवहार और तुम्हारी उदारता सभी तुम दोनोंके उच्च हृदय का परिचय दे रही हैं। ऐंजोला! एक समय यह था जब मैं तुमसे ईर्षा करती थी, हां, जब कि लोका मिलनेपर मैं तुम्हारी जान भी ले लेती, और केवल तुम्हारी ही क्यों, उस पुरुषका जीवन भी समाप्त कर देती जो तुम्हारा पिता तथा मेरा मामा है। परन्तु यह समय बीत गया है। अब मैं तुम्हें हृदयसे प्यार करती हूं। मैं तुम्हारे ऐश्वर्य और सम्मानको देख ईर्षान्वित नहीं होती, मुझे तुम्हारा तख्त देख डाह नहीं उत्पन्न होता, न मुझे उस पुरुषसे ही किसी प्रकारका द्वेष या ईर्ष्या है, जिसने तुम्हें इतने ऊंचे पदपर पहुंचा दिया है। तुम दोनों सुखी रहो। आज यह आयशा खण्डरगाड़ी स्वच्छ हृदय से तुम्हारी उन्नतिके लिये धन्यवाद और आशीर्वाद दे रही है।"

ज्यों ज्यों आयशा ऊपर लिखी बातें कहती गयी, त्यों त्यों उसकी आवाजकी कंपकंपी भी बढ़ती ही गयी और अन्तमें एकबार मुंह फेरकर उसने अपने गालोंपर बहते हुए मोतियों समान आंसुओंको पोंछ डाला।

यह देख साहसी ऐंजोलाकी आंखोंमें भी आंसू भर आये और ऐलवर्टका उदार हृदय भी एकबार कांप उठा।

कुछ क्षण ठहरकर आयशा फिर बोली—"मैं आज थोड़ी ही देरके

लिये तुम दोनोंसे मिलने आयी हूं और इस थोड़े ही समयमें सब बातें समाप्त किया चाहती हूं। यह काला गवन मैं इसी लिये पहने हूं हूं, कि यह मेरा ध्यान सांसारिक आशाओं तथा अपराधोंसे दूसरी ओर फेर दे। मैंने एक वर्ष तक यही वस्त्र पहननेकी शपथ की है और आशा है, कि मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर सकूंगी। जब मैं सवेरेके वक्त पहन लेती हूं, उस समय समस्त गत घटनायें मुझे स्मरण हो आती हैं, और जब इसे उतारकर रख देती हूं, तब याद आ जाता है, कि मेरा एक ऐसा दोष भी है, जिसने कभी भी मेरा बाल बांका नहीं होने दिया— और मैं उसी मंगलमय ईश्वरको इसकेलिये धन्यवाद दिया करती हूं। इस तरह तुम देख सकती हो, कि मेरी अब पहली जैसी अवस्था नहीं है और मेरे मतके इस परिवर्त्तन होनेपर भी आज मुझे एक खास कामके लिये तुम लोगोंके पास एकबार फिरसे आना पड़ा—"

आयशाको चुप होते देख ऐ'जोलाने कहा,—"प्यारी बहिन! बताओ कि क्या बात है?

आयशा बोली,—"ऐ मेरे बन्धुओ! पहले यह बताओ, कि क्या तुम लोगोंको मालूम है, कि कोएट लानेल आर्लन और वेरन कोर्नाड जो विर्नाकी प्रीति मेरी दोनों सहेलियोंपर है; जिनका नाम लिखा और बेटारिस है?"

सम्राट ऐलवर्टने कहा,—"हां, आयशा! तुम्हारा अनुमान बिलकुल सत्य है और हमलोग धर्मपूर्वक सत्य सत्य कह सकते हैं, कि बात ऐसी ही है। साथ ही हमलोगोंको सन्देह है, कि यदि तुम यहांसे जाना चाहो तो वे दोनों नवयुवक शायद तुम्हारी सहेलियोंको जाने न दें।"

आयशाने समझी ऐ'जोलाका हाथ अपने हाथमें ले उसे दबाते हुए —"तब मैं बड़ी प्रसन्नतासे उन दोनोंको तुम्हारे सुपुर्द करती

है। मेरे यहां आनेका एक उद्देश्य तो इस तरह सफल हुआ और दूसरा उद्देश्य तुम्हारे प्रति ऐसटको कुछ काम [illegible] और ऐसे ही पूरा हो जायगा।"

इतना कह कुछ कागजोंका एक पुलिन्दा निकाला और ऐसटके सामने रे, उसका मुख देखने लगी।

ऐसटने पूछा,—"ये कैसे कागज हैं, आयशा?" क्योंकि जिस समय उन कागजोंपर उसकी नजरकी दृष्टि डाली, उसी समय वह समझ गया, कि यह किसी सुन्दरी की द्वारा लिखे हुए हैं।

आयशा बोली,—"इन कागजोंमें मेरी जीवनीकी कितनी ही ऐसी घटनाएं लिखी हैं, जिनका भेद अभीतक नहीं खुला है। इसके अतिरिक्त इनमें वे भेद भी लिखे गये हैं, जिनका सम्बन्ध तुमसे है। (कुछ देर ठहरकर) और अब मेरे दोनों काम पूरे हो गये, क्योंकि उन दोनों लड़कियोंको मैंने तुम्हारे सुपुर्द कर दिया और सब भेद खोल देनेवाले यह कागज ये दिये। अतः अब मुझे विदा होना चाहिये।"

इसके बाद उसका माथा एक ओर झुक गया, और हृदयमें उठती हुई जोरोंकी खांसीको यद्यपि उसने बड़ी दबा रखनेका उद्योग किया, तथापि कलेजेमें धड़क धड़क कर उनके हृदयकी यातना प्रकट कर दी। फिर अपने दोनों हाथोंसे आंसू पोंछती हुई वह बोली,—

"विदा, मेरी बहिन ऐलीला! विदा, अर्मेनीके सम्राट ऐसवट।" इतना कहकर उसने उन दोनोंका हाथ बड़े जोरसे दबा दिया और ऐसी दृष्टिसे उनके चेहरेकी ओर देखने लगी, जिससे न तो किसी प्रकारका भय और न ईर्षा ही प्रकट होती थी।

इसके बाद हाथ छोड़ वह तेजीसे उस कमरेके बाहर निकल गयी।

अब आयशा उस कमरेमें गयी, जिसमें लिखा और बेटारिस लानेल तथा कोनार्डसे बातें कर रही थीं। वहां उन दोनोंको थोड़े ही शब्दोंमें

यह समझकर, कि ऐंजीलाकी रक्षा करना ही अब उनका भविष्य-कर्त्तव्य होगा, उस कमरेसे हटना ही चाहती थी, कि उसकी दोनों सहेलियां जोरसे रोती हुई उससे लिपट गईं और उससे वहीं रहनेके लिये बार बार प्रार्थना करने लगीं; परन्तु अन्तमें आयशाने उनकी लिपटसे जबर्दस्ती अपनेको छुड़ा लिया और लपकती हुई उस स्थान पर पहुंची जहां उसका घोड़ा था और उसपर सवार हो, बिना किसीको साथ लिये; परन्तु आंखोंमें आंसू भरकर तेजीसे एक ओर चली गयी।

उस समय सूर्य्यदेव अस्ताचल पर्वतपर पहुंचा ही चाहते थे, जिस समय आयशा एकला चैंपेलसे निकल अपने घोड़ेपर सवार हुई और जब वह महलकी खाई पारकर सदर सड़कपर पहुंची, तब एकबार उस ऊंचे महलपर उसने अन्तिम दृष्टि डाली।

बड़े बड़े तथा ऊंचे महलोंके बीच वह किला बना हुआ था, जिसे छोड़ आयशा अभी अभी बाहर निकली थी। इस समय अस्तगामी सूर्यदेवकी सुनहली किरणें पड़नेके कारण यद्यपि वह किला सुनहला चमक रहा था, तथापि आयशाकी आंखोंमें आंसू भरे रहनेके कारण वह उसे धुंधला मालूम होता था। अब उस किलेकी ओर देखती हुई ठण्डी सांस लेकर वह बोली,—"ऐ अहंकारी दुर्ग! आज मैं तुझसे भी बिदा लेती हूं, क्योंकि तू अपने आश्रयमें एक ऐसे पुरुषको रखे हुए है; जिसे मैं प्यार करती थी, करती हूं, तथा आजन्म करूंगी।"

इसके बाद उसके हृदयमें अत्यधिक वेग उत्पन्न हो जानेके कारण उसने किलेकी ओरसे अपनी दृष्टि फेरली और घोड़ेको ऐड़ लगा एक ओरको रवाना हो गयी।

उसी दिन सन्ध्याके बाद सम्राट्‌ऐलवर्टने आयशाके दिये हुए कागजोंका समूचा पुलिन्दा पढ़ डाला और अब उसके हृदयमें भेदकी सभी बातें आइनेकी तरह प्रकट हो गयीं।

एक सौ एक परिच्छेद ।

आयशाके सम्बन्धमें ।

हमारे पाठकोंको स्मरण होगा, कि इमीलिया-हडसनको प्रेगके पास ही एक झोंपड़ीमें मरी थी और मरते समय उसने अपनी कन्या आयशाको अपने भाई जान लिटकाके सुपुर्द कर दिया था और लिटकाने भी वादा किया था, कि वह आयशाके पिताको यह प्रतिज्ञा पूरी करेगा, जो उसने आयशाके सम्बन्धमें, उसकी मृत्यु होनेके पहले ही की थी। जो कुछ हो, उसकी माताकी मृत्युके बाद लिटकाने आयशाको अपने एक रिश्तेदारके यहां रख दिया, क्योंकि मेरियेटा नाम रहनेके कारण अब उसके पकड़े जानेका भी भय न था।

जब आयशा सोलह वर्षकी हुई तो वह प्रेगके पास वाले एक कोन्वेण्ट (मठमन्दिर) में रख दी गई। यह कोन्वेण्ट उस जंगलके पास ही था जहां टेमोराण्ट सिपाहियोंका पड़ाव पड़ा हुआ था, और जहां हमारे पाठकोंने पहले पहल शैतानीको देखा था। लिटकाको मालूम था, कि इस कोन्वेण्टकी रक्षा करने वाली अधिष्ठात्री एक बड़े ही उत्तम स्वभावकी दयालु तथा भक्तिमती स्त्री है और यही कारण था, कि आयशा उसी कोन्वेण्टमें भेजी भी गयी। उस समय लिटकाके ध्यानमें भी यह बात न आयी, कि कोन्वेण्टकी अधिष्ठात्री यद्यपि दयालु तथा भक्तिमती मालूम होती है, तथापि उसके हृदयमें सांसारिक विचार बहुत ही अधिक भरे हुए हैं और वह उस प्रकृतिकी स्त्री है, जो अवसर पड़नेपर भयानक निष्ठुरता, कपटता तथा अन्यायको

महलके गुप्त भेद न बताये गये थे, परन्तु उस चालाक, धूर्त्त तथा मदमाश बैरोनेसने धीरे धीरे बुराईका पानी कोमल हृदया आयशाके हृदयपर ढालना प्रारम्भ कर दिया था। यह शिक्षा उसे इस ढगसे दी जाती थी, कि आयशा मन ही मन यह समझती थी, कि उसे बहुत ही ऊचे दर्जेकी और आवश्यक शिक्षा दी जा रही है, परन्तु बैरोनेस जिस समय उसे बुराइयोंसे बचनेका उपदेश देती थी, उस समय उन बुराइयोंका वर्णन इतनी सुन्दरतासे करती थी, कि उनसे बचनेके बदले उस ओर जाने की ही प्रवृत्ति मनुष्यके हृदयमें उत्पन्न हो जाना एक साधारण बात थी। इस तरह कोमल हृदया आयशाके हृदयपर बुराइयोंका बीज बोया गया और सांसारिक वासनाओंकी लालसा उसके हृदयमें भयानक रूपसे भडक उठी। बुरे विचार हो गये, और अन्तमें जब बैरोनेसने देखा, कि अब यह कामके योग्य तथा उस महलके भेद जाननेके लायक हो गयी, तब एक रात्रिमें ज्यों ही चांदीकी घडी बजी त्यों ही वह उसे साथ ले उस बडे कमरेमें जा पहुची, जहा बहुतसे खूबसूरत मनुष्य तथा सुन्दरी स्त्रिया एकत्रित थीं।

ओह! उस समय आयशाके हृदयमें एक विचित्र भाव तथा आखोंमें भयानक चकाचौंध उत्पन्न हो गयी, जब उसने उस बडे कमरेमें, जो बहुत ही सुन्दरतासे सजा गया था, तथा जिसका हाल पहले ही वर्णन किया जा चुका है, बहुमूल्य तथा भडकीले वस्त्र पहने हुए सुन्दर सुन्दर पुरुष तथा बडी ही सुन्दरी स्त्रियोंका हाथमें हाथ दिये घूमते और बैठे हुए देखा और जब कि वह उस कमरेकी सुन्दरता तथा मनोहर दृश्योंको आखे फाड़ फाड़कर देख रही थी, उसी समय बैरोनेस उसे घुमाती-फिराती हुई पासके ही एक छोटे कमरेमें ले गयी, जहा लोहेका एक भद्दा चिराग जल रहा था। ओह उस

कमरेमें आतेही एक भयानक भय आयशापर छा गया; जब उसने उसको भीतरी अवस्था देखी। उसको नसोंमें रक्त जमने लगा और उसके सुनहले केश इस तरह खड़े हो गये मानो उनमेंसे आगकी लपट निकलने लगी हो। बात यह थी, कि उसके सामने दो मुर्दे पड़े थे, जिनके शरीरमें मांसका नाम निशान न था और केवल हड्डियोंका ढांचा रह गया था। उनके होंठों बिना मांसके खुले हुए दांत सामने को ओर फैले हुए थे तथा उनकी अंगुलियां आयशाकी ओरही फैली हुई थीं।

कुछ देरके बाद आयशाने चौंककर बेरोनेसकी ओर देखा; परन्तु इस समय की उसकी दृष्टि भयानक हो रही थी और आंखें जल रही थीं। बेरोनेस-हेमलेनने उसको अपनी ओर देखते देख एक खंजर निकाल उसके कलेजेका निशाना साधते हुए उसे वह कसम खानेके लिये, जो वह कहना चाहती थी, अथवा मरकर इसी तरहका तीसरा मुर्दा बननेके लिये कहा। ओह! आयशा घबड़ा गयी और मृत्युके भयसे उसने बिना समझे बूझे वह कसम खा ली, जो उस बदमाश बेरोनेसने उसे खिलायी। हम उस भयानक एवित शपथका वर्णनकर इस पुस्तकके कई पन्ने रंगना तथा पाठकोंका समय वृथा ही नष्ट करना उचित नहीं समझते और इतना ही लिख देना काफी समझते हैं, कि उसने उसे वह कसम खिलायी जिसने स्वर्ग नर्क दोनोंको समान प्रकाशित कर दिया और जिसका अन्तिम शब्द सब भेदोंको गुप्त रखना था। परन्तु यह भी उसी समय कह दिया गया, कि यह किया शपथ उसी समय तकके लिये है, जबतक बेरोनेस-हेमलेन जीवित है।

यह शपथ खाकर, जिसका प्रत्येक शब्द नवीन अपराधके समान आयशाके मुखसे निकला तथा जिसके प्रत्येक शब्दका भयानक प्रभाव सरल हृदया आयशाके हृदय पर पड़ा, आयशाने बेरोनेसके हाथका खंजर चूम लिया। अब बेरोनेस उसे अपने साथ ले उसके पास वाले

एक दूसरे कमरेमें गयी जहां सब तरहके भोजन तय्यार थे। वहां बैरोनसने एक गिलासमें एक प्रकारकी शराब भरकर आयशाको पिलायी और अब वह आयशा, जो कुछ देर पहले भयके कारण कांप रही थी, फिर अपनी पूर्व अवस्था पर आने लगी और बिजलीके समान उसके शरीरमें उत्साह भर गया।

उसके चेहरेका गुलाबी रंग, जो भयके कारण गायब हो गया था, फिर उसके गालोंपर दिखाई देने लगा; उसके ओठ जो कुछ देर पहले पीले पड़ रहे थे, फिर लाल हो गये और उसकी वे चमकीली आखें, जो घबराहटसे धुंधली पड़ गयी थीं; फिर पूर्व्वत चमकने लगीं। और कुछही क्षणबाद उसका समूचा चेहरा प्रसन्न तथा चमकता हुआ दिखाई देने लगा। अब उस कमरे तथा अपथकी भयङ्करता उसकी स्मरण शक्तिसे विलुप्त हो गयी और उसे ऐसा मालूम होने लगा मानो उसने कोई भयानक स्वप्न देखा था तथा गत घटनायें सत्य न थीं और यही कारण था, कि आयशा बैरोनेसके साथ फिर हंसती तथा अठखेलिया करती हुई उस बड़े कमरेमें आ पहुंची।

अब हम पाठकोंका ध्यान कुछ देरके लिये बैरोनेस-हेमलेनकी ओर दिलाना चाहते हैं।

गत घटनाओं तथा इस किस्सेकी आरम्भिक घटनाओंको पढ़नेसे पाठकोंको मालूम हो गया होगा, कि बैरोनेस हेमलेन पीतलकी मूर्त्तिकी एक प्रभावशालिनी सेविका तथा उसके दलकी पुष्ट करनेवाली थी। इसी लिये बैरोनेस-हेमलेनने कितनी ही ऐसी ऐसी सुन्दरी स्त्रियोंको अपने घरमें फसा रखा था, जो बड़े बड़े धनवान शरीफों और खूबसूरत नौजवानोंको अपने प्रेम पाशमें फसातीं तथा फिर उन्हें पीतलकी मूर्त्तिकी सेवामें लगाती थीं। इस गुप्त समितिका यह भी एक नियम था, कि इसके दल वाले पुरुष स्त्रियोंका सतीत्व, इसलिये

विगाड़ देती थी, कि मदिरा छूटनेके बदले वे सदा पीतलकी मूर्त्तिको पिया करती रहें। इस तरह जबकि उनका सतीत्व नष्ट हो जाता, उनके हृदयसे लज्जा, भय दूर हो जाती तथा धोखा देना और बातें बनाना वे अच्छी तरह जान जातीं, तब वे सेवाके उपयुक्त समझी जाती थीं।

गुप्तचर इन कामोंको पूरा करने, उस दलके भेद गुप्त रखने तथा अपना दल पुष्ट करनेके लिये बोहेमियाके भिन्न भिन्न स्थानोंमें कितनेही अड्डे बनाये गये थे। इन सबोंमें उत्तम, बड़ा भारी, प्रभावशाली तथा निर्भय काम करने वाला यही अड्डा था; जो बेरोनेस ऐमलेनका महल कहलाता था। अपने पतिकी मृत्युके बाद बेरोनेस-ऐमलेनने यह कारबार चलाया था और उसी समय इस सफेद महलकी नींव भी पड़ी थी। यह नींव ऐमलेन-कैसलसे थोड़ी ही दूरपर डाली गयी थी। जब सफेद महल बन गया तब उसने तीनों स्त्रियों भाइयोंके अतिरिक्त अपने सब पुराने नौकर जाकर विदा कर दिये। इन तीनों भाइयोंको उसने गुप्त रीतिसे सफेद महल तथा ऐमलेन कैसलके बीच सुरंग बनानेके लिये नियुक्त किया; परन्तु जब यह सुरंग तय्यार हो गयी, तब उसने विचारा, कि इन तीनोंको स्वतंत्र न छोड़ना चाहिये नहीं तो ये भेद प्रकट कर देंगे। इसीलिये उसने इन तीनोंको पीतलकी मूर्त्तिके आगे बलिदानके लिये भेज दिया और पाठकोंको मालूम हो चुका है, कि जल्लादका काम ग्रहण कर किस तरह उन लोगोंने अपने प्राण बचाये। जब ऐमलेन-कैसल तथा सफेद महलमें सब सामानोंका पूरा पूरा प्रबन्ध होगया, तब सफेद महलमें विधवायें तथा युवतियां रखी जाने लगीं और ऐमलेन कैसलमें वे निराश्रय तथा अनाथ मनुष्य रखे जाने लगे जिनका कोई सहायक न था। फादर सोप्रियन ऐमलेन-कैसलका प्रधान रक्षक तथा स्वयं बेरोनेस सफेद महलकी अधिष्ठाती नियुक्त हुई।

इसके बाद काम आरम्भ हुआ तथा सफेद-महल और हेमलेन-कैसलमें गुप्त पथ रहनेके कारण वहांके स्त्री पुरुष खूब आनन्द लूटने लगे।

वह घादीकी घड़ी सिर्फ इस इशारेके लिये लगायी गयी थी, कि उसके बजते ही मालूम हो जाय कि आनन्द लेनेका समय आ गया है। इस अवसरके कुछ पहले ही पुरुष हेमलेन-कैसलकी सुरंगोंमें तथा स्त्रियां सफेद महलमें भडकीले वस्त्र पहनकर तय्यार रहती थीं। जब घण्टी बजती थी, तब वे सब उस बडे कमरेमें एकत्र हो जाते थे, बढ़िया बढ़िया शराब तथा शरबत सीधे फ्रान्ससे मगाये जाते थे और संसारमें जहां जहां जो जो चीजें उत्तम उत्पन्न होतीं, सभी इस महलके अधिवासियोंको तृप्त करनेके लिये मगायी जाती थी।

स्त्रियोंका आनन्द बढ़ानेके लिये बाहरके मनुष्योंको फसाकर लाने का भी नियम रखा गया था और प्रेमके लिये डेममार्थाको ही यह काम सौंपा गया था, जैसा कि लानेल और कोर्नार्डको फसाते समय पाठक जान चुके हैं। साथही पाठकोंको यह भी मालूम हो चुका है, कि वहां आने वाले मनुष्य किस तरह शपथ खिलाकर यह भेद प्रकट कर देनेसे लाचार कर दिये जाते थे और किस तरह वे महलमें लाये और फिर निकाल बाहर किये जाते थे। यदि कभी ऐसा अवसर पड़ जाता, कि वहां आने वाला पुरुष बैरोनेस-हेमलेनको पहचान जाता और उसपर अपने हृदयका भेद प्रकट करता तो वह उसे तुरत ही इस तरह मरवा डालती कि फिर उसका पता तक न लगता।

ऐसा भी होता था, कि सफेदमहलकी स्त्रियों तथा हेमलेन-कैसलके रहने वाले पुरुषोंमें विवाह भी उस अवस्थामें करा दिया जाता था, जब कि स्त्री गर्भवती हो जाती थी। इसके बाद उनको धनकी यथेष्ट सहायता दे दी जाती थी तथा वे विवाहित स्त्री पुरुष सफेद महल और हेमलेन-कैसल छोड़ किसी दूसरी ही जगह जा बसते थे।

यह भी एक नियम था, कि सर्वदा महल तथा हिमलेन कैसलके मनुष्य कैदियोंके समान तब तक बन्द रखे जाते थे, जब तक वे ऊपर लिखे अनुसार पीतलकी मूर्त्तिको पिताके उपयुक्त न समझे जाते थे। इन दोनों महलोंके नौकर भी कैदियोंके समान ही रहते थे और यद्यपि वे इस महलकी कारवाइयोंसे भलीभांति परिचित थे, तथापि पीतलकी मूर्त्ति के सम्बन्धमें कुछ भी नहीं जानते थे। इसीलिये सर अर्नेट या रेजवर्टके पूछने पर इरनक लानिस और कोनार्डके विषयमें कुछ भी न बता सका था।

अब हम अपने किस्सेका सिलसिला ठीक करनेके लिये आयशाकी ओर झुकते हैं। कुछ दिन बाद बेरोनेस आयशाको उस बड़े कमरेमें ले गयी। अभी तक उसे उस महलके सब भेद नहीं मालूम हुए थे। कुछही देर बाद फादर सोप्रियन उसको बगलमें आ बैठा। ओह, इस समय वह पादड़ी की पोशाकमें न था, बल्कि एक बड़ेही शोकीन मनुष्य तथा बहादुर नौजवानकी सी मखमली पोशाक पहने हुए था। परन्तु एकाएक उसे देखते ही आयशाके हृदयमें एक दूसरा ही भाव उदय हो गया। उसको तिर्छी दृष्टिने पहचान लिया, कि यह पादड़ी सोप्रियन है। इसलिये जब पादड़ीने उसका हाथ उठाकर चूमना चाहा तब उसने झटककर अपना हाथ छुड़ाते हुए उसे अपने पाससे हट जानेके लिये कहा। परन्तु फादरसोप्रियन कोई साधारण मनुष्य न था। उसने व्यंगसे हंसते हुए कहा, कि मैं वही मनुष्य हूं, जो पीतलकी मूर्त्तिका प्रधान सेवक हूं और जिसके सामने तुम अपनी सब गुप्त बातें प्रकट कर चुकी हो। इतना सुनते ही आयशा घबड़ाकर बेहोश हो जमीन पर गिर पड़ी और उस बड़े कमरेमें एक प्रकारकी हलचल मच गयी। उसी समय बेरोनेस-हेमलेनने आयशाको उठवाकर एक दूसरे कमरेमें भेज दिया, कितनी ही प्रकारकी दवायें दी गयीं और दूसरे दिवस

जब उसकी बेहोशी दूर हुई, तब उसने देखा, कि फादरसीप्रियन उसकी बगलमें पड़ा हुआ है तथा उसका सर्वनाश हो चुका है।

इस घटनाका विशेष वर्णन कर हम पाठकोंका हृदय नहीं दुखाया चाहते; परन्तु इतना कह देना आवश्यक समझते हैं, कि जब आयशाने देखा, कि उसका सर्वनाश हो चुका है, तब उसने अपना ढंग ही बदल दिया। वह पादड़ीके साथ प्रेम पूर्वक व्यवहार करने लगी, क्योंकि वह जानती थी, कि जरा भी सन्देह होते ही वह पीतलकी मूर्त्तिकी शिकार बनेगी। अब उसने धीरे धीरे उस सफेद-महलमें भी यही भाव दिखाना आरम्भ किया और पादड़ीके साथ ही रहने लगी। इस तरह पादड़ीको पूरा विश्वास हो गया, कि वह उसे अच्छी तरह प्यार करती है। धीरे धीरे उसे सब प्रकारकी स्वतन्त्रता मिल गयी और अब सफेद-महलमें भी वह कैदी न समझी जाने लगी।

इस तरह सफेद-महलसे भागनेका उसे अनायास ही अवसर मिल गया और वह जान जिटकाके पास जा पहुंची, तथा रो रोकर पादड़ीकी सब दुष्टता और अपने सर्वनाशका हाल जिटकाको सुनाने लगी। जिटकाके हृदयपर इस बातका बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा और उसने पादड़ीसे बदला लेनेकी दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली। पाठकोंको मालूम हो चुका है, कि जिटका जिद्दी स्वभावका मनुष्य था, अतः उसने उस सफेद-महलके बहुतसे भेद पूछने चाहे; परन्तु प्रपंचके भयसे आयशाने एक दूसरा ही किस्सा गढ़कर उसे सुनाते हुए कहा, कि "उस मठके एकान्त वाससे ऊबकर मैं प्रेमसे भाग निकली। राहमें ही एक पादड़ी मिला, जिसने मुझे दुःखी देख, आश्रय देनेका वादा किया। मैं उसके यहां जा रही। उसने धीरे धीरे चालाकीसे मेरे हृदयका सब भाव जान लिया। इसके बाद उसने प्रकट किया, कि वह मूर्त्तिका सेवक है और यदि वह उससे मिलना न चाहेगी

तो यह सुनी अहदहली पीतलकी मूर्त्तिके बनाने कर दिया। ओह! यह बात सुनी थी, मैं बेहोश हो गयी। इसके बाद जब मैं होशमें आयी, उस समय देखा, कि यह मेरा सर्वनाश कर चुका है।"

इतना सुनते ही जिठका चित्त उठा,—"यह मन बहुत दुखा। मेरे हृदयका बहुत दिनोंका दबा हुआ भाव आज फिर भभक उठा,—बहुत दिनोंसे विचारता था, कि इन अत्याचारी पादड़ियोंका नाश करूंगा; परन्तु अब विचारनेके दिन बीत गये। अब उस विचारको काममें लानेका समय आ पहुंचा और अब इन पादड़ियोंका नाश करना आवश्यक हो गया। (कुछ ठहरकर) परन्तु आयशा! इन थोड़े दिनोंके लिये, जबतक उसका नाश नहीं होता, तबतक तुझे उसी स्थानमें जाकर रहना चाहिये, जहां मैंने तुझे उस समय रख दिया था जब तेरी माता परलोक सिधारी थी और जहां तू उस दिनतक थी, जबतक मठमें न भेजी गयी थी। उस स्थानपर तेरी दोनों सहेलियां भी हैं; परन्तु यह क्या? तू उदास क्यों है? क्या तू उस स्थानपर नहीं जाया चाहती?"

आयशा बोली,—"नहीं, मेरे प्यारे चाचा! मैं वहां जानेसे नहीं हिचकती, परन्तु आपका साथ छोड़नेसे हिचकती हूं। क्योंकि पीतलकी मूर्त्तिके दलवाले न जाने मुझपर क्या अत्याचार कर बैठें और आप जानते हैं, मैं मठसे भाग आयी हूं, वे मठवाले क्या मुझपर अत्याचार न करेंगे? ओह! मैं इस समय बड़ी विपदमें हूं। मुझे इस समय जिस तरह मठवालोंसे भय है, उसी तरह पीतलकी मूर्त्तिके

अतिरिक्त मैं अपनेको शीघ्र ही एक भयानक विपत्तिमें डालना चाहता हूं, इसलिये इस संसारकी दृष्टिसे अब तुझको छिप जाना चाहिये और इसी तरह गत घटनाओंको छिपा रखना चाहिये, जिनका सम्बन्ध तेरे परिवारसे है, और अब आयशा, बिना सोचे-विचारे तू लिण्डा और बेटारिसके पास चली जाओ, वे दोनों तुझे अपने प्राणोंसे भी बढ़कर प्यार करेंगी।"

लाचार आयशाको जाना ही पड़ा और बड़े दुःखसे उसने प्रेम छोड़ा। उसी दिन बहादुर जिटकाने "मोराट टेवोरदलकी" नींव डाली और—"जानहस" की मृत्युके सम्बन्धमें बोहेमियामें जो हलचल मची, उसीका पक्ष लेकर उसने कार्य करना आरम्भ किया, जिसका जिक्र इस किस्सेमें आ चुका है।

ज्यों ज्यों दिन बीतते गये, त्यों त्यों जिटकाका दल बढ़ता ही गया और आयशाको भी आने-जानेवालोंसे सब समाचार मिलते गये। इसी तरह एक फकीरसे आयशाको एक और भी विचित्र पदार्थ मालूम हुआ। उस फकीरने कहा, कि एक प्रकारका फल बोहेमियामें उत्पन्न होता है, जिससे बहुत ही सुन्दर काला रङ्ग तय्यार होता है और शरीरपर उसके लगानेसे ही बढ़िया आबनूसका रङ्ग हो जाता है, जिसे देखनेपर बड़ा ही बुद्धिमान और तीक्ष्ण दृष्टि मनुष्य भी यह नहीं समझ सकता, कि यह रंग असली नहीं है। यह रंग धोनेसे ही बिना मसालेके नहीं निकल जाता। इस तरह यदि कितनी ही आसुओंकी बूंदें तुम्हारे गालोंपर ढलका करेंगी, परन्तु वह रंग कभी न दूर होगा। उस रंगको छुटानेके दो ही उपाय हैं, एक तो उसी वृक्षकी जड़का रस तथा दूसरा मनुष्य या पशुका रक्त, ये दो पदार्थ मलनेसे वह रंग उतर जाता है। आयशाने इसकी परीक्षाकी और उस फकीरका कथन सत्य निकला! इस तरह आयशा रंग-

बदलकर शौनलकी मूर्ति बनवा सब बातोंके लिये निश्चिन्त होगयी। इसी तरह उसने अपनेको और भी छिपानेके लिये अपना किस्सा भी दूसरी ही तरह गढ़ लिया और अपना नाम शैतानकी लड़की "शैतानी" रख लिया।

उधर लिटकाने टेबोर-दल स्थापित कर लिया था, हजारों मनुष्य उसमें सम्मिलित हो गये थे, तथा राज्य सत्ताके विरुद्ध पूरा पूरा षड्यन्त्र रचा जा रहा था। कुछ ही दिन बाद बादशाह मेंजोस मर गया और पादड़ी कोलियमको विशेष परिचय तथा अतुल विश्वास रहनेके कारण वह मरते समय अपना खजाना तथा राजकुमारी एलीजाबेथको उसीके सुपुर्द कर गया। इसके बाद एलीजाबेथको सुरक्षित स्थानमें रखनेके बहाने, वह उसे सफेद महलमें ले गया और वहां कोलियमकी राजकुमारी ऐलीजाबेथका भी उसी तरह सर्वनाश किया गया; जिस तरह चायशाका किया गया था।

फिर इसमें आश्चर्यकी क्या बात थी, यदि वह पादड़ीकी बातें सुन उस समय कांप उठी थी, जब कि ऐडवर्ट 'सर अर्नेस्ट डी कोमर' के वेषमें उससे मिलने गया था, अथवा उस समय जब, कि रोडल्फका उससे विवाह हुआ चाहता था। हां, वह पादरीकी घड़ी और सफेद महलके नामसे ही कांप उठती थी, क्योंकि वह जानती थी, कि सफेद महलके दुराचारोंका भण्डा फूटतेही वह किसी कामकी न रह जायगी और दुःख, भय तथा निराशामें उसे प्राण त्यागना पड़ेगा। यही कारण था; कि उस महल तथा घंटीकी घड़ीकी याद दिलाकर दुष्ट पादड़ी उसे अपने वशमें कर लेता था।

अब हम फिर चायशाकी ओर झुकते हैं। ज्यों ही उसने अपना नाम तथा वेश बदला, त्यों ही वह प्रेगके पास ही पड़े हुए अपने [illegible] के पड़ावमें जा पहुंची। लिटकाके उसका सम्बन्ध एक

गया और पूछने वालोंको एक दूसरे ही प्रकारका आश्चर्य जनक किस्सा गढ़कर सुनाया जाने लगा। तथा जिटकाके विषयमें तो यही प्रसिद्ध था, कि वह अनाथोंका आश्रयदाता और वही काम करने वाला है, जिससे संसारका उपकार होता है। अत एक अनाथा, दुःखिनी, निर्बोध बालिकाको आश्रय देना उसके लिये कोई आश्चर्य की बात नहीं है। आन जिटकाने भी यही बात प्रचारित करनेमें प्रश्रय दिया तथा आयशा आदरसे जिटकाके साथ ही रहने लगी।

पाठकोंको स्मरण रखना चाहिये, कि उस समय मठोंका बहुत ही अधिक प्रभाव फैला हुआ था और गिर्जेमें विवाह तथा अन्य प्रकारकी की हुई शपथोंका बहुत ही मान्य था तथा ये शपथ बिना किसी उचित और प्रभावशाली कारणके नहीं तोड़ी जा सकती थी। इस तरह यद्यपि आयशाने मठका सम्बन्ध त्याग दिया था और सुधारक दलमें सम्मिलित हो गयी थी, तथापि वह अच्छी तरह समझती थी, कि जब तक उचित रीतिसे शपथ भंग न की जायगी तब तक वह स्वतंत्र नहीं हो सकती। साथही वह यह भी जानती थी, कि यदि नियत समयके भीतर वह मठमें न चली जायगी, तो उसके नाम,तथा सूरत शक्लका प्रचार कर उसे पकड़नेके लिये मनुष्य छोड़े जायगे और सब गिर्जो में यह समाचार भेज दिया जायगा। इस तरह यदि कभी उसे विवाह करनेका अवसर आ पड़ा तो किसी गिर्जेमें जाकर वह विवाह न कर सकेगी और गिर्जेमें पैर रखतेही पकड़ी जायगी।

गिर्जे वाली बातका भय दूर करनेका उसने एक उपाय रचा और अपनी सहेली लिण्डाको उस मठकी अधिष्ठात्रीके पास वह प्रतिज्ञा पत्र लानेके लिये भेजा, जिसपर उसने यावज्जीवन देवताकी सेवा करनेकी प्रतिज्ञा की थी, क्योंकि वह नहीं जानती थी, कि वह बुड्ढी फादर सोमियमसे मिली हुई है। बल्कि वह यही जानती थी, कि पीतलकी

मूर्तिसे इसका कोई सम्बन्ध है और पादरीको कुछ सामान्य ज्ञान पहिचान है। अब इसी भरोसे उसे विश्वास था, कि उसका भेद प्रकट न होगा।

इस मठकी अधिष्ठातीने लिटकाका बड़ा स्वागत किया और उसकी बात बड़ी खुशीसे स्वीकार कर ली। आयशाकी ओर से उसे एक बड़ी रकम देनेकी प्रतिज्ञा की गई और उस मठकी अधिष्ठातीने प्रतिज्ञा की कि वोएरी यह गुप्त बोतिसे एक पत्र लगाकर उसकी इच्छा पूर्ण कर देगी। यही समाचार लेकर लिटका आयशाके पास पहुंची। लिटकाके कामोंमें भी इस बातको अलक बड़ी और सुधारक रखनेके कारण यह कठिनतासे इस कार्य्यको पूरा करनेके लिये तय्यार हुआ। इसके बाद ही टेवोर समा-दल उस गिर्जेके पास ही जा पहुंचा। इसके बाद उस मठकी अधिष्ठातीने कहलाया गया, कि आयशा कुछ दिनके लिये यहां आयी है और इसी अवसरपर सब काम हो जाने चाहिये। सरदार लिटकाने यह भी प्रतिज्ञा की, कि वह रोमन कैथोलिक दल वालेको किसी प्रकारका कष्ट न देगा और इसी लिये मठकी अधिष्ठातीको टेवोरोंका गुप्त संकेत भी बता दिया गया था, जिससे कि वह अपने सम्बन्धके मनुष्योंको आसानीसे बुला सके। बस इन सब बातोंके स्थिर हो जानेपर गुप्त रूपसे यह समाचार फादर लोयिलनको भेज दिया गया, जो वहांसे थोड़ी ही दूरपर रहता था।

एकसौ दो परिच्छेद।

पिछली बातोंका अन्त।

यह उसी समय की घटना है, जब कि सर अर्नेस्ट ही कीमर नामधारी ऐलवर्ट बोहेमियामें सफर करता हुआ, टेवोराइट-पड़ावमें आकर ठहरा था। लिटकाको टरकिश युद्धमें लड़ने तथा आस्ट्रियाके इस

गया और पूछने वालोंको एक दूसरे ही प्रकारका आश्चर्य्य जनक किस्सा गढ़कर सुनाया जाने लगा तथा जिटकाके विषयमें तो यही प्रसिद्ध था, कि वह अनाथोंका आश्रयदाता और वही काम करने वाला है, जिससे संसारका उपकार होता है। अत एक अनाथा, दुःखिनी, निर्बोध बालिकाको आश्रय देना उसके लिये कोई आश्चर्य्यकी बात नहीं है। जान जिटकाने भी यही बात प्रचारित करनेमें प्रश्रय दिया तथा आयशा आदरसे जिटकाके साथ ही रहने लगी।

पाठकोंको स्मरण रखना चाहिये, कि उस समय मठोंका बहुत ही अधिक प्रभाव फैला हुआ था और गिर्जेमें विवाह तथा अन्य प्रकारकी की हुई शपथोंका बहुत ही मान्य था तथा ये शपथ बिना किसी उचित और प्रभावशाली कारणके नहीं तोड़ी जा सकती थी। इस तरह यद्यपि आयशाने मठका सम्बन्ध त्याग दिया था और सुधारक दलमें सम्मिलित हो गयी थी, तथापि वह अच्छी तरह समझती थी, कि जब तक उचित रीतिसे शपथ भंग न की जायगी तब तक वह स्वतंत्र नहीं हो सकती। साथही वह यह भी जानती थी, कि यदि नियत समयके भीतर वह मठमें न चली जायगी, तो उसके नाम,तथा सूरत शक्लका प्रचार कर उसे पकड़नेके लिये मनुष्य छोड़े जायगे और सब गिर्जों में यह समाचार भेज दिया जायगा। इस तरह यदि कभी उसे विवाह करनेका अवसर आ पड़ा तो किसी गिर्जेमें जाकर वह विवाह न कर सकेगी और गिर्जेमें पैर रखतेही पकड़ी जायगी।

गिर्जे वाली बातका भय दूर करनेका उसने एक उपाय रचा और अपनी सहेली लिण्डाको उस मठकी अधिष्ठातीके पास वह प्रतिज्ञा पत्र लानेके लिये भेजा, जिसपर उसने यावज्जीवन देवताकी सेवा करनेकी प्रतिज्ञा की थी, क्योंकि वह नहीं जानती थी, कि वह बुड्ढी फादर हुई है। बल्कि वह यही जानती थी, कि पीतलकी

दुनियाँ उसका और अन्दाज है और पादड़ीको कुछ मालूम नहीं पड़ता है। अब इसी भरोसे सभी विद्वान था, कि उसका भेद प्रकट न होगा।

उस मठकी अधिष्ठातीने निश्चाका बड़ा सत्कार किया और उसकी बात बड़ी खुशीसे स्वीकार कर ली। आयशाकी ओर से उसे एक बड़ी रकम देनेकी प्रतिज्ञा की गई और उस मठकी अधिष्ठातीने प्रतिज्ञा की, कि योगमें यह गुप्त रीतिसे एक पत्र लगाकर उसकी इच्छा पूर्ण कर देगी। यही समाचार लेकर निश्चा आयशाके पास पहुँची। लिटकाके कानोंमें भी इस बातकी भनक पड़ी और सुधारक रखनेके कारण यह कठिनताओं इस कार्यको पूरा करनेके लिये तय्यार हुआ। इसके बाद ही टेवोर समा-दल उस निर्धनके पास ही जा पहुँचा। इसके बाद उस मठकी अधिष्ठातीने कहलाया गया, कि आयशा कुछ दिनके लिये यहाँ आयी है और इसी अवसरपर सब काम हो जाने चाहिये। सरदार-लिटकाने यह भी प्रतिज्ञा की, कि यह रोमन कैथोलिक दल वालेको किसी प्रकारका कष्ट न देगा और इसी लिये मठकी अधिष्ठातीको टेवोरीका गुप्त संकेत भी बता दिया गया था, जिससे कि वह अपने मन्त्रणाके मनुष्योंको आसानीसे बुला सके। यह सब बातोंके स्थिर हो जानेपर गुप्त रूपसे यह समाचार फादर ओब्रियनको भेज दिया गया, जो यहाँसे थोड़ी ही दूरपर रहता था।

एकसौ दो परिच्छेद।

पिछली बातोंका अन्त।

यह उसी समय की घटना है, जब कि सर अर्नेस्ट ही कीमर नाम-धारी रिचर्ट बोहेमियामें सफर करता हुआ, टेवोराइट-पड़ावमें आकर ठहरा था। लिटकाको टर्किश युद्धमें छोड़ने तथा, आस्ट्रियाके इस

गया और पूछने वालोंको एक दूसरे ही प्रकारका आश्चर्य जनक किस्सा गढ़कर सुनाया जाने लगा तथा जिटकाके विषयमें तो यही प्रसिद्ध था, कि वह अनाथोंका आश्रयदाता और वही काम करने वाला है, जिससे संसारका उपकार होता है। अत. एक अनाथा, दुःखिनी, निर्बोध बालिकाको आश्रय देना उसके लिये कोई आश्चर्य की बात नहीं है। जान जिटकाने भी यही बात प्रचारित करनेमें प्रश्रय दिया तथा आयशा आदरसे जिटकाके साथ ही रहने लगी।

पाठकोंको स्मरण रखना चाहिये, कि उस समय मठोंका बहुत ही अधिक प्रभाव फैला हुआ था और गिर्जेमें विवाह तथा अन्य प्रकारकी की हुई शपथोंका बहुत ही मान्य था तथा ये शपथ बिना किसी उचित और प्रभावशाली कारणके नहीं तोड़ी जा सकती थी। इस तरह यद्यपि आयशाने मठका सम्बन्ध त्याग दिया था और सुधारक दलमें सम्मिलित हो गयी थी, तथापि वह अच्छी तरह समझती थी, कि जब तक उचित रीतिसे शपथ भंग न की जायगी तब तक वह स्वतंत्र नहीं हो सकती। साथही वह यह भी जानती थी, कि यदि नियत समयके भीतर वह मठमें न चली जायगी, तो उसके नाम,तथा सूरत शक्लका प्रचार कर उसे पकड़नेके लिये मनुष्य छोड़े जायगे और सब गिर्जों में यह समाचार भेज दिया जायगा। इस तरह यदि कभी उसे विवाह करनेका अवसर आ पड़ा तो किसी गिर्जेमें जाकर वह विवाह न कर सकेगी और गिर्जेमें पैर रखतेही पकड़ी जायगी।

गिर्जे वाली बातका भय दूर करनेका उसने एक उपाय रचा और अपनी सहेली लिण्डाको उस मठकी अधिष्ठातीके पास वह प्रतिज्ञा पत्र लानेके लिये भेजा, जिसपर उसने यावज्जीवन देवताकी सेवा करनेकी प्रतिज्ञा की थी, क्योंकि वह नहीं जानती थी, कि वह बुड्ढी फादर कोप्रियनसे मिली हुई है। बल्कि वह यही जानती थी, कि पीतलकी

बुलिंगे उसका कोई सम्बन्ध है और पादड़ीको कुछ सामान्य ज्ञान पहिचान है। बस इसी भरोसे उसे विश्वास था, कि उसका भेद प्रकट न होगा।

उस मठकी अधिष्ठातीने लिटकाका बड़ा स्वागत किया और उसकी बात बड़ी खुशीसे स्वीकार कर ली। आयशाकी ओर से उसे एक बड़ी रकम देनेकी प्रतिज्ञा की गई और उस मठकी अधिष्ठातीने प्रतिज्ञा की, कि योपसे यह गुप्त रीतिसे एक पत्र मंगाकर उसकी इच्छा पूर्ण कर देगी। यही समाचार लेकर लिटका आयशाके पास गई थी। लिटकाके आनेसे भी इस बातकी अत्यन्त बड़ी और सुधारक रहनेके कारण यह कठिनताभी इस कार्य्यको पूरा करनेके लिये तय्यार हुआ। इसके बाद ही टेवोर समा-दल उस गिर्जेके पास ही जा पहुंचा। इसके बाद उस मठकी अधिष्ठातीसे कहलाया गया, कि आयशा कुछ दिनके लिये यहां आयी है और इसी अवसरपर सब काम हो जाने चाहिये। सरदार-लिटकाने यह भी प्रतिज्ञा की, कि वह रोमन कैथोलिक इस बातको किसी प्रकारका कष्ट न देगा और इसी लिये मठकी अधिष्ठातीको टेवोरीका गुप्त संकेत भी बता दिया गया था, जिससे कि वह अपने सम्बन्धके मनुष्योंको आसानीसे बुला सके। यह सब बात बातोंके स्थिर हो जानेपर गुप्त रूपसे यह समाचार फादर कौंप्रियनको भेज दिया गया, जो वहांसे थोड़ी ही दूरपर रहता था।

एकसौ दो परिच्छेद।

पिछली बातोंका अन्त।

यह उसी समय की घटना है, जब कि सर अर्नेस्ट ही कीमर नाम-धारी ऐलवर्ट बोहेमियामें सफर करता हुआ, टेवोराइट-पड़ावमें आकर ठहरा था। लिटकाकी टरकिश युद्धमें लड़ने तथा आस्ट्रियाके

राजाको कई बार देखनेका अवसर मिलनेके कारण, उसने ऐलवर्टको देखतेही पहचान लिया, परन्तु उसे न पहचाननेका बहाना दिखाते हुए बड़े प्रेम तथा आदरसे उसका स्वागत किया। साथही उसने मनही मन यह भी विचारा, कि ऐलवर्टके इस आगमनसे कुछ लाभ उठाना चाहिये और उसका यह विचार उस समय और भी दृढतर हो गया, जब उसने देखा, कि आयशाकी अलौकिक सुन्दरताका ऐलवर्ट पर बहुतही अधिक प्रभाव पड़ा है; जो कि उस समय शैतानीका वेश धारण किये हुए थी। इसके अतिरिक्त ऐलवर्टकी मनोहर सुन्दरताने आयशाके हृदय पर भी अपना विलक्षण प्रभाव जमा लिया था और संध्याके समय जब दोनों अलग हुए, तब जिटकासे मालूम हुआ, कि आयशाके हृदयमें ऐलवर्टकी ओर भयानक प्रेमाग्नि भड़क उठी है।

अन्तमें शपथ भंग करनेके कार्य्यका अवसर आ पहुंचा और फिर उस घटनाका समय आया जब कि गिर्जेमें वह घटना घटी थी, कि सर अर्नेस्ट गिर्जेसे आयशाको बाहर उठा लाया था। घटनाके प्रभावके कारण ही अचानक ऐलवर्ट उस गिर्जेमें जा पहुंचा और उसे पादड़ीके हाथोंसे बचा सका था। पादड़ीकी इच्छा थी, कि वह आयशाको उठा ले जाये। मठकी अधिष्ठात्री उसकी सहायिका थी। इसी लिये पीतलकी मूर्त्तिके दलके बारह बहादुरोंको भी वह अपने साथ ले आया था, और यह तय हो गया था, कि यदि आयशाको भगानेमें जिटका किसी प्रकारकी बाधा दे तो ये बारह मनुष्य उसे रोकें तथा पादड़ी जिटकाके कामों पर ध्यान रखे। इस लिये जब फादर सोप्रियन आयशा पर झपटा और जिटका उस मठ में घुसा, तब उन्हीं मनुष्योंने धोखेमें जिटका पर प्रहार किया, जिससे वह बेहोश हो भूमि पर गिर पड़ा। परन्तु भाग्यवश उसी समय बहादुर ऐलवर्ट उस मठमें जा

पड़ा और इस तरह आयशाका उद्धार हुआ। इसके अतिरिक्त उस लड़की अन्यान्य घटनाओंसे पाठक भलीभांति परिचित हैं। अपनी बार देख खादर कोविथम प्रेमसे भाग गया और जिटकाने आयशा-का भेद खुल जानेके भयसे इस विषयमें कुछ समझकर उन लोगोंको बाधा देना उचित न समझा।

जिटका ऐल्वर्टकी उदारता, बहादुरी तथा सज्जनताको देख बहुत ही प्रसन्न था। उसने अपना मतलब साधनेके अभिप्रायसे ऐल्वर्टको यह अंगूठी दी थी, जिसे टेलीरदलके सभी मनुष्य पहचानते थे, और जिसका यह प्रभाव था, कि ऐल्वर्टके लिये कामें भी बाधा न पड़ सकती थी।

अपने मामा जिटकासे ऐल्वर्टका प्रकृत परिचय पाने तथा उसकी सुन्दरता पर मोहित हो जानेके कारण आयशा प्रेममें बराबर उससे मिलती रही। कभी वह ग्रेलानी और कभी आयशाके वेशमें उससे इसी लिये मिलती थी, कि देखूं किस वेशका उसपर अधिक प्रभाव पड़ता है और कुछ ही दिन बाद उसे मालूम होगया, कि दोनोंही वेशमें वह उसे आयशा प्यार करता है।

इसके बाद चालाकी तथा धूर्तताका काम आरम्भ हुआ। क्योंकि जिटकाने देखा, कि बोहेमियाके कारबारमें बिना आस्ट्रियाके कोई दूसरा हस्तक्षेप करने वाला राज्य नहीं है। आस्ट्रियाके पास उस समय एक अर्वदल सेना थी और जिटका अच्छी तरह जानता था, कि ऐल्वर्टके जोड़का कोई दूसरा योद्धा इस समय नहीं है, इसीलिये जब उसने देखा कि आयशाकी सुन्दरताका प्रभाव ऐल्वर्ट पर बहुत ही अधिक पड़ गया है, तथा उसकी रूप-सुधा पाकर वह उन्मत्त हो रहा है, तब उसने अपनी चाल आरम्भ की।

वह ऐल्वर्टको कैदकर तथा आस्ट्रिया पर दबाव डालकर मनमाना

इसके बाद शैतानसे युद्ध वाली घटनाका समय आ पहुंचा और अब यह कहना वृथा ही मालूम होता है, कि वह योद्धा, जिसे ऐलवर्ट न जीत सका था जिटकाके अतिरिक्त कोई दूसरा न था। उसने शैतानके वेशमें ऐलवटसे जो शर्त्तें करायी थीं, वे उसके तथा उसकी भांजी आयशाके स्वार्थसे परिपूर्ण थीं। क्योंकि पहली शर्त्त यही थी, कि उसे शीघ्रही प्रेग त्याग देना चाहिये और दूसरी यह थी, कि बोहेमियाके कारबारके सम्बन्धमें वह एक वर्ष तक किसी प्रकारका हस्तक्षेपन करे। इन शर्त्तोंसे जिटका का स्वार्थ अच्छी तरह पूर्ण होता था; क्योंकि ऐलवटके आस्ट्रिया चले जानेपर जिटका बोहेमियामें मनमाना उलटफेर कर सकता था। तीसरी तथा चौथी शर्तों मेंसे एकमें उसने ऐलवर्टको शैतानीसे फिर भेंट करनेके लिये मना किया था तथा दूसरीमें आयशाको अपने साथ लेजानेकी प्रतिज्ञा कराई थी; क्योंकि आयशाको पूरा विश्वास था, कि शैतानीकी ओरसे निराश होने तथा कुछ दिनों तक उसके साथ रहने पर ऐलवर्ट उसे प्यार करने लगेगा।

इसके बाद गोल्डन-फैकनमें शैतानीके वेशमें वह उससे इसी लिये मिली थी, कि दूसरे दिन आयशाके रूपमें उससे मिलनेकी प्रतिज्ञा करा ले। यही हुआ और दोनों मोल्डाव नदीके तटपर मिले। और यही वह अवसर था, जब कि आयशाके खंजरने बुड्ढी डेम मार्थाका रक्त पान किया था। यद्यपि वह जानती थी, कि इस घटनाने ऐलवर्टके चित्तमें विकार उत्पन्न कर दिया है, तथापि उसे विश्वास था, कि यह काम उसने अपनी जान बचानेके लिये किया था, अतः यह किसी प्रकारका अपराध नहीं है, और यही कारण था। कि वह समझती, कि आयशाके वेशमें रहने पर भी वह शैतानीकी भांति ही ऐलवर्टका हृदय विजय कर सकेगी। परन्तु जब प्रेगसे जाते समय दक्षिण दरवाजे पर दोनों

मिले तब आयशाने देखा, कि ऐलवर्ट यद्यपि उससे प्रेम पूर्वक व्यवहार करता है, तथापि प्रेमानीके समान प्रेम-दृष्टिसे नहीं देखता।

पाठक आयशाके भय तथा विस्मयका पता इसी बातसे लगा सकते हैं, कि जब ऐलवर्टने सफेद महलमें जानेका हाल प्रकट किया, तब आयशा कितनी डर गयी थी; परन्तु उसने अपनी चालाकीसे यह बिलकुल प्रकट न होने दिया, कि वह कभी उस महलमें रहती थी। अब एक दूसरी बाधाके रूपमें अरमक आ पहुंचा। आयशाको उसने उस समय देखा था, जब कि वह सफेद महलमें रहती थी। उसे देखते ही वह उसपर आसक्त हो गया था। यद्यपि अरमककी अवस्था उस समय पचूस वर्षकी थी, तथापि कामका प्रभाव उसपर बहुतही अधिक पड़ा था और इसीलिये उसने कईबार आयशाके पैरोंपर गिरकर उससे प्रेम भिक्षा मांगी थी, परन्तु आयशाने उसकी बात न मानी और इसके थोड़े ही दिन बाद वह सफेद महलसे भाग गयी। अब अरमकका भी उस महलमें जी न लगने लगा और वह किसी तरहसे उस महलसे निकल भागनेका उपाय सोचने लगा। इसी तरह दो वर्ष बीत गये और अन्तमें वह अवसर आ पहुंचा, जब कि ऐलवर्टने उसे सफेद-महलसे मुक्त किया और फिर आयशा तथा अरमककी आपसमें इस तरह भेंट हुई।

परन्तु इस बार अरमकको देखते ही आयशाका क्रोध भड़क उठा। यद्यपि आयशा किसी तरहका अपकर्म नहीं किया चाहती थी तथापि वह यह बर्दाश्त कभी नहीं कर सकती थी, कि ऐसा कोई काम हो, जिससे उसका प्यारा उसे घृणाकी दृष्टिसे देखने लगे। आस्ट्रियन नाइटकी ओर उसका जितना बढ़ा हुआ प्रेम था वह पागलपनकी अवस्थापर आ पहुंचा था। इसके बाद अरमकने उसे भेद खोलनेका डर दिखाया और आयशाने उसकी हत्याकी; परन्तु ओह!

ताकत नहीं, कि आयशाकी उस समयकी अवस्था, घबड़ाहट, दुःख तथा भयका वर्णन कर सके। जब उसने देखा, कि अर्नेस्टने अपनी आखों उसे अरमकको हत्या करते देख लिया, तब वह उसी समय समझ गयी, कि आयशाके रूपमें अब अर्नेस्टका प्रेम प्राप्त करनेकी सब आशा दुराशा हो गयी। इसीलिये उसने वीरतासे अपना अपराध स्वीकार कर लिया; क्योंकि उसे विश्वास था, कि उसके मार्गमें किसी प्रकारकी अड़चन न आ पड़ेगी और अपने विचारके अनुसार ही वह शैतानीका रूप धारण कर वहासे भाग गयी।

रात्रिके समय वह फिर अपने प्यारे ऐलवर्टसे मिलनेके लिये आ पहुंची, परन्तु इस समय वह शैतानीके रूपमें थी; क्योंकि आयशाके रूपमें ऐलवर्टकी प्रेम पात्री बननेकी सब आशा दूर हो गयी थी, अत उसने यही निश्चित किया, कि जन्म भर काला रग धारण कर ही अपने प्रिय ऐलवर्टके पास रहेगी। अब एक दूसरी अड़चन ऐ जोलाकी थी, जो योद्धाके रूपमें ऐलवर्टके साथ आ रही थी, अत उसे किसी तरह भगानेके अभिप्रायसे आयशा अपने असली रूपमें उस कमरेमें घुसी, जिसमें वह सोयी हुई थी। अभी तक आयशाके हृदयमें इस बातका सन्देह भी न था, कि योद्धाके रूपमें यह कोई स्त्री है; परन्तु जब चुपचाप उस कोठड़ीमें घुसकर उसने देखा, कि यह स्त्री है, तब तो उसके आश्चर्यका ठिकाना न रहा और इससे भी बढ़कर आश्चर्य उसे उस समय हुआ, जब उसने पहचाना, कि यह ऐ जोला है।

अब सब बातें पाठकोंके सामने प्रकट कर दी गयीं। अब जब ऐलवर्टके साथ शैतानीके रूपमें आयशा उस स्थानपर पहुंची, जहां इंडर-महल था, तब उसके हृदयमें एकाएक यह विचार उत्पन्न कि अब वह निश्चय आस्ट्रियाकी रानी हो जायगी, अत. अन्तिम

बारके लिये उसे अपना जन्मस्थान अवश्य देख लेना चाहिये। यही सोचकर वह ऐलवर्टको उस महलमें ले गयी; परन्तु वहां पहुंचते ही उसके सब विचारोंका अन्त हो गया।

जब वह ऐलवर्टके साथ उस गन्दे इन्डर-महलमें पहुंची, उस समय उसे गत समयकी घटनायें स्मरण आ गयीं और वे दृश्य उसकी आंखोंके सामने छा गये, जो बड़े ही दुःखमय थे। उनके आंखोंके सामने आते ही वह कातर हो गयी और उसका कठोर हृदय विचलित कर पानी हो गया। इसके बाद जब उसका साथी ऐलवर्ट, उससे अन्य दोनों किलोंके विषयमें पूछने लगा, तब उसपर एक प्रकारकी घबड़ाहट छा गयी और वह उससे वहांसे भाग चलनेके लिये बार बार प्रार्थना करने लगी, परन्तु इसके बाद ही वर्नार्ड आ पहुंचा और उसके आगमनने आयशापर और भी आतङ्क छा दिया। इसीलिये जब ऐलवर्ट तथा वर्नार्ड बातें करने लगे, तब आयशा बड़ी ही आश्चर्यजनक दृष्टिसे उनकी ओर देख रही थी। वहांके हरएक पदार्थ उसके हृदयमें दुःख उत्पन्न कर रहे थे और यद्यपि उन किलोंकी दुर्दशाके समय वह केवल छः वर्षकी थी, तथा इसी अवस्थामें अपनी माताके साथ मेनफ्रो महलमें कैद हुई थी, तथापि उस बुड्ढेका चेहरा देखते ही उसे स्मरण हो गया, कि इसे उसने पहले भी कभी देखा था। इसीलिये उसने उसका चेहरा देखते ही उसका परिचय पूछा था। जो उत्तर मिला उससे उसकी चिन्ताकी मात्रा और भी बढ़ गयी। इसलिये वह वहांसे भागनेके लिये घबड़ा उठी, परन्तु इसके बाद ही घटनाका प्रभाव आरम्भ हुआ। बादहीं सोप्रियनका आक्रमण हुआ और ऐलवर्टको वर्नार्डके इतिहास सुननेका पूरा पूरा अवसर मिल गया। इसके बाद उसकी गिरफ्तारीका परवाना लेकर सिपाही आ पहुंचे; क्योंकि जिटकाको खबर मिल गयी थी, कि आयशा खूनी है और

उसकी आत्माने ऐलवर्टको सावधान कर देना और उसे अपनी स्त्री न बनानेके लिये सूचना दे देना उचित समझा।

सरदार-जिटकाकी आज्ञानुसार आयशा पकड़कर प्रेग पहुंचाई गई तथा उसे एकान्त स्थानमें रहनेकी आज्ञा मिली। इस अवस्थामें भी उसकी सहेलियां उसके पास ही रहीं और इस तरह एक सप्ताह बाद ही उसे भाग जानेका अवसर मिल गया। वह अपने मामासे भी अप्रसन्न हो गयी; क्योंकि उसीने ऐलवर्टको सावधान कर दिया था, अतः उसने जिटकासे भी बदला लेनेकी दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली। इस समय अल्टन-महल पर टेवोराइट-दलका आक्रमण आरम्भ हो चुका था और कितनी ही गहरी लड़ाइयां भी हो गयी थीं, इसी अवसरपर अपने मामासे बदला लेनेके लिये आयशा उसी समय वहां पहुंची, जब घटनाचक्रके प्रभावसे ऐंजीला भी उसके पास पहुंच गयी थी। आयशाने अपने मामा जिटकाको मार डालना ही विचारा था, इसीलिये वह उसके खेमेके पास ही छिपी हुई मौका देख रही थी। कुछ ही देर बाद ऐंजीलाके साथ सरदार-जिटका बाहर निकला और दोनों घूमते हुए उसी ओर चल पड़े जिधर आयशा छिपी हुई थी। वह शेरनीकी भांति जिटकापर झपटना ही चाहती थी, कि इसी समय उसके मुंहसे निकले हुए कुछ शब्दोंकी भनक उसके कानमें पड़ी और वह आश्चर्य्यसे जहांकी तहां ही बैठी रह गयी, क्योंकि उन शब्दोंसे उसे केवल इतना ही नहीं मालूम हुआ, कि वह स्त्री ऐंजीला-विल्डन है, बल्कि उसे यह भी ज्ञात हो गया, कि यह स्वयं सरदार-जिटकाकी कन्या है।

इतनी बात ध्यानमें आते ही ईर्ष्या तथा प्रेमकी आग उसके हृदयमें धधक उठी; क्योंकि उसे सन्देह हो गया, कि ऐंजीला ऐलवर्ट-
करती है और अब जिटकाकी कन्या रहनेके कारण वह

अपराध ही अपना अभिलषित वर प्राप्त कर सकती है। इसलिये उसने अपने भागाके पहले ऐ लोला पर ही अपना हाथ साफ करना चाहा और एक ही वारमें दोनों काम निकालना विचारा; क्योंकि इसीसे लिटकाका भी बदला पूरा हो जाता। इसीलिये अस्टन-महलके तहखाने तक उसने उन दोनोंका पीछा किया; परन्तु ईश्वरने उसे इस घोर पाप कर्मसे बचा लिया; क्योंकि अन्धकारमय तहखानेमें कुछ देरतक भटकने बाद, आयशा "पीतलकी मूर्त्ति" वाले कमरेमें ठीक उसी समय जा पहुंची, जब कि उसका नाश करने वाला धोखे-बाज पादड़ी पीतलकी मूर्त्तिके भीतरी भागको परीक्षा कर रहा था। ओह! उसे देखते ही लिटका तथा ऐ लोलाकी ओर उसका समस्त क्रोध उसीकी ओर भभक उठा और उसने पादड़ीको उसी समय परलोक पहुंचाकर अपना कलेजा ठण्डा किया। इसके बाद वह फिर पकड़ी गयी।

परन्तु अस्टन-महलसे भी वह अपने प्राणों पर खेलकर बाहर निकल गयी; क्योंकि कैद रहनेकी अपेक्षा वह अपनी जवानीमें मर जाना ही उत्तम समझती थी। इसके बाद अपनी दोनों सहेलियोंको (जिन्हें वह अस्टन महलके पास जङ्गलमें छोड़ आयी थी) साथ ले समस्त यूरोपमें चक्कर लगाती रही और अन्तमें जब उसे ऐ लोला और ऐलवर्टके विवाहका समाचार मिला तब एकबार उनसे मिलना निश्चित कर वह उनके पास ऐक्स-ला-चैपेलमें जा पहुंची।

उसके मिलनेका सब हाल पहले ही वर्णन किया जा चुका है, और अन्तमें यह भी कहा जा चुका है, कि आयशा बिना किसीको साथ लिये, केवल आंखोंमें आंसू भर, वहांसे रवाना हो गयी।

परन्तु अब वह हम लोगोंको कहां मिलेगी? उसका भटकना उसे कहां पहुंचायेगा? और अब उसके लिये क्या बाकी रह गया है?

पाठक ! ऐसा कदापि न समझें, कि उस विचित्र स्त्रीका पूरा हाल बताये बिना ही यह ग्रन्थ समाप्त हो जायगा।

एकसौ तीन परिच्छेद।

उपसंहार।

अब यह किस्सा समाप्त ही हुआ चाहता है। अब हमें थोड़ी ही बातें और बतानी बाकी हैं। थोड़ा ही वर्णन उन पुरुषोंका समस्त हाल प्रकट कर देगा, जिनका जिक्र इस ग्रन्थमें आ चुका है और इस तरह पाठकोंके हृदयका रहा सहा सन्देह भी दूर हो जायगा।

इसके पहले ही हम बता चुके हैं, कि अलटन-महलपर जिटकाका अधिकार हो गया था, साथ ही हम लोग पीतलकी मूर्त्तिकी दुर्दशा भी अच्छी तरह देख चुके हैं, अब उसका दल नाश हो गया था और यह घटना किस्से कहानीकी भांति सुनकर लोग भीत, चकित तथा स्तम्भित होते थे। जिस समय यह समाचार प्रेगमें पहुंचा, उस समय हेमलेन कैसल तथा सफेद महलके सब अधिवासी उस सुसज्जित महलको छोड भाग गये और कितने ही जबदस्ती बोहेमियासे निकाल बाहर किये गये। इस तरह उस भयानक मूर्त्ति और उसके दलका तो सदाके लिये नाश हो गया; परन्तु उसका नाम न मिटा और केवल बोहेमियामें ही नहीं, बल्कि जर्मनीमें भी अभी तक कितने ही मनुष्योंकी जबानी इसका भयानक हाल किस्से कहानीकी भांति सुननेमें आता है।

अलटन महलसे हटाये जानेपर ड्यूक-अलटन अपने पुत्रके शोकमें एक प्रकारसे पागल हो गया। अपने कैद होनेके एक वर्ष बाद वह बीमार पड़ा और अपने अन्त समयमें, प्रेगके महलमें वह पीतलकी मूर्त्ति और उसके भयानक मन्त्रोंके विषयमें भी प्रलाप बकने लगा और

ज्यों ज्यों उसका समय निकट आता गया, त्यों त्यों उसे ऐसा ही मालूम होने लगा, मानों वह स्वयं पीतलकी मूर्त्तिका बलिदान चढ़ता जा रहा है। ओह! उसकी मृत्यु बड़ी ही भयानक हुई, बड़ी कठिनताके उसके प्राण गये, क्योंकि मरते समय तक वह यही सोच रहा था, कि वह पीतलकी मूर्त्तिमें टकिल दिया गया है और वे भीषण चर्त्तियां उसके शरीरके टुकड़े टुकड़े कर काट रही हैं। इसमें सन्देह नहीं, कि उसने कल्पना द्वारा ही यह दण्ड भोग लिया, जो पीतलकी मूर्त्तिके आगे बलिदान चढ़ने वालोंको यथार्थमें भोगना पड़ता था।

कायराके एक मा नेपेल छोड़नेके थोड़े ही दिन बाद 'कोण्ट लानेल बार्लेन'का विवाह 'लिज़ा'से तथा 'पेरम कोनार्ड डो पिर्ना' का विवाह 'बेटारिस' से बड़ी धूमधामके साथ शाही गिर्जेमें हुआ और स्वयं सम्राट तथा सम्राज्ञीने इस शुभ कार्य्यमें योग दान दिया। लानेल और कोनार्ड दोनों ही सदा शाही मण्डलमें ही रहे, उनको बड़ी उन्नति हुई और जब वे अन्त समयमें कब्रमें दफनाये गये, तब कई सन्तानें अपनी अगाध सम्पत्ति तथा सम्मानका उपभोग करनेके लिये छोड़ गये।

इसी तरह सम्राट तथा सम्राज्ञीको भी कई लड़के तथा लड़कियां हुईं। लड़कोंने ऐलवर्टका स्वरूप तथा अनुकरणीय सुयश पाया और कन्याओंने अपनी माताकी अलौकिक सुन्दरता तथा हृदयकी महानता प्राप्त की। अन्तमें बुढ़ापा पारकरके माता, पोते तथा लड़कोंसे घिरे हुए दोनों शान्तिसे परलोक सिधारे।

धर्म्मात्मा मनोर्डने भी बड़ा सुख पाया और जब कभी सम्राट तथा साम्राज्ञीके लड़कोंको अपने जर्जरित घुटनोंपर बैठाकर वह खिलाता, तब उसे वही समय स्मरण आ जाता, जब कि ऐलवर्ट फ्लडर मण्डलमें बीमार पड़ा था और सुन्दरी ऐलीला उसकी सेवा कर रही थी। यह

स्मरण आते ही उसकी आखोंमें आनन्दाश्रु उमड आते और वह प्रसन्नतासे कहने लगता,—"संसारमें सज्जनताका पुरस्कार अवश्य ही मिलता है।" इसी तरह उसके धार्मिक भाव दिन पर दिन दृढ़ होते गये और उसके हृदयमें दिनों दिन एकान्त भक्ति, दृढ़ अनुराग, अपरिवर्त्तनीय शान्ति उत्पन्न हो गयी तथा अन्तमें उसकी आत्मा बड़ी ही शान्तिसे परलोक सिधारी।

अस्टन-महलका बुड्ढा खानसामा हावट, एक दूसरा मनुष्य था, जिसने ईश्वर द्वारा अपने उत्तम कार्य्यों का उत्तम फल पाया। वह अपनी मृत्युके दिनों तक सम्राट तथा सम्राज्ञीकी सेवा, तथा शाही महलका शासनकर्ता बननेके साथ ही साथ उन दोनोंका प्रिय बन्धु भी बना रहा।

विलडन तथा उसकी स्त्री दोनों हीको ऐंजोला सदा इस तरह भक्ति करती थी मानो सचमुच ही उनकी कन्या हो। वह उनके साथ प्रेममय व्यवहार करती थी, जिससे उसके हृदयकी महानता तथा आत्माकी उच्चताका स्पष्ट पता मिलता था।

कौण्ट रोशनवर्ग सदा एक्स-ला-चैपेलमें अपनी भांजीके पास ही रहने लगा। इसका यह कारण न था, कि उसकी भाजी इतने ऊंचे पदपर पहुंच गयी थी, बल्कि यह कारण था, कि वह अत्यन्त नम्र, दयालु तथा धार्मिक रहनेके साथ ही साथ अभागिनी अर्मेनेण्डाकी नयन तारा थी।

परन्तु बहादुर जिटकाका क्या हुआ? कई वर्षों तक वह बहादुर बोहेमियाका प्रजातन्त्र-शासन-कार्य्य चलाता रहा। यदि उसे उसी तरहके उत्तम सलाह देनेवाले मनुष्य मिलते जाते, जैसे इमानदार मनुष्य उसे मिले थे, तो इसमें सन्देह नहीं, कि जिटका प्रजातन्त्र शासनको जड़ सदाके लिये मजबूत कर जाता। यद्यपि वह उसके कायदे समझ

गया था, तथापि वह बड़ा परिश्रम करता था। लेकिन जैसा पहले कहा जा चुका है, वह उदार हृदय योद्धा परन्तु राजनीतिज्ञ नहीं था और यह काम पूरा करनेके लिये उसे कोई सुयोग्य मन्त्री न मिला था। इसके अतिरिक्त बोएनियाके प्रजातन्त्र शासनपर आक्रमण कारियोंका बड़ा प्रभाव पड़ता था, और यद्यपि लिटका आक्रमण कारियोंको बराबर हराता ही जाता था, तथापि युद्धके कारण वह अपनी इच्छानुसार राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक उन्नति नहीं कर सकता था।

बोएनियाके प्रजातन्त्र शासनपर आक्रमण करनेवालोंमें साइलीसियनोंका दल अधिक था। यह दल तीस हजार सेनाके साथ उमड़ती हुई नदीके समान बोएनियापर आक्रमण कर बैठा। यद्यपि टेवोराइट सिपाही बड़ी बहादुरीसे लड़े तथापि साइलीसियनोंने अपनी प्रबल सेना द्वारा आगेके कितने ही किले दखल कर लिये और तेजीसे प्रेगकी ओर अग्रसर होने लगे। परन्तु खान-लिटकाने राहमें ही उन्हें रोका और एकाएक टेवोराइट-सेनाके आ पहुंचनेका ऐसा भय आक्रमणकारी सेनामें समा गया, कि सब सेना भागकर रेवोके किलेमें जा छिपी। लिटकाने किला घेर लिया और जब वह अपनी सेनाको आगे बढ़ा रहा था, उसी समय तोपके गोलोंके कारण एक छर्रेकी छाल गिरी, जिसकी एक टहनी लिटकाकी अच्छी आंखमें घुस गयी और इस तरह वह दोनों आंखोंका अन्धा हो गया! तथापि उसने युद्ध न बन्द किया। पेत्रोंकी सहायतासे वह बराबर युद्ध करता और इस तरह शत्रु-सेनाको काटता गया, जिस तरह किसान खेत काटते हैं, इस तरह साइलीसियनोंको पूरी पराजय मिली। रेवो का किला उनके अधिकारसे छीन लिया गया और उसका सेनापति लिटकाको प्रस्तावित शर्तों पर सन्धि करनेके लिये बाध्य किया गया।

सन्ध्या हो जानेपर जिटका प्रेग लौट आया और दोनों आंखोंका अन्धा हो जानेपर भी राजनीतिक तथा सामाजिक सुधारोंका उद्योग उसी तरह करता रहा। " इसके कुछ ही दिन बाद फिर बोहेमियाकी शान्ति भङ्ग हुई और क्यूमन तथा सर्वियनोंने उसपर आक्रमण किया और जिटका फिर सेना साथ ले गाड़ीपर सवार हो युद्धके लिये चल पड़ा। इसी तरह ज्योंही जिटकाकी सेना शत्रु सेनाके सामने पहुंची, त्यों ही गाड़ीसे उतर जिटका घोड़ेपर सवार हुआ और अपनी सेनाके आगे आगे पेजोंके सहारे जाने लगा। पहले तो सर्वियन और क्यूमन बड़े जोशसे लड़े; परन्तु एकाएक उस अन्धे बहादुर जिटकाने इस तरह जोरसे उनपर आक्रमण किया, कि वे घबड़ा कर जिधर राह मिली, उधर ही भाग गये और जिटका विजय-पताका उड़ाता हुआ फिर प्रेगकी ओर लौट पड़ा।

इसबार वह सीधा प्रेग न आकर चुपचाप उस सरहदके पास चला गया, जिसके निकट ही एक सा-चेपेले था। वहां वह अपनी कन्या और जामातासे मिला। यह मिलन बड़ा ही दुःखमय हुआ। इस दुःखमय मिलनका सम्बन्ध पिता-पुत्री अथवा अर्मेनेग्डाके विषयकी दुःखित घटनाओंके कारण न था, बल्कि तीनोंको यह विश्वास हो गया था, कि यह उनका अन्तिम मिलन है; क्योंकि बराबर युद्धमें लिप्त रहनेके कारण जिटकाका स्वास्थ्य बिगड़ गया था और बोहेमियाके कार्य्यमें अत्यधिक जवाबदेहीका भार उसीके हाथों रहनेके कारण यह अवसर न था, कि वह शान्तिसे चुपचाप बैठता और ऐ जीला उसकी सेवा करती। जो हो, उसकी यह परिवर्त्तित अवस्था देख, ऐ जीलाको भयानक दुःख हुआ और वह फूट फूटकर रोने लगी।

भी बहुत ही अधिक हार्दिक धन्यवाद दिये तथा कुछ ही देर बाद जिटका प्रेगकी ओर और ऐश्वर्ट ऐ लोलाके साथ अपने महलकी ओर रवाना हो गया। प्रेग पहुंचनेपर जिटकाको अपनी भांजी आयशाका एक पत्र मिला, जिससे उसे मालूम हो गया, कि उसका भविष्य जीवन अब सुखमें बीतेगा। उसने आयशाके पत्रका बड़ा ही प्रेममय उत्तर दिया तथा उसका जो उत्तर मिला, उससे जिटकाको विश्वास हो गया, कि यद्यपि जवानीकी अवस्थामें आयशाकी चाल-चलन अच्छी न थी, तथापि उसका हृदय अब सुधर गया और प्रकृति शान्त हो गयी है।

बोहेमियाकी शान्ति फिर भङ्ग हुई और मोरेवियनोंने उसपर आक्रमण किया। एकबार जिटका फिर अपनी पुरानी बहादुरीके साथ, जिन्होंने कईबार अपना रक्त बहाया था, युद्धक्षेत्रमें उतर पड़ा; परन्तु इसबार घटना कुछ विचित्र ही घटी। ज्योंही टेनीराइट-सेना मोरेवियनोंके सामने पहुंची, त्योंही मोरेवियनोंने मारे भयके बिना लड़े-भिड़े शस्त्र फेंक दिये और क्षमा भिक्षा मांगने लगे। जिटकाने अपनी स्वाभाविक उदारता वश उन्हें क्षमा कर दिया तथा फिर शान्ति स्थापित हुई। इसके बाद जब वह लौटकर प्रेग आ रहा था, तब रास्तेमें ही भयानक रूपसे बीमार हो गया, जिससे कुछ ही क्षणमें उसका जीवन जानेकी आशङ्का उपस्थित हो गयी। जिटका समझ गया, कि अब उसका अन्त आ पहुंचा और अन्तिम शब्द जो उसके मुखसे निकले, वे ये थे —

"अब कुछ दिनोंके लिये नैतिक, सामाजिक तथा धार्म्मिक सुधारोंका होना बन्द हो जायगा। इसके बाद धार्म्मिक वितण्डा ही फिर उनके अभ्युदयका कारण होगा, इसके बाद राजनीतिक प्रश्न सामने होगा और फिर अन्तमें सामाजिक जीवनका वह कार्य्य, जिसे

मैंने आरम्भ किया था, संसारकी दृष्टि आकर्षित करेगा। ओह! मालूम होता है, भविष्यकी बातें मेरे हृदयमें उठ रही हैं और मैं देखता हूं—कितने ही भविष्य वर्षों के बीचमें देखता हूं, आनेवाली, शताब्दियोंका हाल देखता हूं, ओह! ईश्वरने भविष्यका जो दृश्य इस समय दिखाया है, वह बड़ा ही मनोहर है। हां, मैं वह सब देखता हूं, भविष्य मुझसे छिपा नहीं है, मैं परमात्माके हाथके लिखे हुए इतिहासके पन्ने देख रहा हूं। और ओह! ऐ परमेश्वरके दूतो! मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूं, कि तुमने मेरे अन्तिम समयमें अपने भविष्य कार्यों का उत्तम आभास दिखा दिया है; क्योंकि मैं अब अपनी आत्मा तुम्हें सौंपता हूं। ऐ दयामय भगवान! क्या मैं उन सज्जनोंसे अपने मनोभिलषित उद्देश्यकी सफलताकी आशा कर सकता हूं? तब उन परिश्रम करनेवाले पुत्र पुत्रियोंको निराश न करो, जिन्हें यथेच्छाचारी मनुष्य दासत्व तथा कुलीगिरीमें भरती कर लेते हैं। सम्भव है, कि तुम्हारा यह नवजीवनमय कार्य धीरे धीरे चिर स्थायी हो। इसमें अकसर बाधायें भी पड़ सकती हैं, परन्तु उसकी अन्तिम विजय अवश्यम्भावी है। ओह! और अब सब बातें साफ हुई जाती हैं, मैं इस पृथ्वीपरसे उठता हुआ मालूम हो रहा हूं और वर्त्तमान संसारसे छुड़ाया जा रहा हूं। मैं किसी अदृश्य हाथों द्वारा ऊपर उठाया जा रहा हूं, मैं समयकी सीमाके पार जा रहा हूं और उन्नीसवीं शताब्दिमें पहुंचा ही चाहता हूं। आह! प्रसन्नता! मैं देखता हूं, कि ताज गिर रहे हैं, तख्त टुकड़े टुकड़े हो रहे हैं, राज दण्ड छिन्न भिन्न हो टुकड़े टुकड़े हो गया है और मनुष्य उत्तेजित हो क्रिश्चियन राज्योंमें घूम रहे हैं। हां, मैं यह सब देखता हूं। समाज उठ खड़ी है, साधारण मनुष्योंने अपना बन्धन तोड़ डाला है, उन्नतिके दिन आ गये हैं और गुलाम तथा बेगार अपना हक पा रहे

है। और यह ईश्वर सर्व साधारणकी ओरसे उसी तरह लड़ता है, जिस तरह यह इतरायनके लड़कोंके लिये लड़ा था। देवी और देवता, युद्धक्षेत्रमें दिखायी न देनेपर भी उनकी सहायता विपक्षियोंसे कर रहे हैं। उन्नतिका प्रवाह बढ़ता ही जाता है, यह बहुत ही उन्नत प्रवाह है और महाशोणित भूमिपर तरङ्गमय फैल गया है, जो अपना वेग रोक नहीं सकता। विदा, अब विदा! ऐ राजा और राजतन्त्र—सदाके लिये विदा! यह सब हो गया है। स्वेच्छाचारियोंके शासनका अन्त हो गया है। प्रजापीड़कोंका राज दण्ड टूट गया है। पापी दल अब नहीं है, सब स्वतंत्र और सब बराबर हैं।"

इसी तरहकी काल्पनिक उन्नतिका स्वप्न देखते देखते, जो अभी तक उस बहादुरकी आत्माके चारों ओर चमक रहा था, टेंवोराइट-दलके सरदार जान जिटकाने भी अपना जीवन समाप्त किया।

* * * * * *

पाठक! अब हम लोगोंको कुस्तुनतुनियाके सुलतानके भड़कीले कमरेमें प्रवेश करना चाहिये।

वह कमरा इतने भड़कीलेपन तथा उत्तमतासे सजा हुआ था, कि जितना उस समय यूरोप वालोंके ध्यानमें भी न था। सहन पर एक बालिश्त मोटा मखमली गद्दा बिछा हुआ था, जो इतना मुलायम था, कि उसमें बालूकी तरह पैर धंस जाते थे, और वह इतनी खूबसूरती तथा कारीगरीसे बना हुआ था, कि पैर उठते ही फिर ज्योंका त्यों हो जाता था।

उसी कमरेके एक खूबसूरत पलंगपर एक मनोहारिणी रमणी लेटी हुई थी। वह तुर्की फैशनकी ऐसी कीमती और भड़कीली पोशाक पहने हुई थी, जो उसके शरीरपर बड़ी ही शोभा दे रही थी।

माथेपर एक बहुमूल्य ताज था, जिससे मालूम होता था, कि उसका दर्जा बहुत ही बढ़ा बढ़ा है। उस ताजके नीचेसे उसके चमकीले सुनहरे केश बड़ी खूबसूरतीसे हवामें लहरा रहे थे। कोई सांसारिक सम्पति उस सुन्दरता और सुनहरे रंगके ढेरका मुकाबिला नहीं कर सकती थी, जो उसके गोल गोल उठते हुए कन्धों तथा सुराहीदार गर्दनपर छिटका हुआ था। उसके ओठोंका गुलाबीपन अब खूनके समान हो गया था, जिसके भीतरसे दांतोंकी मनोहर पंक्ति मोतीके समान चमक रही थीं और उसके श्वास प्रश्वाससे वह सुगन्ध निकल रही थी, जो इन्द्रके नन्दन काननको भी मात करती थी।

ओह! उसके समस्त शरीरकी सुन्दरता गजब ढा रही थी, उसके शरीरके सब अंग प्रत्यंग दर्शनीय और चित्ताकर्षक हो रहे थे। उसका चेहरा मुसलमानी वेशमें इतना सुन्दर, इतना मनोहर और इतना प्यारा मालूम होता था, कि देखने वालोंकी टकटकी लग जाती थी, उसके कन्धोंका मनोहर झुकाव, कुचोंका विचित्र उठाव, बाहुओंकी अद्भुत सुघड़ता और उंगलियोंकी मनमोहिनी नजाकत, पैरोंकी सुर्खी और मदमाती चाल—इन सभोंकी सुन्दरता वर्णन करनेकी शक्ति लेखनीमें नहीं है।

परन्तु उसकी आंखें—वे बड़ी बड़ी काली, मारू आंखें, जिनसे मखमली काले रंगकी ज्योति फूट रही थी तथा उन आंखोंमें वह ज्ञान भरी थी, जिसका जोड़ा नहीं दिखायी देता था। उसकी पोशाकपर अनगिनत बहुमूल्य जवाहरात टंके हुए थे और कई सम्राटोंकी सम्पत्ति केवल उसके आभूषणोंकी शोभा बढ़ा रही थी। इन सब कारणोंसे मालूम होता था, कि वह अवश्य ही कोई ऊंचे दर्जेकी थी, तथा सामान्य मनुष्योंसे ऊंचा पद और असामान्य पानेके कारण उसके प्रत्येक अक्षर समस्त राज्यमें कानूनके

समान मानी जाती थी। उसके एक इशारेमें करोड़ोंकी सम्पत्ति उसके आगे आ पड़ती थी। उस महलकी हजारों दासियां उसकी सेवाके लिये तय्यार रहती थीं, उसके इशारेको देखा करती थीं और उसको बोलने तकका कष्ट न दिया चाहती थीं। इतना कुछ होनेपर भी वह सुन्दरी अपने अधिकारका प्रयोग बड़ी बुद्धिमत्ता तथा दयालुताके करती थी और उसका मुसलमानी जगतपर बड़ा ही दयामय, उदार तथा सज्जनोचित् व्यवहार था।

परन्तु इतनी सुन्दरता तथा अधिकारकी अधिष्ठात्री वह कौन रमणी थी?

पाठक! वह समस्त टर्की राज्यके अधिपति बहादुर सुलतानकी प्यारी सुलताना थी। यह वह स्त्री थी, जिसके प्राप्त होनेपर सुलतानने अपनी समस्त बेगमों तथा पत्नियोंको त्याग दिया था। उनपर उस स्त्रीका विलक्षण प्रभाव था, परन्तु अपनी शक्तिको वह बहुत उदारतासे काममें लाती थी। मन्त्री गण उसकी शक्ति पर ईर्ष्या नहीं प्रकट करते थे और एक सिरेसे दूसरे सिरे तक उस तुर्क राज्यकी समस्त प्रजा उसके नामकी भक्तिसे स्मरण करती थी।

बीस वर्ष तक वह सुन्दरी इसी तरह मुसलमानी साम्राज्य पर अपना पूर्ण अधिकार जमाये रही और बीस वर्ष तक ही अपने प्यारे पति सुलतानपर उसने अपना दावा रखा। फिर अपनी चालीस वर्षकी अवस्थामें इस संसारसे उसने विदा ली तथा सुलतानने, जो उसके दुःखमें बहुत दिनों तक सन्तप्त रहे, एक बहुत ही भड़कीली कब्र उसके स्मारकमें बनवाई। उस स्थानमें ही, जहां कि स्त्रियां गुलाम और केवल सेवा करने योग्य ही मानी जाती हैं, न कि जीवनकी सर्वस्व तथा आनन्दकी अधिष्ठात्री, वहां भी उस स्त्री की मृत्यु विपदके समान मानी गयी।

परन्तु फिर हमारे पाठक पूछ सकते हैं, कि यह सम्राज्ञी सुलताना कौन थी ?

पाठक ! कुस्तुनतुनियामें उसके मकबरेपर यद्यपि "सुलताना जलीमा" लिखा हुआ था; परन्तु अपने प्रारम्भिक जीवनमें, बोहेमिया प्रान्तके बीच वह सुन्दरी "आयशा इलडर गो"के नामसे ही प्रसिद्ध थी। पाठक उसके प्रारम्भिक जीवनसे भलीभांति परिचीत हैं।

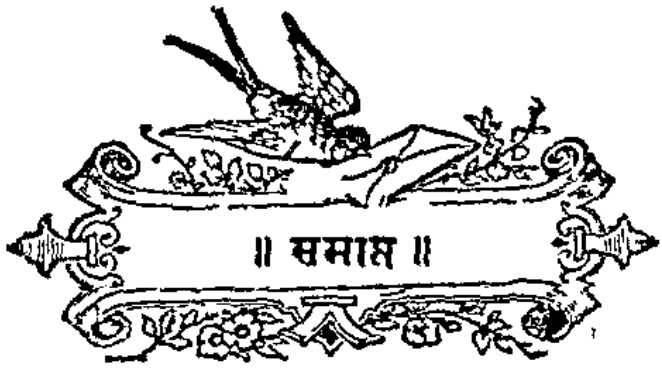

"बर्म्मन प्रेस" कलकत्ताकी उत्तमोत्तम पुस्तकें।

कोहेनूर सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास।

यदि आप राठोर-वीर "दुर्गादास" और सम्राट "औरङ्गजेबके" प्रतिद्वन्द्वि-अधिक भीषण संग्रामका रसास्वादन करना चाहते हों, यदि आप "बरावली उपत्यका" में होनेवाले सहस्राधिक क्षत्रिय वीरों और दुर्दान्त मुसलमानोंका घोर संग्राम देखना चाहते हों, यदि आप वीर शिरोमणि "अमरसिंह" "काला पहाड़," राजकुमार "केशरीसिंह" आदि मुट्ठीभर क्षत्रिय वीरोंका अखण्ड मुसलमानोंके साथ आश्चर्य जनक युद्ध दृष्टिगोचर किया चाहते हों, यदि आप वीर जन्दा और वीर पत्नी "विद्याकुमारी" को आदर्श पति-भक्ति देखना चाहते हों, तो इसे अवश्य पढ़िये। इसमें सुन्दर सुन्दर ५ चित्र भी हैं। मूल्य १॥)

शीशमहल सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास।

सम्राट-अकबरकी आज्ञासे सेनापति "इस्कन्दर" का गुप्त मार्गसे 'ईदलगढ़-दुर्ग' पर चढ़ाई करना, सुहानीकी वीर पत्नी "गुलशन" के अपूर्व रूप-लावण्य पर मुग्ध हो कर्त्तव्य विमुख होना, परिणामतः गुलशनका इस्कन्दरको धोखा देकर पति सहित दुर्गसे निकल भागना, सोहानीका पहाड़से गिरकर प्राण त्याग करना, गुलशनकी फरियादपर अकबरके दरबारसे इस्कन्दरको फांसीका हुक्म मिलना, इस्कन्दरका कारागारसे निकल भागना, मालवाधिपति बाज बहादुरका इस्कन्दरको सम्मान सहित घर ले जाना, बाज बहादुरकी सुन्दरी कन्या "रूपिया" पर इस्कन्दरका मोहित होना, आदि बहुत सी अपूर्व घटनायें भरी हैं। साफटोन फोटोके ३ चित्र भी हैं। दाम सिर्फ २) रुपया।

मणिपुरके सेनापति टिकेन्द्रजितसिंह

पाठको! उन्नीसवीं शताब्दीके अन्तमें "टिकेन्द्रजितसिंह" जैसा वीर-केशरी भारतवर्षमें दूसरा नहीं जन्मा। इस वीरने अपने बाहुबलसे सैकड़ों सिंह मारे और अनेक युद्धोंमें जय पाई। अन्तमें यह वीर अङ्गरेजोंसे युद्धमें पराजित हो बड़ी वीरतासे हंसते हंसते फांसी पर चढ़ गया। दाम सिर्फ ॥)

आर० एल० बर्म्मन एण्ड को०, ३०१, अपर चीतपुर रोड, ~

परन्तु फिर हमारे पाठक पूछ सकते हैं, कि यह सवाजी सुलताना कौन थी ?

पाठक ! कुस्तुनतुनियामें उसके मकबरेपर यद्यपि "सुलताना जलीमा" लिखा हुआ था; परन्तु अपने प्रारम्भिक जीवनमें, बोहेमिया प्रान्तके बीच वह सुन्दरी "आयशा दूलडर गो"के नामसे ही प्रसिद्ध थी। पाठक उसके प्रारम्भिक जीवनसे भलीभांति परिचीत हैं।

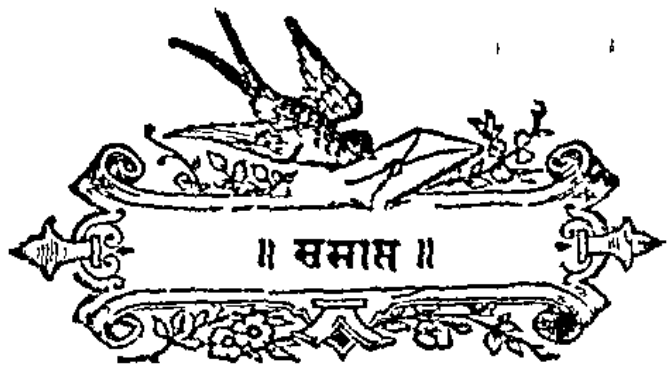

"बर्म्मन प्रेस" कलकत्ताकी उत्तमोत्तम पुस्तकें।

कोहेनूर सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास।

यदि आप राठोर-वीर "दुर्गादास" और सम्राट "औरङ्गजेबके" इतिहास-सम्बन्धि भीषण संग्रामका रसास्वादन करना चाहते हों, यदि आप "अरावली उपत्यका" में होनेवाले लक्षाधिक क्षत्रिय वीरों और दुर्दान्त मुसलमानोंका घोर संग्राम देखा चाहते हों, यदि आप वीर-शिरोमणि "प्रतापसिंह" "काला पहाड़," राजकुमार "केशरीसिंह" आदि सुतीक्ष्ण क्षत्रिय वीरोंका अखण्ड मुसलमानोंके साथ आश्चर्य जनक युद्ध देखिनेपर किया चाहते हों, यदि आप वीर कन्या और वीर-पत्नी "विद्याकुमारी" को आदर्श पति-भक्ति देखा चाहते हों, तो इसे अवश्य पढ़िये। इसमें सुन्दर सुन्दर ५ चित्र भी हैं। मूल्य १।)

शीशमहल सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास।

सम्राट-अकबरकी आज्ञासे सेनापति "इस्कन्दर" का गुप्त भावसे 'ईदलगढ़-दुर्ग' पर चढ़ाई करना, सुल्तानीका वीर पत्नी "गुलशन" के अपूर्व रूप-लावण्य पर मुग्ध हो कर्तव्य विमुख होना, पतिव्रता गुलशनका इस्कन्दरको धोखा देकर पति सहित दुर्गसे निकल भागना, सोहानीका पहाड़से गिरकर प्राण त्याग करना, गुलशनकी फरियादपर अकबरके दरबारसे इस्कन्दरको फांसीका हुक्म मिलना, इस्कन्दरका कारागारसे निकल भागना, मालवाधिपति बाज बहादुरका इस्कन्दरको सम्मान सहित घर ले जाना, बाज बहादुरकी सुन्दरी कन्या "रूपिया" पर इस्कन्दरका मोहित होना, आदि बहुत सी अपूर्व घटनायें भरी हैं। हाफटोन फोटोके ५ चित्र भी हैं। दाम सिर्फ २) रुपया।

मनीपुरके सेनापति टिकेन्द्रजितसिंह

पाठको! उन्नीसवीं शताब्दीके अन्तमें "टिकेन्द्रजितसिंह" जैसा वीर-केशरी भारतवर्षमें दूसरा नहीं जन्मा। इस वीरने अपने बाहुबलसे सैकड़ों सिंह मारे और अनेक युद्धोंमें जय पाई। अन्तमें यह वीर अङ्गरेजोंसे युद्धमें पराजित हो बड़ी वीरतासे फांसी पर चढ़ गया। दाम सिर्फ ३)

आर० एस० बर्म्मन एण्ड को०

घटना-चक्र सचित्र जासूसी उपन्यास।

इस उपन्यासमें अङ्गरेज-जातिकी पारस्परिक शत्रुताका बड़ा ही सुन्दर चित्र खींचा गया है। "लार्ड पेमब्रोक" नामी एक सम्भ्रान्त अङ्गरेज किस प्रकार शत्रुओंसे सताये जाकर अपनी स्त्री "क्लिओपेट्रा" सहित भारतवर्षमें भाग आये, किस प्रकार उनके शत्रु-दलने भारतमें भी उनका पीछा न छोड़ा, किस प्रकार भारतके डिटेक्टिव-कमिश्नर कृष्णजी रघुपन्तने शत्रुओंके हाथसे बारम्बार उनकी रक्षाकी, किस प्रकार दुष्टोंके षड़यन्त्रसे लार्ड पेमब्रोकको भयानक खूनी मामलेमें गिरफ्तार हो इङ्गलैण्ड जाना पड़ा, किस प्रकार रास्तेमें शत्रुओंके जहाजने उनपर आक्रमण किया, किस प्रकार उनकी स्त्री "क्लिओपेट्रा" समुद्रमें फेंक दी गयी, किस प्रकार बड़े बड़े जासूसोंकी मददसे उनको अदालतसे रिहाई मिली, आदि सैकड़ों दिलचस्प घटनाओंका वर्णन है। पुस्तक बड़ी और सचित्र है। दाम सिर्फ २।) रुपया।

भीषण डकैती सचित्र जासूसी उपन्यास।

यह उपन्यास बङ्ग साहित्यके गौरवस्तम्भ, जासूसी उपन्यासोंके एकमात्र कर्णधार श्रीयुत 'बाबू पांचकौड़ी दे' की विचित्र लेखनीका सजीव प्रतिबिम्ब है। इस उपन्यासमें 'मिस्टर रोटलेज' नामक एक अमेरिकन जासूसकी अपूर्व कारवाइयोंका ऐसा सुन्दर चित्र खींचा गया है, कि पुस्तक एकबार उठाकर फिर छोड़नेकी इच्छा ही नहीं होती। इस उपन्यासके प्रत्येक परिच्छेद, प्रत्येक पृष्ठ, प्रत्येक पैराग्राफ और प्रत्येक शब्दमें दिलचस्पी और मनोरंजकता फूट फूटकर भरी गयी है। साथ ही सुन्दर सुन्दर चित्र भी दिये गये हैं। दाम १॥)

दारोगाका खून सचित्र जासूसी उपन्यास।

काशी जैसे पवित्र तीर्थमें भी कैसे कैसे कुकर्म, व्यभिचार, अत्याचार, धर्माचार, जाल, जुआचोरी, खून और डकैतीके काम होते हैं, यही बात इस उपन्यासमें दिखाई गई है। १ चित्र भी है। दाम सिर्फ ॥) आना।

पिशाच पिता—रहस्यमय मजेदार जासूसी उपन्यास है। दाम ⅝)

• वर्मन एण्ड कं०, १७१, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

शोणित-चक्र

(एक बड़ा ही अद्भुत जासूसी उपन्यास।)

जासूसी उपन्यासके प्रेमियो, अगर आप उपन्यासका सच्चा शौक रखते हों, तो इसे अवश्य पढ़ें। इस उपन्यासमें "शोणित चक्र" नामक एक अद्भुत रहस्यका ऐसा अनूठा भेद खोला गया है, कि पढ़कर आप दङ्ग हो जायगे और बार बार ऐसे ही उपन्यास पढ़नेकी इच्छा प्रकट करेंगे। जासूसी टङ्गके उपन्यासोंमें यह बड़ी अनूठा है, दाम केवल २) रुपया।

नरराक्षस सचित्र जासूसी उपन्यास।

डाकर और उसकी प्रेमिकाका अपने एक मित्रको धोखा देकर फांसीपर लटकाना, मित्रकी लाशका एकाएक गायब हो जाना, दो चोरोंका डाक्टरको गेंद खोल देनेका भय दिखलाकर धमकाना, डाक्टरका एकको अपने हाथ मट्ठोंमें झोंककर मार डालना। सुरदा लाशका जिन्दा हो जाना, आदि ऐसे आश्चर्य जनक बातें लिखी गयी हैं, कि पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इसमें सुन्दर सुन्दर ६ चित्र भी हैं। दाम सिर्फ १=) आना।

नकली रानी अद्भुत जासूसी उपन्यास।

इसमें एक साधु-स्त्रीकी वीरता, बुद्धिमानी, भाषाकी और दिलेरी आदिका वर्णन बड़ी बारीकीसे किया गया है। इसमें ऐसे ऐसे गुप्त-रहस्य खोले गये हैं, कि पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। दाम सिर्फ १) रुपया।

जासूसी पिटारा

इसमें बड़े ही रहस्य जनक पांच जासूसी उपन्यास हैं, (१) गुलजार-नहस, (२) फूल बेगम, (३) विचित्र चोरी, (४) चरखी हजारकी चोरी, (५) क्या है या राक्षसी? दाम सिर्फ ॥) आना।

आर० एल० बर्मन एण्ड को०, ३७१, अपर चीतपुर रोड

जासूसी चक्कर सचित्र जासूसी उपन्यास।

बम्बईमें खून और चोरीके इलजाममें "रुस्तमजी" नामक एक पारसीयुवक गिरफ्तार हुआ। उसकी जांचके लिये सर्कारकी ओरसे बड़े बड़े ४ जासूस छोड़े गये। जांच धूम-धामसे होने लगी, फिर कैसे चारों दक्ष जासूसोंने इस भयानक खूनका पता लगाया, कैसे निरपराध रुस्तमजीने अदालतसे छुटकारा पाया, कैसे नकली विवाहके समय भीषण व्यक्ति बर्जोरजी गिरफ्तार किया गया, आदि घटनायें बड़ी खूबीसे लिखी गयी हैं। कई चित्र भी हैं। पुस्तक बड़ी ही दिलचस्प और रहस्यमय है, मूल्य सिर्फ २) रुपया।

शशिबाला शिक्षाप्रद जासूसी उपन्यास।

इसमें एक सच्चरित्रा स्त्रीमें किस चतुरता, बुद्धिमत्ता और दृढ़ दृढ़ताने अपने कुपथगामी स्वामी और कितने ही मनुष्योंको सुपथगामी बनाया है, कि पढ़ते पढ़ते जी फड़क उठता है। कुमारस्वामीका तिलिस्मी मठ, जोगिनकी अद्भुत चातुरी, वीरसिंहकी विलक्षण वीरता, शशिबालाकी अद्वितीय सुन्दरता आदिका हाल पढ़कर आप अवाक रह जायंगे। दाम सिर्फ ॥=) आना।

अमीरअली ठग सचित्र जासूसी उपन्यास।

'इष्ट इण्डिया कम्पनी'के राजत्वकालमें भारतमें ठगोंका बड़ा ही दौरदौरा था। ठगोंके जोर जुल्मसे उस समय सर्कार और प्रजा दोनों ही तङ्ग आ गयी थीं। ठगोंके बड़े बड़े दल राजसी ठाट बाटसे दौरा करते फिरते थे और विचित्र ढङ्गसे रूमालके झटकेसे, पानकी बातमें लोगोंको फांसी देकर सारा धन लूट लेते थे। इन्हीं ठगोंके "अमीरअली" नामक सर्दारने कम्पनी बहादुरसे मिलकर हजारों ठगोंको फांसी दिलवा दी और तभीसे ठगोंकी जड़ भारतसे एक प्रकारसे कट गयी। इसमें हाफटोनकी कई तस्वीरें भी हैं। दाम ॥)

"मेंहदीका बाग" —डाकुओंके तिलिस्मी मकानका अद्भुत विचित्र करामात। दाम ।-) आना।

बर्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

जासूसी कहानियां

यह उत्तमोत्तम जासूसी उपन्यासोंका बड़ा ही अपूर्व संग्रह है। इसमें निम्नलिखित बड़े ही अनूठे ६ उपन्यास दिये गये हैं—(१) साढ़े आठ खून, (२) धतोंका बहका, (३) मोहनाम-घरका रहस्य, (४) पुड़ियोंका पोंछा, (५) चोर चोर मसूद। दाम सिर्फ ८) आना।

डबल जासूस

सचित्र जासूसी उपन्यास।

कलकतिया चोरोंके तिलस्मी कपड़ेका अद्भुत रहस्य, मायपर जासूस और चोरोंका भयानक संग्राम, जन्मभी बागमें भीषण तमंचेबाजी, एक बीरान खँडहरमें कुलकि दलकी विचित्र गिरफ्तारी, मुर्दाघरमें बेमालूम लाशका अनूठे ढङ्गसे पहचाना जाना, नदीके किनारे दो असली चोर नकली जासूसोंका द्वन्द्व युद्ध,—आदि बातें पढ़कर आप दङ्ग रह जायँगे। ४ चित्र भी हैं। दाम १॥)

काला कुत्ता

सचित्र जासूसी उपन्यास।

एक दुराचारी मनुष्यने सर्वसाधारणमें भूतोंका भय फैलाकर एक खूंखार कुत्ते द्वारा किस चालाकीसे तीन तीन खून कर डाले, इसका बड़ा ही रहस्यजनक मामला इस उपन्यासमें लिखा गया है। दाम ॥) आना।

जासूसी कुत्ता

सचित्र जासूसी उपन्यास।

इसमें एक स्वामि-भक्त कुत्तेने कैसी कैसी अद्भुत करामातें दिखाई हैं और अपने गरीब स्वामीको "डाकुओं" जैसे बड़े चोरोंके पंजेसे बचा दिया है, कि पढ़कर तबियत फड़क उठती है। साथ ही यह शिक्षा भी खूब मिल सकती है, कि मनुष्य नेकचलनी और परिश्रमके बलपर कहांतक उन्नति कर सकता है। यदि आपको उपन्यासोंसे कुछ भी प्रीति हो, तो आप इसे अवश्य पढ़ें, इसमें हाफटोन फोटोके रूपमें सुन्दर सुन्दर ७ चित्र भी दिये गये हैं। दाम १॥)

चालाक चोर

ऐन्द्रजालिक घटनापूर्ण जासूसी उपन्यास।

पाठक! इसमें विलायतके एक ऐसे भयानक चोरकी कार्रवाइयोंका हाल लिखा गया है, जो बड़े बड़े धुरन्धर जासूसोंकी आंखोंमें धूल डालकर दिनदहाड़े उनके देखते देखते लाखों रुपयेका माल उड़ा ले जाता था। उसकी चोरियोंसे एकबार सारा इङ्गलैण्ड दहल उठा था और सब लोग उसे ऐन्द्रजालिक चोर समझने लगे थे। दाम केवल १॥) रु०

खूनी औरत

विचित्र जासूसी उपन्यास।

जासूसी ढङ्गका यह एक अनूठा उपन्यास है, जिसमें खून, चोरी, जाल, जुआ चोरी और मेसमेरिजम या भौतिक-विद्याका वर्णन ऐसी विचित्रतासे किया गया है, कि पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मूल्य सिर्फ १) रु०

पुतलीमहल

ऐय्यारीका भयङ्कर उपन्यास।

कुंवर चन्द्रसिंहका अपने ऐय्यार हीरासिंहके साथ शिकार खेलने जाकर "पुतलीमहल" नामक तिलिस्ममें गिरफ्तार हो जाना, तिलिस्मकी बहुत सी कोठरियोंको तोड़ना, तिलिस्मी दारोगाकी भाञ्जीका राजकुमारपर मोहित हो जाना, राजकुमारकी खोजमें उनके और चार ऐय्यारोंका तिलिस्ममें पहुंचना, तिलिस्मी शैतानका एकाएक जमीनसे पैदा होकर राजकुमार वगैरहको 'तिलिस्म जालन्धर' में कैद कर देना। राजा वीरेन्द्रसिंहका मायापुर पर चढ़ाई करना। दोनों ओरकी बेशुमार फौजोंकी भयानक लड़ाइयां। राजा वीरेन्द्रसिंहकी विजय, कुमारके ससुर देवसिंहपर दुश्मनोंकी चढ़ाई, घनघोर संग्राम। किलेके पिछले हिस्सेका एकाएक उड़ जाना। नदीके बीचोंबीच लड़ाई होना इत्यादि घटनायें पढ़कर आप हैरान हो जायंगे। दाम १॥।=)

अङ्गरेज डाकू—एक हिन्दू जासूसने किस प्रकार जङ्गलों, पहाड़ों और मिट्टी छानकर जेलसे भागे हुये खूंखार अङ्गरेज डाकुओंको गिरफ्तार किया है, कि आप पढ़कर दङ्ग हो जायंगे। दाम सिर्फ ॥=) आना।

एल० बर्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

सचित्र! पीतलकी मूर्त्ति सचित्र!

(मि० जार्ज विलियम रेनाल्डस् कृत 'प्रांजस्टैच' का अनुवाद)

यह बात सर्व सुप्रसिद्ध है, कि मि० जार्ज विलियम रेनाल्डस्से बढ़कर उपन्यास लिखने वाला संसारमें दूसरा नहीं हुआ। जिन लोगोंने हमारे यहांकी कवि "लंदन रहस्य" उपन्यासको पढ़ा है, वे अच्छी तरह जानते हैं, कि रेनाल्डस् साहबके बनाये उपन्यास कितने दिलचस्प, अनूठे, भावपूर्ण और आदुका का असर रखने वाले होते हैं। यह अनूठा उपन्यास भी उसी प्रख्यात नामा अपूर्व क्षमता शाली लेखक मि० रेनाल्डस्की ही सरस लेखनीका नमूना है। इस उपन्यासमें ऐसे ऐसे गुप्त रहस्य, लड़ाई झगड़े और तिलस्मात आदिका वर्णन है, कि पढ़कर अवाक् हो जाना पड़ता है। ६ भागों का दाम ६।,) इसके प्रत्येक भागमें सुन्दर सुन्दर १०—१२ चित्र दिये गये हैं।

महेन्द्रकुमार

ऐय्यारी और तिलिस्मका अनूठा उपन्यास।

ऐय्यारी और तिलिस्मी खेलोंसे भरा हुआ, आश्चर्य व्यापारों और लोम हर्षण घटनाओंसे छपा हुआ यह अनूठा उपन्यास पढ़ने ही योग्य है। इस उपन्यासमें ऐसी ऐसी ऐय्यारियां खेली गयी हैं, कि पढ़कर पाठक फड़क उठेंगे। इस उपन्यासके पढ़ते समय पाठकोंका खाना, पीना, सोना बैठना तक भूल जायगा। इसीसे इतनी बढ़ती "महेन्द्रकुमार" की पहली और दूसरी बारकी छपी कुल कापियां बिक जानेपर इसको तीसरी बार छापना पड़ा है। ६ भाग और ८०० पेजके बड़े पोथेका दाम सिर्फ ४।) है।

जादूगरनी

भौतिक विद्याका अनूठा उपन्यास।

इसमें एक योगिनीकी अद्भुत जादू विद्याका ऐसा अनूठा हाल लिखा गया है, कि पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। एक प्रोफेसरने इस योगिनीकी अद्भुत करामातोंका आंखों देखा रोजाना हाल इसमें लिखा है। दाम सिर्फ ॥)

आर० एस० वर्मन एण्ड को०, २७१ अपर चीतपुर रोड,

गुलबदन थियेट्रिकल उपन्यास।

प्रेम-रसका इससे अच्छा उपन्यास हिन्दीमें अबतक दूसरा नहीं छपा। नवाब सफदरजङ्ग और जमशेदकी भयानक लड़ाइयां, दो दो आदमियोंका गुलबदनके फिराकमें जी-जानसे कोशिश करना, गुलेनार और चैदरका बाधा देना, ठीक शादीके वक्त जमशेदका गुलबदनको उड़ा ले आना। गुलबदनका नदीमें कूद पड़ना। आदि बातें बड़ी खूबीसे लिखी गयी हैं। दाम १।) रु०

विचित्र वारांगना—एक निष्कलङ्क वारांगनाका पवित्र प्रेम, युगल प्रेमियोंकी डबल हत्या, हरिद्वारके एक पाखण्डी महात्माकी भयानक दुश्चरित्रता और जासूसका अद्भुत बुद्धिकौशल देखना हो, तो इसे अवश्य पढ़िये। दाम ।=)

जिन्देकी लाश—यह एक बड़ा ही रहस्यमय, भयानक घटना पूर्ण जासूसी उपन्यास है। इसमें खून खराबी, लड़ाई झगड़े और एक तिलिस्मका ऐसा सुन्दर वर्णन आया है, कि पढ़कर तबीयत फड़क उठती है। दाम केवल ॥=) आना।

"काला साँप"—इसमें एक ऐसे विचित्र सांपकी घटना लिखी गयी है, जो नव यौवना सुन्दरी स्त्रीका रूप धारण कर खूबसूरत नौजवानोंके साथ भोग-विलास करता और पीछे उन्हें मार डालता था। दाम ।=) आना।

"भीषण भूल"—इसमें एक मारवाड़ीके खूनकी ऐसी रहस्य जनक घटना लिखी गयी है, कि पढ़कर हृदय कांप उठता है और दांतों उंगली काटनी पड़ती है। दाम ।=) आ०

"चतुरङ्ग चौकड़ी"—इसमें उत्तमोत्तम चार जासूसी उपन्यास हैं:—(१) थियेटरमें खून (२) औरतकी चालाकी, (३) नोटोंकी चोरी और (४) मियांकी करतूत। दाम सिर्फ ।-) आना।

चोर चौकड़ीपर—रातको चोरी करें और दिनमें चार घोड़ोंकी गाड़ीपर घूमें। १ चित्र भी है, दाम सिर्फ ।-) आना।

नकाबदार कलङ्की—का एक बड़ा ही विचित्र-रहस्य इसमें ... गया है। दाम सिर्फ ॥) आना।

एल० बर्मन एण्ड को०, ३७१, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

रंगीले जासूसी उपन्यास।

नकली प्रोफेसर,—भूतनाथ नकली प्रोफेसर और जासूस निर्भयरामके विचित्र हाल ऐसे दिलचस्प हैं कि इसे अवश्य पढ़िये। दाम ।=)

"मूलमुरैया"—इसी नकलसे भरी हुई थियेटरमें ऐसी लायक यह एक मजेदार नाटक है। दाम सिर्फ ≈) आना।

"राजा साहब"—कलकत्ता, बम्बई आदि नगरोंमें नकली राजा, नवाब और बेगम आदिका भेष बनाकर ठग लोग किस तरह भोलेभाले महाजनोंको ठग लेते हैं, इसमें यही दिखलाया गया है। दाम ।।) आ०

"सिरकी चोरी"—चोर चोलोंकी चोरी तो रोज ही सुनते होंगे, मगर यह एक उपन्यास मंगाकर "सिरकी चोरी" का रहस्य भी पढ़ लीजिये। ।-)

"गुलरू-जरीना"—जैसे मजनू, शीरीं फरहाद और हीर-रांझाकी भांति गुलरू-जरीनाका प्रेम भी बड़ा ही पवित्र हुआ है। यदि प्रेमके रहस्यमें गोते खाना हो, तो इस उपन्यासको अवश्य पढ़िये। दाम सिर्फ ।)

"नलिनी वायु"—इसको पढ़ते पढ़ते मारे हंसीके लोट जायेगा ≈)

"खूनी-खजांचि"—नाम जैसा भयंकर है, किस्सा भी वैसाही रहस्यमय है। ।-)

"सम्राट बाबर"—का यह संक्षिप्त जीवनचरित है। इसमें बाबर और महाराणा सांगाकी भयानक लड़ाइयोंका हाल लिखा गया है। दाम ।)

"सायाका खून"—तीन तीन खूनोंका बड़ा ही अद्भुत मामला ।) आ०

"गुप्त रहस्य"—इसे पढ़कर चकित होना पड़ेगा। दाम ।-) आना।

"गोपालके गहने"—बड़ाही मनोरंजक मामला है। दाम ।) आ०

"अनाथबालिका"—एक ताकरकी निष्कपट प्रेम लीला, दाम ।-)

"रोमियो जुलियट"—योरोपके प्रसिद्ध नाटककार महाकवि शेक्स-पियरके "रोमियोजुलियट" नाटकका अनुवाद। दाम ।=)

"जाली जमीन्दार"—का बड़ा ही मजेदार मामला है। दाम ।) आ०

"विलायती डाकू"—इसमें विलायतके "डिकटरपिन" नामक प्रसिद्ध डाकूके कितने ही अद्भुत डाकोंका हाल है। दाम ।=) आना।

"चार दोस्तोंकी हँसी दिल्लगी"—नाम ही से प्रकट है, दाम -) आ०

गुलबदन थियेट्रिकल उपन्यास।

प्रेम-रसका इससे अच्छा उपन्यास हिन्दीमें अबतक दूसरा नहीं छपा। नव्वाब सफदरजङ्ग और जमशेदकी भयानक लड़ाइयां, दो दो आदमियोंका गुलबदनके फिराकमें जी-जानसे कोशिश करना, गुलेनार और हैदरका बाधा देना, ठीक शादीके वक्त जमशेदका गुलबदनको उड़ा ले आना। गुलबदनका नदीमें कूद पड़ना। आदि बातें बड़ी खूबीसे लिखी गयी हैं। दाम १।) रु०

विचित्र वारांगना—एक निष्कलङ्क वारांगनाका पवित्र प्रेम, युगल प्रेमियोंकी छल हत्या, हरिद्वारकी एक पाखण्डी महात्माकी भयानक दुश्चरित्रता और जासूसका अद्भुत बुद्धिकौशल देखना हो, तो इसे अवश्य पढ़िये। दाम ।=)

जिन्देकी लाश—यह एक बड़ा ही रहस्यमय, भयानक घटना पूर्ण जासूसी उपन्यास है। इसमें खून खराबी, लड़ाई झगड़े और एक तिलिस्मका ऐसा सुन्दर वर्णन आया है, कि पढ़कर तबीयत फड़क उठती है। दाम केवल ॥=) आना।

"काला साँप"—इसमें एक ऐसे विचित्र सांपकी घटना लिखी गयी है, जो नव यौवना सुन्दरी स्त्रीका रूप धारण कर खूबसूरत नौजवानोंके साथ भोग-विलास करता और पीछे उन्हें मार डालता था। दाम ।=) आना।

"भीषण भूल"—इसमें एक मारवाड़ीके खूनकी ऐसी रहस्य जनक घटना लिखी गयी है, कि पढ़कर हृदय कांप उठता है और दांतों उंगली काटनी पड़ती है। दाम ।=) आ०

"चतुरङ्ग चौकड़ी"—इसमें उत्तमोत्तम चार जासूसी उपन्यास हैं।—(१) थियेटरमें खून (२) औरतकी चालाकी, (३) नोटोंकी चोरी और (४) मियांकी करतूत। दाम सिर्फ ।-) आना।

चोर-चौकड़ीपर—रातको चोरी करें और दिनमें चार घोड़ोंकी गाड़ीपर घूमें। १ चित्र भी है, दाम सिर्फ ।-) आना।

नकाबदार कलङ्की—का एक बड़ा ही विचित्र-रहस्य इसमें गया है। दाम सिर्फ ॥) आना।

एल० बर्मन एण्ड को०, ३७१, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

रंगीले जासूसी उपन्यास।

नकली प्रोफेसर,—पूर्ण रहस्य नकली प्रोफेसर और जासूस लिम्यरामके विचित्र हाव भाव देख देखने ही तो रहे अवश्य पढ़िये। दाम ।=)

"मूलमुलैया"—इसी मजाकी भरी हुई लिथिटरमें खेलने लायक यह एक मजेदार नकल है। दाम सिर्फ ॥) आना।

"राजा साहब"—कलकत्ता, बम्बई आदि नगरोंमें नकली राजा, नवाब और बैरिस्टर आदिका भेष बनाकर ठग लोग किस तरह धोखेबाजी महाजनोंको ठग लेते हैं, इसमें यही दिखलाया गया है। दाम ।।) आ०

"सिरकी चोरी"—चोर चोरोंकी चोरी तो रोज ही सुनते होंगे, मगर अब यह उपन्यास मंगाकर "सिरकी चोरी" का रहस्य भी पढ़ लीजिये। ।-)

"गुल-बकावली"—लैली मजनू, शीरीं फरहाद और हीर रांझाकी भांति दुलहन-बकावलीका प्रेम भी बड़ा ही पवित्र हुआ है। यदि प्रेमके बहुमें गोते खाना हो, तो इस उपन्यासको अवश्य पढ़िये। दाम सिर्फ ।)

"नलिनी बाबू"—इसको पढ़ते पढ़ते मारे हँसीके लोट जायेगा ।=)

"खूनी खञ्जर"—नाम जैसा भयङ्कर है, किस्सा भी वैसाही रहस्यमय है। ।-)

"सम्राट बाबर"—का यह संक्षिप्त जीवनचरित है। इसमें बाबर और महाराणा सांगाकी भयानक लड़ाइयोंका हाल लिखा गया है। दाम ।)

"तारकाका खून"—तीन तीन खूनोंका बड़ा ही अद्भुत मामला ।) आ०

"गुप्त रहस्य"—इसे पढ़कर चकित होना पड़ेगा। दाम ।-) आना।

"गोपालके गहने"—बड़ाही मनोरंजक मामला है। दाम ।) आ०

"अनाथबालिका"—एक डाकूकी निष्कपट प्रेम लीला, दाम ।-)

"रोमियो जुलियट"—योरोपके प्रसिद्ध नाटककार महाकवि सेक्सपियरके "रोमियोजुलियट" नाटकका अनुवाद। दाम ।=)

"जाली जमीन्दार"—का बड़ा ही मजेदार मामला है। दाम ।) आ०

"विलायती डाकू"—इसमें विलायतके "डिकटरपिन" नामक प्रसिद्ध डाकूके कितने ही अद्भुत डाकोंका हाल है। दाम ।=) आना।

"चार दोस्तोंकी हँसी दिल्लगी"—नाम ही से प्रकट है, दाम -) आ०

सर्व्वोत्तम जासूसी उपन्यास।

भयानक बदला	॥।)	भोजपुरकी ठगी	॥)	काला चाद	।)
खूनमिश्रित चोरी	॥।)	विचित्र जाल	।-)	दो खून	≠)
भयानक मेंदिया	।≠)	कालग्रास	।)	भूतोंका डेरा	≠)
खूनी कलाई	॥)	युवती चोरी	।)	नोलखाहार	≠)

ऐय्यारी और तिलिस्मी उपन्यास।

मदनरञ्जनी	४।)	काजरकी कोठरी	॥।/)	स्वर्णकान्ता	॥।)
मोतीमहल ६ भाग	३।)	नरेन्द्रमोहिनी २भाग	१)	पिशाचपुरी	॥≠)
आनन्दसुन्दरी	२।/)	जादूकामहल २भाग	१)	सूर्य्यकान्ता ४ भाग	॥)
वीरेन्द्रवीर २ भाग	२)	सोमलता २ भाग	१)	गुप्तगोदना	॥)
गुलाब कुंवरी	१॥।≠)	कुसुमकुमारी ४भाग	१)	निराला नकाबपोश	।/)
कमलकुमारी	१।)	शुक्लवसना सुन्दरी	१)	निर्मला	≠)॥

ऐतिहासिक उपन्यास।

निम्न लिखित उपन्यास, बड़े ही अनूठे, दिलचस्प और सत्य घटना मूलक हैं। स्थानाभावसे इनका पूरा हाल नहीं दिया जा सका :—

बर्नियरकी भारत यात्रा	२)	दिल्ली-दर्बार-रहस्य	॥)	पुष्पवती	।)
		सोनेकी राख	॥)	रानी दुर्गावती	।)
उपन्यासकुसुम	१)	नवाबी परिस्तान	।/)	रोमियो जुलियट	।)
पैशाचिककाण्ड	१॥)	वीरजयमल	।/)	नूरजहा बेगम	।)
सीताराम	१)	रानीपद्मा	।/)	मुगलसम्राट	।)
राणा भीमसिंह	१)	वीर बालिका	।/)	किशोरी	≠)
वारेन हेष्टिंग्स	१)	आदर्श ललना	।/)	कलावती	≠)
नवाबी महल	॥।)	किरण मयी	।-)	माधवी	≠)
प्रभात सुन्दरी	॥।)	जय श्री	।-)	हरीसिंह नलवा	≠)
बाजीराव पेशवा	॥।)	प्रभातकुमारी	।-)	भारतकी देवियां	≡)
होनहार	॥/)	अनगपाल	।-)	चन्द्रलोककी यात्रा	≠)
मृणालिनी	॥/)	कान्तिमाला	।-)	मायारानी	≠)

सामाजिक उपन्यास।

निम्नलिखित सामाजिक उपन्यास इतने अनूठे, मनोरंजक और शिक्षापूर्ण हैं, कि इनको बड़े-बूढ़े, युवा, बच्चे सभी आदर्श शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं—

धारावाहिक रहस्य	३/)	मनमोहिनी	॥)	हृदयकंटक	।)
उमा	।)	आदर्श महिला	॥)	महाभ्रमा	।)
गृहलक्ष्मी	।)	दो बहिन	॥)	लोलोमलनू	॥)
राज राजेश्वरी	॥/)	सुरेन्द्र सुन्दरी	॥)	लक्ष्मीदेवी	।)
पतित पति	॥-)	प्रेमका फल	।-)	माया मरीचिका	।)
परिणाम	।।।)	देवी या दानवी	।/)	सूर्य्यकुमार	।)
जहरका प्याला	।।।)	हमारी दायी	।/)	मोहिनी	॥)
आदर्श मित्र	।।।)	ललना पुस्तिका	।/)	दर्शनी हुण्डी	।)
दिलका फाटा	।।।)	हरणकामिनी	।-)	परियोंकी कहानी	।)
त्रैलोक्य सुन्दरी	॥-)	किरणराशि	।-)	राजा रानी	।)
रजनी	॥)	अनुराग	।)	चार दोस्तोंकी हंसी	-)

मप्तसरोज—उत्तमोत्तम शिक्षाप्रद सात कहानियोंका अपूर्व संग्रह ।॥)

आश्चर्य्य जनक उपन्यास।

निम्न लिखित उपन्यास भी 'मिस्टर जार्ज विलियम रेनाल्डस' तथा अन्य अंग्रेजी उपन्यासोंके अनुवाद हैं। अवश्य पढ़िये —

मार्गिका माया ५ भाग	२॥)	सौन्दर्य्योपासक २ भाग	१।)
पेरिस अनर्थ ३ भाग	१॥-)	रहस्यभेद २ भाग	१)
नङ्ग रंग ३ भाग	१॥)	किसीकी रानी	॥)
औरतोंका खजाना ४ भाग	२)	शूर शिरोमणि	॥-)

भक्त सूरदास नाटक।

यह नाटक बड़ा ही मनोहर और थियेटरमें खेलने योग्य है, क्योंकि इसमें वीर, शृङ्गार, वीभत्स आदि नवरस वर्तमान हैं। हाफटोन फोटोके छपे सुन्दर सुन्दर कई चित्र भी दिये गये हैं। दाम केवल ॥-) आना।

पढ़ने योग्य थियेट्रिकल नाटक (मय गायन)

दुर्गादास	१॥)	सिखवर किङ्ग	॥)	शहीदेनाज़	।≡)
जीवनमुक्त नाटक	१॥)	गोरख धन्दा	॥)	असीरे हिर्स	।≡)
नेत्रोन्मीलन नाटक	॥=)	शरीफ बदमाश	॥)	सेदहवस	।≡)
दुश्मने ईमान	॥)	महाभारत	।≡)	खूनका खून	।≡)
काली नागिन	॥)	दिलफरोश	।≡)	मशहूर गवैये	।≡)
हारमोनियम मास्टर	॥)	सत्य हरिश्चन्द्र	।≡)	बहारे थियेटर	=)
सुगन्धरी खञ्जर	॥)	विल्वमङ्गल	।≡)	सावित्रीसत्यवान गा.	≡)
चपल्लांह	॥)	जहरी साप	।≡)	वीरपत्नी, गायन	≡)

सचित्र महाभारत।

अबतक महाभारतका ऐसा सरल, सुन्दर और उपयोगी संस्करण नहीं छपा। इसे स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध सभी आनन्द पूर्वक पढ़ और समझ सकते हैं। छपाई, सफाई, कागज और चित्रोंकी सुन्दरता देखकर पुस्तकको छातीसे लगा लेनेकी इच्छा होती है। इसमें रङ्गीन और सादे कितने चित्र दिये गये हैं। इतना होनेपर भी दाम बिना जिल्दका केवल २) रु० और सुनहरी रेशमी कपड़ेकी जिल्दवालीका २॥) रु० है।

आदर्श चाची

सचित्र गार्हस्थ्य उपन्यास।

हिन्दी संसारमें यह उपन्यास अपने ढङ्गका निराला है। स्त्री, पुरुष, बूढ़े, बच्चे सभी इस उपन्याससे मनोरंजनके साथ ही साथ आदर्श शिक्षा भी प्राप्त कर सकेंगे। प्रायः देखा गया है, कि स्त्रियोंकी अनबनसे बड़े बड़े सम्पन्न-शाली परिवार तहस नहस हो गये हैं, बाप बेटेसे छूट गया है, भाई भाईमें चिरशत्रुता छा गयी है और बना बनाया लाखका घर खाकमें मिल गया है। यह उपन्यास इसी प्रकारकी घटनाओंको सामने रखकर लिखा गया है। एकबार इस उपन्यासको पढ़ लेनेसे आपसके वैर-भाव और दुराग्रह हमेशाके लिये नष्ट हो जाता है। हाफटोनकी छपे ४ चित्र भी हैं। दाम १)

• एल० बर्ब्लन एण्ड को०, १७१, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

सावित्री-सत्यवान।

कुमारी कन्याओं और नवविवाहिता स्त्रियोंके लिये यह पुस्तक बड़ी ही शिक्षाप्रद है, क्योंकि इसमें सती शिरोमणि महारानी सावित्रीके पातिव्रत धर्मका ऐसा सुन्दर चित्र खींचा गया है, कि जिसके आगे स्वयम् यमराजको भी हार माननी पड़ी थी। इसमें कई चित्र भी हैं। दाम १०) आ०

हिन्दी अंगरेजी शिक्षा

आजकल अङ्गरेजीका ही दौर-दौरा है, बिना अङ्गरेजी पढ़ा मनुष्य अपनी यथार्थ उन्नति नहीं कर सकता और स्कूलोंमें जाकर अङ्गरेजी सीखनेसे वर्षों का समय और हजारों का खर्च पड़ जाता है। इन्हीं सब दिक्कतोंको दूर करनेके लिये हमलोगोंने बड़े परिश्रम और प्रचुर अर्थव्ययसे "हिन्दी अङ्गरेजी शिक्षा" नामक पुस्तक दो भागोंमें तय्यार की है। इसके सहारे थोड़ी सी 'हिन्दी जाननेवाला मनुष्य भी कुछ ही दिनोंमें अंगरेजीका पूर्ण "पण्डित" बन सकता है। अंगरेजीमें हिसाब-किताब, तार, चिट्ठी, लिखना पढ़ना और बातचीत करना सिर्फ ६ महीनेके परिश्रमसे आ सकता है। आजतक इस विषयकी जितनी पुस्तकें छपी हैं, उनमें यह सर्व श्रेष्ठ मानी गयी है और कितने ही विद्वानोंने मुक्त कण्ठसे इसकी प्रशंसा की है। प्रथम पहले भागका ॥) आना और दूसरे भागका १।) सजिल्दका १॥) रु०

सचित्र गो-पालन-शिक्षा।

इसमें गो बछड़ोंकी पहचान, पालन, दवायें और दूध बढ़ाने तथा दूधसे बननेवाले पदार्थोंको बनानेके ऐसे सरल तरीके लिखे गये हैं, कि मनुष्य कुछ ही दिनोंमें माहिर हो जा सकता है। गाय आदि पालनेवालोंको इसे अवश्य खरीदना चाहिये। दाम सजिल्द ।=) आना।

जिवनार—तरह तरहके भोजनके पदार्थ बनानेकी अपूर्व पुस्तक ।-)

ज्योतिष शास्त्र—ज्योतिष विद्याकी अपूर्व पुस्तक मूल्य ॥)

विवेक वचनावली—स्वामी विवेकानन्दके उपदेश

आर० एन० बर्मन एण्ड को०, ३७१, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

संगीत शिक्षाकी पुस्तकें।

"तालमञ्जरी"—तबला और मृदङ्ग सीखनेकी अपूर्व पुस्तक ॥=)

"वंशीमञ्जरी"—हारमोनियम सीखनेकी पुस्तक १)

"हारमोनियम फुलझड़ी"—सब तरहके गाने में स्वरलिपिके सीखनेकी अपूर्व पुस्तक १)

"रागमाला"—६ राग (में तस्वीर) और ३० रागनियोंकी पुस्तक -)॥

"गीतमञ्जरी—इसमें छोटे बड़े अनेक लोगोंके गाने हैं ॥)

"रामविजय"— ।)

"फूलोंका गुच्छा"—सब तरहके गानेकी अपूर्व पुस्तक ।)

राजनैतिक पुस्तकें।

स्वराज्य क्यों चाहते हैं ? -)॥

धर्म और राजनीति -)॥

लोकमान्य तिलकके स्वराज्यपर २० व्याख्यान और मुकद्दमा १।)

ध्यानिक स्वराज्य =)

राष्ट्रीय शिक्षा ।)

राष्ट्र निर्माण -)॥

स्वराज्य विचार =)

कर्मवीर गांधीके महत्व पूर्ण लेख और व्याख्यान १।)

देशी बस्तीका सन्देश -)

धर्मवीर गांधी ॥=)

जीवन चरित्र।

विक्रमादित्य का जी० ॥) महाराणा प्रेमसाहब ।=) कमशेदजी नसरवानजी ।)

मीराबाई " =) रामकृष्णदेव " ।-) लार्ड किचनर " १)

वीर-पञ्चरत्न

बड़ी ही सुन्दर कविता—अपूर्व जीवनियां।

इसमें वीर प्रताप, वीर बालक, वीर चत्राणी, वीर माता, और वीर पत्नी आदि पांच रत्नोंमें भारतकी अनेकों वीर स्त्रियों और वीर पुरुषोंकी जीवनियां कवितामें लिखी गयी हैं। यह पुस्तक हिन्दी-संसारमें एकदम नयी और शिक्षा पूर्ण है। इसमें कितने ही सुन्दर सुन्दर चित्र भी दिये गये हैं, इसे पढ़कर एकबार भारतकी प्राचीन कला आपके नेत्रोंके सामने आ जावेगी दाम २।)

डाकका २॥) रु०

एल० बर्मन एण्ड को०, ३७१, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता

उपन्यासोंका राजा

लण्डन-रहस्य

- अर्थात् -

मिस्ट्रीज़ ऑफ़ दी कोर्ट ऑफ़ लण्डन।

जिस उपन्यासके लिये लोग वर्षों से लालायित थे, जिस उपन्यास का नाम सुनते ही लोग फड़क उठते थे, जिस उपन्यासकी विचित्रता, मधुरता और अनूठेपनकी धूम संसार भरमें मची हुई थी, जिस उपन्यासका अनुवाद बङ्गला, गुजराती, मराठी और उर्दू आदि भिन्न भिन्न भारतीय भाषाओंमें धाराप्रवाह बिक रहा था, जिस उपन्यासका हिन्दी भाषान्तर न होनेके कारण हिन्दी प्रेमीमात्र अबतक उसके आनन्दसे वञ्चित थे, वही उपन्यास हिन्दीकी फड़फड़ाती हुई भाषामें नये ठाट-बाट और अनूठे रङ्ग-ढङ्गसे चित्रों सहित छपकर तय्यार हो गया है और धड़ाधड़ बिक रहा है। "लण्डन-रहस्य" उपन्यास नहीं, बल्कि—

उपन्यास-सम्राट है

क्योंकि इसमें हजारों आश्चर्यजनक, कौतूहलवर्धक और हृदयग्राही घटनाओंका ऐसा सुन्दर वर्णन आया है, कि एकबार पुस्तक उठा लेनेपर फिर छोड़नेकी इच्छा ही नहीं होती। अधिक तारीफ करना व्यर्थ है, क्योंकि यदि इसकी पूरी पूरी तारीफ की जाय, तो सिर्फ तारीफ होके "अलिफ़लैला' या "क़िस्सा आज़ाद" जैसा एक बड़ा पोथा तय्यार हो जाय। यदि आपको उपन्यास पढ़नेका कुछ भी शौक हो, तो सब उपन्यास छोड़कर पहले इसे पढ़िये। इसमें विलायती समाजका ऐसा सुन्दर और सच्चा खाका खींचा गया है, कि एकबार सारा यूरोप "बायस्कोप" की भांति आंखोंके सामने नाचने लगता है। दाम ३० भागोंका, जिनमें लगभग १५० चित्र भी दिये गये हैं, सिर्फ १५) डाकखर्च अलग। फुटकर दो चार भाग भी भेजे जासकते हैं। दाम हरएक भागका ॥) आना और पोस्टेज तथा वी० पी० खर्च ≈) आना।

पता—आर० एल० वर्म्मन एण्ड को०,

३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

बर्म्मन प्रेस

कलकत्तामें

छपाईका काम बहुत सुन्दर होता है। हर तरहके लेटर पेपर, लिफाफे, चेक बिल लेबिल, विजिटिङ्ग कार्ड, पुस्तकें, दो, तीन और चाररंगे टाइटिल, हाफ-टोन ब्लाक आदि हिन्दी, उर्दू, अङ्गरेजी और बङ्गला आदि अक्षरोंमे खूब सफाई के साथ छापे जाते हैं। सब तरहके छोटे बडे अक्षर और नये नये फैशनके बार्डर (बेल-बूटे) मौजूद हैं।

पता—"बर्म्मन प्रेस," ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता